

Yoga Vasishtha, Book 1 — Vairāgya

Dispassion. Sanskrit with English and Hindi.

From yogavasishtha.com — edition of 28 September 2026. The Sanskrit is in the public domain. The English and Hindi translations were made with a language model and have not been reviewed by a Sanskrit scholar: read them as a study aid, not as an authority. Each verse gives the Sanskrit in Devanagari and IAST, then the English, then the Hindi.

Chapter 1

1.1.1

यतः सर्वाणि भूतानिप्रतिभान्ति स्थितानि च । यत्रैवोपशमं यान्ति तस्मैसत्यात्मने नमः ॥ १ ॥

yataḥ sarvāṇi bhūtāni pratibhānti sthitāni ca | yatraivopaśamaṁ yānti tasmai satyātmane namaḥ || 1 ||

Homage to the one whose true self is truth — the one from whom all beings appear, in whom they remain, and into whom alone they dissolve.

जिससे सारे प्राणी प्रकट होते हैं, जिसमें वे टिके रहते हैं, और जिसमें ही वे अंत में लीन हो जाते हैं, मैं उस सत्यस्वरूप को नमस्कार करता हूँ।

1.1.2

ज्ञाता ज्ञानं तथा ज्ञेयं द्रष्टादर्शनदृश्यभूः । कर्ता हेतुः क्रिया यस्मात्तस्मै ज्ञस्यात्मने नमः ॥ २ ॥

jñātā jñānaṁ tathā jñeyaṁ draṣṭādarśanadṛśyabhūḥ | kartā hetuḥ kriyā yasmāt tasmai jñasyātmane namaḥ || 2 ||

Homage to the one whose nature is knowing — the one from whom come the knower, knowledge, and the thing known; the seer, the seeing, and the thing seen; the doer, the cause, and the act.

ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय; देखने वाला, देखना और जो देखा जाए; करने वाला, कारण और क्रिया — ये सब जिससे उत्पन्न होते हैं, मैं उस ज्ञानस्वरूप को नमस्कार करता हूँ।

1.1.3

स्फुरन्ति सीकरा यस्मादानन्दस्याम्बरेऽवनौ । सर्वेषां जीवनं तस्मै ब्रह्मानन्दात्मने नमः ॥ ३ ॥

sphuranti sīkarā yasmādānandasyāmbare'vanau | sarveṣāṁ jīvanaṁ tasmai brahmānandātmane namaḥ || 3 ||

Homage to the one whose nature is the bliss of Brahman — the one from whom drops of bliss sparkle out and fill the sky and the earth; he is the life of everyone.

जिससे आनंद की बूँदें फूट पड़ती हैं और आकाश तथा धरती को भर देती हैं, और जो सबका जीवन है, मैं उस ब्रह्मानंद-स्वरूप को नमस्कार करता हूँ।

1.1.4

सुतीक्ष्णो ब्राह्मणः कश्चित्संशयाकृष्टमानसः । अगस्तेराश्रमं गत्वा मुनिं पप्रच्छ सादरम् ॥ ४ ॥

sutikṣṇo brāhmaṇaḥ kaścit saṁśayaḥkṛṣṭamānasaḥ | agasterāśramaṁ gatvā muniṁ papraccha sādaram || 4 ||

A brahmin named Sutikshna, whose mind was seized by a doubt, went to the hermitage of Agastya and respectfully asked the sage his question.

सुतीक्ष्ण नाम का एक ब्राह्मण था, जिसका मन एक संदेह में उलझा हुआ था। वह अगस्त्य मुनि के आश्रम में गया और आदर के साथ मुनि से सवाल पूछा।

1.1.5

सुतीक्ष्ण उवाच । भगवन्धर्मतत्त्वज्ञ सर्वशास्त्रविनिश्चित । संशयोऽस्ति महानेकस्त्वमेतं कृपया वद ॥ ५ ॥

sutikṣṇa uvāca | bhagavan dharma-tattvajña sarvaśāstraviniścita | saṁśayo'sti mahānekas tvametaṁ kṛpayā vada || 5 ||

Sutikshna said: O venerable one, you know the truth of dharma and you have mastered every scripture. I have one great doubt. Please, out of kindness, tell me the answer.

सुतीक्ष्ण ने कहा - हे भगवन्, आप धर्म का सच्चा ज्ञान रखते हैं और आपने सारे शास्त्रों को अच्छी तरह समझ लिया है। मुझे एक बड़ा संदेह है। कृपा करके आप मुझे इसका जवाब दीजिए।

1.1.6

मोक्षस्य कारणं कर्म ज्ञानं वा मोक्षसाधनम् । उभयं वा विनिश्चित्य एकं कथय कारणम् ॥ ६ ॥

mokṣasya kāraṇaṃ karma jñānaṃ vā mokṣasādhanaṃ | ubhayaṃ vā viniścitya ekaṃ kathaya kāraṇaṃ || 6 ||

Is action the cause of liberation, or is knowledge the means to liberation? Or are both together the cause? Please decide and tell me the one true cause.

क्या मोक्ष का कारण कर्म है, या ज्ञान मोक्ष का साधन है? या दोनों मिलकर कारण हैं? आप निश्चय करके मुझे एक ही कारण बताइए।

1.1.7

अगस्तिरुवाच । उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः । तथैव ज्ञानकर्मभ्यां जायते परमं पदम् ॥ ७ ॥

agastiruvāca | ubhābhyāmeva pakṣābhyāṃ yathā khe pakṣiṇāṃ gatiḥ | tathaiva jñānakarmabhyāṃ jāyate paramaṃ padam || 7 ||

Agastya said: Just as a bird flies through the sky using both its wings, in the very same way the highest state is reached through knowledge and action together.

अगस्त्य ने कहा - जैसे पक्षी आकाश में दोनों पंखों से ही उड़ान भरता है, वैसे ही ज्ञान और कर्म दोनों से मिलकर परम पद प्राप्त होता है।

1.1.8

केवलान्तर्यामिणो ज्ञानान्नहि मोक्षोऽभिजायते । किंतूभाभ्यां भवेन्मोक्षः साधनं तूभयं विदुः ॥ ८ ॥

kevalāntarīyaṃ jñānānnahi mokṣo'bhijāyate | kintūbhābhyāṃ bhavenmokṣaḥ sādhanam tūbhayaṃ viduḥ || 8 ||

Liberation does not come from action alone or from knowledge alone. It comes only when both are together — the wise know both together to be the means.

अकेले कर्म से मोक्ष नहीं मिलता, और अकेले ज्ञान से भी नहीं मिलता। मोक्ष तभी मिलता है जब दोनों साथ हों — बुद्धिमान लोग दोनों को ही साधन मानते हैं।

1.1.9

अस्मिन्नर्थे पुरावृत्तमितिहासं वदामि ते । कारुण्याख्यः पुरा कश्चिद्ब्राह्मणोऽधीतवेदकः ॥ ९ ॥

asminnarthe purāvṛttamitihāsaṃ vadāmi te | kāruṇyākhyāḥ purā kaściddbrāhmaṇo'dhītavedakaḥ || 9 ||

On this point, I will tell you an old story. Long ago there was a brahmin named Karunya, who had studied the Vedas.

इस बारे में मैं तुम्हें एक पुरानी कहानी सुनाता हूँ। बहुत पहले कारुण्य नाम का एक ब्राह्मण था, जिसने वेदों का अध्ययन किया था।

1.1.10

अग्निवेश्यस्य पुत्रोऽभूद्वेदवेदाङ्गपारगः । गुरोरधीतविद्यः सन्नाजगाम गृहं प्रति ॥ १० ॥

agniveśyasya putro'bhūdvedavedāṅgapāragah | guroradhītavidyāḥ sannājagāma grhaṃ prati || 10 ||

He was the son of Agnivesya, and he had fully mastered the Vedas and the Vedangas. After learning all his knowledge from his teacher, he set out for home.

वह अग्निवेश्य का पुत्र था और उसने वेद तथा वेदांगों में पूरी महारत हासिल कर ली थी। गुरु से सारी विद्या सीखने के बाद वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

1.1.11

तस्थावकर्मकृतूष्णीं संशयानो गृहे तदा । अग्निवेश्यो विलोक्याथ पुत्रं कर्मविवर्जितम् ॥ ११ ॥

tasthāvakarmakṛttūṣṇīm saṁśayāno gr̥he tadā | agniveśyo vilokyātha putraṁ karmavivarjitam || 11 ||

He then stayed at home in silence, performing no rites, caught in doubt. Agnivesya then saw that his son had given up every rite.

वह तब घर में चुपचाप बैठा रहा, कोई भी कर्म नहीं करता था, और संदेह में पड़ा हुआ था। तब अग्निवेश्य ने देखा कि उसका बेटा हर कर्म को छोड़ चुका है।

1.1.12

अग्निवेश्य उवाच । प्राह एतद्वचो निन्द्यं गुरुः पुत्रं हिताय च । किमेतत्पुत्र कुरुषे पालनं न स्वकर्मणः ॥ १२ ॥

agniveśya uvāca | prāha etadvaco nindyaṁ guruḥ putraṁ hitāya ca | kimetatputra kuruṣe pālanaṁ na svakarmanāḥ || 12 ||

Agnivesya said: The teacher spoke this harsh-sounding word to his son, but he spoke it for the son's own good: "Son, what is this that you are doing? You are not keeping up your own duties."

अग्निवेश्य ने कहा: गुरु ने अपने बेटे से यह कड़वी लगने वाली बात कही, पर यह उसी की भलाई के लिए कही थी: "बेटा, यह क्या कर रहे हो? तुम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहे हो।"

1.1.13

अकर्मनिरतः सिद्धिं कथं प्राप्स्यसि तद्वद । कर्मणोऽस्मान्निवृत्तेः किं कारणं तन्निवेद्यताम् ॥ १३ ॥

akarmanirataḥ siddhiṁ katham prāpsyasi tadvad | karmaṇo'smānnivṛtteḥ kiṁ kāraṇaṁ tannivedyatām || 13 ||

You who no longer care to act, tell me, how will you reach success this way? What is the reason you have turned away from action? Tell me that.

तुम जो कर्म में मन ही नहीं लगाते, बताओ, इस तरह सफलता कैसे पाओगे? इस कर्म-त्याग का कारण क्या है, वह मुझे बताओ।

1.1.14

कारुण्य उवाच । यावज्जीवमग्निहोत्रं नित्यं संध्यामुपासयेत् । प्रवृत्तिरूपो धर्मोऽयं श्रुत्या स्मृत्या च चोदितः ॥ १४ ॥

kāruṇya uvāca | yāvajjīvamagnihotraṁ nityaṁ saṁdhyāmupāsayet | pravṛttirūpo dharmo'yaṁ śrutyā smṛtyā ca coditaḥ || 14 ||

Karunya said: For as long as you live, you should keep up the daily fire-offering and perform the morning and evening prayers. This duty of action is taught by both the Veda and the tradition texts.

कारुण्य ने कहा: जब तक जीवन है, रोज़ अग्निहोत्र करना चाहिए और सुबह-शाम की संध्या-पूजा करनी चाहिए। यह कर्म वाला धर्म वेद और स्मृति दोनों में बताया गया है।

1.1.15

न धनेन भवेन्मोक्षः कर्मणा प्रजया न वा । त्यागमात्रेण किंत्वेके यतयोऽश्नन्ति चामृतम् ॥ १५ ॥

na dhanena bhavanmokṣaḥ karmaṇā prajāyā na vā | tyāgamātreṇa kiṁtveke yatayo'shanti cāmṛtam || 15 ||

Liberation does not come through wealth, nor through ritual action, nor through having children. Only through giving up everything do some seekers taste immortality.

मोक्ष न धन से मिलता है, न कर्म से, न संतान से। कुछ साधक तो बस सब कुछ त्याग कर ही अमरता का स्वाद पाते हैं।

1.1.16

इति श्रुत्योर्द्वयोर्मध्ये किं कर्तव्यं मया गुरो । इति संदिग्धतां गत्वा तूष्णींभूतोऽस्मि कर्मणि ॥ १६ ॥

iti śrutyordvayormadhye kiṃ kartavyaṃ mayā guro | iti saṃdigdhatāṃ gatvā tūṣṇīm̐bhūto'smi karmaṇi || 16 ||

So, teacher, between these two scriptures, what am I to do? Caught in this doubt, I have fallen silent about action.

तो हे गुरु, इन दो शास्त्र-वचनों के बीच मुझे क्या करना चाहिए? इसी उलझन में पड़कर मैं कर्म के बारे में चुप हो गया हूँ।

1.1.17

अगस्तिरुवाच । इत्युक्त्वा तात विप्रोऽसौ कारुण्यो मौनमागतः । तथाविधं सुतं दृष्ट्वा पुनः प्राह गुरुः सुतम् ॥ १७ ॥

agastiruvāca | ityuktvā tāta vipro'sau kārūṇyo mauṇamāgataḥ | tathāvidhaṃ sutam dṛṣṭvā punaḥ prāha guruḥ sutam || 17 ||

Agastya said: Having said this, dear one, the brahmin Karunya fell silent. Seeing his son in this state, the father spoke to him again.

अगस्त्य ने कहा: हे प्रिय, यह कहकर वह ब्राह्मण कारुण्य चुप हो गया। अपने बेटे को इस हाल में देखकर पिता ने उससे फिर कहा।

1.1.18

अग्निवेश्य उवाच । शृणु पुत्र कथामेकां तदर्थं हृदयेऽखिलम् । मत्तोऽवधार्य पुत्र त्वं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ १८ ॥

agniveśya uvāca | śṛṇu putra kathāmekāṃ tadarthaṃ hṛdaye'khilam | mattō'vadhārya putra tvam yatheccchasi tathā kuru || 18 ||

Agnivesya said: Listen, son, to one story, and take its whole meaning to heart. Once you have understood it from me, son, do as you wish.

अग्निवेश्य ने कहा: बेटा, एक कथा सुनो, और उसका पूरा मतलब अपने मन में बिठा लो। मुझसे यह समझ लेने के बाद, बेटा, जैसा चाहो वैसा करना।

1.1.19

सुरुचिर्नाम काचित्स्त्री अप्सरोगणउत्तमा । उपविष्टा हिमवतः शिखरे शिखिसंवृते ॥ १९ ॥

surucirnāma kācitstrī apsarogaṇauttamā | upaviṣṭā himavataḥ śikhare śikhisamvṛte || 19 ||

There was a woman named Suruchi, the finest of the apsaras, sitting on a peak of the Himalaya that was thronged with peacocks.

सुरुचि नाम की एक स्त्री थी, जो अप्सराओं में सबसे श्रेष्ठ थी। वह हिमालय की उस चोटी पर बैठी थी, जहाँ मोर बहुत थे।

1.1.20

रमन्ते कामसंतप्ताः किन्नर्यो यत्र किन्नरैः । स्वर्धुन्योघेन संसृष्टे महाघौघविनाशिना ॥ २० ॥

ramante kāmasantaptāḥ kinnaryo yatra kinnaraiḥ | swardhunyoghena saṃsṛṣṭe mahāghaughavināśinā || 20 ||

It was a place where kinnara women, burning with desire, made love with kinnara men. That peak was joined to the flow of the heavenly river Ganga, which destroys great masses of sin.

वहाँ कामातुर किन्नरियाँ किन्नरों के साथ रमण करती थीं। वह चोटी स्वर्ग की नदी गंगा की धारा से जुड़ी थी, जो बड़े-बड़े पापों का नाश करती है।

1.1.21

दूतमिन्द्रस्य गच्छन्तमन्तरिक्षे ददर्श सा । तमुवाच महाभागा सुरुचिश्चाप्सरोवरा ॥ २१ ॥

dūtamindrasya gacchantamantarikṣe dadarśa sā | tamuvāca mahābhāgā suruciścāpsarovarā || 21 ||

She saw Indra's messenger passing through the sky. Suruchi, the glorious one, the finest of the apsaras, spoke to him.

उसने इंद्र के दूत को आकाश में जाते हुए देखा। उस तेजस्विनी सुरुचि ने, जो अप्सराओं में श्रेष्ठ थी, उससे कहा।

1.1.22

सुरुचिरुवाच । देवदूत महाभाग कुत आगम्यते त्वया । अधुना कुत्र गन्तासि तत्सर्वं कृपया वद ॥ २२ ॥

suruciḥ uvāca | devadūta mahābhāga kuta āgamyate tvayā | adhunā kutra gantāsi tatsarvaṃ kṛpayā vada || 22 ||

Suruchi said: O messenger of the gods, glorious one, where have you come from? Where are you going now? Please tell me all of it.

सुरुचि ने कहा: हे देवदूत, हे महाभाग्यशाली, आप कहाँ से आए हैं? अभी कहाँ जाएँगे? कृपया मुझे यह सब बताइए।

1.1.23

देवदूत उवाच । साधु पृष्टं त्वया सुभ्रु यथावत्कथयामि ते । अरिष्टनेमी राजर्षिर्दत्त्वा राज्यं सुताय वै ॥ २३ ॥

devadūta uvāca | sādhu pṛṣṭaṃ tvayā subhru yathāvatkathayāmi te | ariṣṭanemī rājarṣirdattvā rājyaṃ sutāya vai || 23 ||

The messenger of the gods said: You have asked well, fair-browed one. I will tell you just as it happened. The royal sage Arishtanemi gave his kingdom to his son.

देवताओं के दूत ने कहा: तुमने अच्छा पूछा, सुंदर भौंहों वाली। मैं तुम्हें बिल्कुल वैसे ही बताता हूँ जैसे हुआ था। राजर्षि अरिष्टनेमि ने अपना राज्य अपने बेटे को दे दिया।

1.1.24

वीतरागः स धर्मात्मा निर्ययौ तपसे वनम् । तपश्चरत्यसौ राजा पर्वते गन्धमादने ॥ २४ ॥

vītarāgaḥ sa dharmātmā niriyayau tapase vanam | tapascaratyasau rājā parvate gandhamādane || 24 ||

Free of all attachment, that righteous king then left for the forest to do penance. That king is now doing penance on Mount Gandhamadana.

हर तरह के मोह से मुक्त होकर, वह धर्मात्मा राजा तपस्या करने जंगल चला गया। वह राजा अब गंधमादन पर्वत पर तपस्या कर रहा है।

1.1.25

कार्यं कृत्वा मया तत्र तत आगम्यतेऽधुना । गन्तास्मि पार्श्वे शक्रस्य तं वृत्तान्तं निवेदितुम् ॥ २५ ॥

kāryaṃ kṛtvā mayā tatra tata āgamyate'dhunā | gantāsmi pārśve śakrasya taṃ vṛttāntaṃ niveditum || 25 ||

Having finished my work there, I have now come from there. I am going to Indra, to tell him this news.

वहाँ अपना काम पूरा करके, मैं अब वहाँ से आ गया हूँ। मैं इंद्र के पास जा रहा हूँ, उन्हें यह खबर बताने के लिए।

1.1.26

अप्सरा उवाच । वृत्तान्तः कोऽभवत्तत्र कथयस्व मम प्रभो । प्रष्टुकामा विनीतास्मि नोद्वेगं कर्तुमर्हसि ॥ २६ ॥

apsarā uvāca | vṛttāntaḥ ko'bhavattatra kathayasva mama prabho | praṣṭukāmā vinitāsmi nodvegam
kartumarhasi || 26 ||

The apsara said: What happened there, my lord? Tell me. I wish to ask, and I am humble. You should not make me anxious.

अप्सरा ने कहा: वहाँ क्या हुआ, हे स्वामी? मुझे बताइए। मैं पूछना चाहती हूँ, और मैं विनम्र हूँ। आपको मुझे बेचैन नहीं करना चाहिए।

1.1.27

देवदूत उवाच । शृणु भद्रे यथावृत्तं विस्तरेण वदामि ते । तस्मिन्नाज्ञि वने तत्र तपश्चरति दुस्तरम् ॥ २७ ॥

devadūta uvāca | śṛṇu bhadre yathāvṛttaṁ vistareṇa vadāmi te | tasminrājñi vane tatra tapaścarati dustaram || 27 ||

The messenger of the gods said: Listen, dear one, I will tell you everything in detail. That king was there in the forest, doing penance that was very hard to bear.

देवताओं के दूत ने कहा: सुनो, प्रिये, मैं तुम्हें सब कुछ विस्तार से बताता हूँ। वह राजा वहाँ जंगल में बहुत ही कठिन तपस्या कर रहा था।

1.1.28

इत्यहं देवराजेन सुभूराज्ञापितस्तदा । दूत त्वं तत्र गच्छाशु गृहीत्वेदं विमानकम् ॥ २८ ॥

ityaḥaṁ devarājena subhūrājñāpitastadā | dūta tvam tatra gacchāśu grhītvetaṁ vimānakam || 28 ||

Then, fair-browed one, the king of the gods gave me this order: 'Messenger, go there quickly. Take this flying chariot,'

फिर, सुंदर भौंहों वाली, देवताओं के राजा ने मुझे यह आदेश दिया: 'दूत, तुम वहाँ जल्दी जाओ। यह विमान ले जाओ,'

1.1.29

अप्सरोगणसंयुक्तं नानावादित्रशोभितम् । गन्धर्वसिद्धयक्षैश्च किन्नराद्यैश्च शोभितम् ॥ २९ ॥

apsarogaṇasaṁyuktaṁ nānāvāditraśobhitam | gandharvasiddhayakṣaiśca kinnarādyaiśca śobhitam || 29 ||

'filled with groups of apsaras, made beautiful with many kinds of musical instruments, and made beautiful with gandharvas, siddhas, yakshas, kinnaras, and others,'

'जो अप्सराओं के समूहों से भरा है, कई तरह के बाजों से सुंदर है, और गंधर्वों, सिद्धों, यक्षों, किन्नरों और दूसरों से सुंदर बनाया गया है,'

1.1.30

तालवेणुमृदङ्गादि पर्वते गन्धमादने । नानावृक्षसमाकीर्णे गत्वा तस्मिन्निरौ शुभे ॥ ३० ॥

tālaveṇumṛdaṅgādi parvate gandhamādane | nānāvṛkṣasamākīrṇe gatvā tasmingirau śubhe || 30 ||

'with cymbals, flutes, mridanga drums, and more. Go to Mount Gandhamadana, to that lovely mountain full of many kinds of trees,'

'जिसमें मंजीरे, बांसुरी, मृदंग और भी बहुत कुछ है। गंधमादन पर्वत पर जाओ, उस सुंदर पहाड़ पर जो कई तरह के पेड़ों से भरा है,'

1.1.31

अरिष्टनेमिं राजानं दूतारोप्य विमानके । आनय स्वर्गभोगाय नगरीममरावतीम् ॥ ३१ ॥

aṛiṣṭanemiṁ rājānaṁ dūtāropya vimānake | ānaya svargabhogāya nagarīmamarāvatīm || 31 ||

'and, messenger, seat King Arishtanemi in the flying chariot and bring him to the city of Amaravati, so he can enjoy heaven.'

'और, दूत, राजा अरिष्टनेमि को विमान में बिठाकर उन्हें अमरावती नगरी ले आओ, ताकि वे स्वर्ग का सुख भोग सकें।'

1.1.32

दूत उवाच । इत्याज्ञां प्राप्य शक्रस्य गृहीत्वा तद्विमानकम् । सर्वोपस्करसंयुक्तं तस्मिन्नद्रावहं ययौ ॥ ३२ ॥

dūta uvāca | ityājñāṃ prāpya śakrasya grhītvā tadvimānakam | sarvopaskarasamyuktaṃ tasminnadrāvahaṃ yayaḥ || 32 ||

The messenger said: After getting this order from Indra, and taking that flying chariot fitted with everything needed, I went to that mountain.

दूत ने कहा: इंद्र से यह आदेश पाकर, और हर ज़रूरी चीज़ से सजा वह विमान लेकर, मैं उस पहाड़ पर गया।

1.1.33

आगत्य पर्वते तस्मिन्नाज्ञो गत्वाऽऽश्रमं मया । निवेदिता महेन्द्रस्य सर्वाज्ञाऽरिष्टनेमये ॥ ३३ ॥

āgatya parvate tasminrājño gtvā'āśramaṃ mayā | niveditā mahendrasya sarvājñā'ariṣṭanemaye || 33 ||

I reached that mountain, went to the king's hermitage, and gave Arishtanemi the whole order of the great Indra.

मैं उस पहाड़ पर पहुँचा, राजा के आश्रम गया, और अरिष्टनेमि को महान इंद्र का पूरा आदेश सुना दिया।

1.1.34

इति मद्वचनं श्रुत्वा संशयानोऽवदच्छुभे । राजोवाच । प्रष्टुमिच्छामि दूत त्वां तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि ॥ ३४ ॥

iti madvacanaṃ śrutvā saṃśayāno'vadacchubhe | rājovāca | praṣṭumicchāmi dūta tvāṃ tanme tvam vaktumarhasi || 34 ||

Hearing my words, the king grew doubtful and spoke, O gracious lady. The king said: Messenger, I want to ask you something; you must tell me that.

मेरी यह बात सुनकर राजा को शक हुआ और वह बोला, हे देवी। राजा ने कहा कि हे दूत, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ, वह तुम मुझे जरूर बताओ।

1.1.35

गुणा दोषाश्च के तत्र स्वर्गे वद ममाग्रतः । ज्ञात्वा स्थितिं तु तत्रत्यां करिष्येऽहं यथारुचि ॥ ३५ ॥

guṇā doṣāśca ke tatra svargē vada mamāgrataḥ | jñātvā sthitiṃ tu tatratyāṃ kariṣyē'haṃ yathāruci || 35 ||

Tell me, right in front of me, what are the good things and the bad things there in heaven. Once I know how things are there, I will act as I wish.

मेरे सामने बताओ कि स्वर्ग में कौन सी अच्छी बातें हैं और कौन सी बुरी बातें हैं। वहाँ की हालत जानकर मैं अपनी मरजी से करूँगा।

1.1.36

दूत उवाच । स्वर्गे पुण्यस्य सामग्र्या भुज्यते परमं सुखम् । उत्तमेन तु पुण्येन प्राप्नोति स्वर्गमुत्तमम् ॥ ३६ ॥

dūta uvāca | svarge puṇyasya sāmāgryā bhujiyate paramaṃ sukham | uttameṇa tu puṇyena prāpnoti svargamuttamam || 36 ||

The messenger said: In heaven, a person enjoys the greatest happiness in proportion to how much merit he has. With the best merit, one reaches the best heaven.

दूत ने कहा कि स्वर्ग में इंसान को अपने पुण्य की मात्रा के हिसाब से ही सबसे बड़ा सुख मिलता है। सबसे अच्छे पुण्य से सबसे अच्छा स्वर्ग मिलता है।

1.1.37

मध्यमेन तथा मध्यः स्वर्गो भवति नान्यथा । कनिष्ठेन तु पुण्येन स्वर्गो भवति तादृशः ॥ ३७ ॥

madhyamena tathā madhyaḥ svargo bhavati nānyathā | kaniṣṭhena tu puṇyena svargo bhavati tādrśaḥ || 37 ||

In the same way, with medium merit, one gets a medium heaven, nothing more. And with the least merit, the heaven one gets is just as small.

इसी तरह बीच के पुण्य से बीच का स्वर्ग मिलता है, उससे ज्यादा नहीं। और सबसे कम पुण्य से उतना ही छोटा स्वर्ग मिलता है।

1.1.38

परोत्कर्षासहिष्णुत्वं स्पर्धा चैव समैश्च तैः । कनिष्ठेषु च संतोषो यावत्पुण्यक्षयो भवेत् ॥ ३८ ॥

parotkarṣāsahiṣṇutvaṁ spardhā caiva samaiśca taiḥ | kaniṣṭheṣu ca santoṣo yāvatpuṇyakṣayo bhavet || 38 ||

One cannot bear it when someone is above, one competes with those who are equal, and one feels content looking at those who are below - this goes on until the merit is used up.

जो अपने से ऊपर है, उसे देखकर सहन नहीं होता; जो बराबर का है, उससे होड़ होती है; और जो अपने से नीचे है, उसे देखकर संतोष होता है - यह सब तब तक चलता है जब तक पुण्य खत्म नहीं हो जाता।

1.1.39

क्षीणे पुण्ये विशन्त्येतं मर्त्यलोकं च मानवाः । इत्यादिगुणदोषाश्च स्वर्गे राजन्नवस्थिताः ॥ ३९ ॥

kṣīṇe puṇye viśantyetam martyalokaṁ ca mānavāḥ | ityādiguṇadoṣāśca svarge rājannavasthitāḥ || 39 ||

When their merit is used up, people come back into this world of death. These, O king, and other things like them, are the good and bad points found in heaven.

पुण्य खत्म होने पर लोग फिर इसी मृत्युलोक में आ जाते हैं। हे राजा, स्वर्ग में यही और ऐसी ही और बातें अच्छी-बुरी होती हैं।

1.1.40

इति श्रुत्वा वचो भद्रे स राजा प्रत्यभाषत । राजोवाच । नेच्छामि देवदूताहं स्वर्गमीदृग्विधं फलम् ॥ ४० ॥

iti śrutvā vaco bhadre sa rājā pratyabhāṣata | rājovāca | necchāmi devadūtāhaṁ svargamīdṛgvidam phalam || 40 ||

Hearing these words, O gracious lady, that king answered. The king said: Messenger of the gods, I do not want a heaven whose result is like this.

यह बात सुनकर, हे देवी, उस राजा ने जवाब दिया। राजा ने कहा कि हे देवदूत, मुझे ऐसा फल देने वाला स्वर्ग नहीं चाहिए।

1.1.41

अतः परं महोग्रं च तपः कृत्वा कलेवरम् । त्यक्ष्याम्यहमशुद्धं हि जीर्णं त्वचमिवोरगः ॥ ४१ ॥

ataḥ param mahogṛaṁ ca tapaḥ kṛtvā kalevaram | tyakṣyāmyahamaśuddham hi jīrṇaṁ tvacamivoragaḥ || 41 ||

From now on, I will do very hard penance, and then I will give up this impure body, just as a snake sheds its old worn-out skin.

अब इसके बाद मैं बहुत कठोर तपस्या करूँगा, और फिर इस गंदे शरीर को इस तरह छोड़ दूँगा जैसे साँप अपनी पुरानी केंचुल छोड़ देता है।

1.1.42

देवदूत विमानेन गृहीत्वा त्वं यथागतः । तथा गच्छ महेन्द्रस्य संनिधौ त्वं नमोऽस्तु ते ॥ ४२ ॥

devadūta vimānena grhītvā tvam yathāgataḥ | tathā gaccha mahendrasya sannidhau tvam namo'stu te || 42 ||

Messenger of the gods, take this flying chariot and go back the way you came, into the presence of the great Indra. My greetings to you.

हे देवदूत, यह विमान लेकर जिस तरह तुम आए थे उसी तरह वापस चले जाओ, महेन्द्र के पास। तुम्हें मेरा प्रणाम है।

1.1.43

देवदूत उवाच । इत्युक्तोऽहं गतो भद्रे शक्रस्याग्रे निवेदितुम् । यथावृत्तं निवेद्याथ महदाश्चर्यतां गतः ॥ ४३ ॥

devadūta uvāca | ityukto'haṁ gato bhadre śakrasyāgre niveditum | yathāvṛttaṁ nivedyātha mahadāścaryatāṁ gataḥ || 43 ||

The messenger of the gods said: After he said this, O gracious lady, I went and told Indra everything. When I had reported exactly what had happened, he was struck with great wonder. देवदूत ने कहा कि हे देवी, यह सुनकर मैं इंद्र के पास सब कुछ बताने गया। जो कुछ हुआ था वैसा ही बताने पर इंद्र को बहुत आश्चर्य हुआ।

1.1.44

इन्द्र उवाचपुनः प्राह महेन्द्रो मां श्लक्ष्णं मधुरया गिरादूत गच्छ पुनस्तत्र तं राजानं नयाश्रमम् ॥ ४४ ॥

indra uvācapunaḥ prāha mahendro māṁ ślakṣṇaṁ madhurayā girādūta gaccha punastatra taṁ rājānaṁ nayāśramam || 44 ||

Indra said: Great Indra again spoke to me gently, in a sweet voice: Messenger, go there again, and bring that king to the hermitage.

इंद्र ने कहा कि महेन्द्र ने मुझसे फिर से नरमी से, मीठी आवाज़ में कहा कि हे दूत, फिर से वहाँ जाओ और उस राजा को आश्रम ले आओ।

1.1.45

वाल्मीकेर्ज्ञाततत्त्वस्य स्वबोधार्थं विरागिणम् । संदेशं मम वाल्मीकेर्महर्षेस्त्वं निवेदय ॥ ४५ ॥

vālmikērjñātātattvasya svabodhārthaṁ virāgiṇaṁ | sandēśaṁ mama vālmikērmharṣēstvāṁ nivēdaya || 45 ||

Give my message to sage Valmiki, who knows the truth, so that the man who has no desire left may come to know his own self.

यह मेरा संदेश महर्षि वाल्मीकि को दे दो, जो सच्चाई को जानते हैं, ताकि जिस इंसान की कोई इच्छा नहीं बची है, वह खुद को जान सके।

1.1.46

महर्षे त्वं विनीताय राज्ञेऽस्मै वीतरागिणे । नस्वर्गमिच्छते तत्त्वं प्रबोधय महामुने ॥ ४६ ॥

maharṣe tvaṁ vinītāya rājñe'smai vītarāgiṇe | nasvargamicchate tattvaṁ prabodhaya mahāmune || 46 ||

O great sage, teach the truth to this humble king. He has no desire left in him, and he does not even want heaven. Teach him the truth, O great sage.

हे महर्षि, इस विनम्र राजा को सच्चाई बताइए। इसके मन में अब कोई इच्छा नहीं है, और यह स्वर्ग भी नहीं चाहता। हे महामुनि, इसे सच्चाई समझाइए।

1.1.47

तेन संसारदुःखार्तो मोक्षमेष्यति च क्रमात् । इत्युक्त्वा देवराजेन प्रेषितोऽहं तदन्तिके ॥ ४७ ॥

tena saṁsāraduḥkhārto mokṣameṣyati ca kramāt | ityuktva devarājena preṣito'haṁ tadantike || 47 ||

Through that truth, this man, who suffers from the pain of worldly life, will reach freedom step by step. Saying this, Indra, the king of the gods, sent me to Valmiki.

उस सच्चाई से यह इंसान, जो सांसारिक दुख से परेशान है, धीरे-धीरे मुक्ति पा लेगा। यह कहकर देवताओं के राजा इंद्र ने मुझे वाल्मीकि के पास भेजा।

1.1.48

मयागत्य पुनस्तत्र राजा वल्मीकजन्मने । निवेदितो महेन्द्रस्य राज्ञा मोक्षस्य साधनम् ॥ ४८ ॥

mayāgatya punastatra rājā valmīkajanmane | nivedito mahendrasya rājñā mokṣasya sādhanam || 48 ||

I went there again and told Valmiki about the king, and on Indra's order I asked him for the way to reach freedom.

मैं फिर वहाँ गया और वाल्मीकि को उस राजा के बारे में बताया, और इंद्र के कहने पर उनसे मुक्ति पाने का रास्ता माँगा।

1.1.49

ततो वल्मीकजन्मासौ राजानं समपृच्छत । अनामयमतिप्रीत्या कुशलप्रश्वार्तया ॥ ४९ ॥

tato valmīkajanmāsau rājānaṁ samapṛcchata | anāmayamatiprītyā kuśalapraśnavārtayā || 49 ||

Then Valmiki asked the king about his health, with great love, in words that asked how he was doing.

फिर वाल्मीकि ने बड़े प्यार से राजा से उसका हाल पूछा, यह पूछते हुए कि वह कैसा है।

1.1.50

राजोवाच । भगवन्धर्मतत्त्वज्ञ ज्ञातज्ञेय विदांवर । कृतार्थोऽहं भवदृष्ट्या तदेव कुशलं मम ॥ ५० ॥

rājovāca | bhagavandharmatattvajña jñātajñeya vidāṁvara | kṛtārtho'haṁ bhavadṛṣṭyā tadeva kuśalaṁ mama || 50 ||

The king said: Lord, you know the truth of dharma, and you know everything that can be known; you are the best of the wise. Just by seeing you, I feel I have gained everything I wanted — that alone is my well-being.

राजा ने कहा, हे भगवन, आप धर्म की सच्चाई जानते हैं और जो कुछ जानने लायक है वह सब जानते हैं; आप ज्ञानियों में सबसे श्रेष्ठ हैं। आपको देखकर ही मुझे लगता है कि मैंने सब कुछ पा लिया है — यही मेरे लिए भलाई है।

1.1.51

भगवन्प्रष्टुमिच्छामि तदविघ्नेन मे वद । संसारबन्धदुःखार्तेः कथं मुञ्चामि तद्वद ॥ ५१ ॥

bhagavanpraṣṭumicchāmi tadaviḥnena me vada | saṁsārabandhaduḥkhārteḥ katham muñcāmi tadvada || 51 ||

Lord, I want to ask you something; tell me without holding anything back. Tell me how I can free myself from the pain of being bound to this world.

हे भगवन, मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ; बिना कुछ छिपाए मुझे बताइए। मुझे बताइए कि मैं इस संसार के बंधन के दुख से कैसे छूट सकता हूँ।

1.1.52

वाल्मीकिरुवाच । शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि रामायणमखण्डितम् । श्रुत्वावधार्य यत्नेन जीवन्मुक्तो भविष्यसि ॥ ५२ ॥

vālmīkiruvāca | śṛṇu rājanpravakṣyāmi rāmāyaṇamakhṇḍitam | śrutvāvadhārya yatnena jīvanmukto bhaviṣyasi || 52 ||

Valmiki said: Listen, O King, I will tell you the whole Ramayana, leaving nothing out. If you listen to it, hold it in your mind, and work hard at it, you will become free while you are still alive.

वाल्मीकि ने कहा, सुनो राजन, मैं तुम्हें पूरी रामायण बिना कुछ छोड़े सुनाऊँगा। इसे सुनकर, मन में बिठाकर और मेहनत करके, तुम जीते-जी मुक्त हो जाओगे।

1.1.53

वसिष्ठरामसंवादं मोक्षोपायकथां शुभाम् । ज्ञातस्वभावो राजेन्द्र वदामि श्रूयतां बुध ॥ ५३ ॥

vasiṣṭharāmasaṃvādaṃ mokṣopāyakathāṃ śubhām | jñātasvabhāvo rājendra vadāmi śrūyatāṃ budha || 53 ||

I will tell you the good story of the talk between Vasishtha and Rama, which shows the way to freedom. O best of kings, since I know your true nature, I will speak — listen, O wise one.

मैं तुम्हें वसिष्ठ और राम की बातचीत की वह अच्छी कहानी सुनाऊँगा, जो मुक्ति का रास्ता दिखाती है। हे राजाओं में श्रेष्ठ, मैं तुम्हारा असली स्वभाव जानता हूँ, इसलिए बोलूँगा — सुनो, हे समझदार।

1.1.54

राजोवाच । को रामः कीदृशः कस्य बद्धो वा मुक्त एव वा । एतन्मे निश्चितं ब्रूहि ज्ञानं तत्त्वविदां वर ॥ ५४ ॥

rājovāca | ko rāmaḥ kīdṛśaḥ kasya baddho vā mukta eva vā | etanme niścitaṃ brūhi jñānaṃ tattvavidāṃ vara || 54 ||

The king said: Who is Rama? What kind of person is he? Whose son is he? Is he bound, or is he really free? Tell me this clearly, as sure knowledge, O best among the knowers of truth.

राजा ने कहा, राम कौन हैं? वे कैसे हैं? वे किसके बेटे हैं? क्या वे बंधन में हैं, या सचमुच मुक्त हैं? हे सच्चाई जानने वालों में श्रेष्ठ, मुझे यह साफ-साफ, पक्के ज्ञान की तरह बताइए।

1.1.55

वाल्मीकिरुवाच । शापव्याजवशादेव राजवेषधरो हरिः । आहृताज्ञानसंपन्नः किञ्चिज्ज्ञोऽसौ भवत्प्रभुः ॥ ५५ ॥

vālmīkiruvāca | śāpavyājavāśādeva rājaveṣadharo hariḥ | āhṛtājñānasaṃpannaḥ kiñcijjñō'sau bhavatprabhuḥ || 55 ||

Valmiki said: Under the excuse of a curse, Hari has put on the form and the clothes of a king. He carries an ignorance he has taken on himself, so this lord of yours knows only a little.

वाल्मीकि ने कहा, एक श्राप के बहाने हरि ने राजा का रूप और कपड़े पहन लिए हैं। उन्होंने खुद ही एक अज्ञान ओढ़ लिया है, इसलिए तुम्हारा यह स्वामी बहुत कम जानता है।

1.1.56

राजोवाच । चिदानन्दस्वरूपे हि रामे चैतन्यविग्रहे । शापस्य कारणं ब्रूहि कः शप्ता चेति मे वद ॥ ५६ ॥

rājovāca | cidānandasvarūpe hi rāme caitanyavigrahe | śāpasya kāraṇaṃ brūhi kaḥ śaptā ceti me vada || 56 ||

The king said, "Rama's true nature is consciousness and bliss; his very body is made of consciousness. Tell me why he was cursed, and tell me who cursed him."

राजा ने कहा, "राम की असली प्रकृति चेतना और आनंद है, उनका शरीर खुद चेतना से बना है। मुझे बताइए कि उन्हें शाप क्यों मिला, और यह भी बताइए कि किसने शाप दिया।"

1.1.57

वाल्मीकिरुवाच । सनत्कुमारो निष्काम अवसद्ब्रह्मसद्गनि । वैकुण्ठादागतो विष्णुस्तैलोक्याधिपतिः प्रभुः ॥ ५७ ॥

vālmīkiruvāca | sanatkumāro niṣkāma avasadbṛahmasadgani | vaikunṭhādāgato viṣṇustailokyādhipatiḥ prabhuḥ || 57 ||

Valmiki said, "Sanatkumara, who wanted nothing, was staying in Brahma's hall. Vishnu, the lord and master of the three worlds, came there from Vaikuntha."

वाल्मीकि ने कहा, "सनत्कुमार, जिन्हें किसी चीज़ की चाह नहीं थी, ब्रह्मा जी के सभा-भवन में ठहरे हुए थे। तभी तीनों लोकों के स्वामी और मालिक विष्णु वैकुण्ठ से वहाँ आए।"

1.1.58

ब्रह्मणा पूजितस्तत्र सत्यलोकनिवासिभिः । विना कुमारं तं दृष्ट्वा ह्युवाच प्रभुरीश्वरः ॥ ५८ ॥

brahmaṇā pūjitastatra sallyalokanivāsibhiḥ | vinā kumāraṁ taṁ dr̥ṣṭrā hyuvāca prabhurīśvaraḥ || 58 ||

There Brahma and the people living in Satyaloka worshipped him, but when the lord and master saw that Kumara alone had not come, he spoke.

वहाँ ब्रह्मा जी और सत्यलोक में रहनेवाले लोगों ने विष्णु की पूजा की, पर जब स्वामी और मालिक विष्णु ने देखा कि अकेले कुमार वहाँ नहीं आए हैं, तो वे बोले।

1.1.59

सनत्कुमार स्तब्धोऽसि निष्कामो गर्वचेष्टया । अतस्त्वं भव कामार्तः शरजन्मेति नामतः ॥ ५९ ॥

sanatkumāra stabdho'si niṣkāmo garvaceṣṭayā | atastvaṁ bhava kāmārtaḥ śarajanmeti nāmataḥ || 59 ||

"Sanatkumara, even though you want nothing, you have become stiff with pride and acted arrogantly. So become someone tormented by desire, and go by the name Sharajanma."

"हे सनत्कुमार, तुम्हें किसी चीज़ की चाह नहीं है, फिर भी तुम घमंड से अकड़ गए हो और अहंकार से बर्ताव किया है। इसलिए अब तुम इच्छा से तड़पनेवाले बन जाओ, और तुम्हारा नाम शरजन्म हो।"

1.1.60

तेनापि शापितो विष्णुः सर्वज्ञत्वं तवास्ति यत् । किञ्चित्कालं हि तत्पत्तत्वा त्वमज्ञानी भविष्यसि ॥ ६० ॥

tenāpi śāpito viṣṇuḥ sarvajñatvaṁ tavāsti yat | kiṁcitkālāṁ hi tattvyaktvā tvamajñānī bhaviṣyasi || 60 ||

By him in turn Vishnu was cursed: "The all-knowing power that you have - you will lose it for some time, and during that time you will become someone without knowledge."

उसी सनत्कुमार ने विष्णु को भी शाप दिया, "जो सब कुछ जानने की शक्ति तुम्हारे पास है, उसे तुम कुछ समय के लिए खो दोगे, और उतने समय तक तुम कुछ नहीं जाननेवाले बन जाओगे।"

1.1.61

भृगुर्भार्या हतां दृष्ट्वा ह्युवाच क्रोधमूर्च्छितः । विष्णो तवापि भार्याया वियोगो हि भविष्यति ॥ ६१ ॥

bhṛgurbhāryāṁ hatāṁ dr̥ṣṭrā hyuvāca krodhamūrcchitaḥ | viṣṇo tavāpi bhāryāyā viyogo hi bhaviṣyati || 61 ||

Bhrigu, seeing his wife killed, was overcome with anger and said, "Vishnu, you too will be separated from your wife."

भृगु ने अपनी पत्नी को मरा हुआ देखा और गुस्से से भर गए, और बोले, "हे विष्णु, तुम्हें भी अपनी पत्नी से बिछड़ना पड़ेगा।"

1.1.62

वृन्दया शापितो विष्णुश्छलनं यत्त्वया कृतम् । अतस्त्वं स्त्रीवियोगं तु वचनान्मम यास्यसि ॥ ६२ ॥

vṛndayā śāpito viṣṇuśchalanam yattvayā kṛtam | atastvaṁ strīviyogam tu vacanānmama yāsyasi || 62 ||

Vishnu was cursed by Vrinda: "You practiced deceit on me, so by my word you will be separated from a woman."

वृन्दा ने विष्णु को शाप दिया, "तुमने मेरे साथ छल किया है, इसलिए मेरे कहे अनुसार तुम्हें किसी स्त्री से बिछड़ना पड़ेगा।"

1.1.63

भार्या हि देवदत्तस्य पयोष्णीतीरसंस्थिता । नृसिंहवेषधृग्विष्णुं दृष्ट्वा पञ्चत्वमागता ॥ ६३ ॥

bhāryā hi devadattasya payoṣṇītirasamsthitā | nṛsimhaveṣadhṛgviṣṇuṃ dr̥ṣṭvā pañcatvamāgatā || 63 ||

The wife of Devadatta, who lived on the bank of the river Payoshni, saw Vishnu wearing the form of Narasimha, and she died.

पयोष्णी नदी के किनारे रहनेवाली देवदत्त की पत्नी ने विष्णु को नृसिंह के रूप में देखा, और वह मर गई।

1.1.64

तेन शप्तो हि नृहरिर्दुःखार्तः स्त्रीवियोगतः । तवापि भार्यया सार्धं वियोगो हि भविष्यति ॥ ६४ ॥

tena śapto hi nṛharirduḥkhārtah strīvivyogataḥ | tavāpi bhāryayā sārddham viyogo hi bhaviṣyati || 64 ||

Tormented by grief over the loss of his wife, Devadatta cursed Narahari, that is, Vishnu in the form of Narasimha: "You too will be separated from your wife."

अपनी पत्नी के वियोग से दुखी होकर देवदत्त ने नृहरि यानी नृसिंह रूप विष्णु को शाप दिया, "तुम्हें भी अपनी पत्नी से बिछड़ना पड़ेगा।"

1.1.65

भृगुणैवं कुमारेण शापितो देवशर्मणा । वृन्दया शापितो विष्णुस्तेन मानुष्यतां गतः ॥ ६५ ॥

bhṛguṇaivam kumāreṇa śāpito devaśarmaṇā | vṛndayā śāpito viṣṇustena mānuṣyatām gataḥ || 65 ||

Thus cursed by Bhrigu, by Kumara, and by Devasharma, and cursed also by Vrinda, Vishnu, because of these curses, took birth as a human.

इस तरह भृगु, कुमार और देवशर्मा के शाप से, और वृन्दा के शाप से भी, विष्णु इन्हीं शापों के कारण मनुष्य बनकर जन्मे।

1.1.66

एतत्ते कथितं सर्वे शापव्याजस्य कारणम् । इदानीं वच्मि तत्सर्वे सावधानमतिः शृणु ॥ ६६ ॥

etatte kathitam sarve śāpavyājasya kāraṇam | idānīm vacmi tatsarve sāvadhānamatiḥ śṛṇu || 66 ||

I have told you all this, the reason behind the guise of the curse. Now I will tell you the rest of it; listen with careful attention.

मैंने तुम्हें यह सब बता दिया, यही शाप के बहाने का असली कारण है। अब मैं बाकी सब कुछ बताता हूँ, ध्यान से सुनो।

Chapter 2

1.2.1

दिवि भूमौ तथाकाशे बहिरन्तश्च मे विभुः । यो विभात्यवभासात्मा तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १ ॥

divi bhūmau tathākāśe bahirantaśca me vibhuḥ | yo vibhātyavabhāsātmā tasmai sarvātmane namaḥ || 1 ||

In heaven, on earth, and in the sky, outside me and inside me, there shines a being who is present everywhere and whose very nature is light. I bow to that self of all.

स्वर्ग में, धरती पर, आकाश में, और मेरे बाहर तथा मेरे भीतर, वह सब जगह मौजूद प्रभु चमकता है, जिसका स्वभाव ही प्रकाश है। उस सबके आत्मा को मेरा नमस्कार है।

1.2.2

वाल्मीकिरुवाच । अहं बद्धो विमुक्तः स्यामिति यस्यास्ति निश्चयः । नात्यन्तमज्ञो नोत ज्ञः सोऽस्मिच्छास्त्रेऽधिकारवान् ॥ २ ॥

*vālmīkiruvāca | ahaṁ baddho vimuktaḥ syāmiti yasyāsti niścayaḥ | nātyantamajño nota jñāḥ
so'smiñchāstre'dhikāravān || 2 ||*

Valmiki said: Whoever has decided, "I am bound; let me become free," is neither completely ignorant nor already wise. That person is the one fit for this teaching.

वाल्मीकि ने कहा: जिस किसी ने यह तय कर लिया है कि "मैं बंधा हूँ, मुझे मुक्त होना है," वह न तो पूरी तरह अनजान है और न ही पूरी तरह ज्ञानी। यही व्यक्ति इस शास्त्र को सीखने के योग्य है।

1.2.3

कथोपायान्विचार्यादौ मोक्षोपायानिमानथ । यो विचारयति प्राज्ञो न स भूयोऽभिजायते ॥ ३ ॥

kathopāyān vicāryādau mokṣopāyān imānatha | yo vicārayati prājño na sa bhūyo'bhijāyate || 3 ||

Whoever first thinks over the ways told in this story, and then thinks over these ways to freedom, that wise person, having thought it through, is not born again.

जो व्यक्ति पहले इस कथा में बताए गए उपायों पर सोचता है, और फिर मुक्ति के इन उपायों पर सोचता है, वह समझदार व्यक्ति फिर से जन्म नहीं लेता।

1.2.4

अस्मिन्नामायणे रामकथोपायान्महाबलान् । एतांस्तु प्रथमं कृत्वा पुराहमरिमर्दन ॥ ४ ॥

asminrāmāyaṇe rāmakathopāyān mahābalān | etānstu prathamam kṛtvā purāhamarimardana || 4 ||

In this Ramayana there are these very powerful ways drawn from Rama's story. Long ago, O crusher of enemies, I put these together first.

इस रामायण में राम की कथा से निकले ये बहुत शक्तिशाली उपाय हैं। बहुत पहले, हे शत्रुओं को हराने वाले, मैंने इन्हें सबसे पहले तैयार किया था।

1.2.5

शिष्यायास्मि विनीताय भरद्वाजाय धीमते । एकाग्रो दत्तवांस्तस्मै मणिमब्धिरिवार्थिने ॥ ५ ॥

śiṣyāyāsmi vinitāya bharadvājāya dhimate | ekāgro dattavāṁstasmai maṇimabdhirivārthine || 5 ||

I gave them, with full attention, to my humble and wise disciple Bharadvaja, the way the ocean gives a jewel to someone who asks for it.

मैंने पूरे ध्यान से वे उपाय अपने विनम्र और बुद्धिमान शिष्य भरद्वाज को दिए, जैसे समुद्र किसी माँगने वाले को रत्न देता है।

1.2.6

तत एते कथोपाया भरद्वाजेन धीमता । कस्मिंश्चिन्मेरुगहने ब्रह्मणोऽग्र उदाहृताः ॥ ६ ॥

tat ete kathopāyā bharadvājena dhīmatā | kasmīṁścinmerugahane brahmaṇo'gra udāhṛtāḥ || 6 ||

Then, in some deep part of Mount Meru, the wise Bharadvaja spoke of these ways from the story, in front of Brahma.

फिर मेरु पर्वत के किसी घने भाग में, बुद्धिमान भरद्वाज ने ब्रह्मा के सामने कथा के इन उपायों को बताया।

1.2.7

अथास्य तुष्टो भगवान्ब्रह्मा लोकपितामहः । वरं पुत्रं गृहाणेति तमुवाच महाशयः ॥ ७ ॥

athāsya tuṣṭo bhagavānbrahmā lokapitāmahaḥ | varaṁ putra gṛhāṇeti tamuvāca mahāśayaḥ || 7 ||

Then Lord Brahma, the grandfather of all worlds, was pleased with him. That great one said to him, "Son, ask for a gift."

तब भगवान् ब्रह्मा, जो सब लोकों के पितामह हैं, उससे प्रसन्न हुए। उस महापुरुष ने उससे कहा, "पुत्र, वरदान माँगो।"

1.2.8

भरद्वाज उवाच । भगवन्भूतभव्येश वरोऽयं मेऽद्य रोचते । येनेयं जनता दुःखान्मुच्यते तदुदाहर ॥ ८ ॥

bharadvāja uvāca | bhagavanbhūtabhavyeśa varo'yaṁ me'dya rocate | yene'yaṁ janatā duḥkhānmucyate tadudāhara || 8 ||

Bharadvaja said: Lord, master of the past and the future, today this is the gift I want. Tell me what frees people from suffering.

भरद्वाज ने कहा: हे भगवन, भूत और भविष्य के स्वामी, आज मुझे यही वरदान चाहिए। बताइए कि लोग दुःख से कैसे मुक्त होते हैं।

1.2.9

श्रीब्रह्मोवाच । गुरुं वाल्मीकिमत्राशु प्रार्थयस्व प्रयत्नतः । तेनेदं यत्समारब्धं रामायणमनिन्दितम् ॥ ९ ॥

śrībrahmovāca | guruṁ vālmīkimatṛāśu prārthayasva prayatnataḥ | tenedaṁ yatsamārabdham rāmāyaṇamaninditam || 9 ||

Brahma said: Quickly, and with full effort, beg the teacher Valmiki about this. He is the one who has begun this faultless Ramayana.

ब्रह्मा ने कहा: शीघ्र ही, पूरी कोशिश से, गुरु वाल्मीकि से यह विनती करो। उन्होंने ही यह निर्दोष रामायण आरंभ किया है।

1.2.10

तस्मिञ्छ्रुते नरो मोहात्समग्रात्सन्तरिष्यति । सेतुनेवाम्बुधेः पारमपारगुणशालिना ॥ १० ॥

tasmiñchrute naro mohātsamagrātsantariṣyati | setunevāmbudheḥ pāramapāraguṇaśālīnā || 10 ||

When that Ramayana is heard, a person will cross over delusion completely, the way someone crosses to the far side of the ocean by a bridge full of countless good qualities.

उस रामायण को सुनकर मनुष्य मोह के पार पूरी तरह हो जाएगा, जैसे कोई असंख्य अच्छे गुणों वाले पुल से समुद्र के उस पार पहुँच जाता है।

1.2.11

श्रीवाल्मीकिरुवाचैत्युक्त्वा स भरद्वाजं परमेष्ठी मदाश्रममभ्यागच्छत्समं तेन भरद्वाजेन भूतकृत् ॥ ११ ॥

śrīvālmīkiruvācāityuktvā sa bharadvājaṁ parameṣṭhī madāśramamabhyāgacchatsamaṁ tena bharadvājena bhūtakṛt || 11 ||

Valmiki said: Having said this to Bharadvaja, Brahma, the creator of all beings, the highest one, came to my hermitage together with that Bharadvaja.

वाल्मीकि ने कहा: भरद्वाज से यह कहकर, सब प्राणियों के रचयिता, सर्वोच्च ब्रह्मा, उसी भरद्वाज के साथ मेरे आश्रम में आए।

1.2.12

तूर्ण संपूजितो देवः सोऽर्घ्यपाद्यादिना मया अवोचन्मां महासत्त्वः सर्वभूतहिते रतः ॥ १२ ॥

tūrṇaṃ saṃpūjito devaḥ so'rghyapādyādīnā mayā avocanmāṃ mahāsattvaḥ sarvabhūtahite rataḥ || 12 ||

I quickly honored that god with a welcome offering, water for his feet, and other such things. Then that great being, who cares for the good of every creature, spoke to me.

मैंने उस देवता का जल्दी से सम्मान किया - स्वागत में जल चढ़ाकर, पैर धोने का पानी देकर, और ऐसी ही और चीजें करके। फिर उस महान हस्ती ने, जो हर जीव की भलाई चाहते हैं, मुझसे कहा।

1.2.13

रामस्वभावकथनादस्माद्वरमुने त्वयानोद्वेगात्स परित्याज्य आसमाप्तेरनिन्दितात् ॥ १३ ॥

rāmasvabhāvakathanā dasmādvaramune tvayā nodvegātsa parityājya āsamāptēraninditāt || 13 ||

This telling of Rama's true nature, O best of sages, you must not give up out of worry - not until this blameless work is complete.

राम के असली स्वभाव की यह कथा, हे श्रेष्ठ मुनि, तुम चिंता में आकर मत छोड़ना - जब तक यह निर्दोष रचना पूरी न हो जाए।

1.2.14

ग्रन्थेनानेन लोकोऽयमस्मात्संसारसंकटात्समुत्तरिष्यति क्षिप्रं पोतेनेवाशु सागरात् ॥ १४ ॥

granthenānena loko'yamasmaṃsārasaṃkaṭātsamuttariṣyati kṣipraṃ potenevāśu sāgarāt || 14 ||

By this book, this world will quickly cross over this danger of worldly existence, just as a boat swiftly carries someone across the ocean.

इस ग्रंथ के सहारे यह संसार जल्दी ही सांसारिक जीवन के इस संकट को पार कर जाएगा, जैसे नाव किसी को समुद्र के पार जल्दी से ले जाती है।

1.2.15

वक्तुं तदेवमेवार्थमहमागतवानयमकुरु लोकहितार्थं त्वं शास्त्रमित्युक्तवानजः ॥ १५ ॥

vaktuṃ tadevamevā rthamahamāgata vānayaṃ kuru lokahitārthaṃ tvaṃ śāstramityuktavānajaḥ || 15 ||

'I have come only to say this: compose a scripture for the good of the world.' So said the Unborn One.

'मैं सिर्फ़ यही बात कहने आया हूँ - संसार की भलाई के लिए एक शास्त्र की रचना करो।' ऐसा उस अजन्मे ने कहा।

1.2.16

मम पुण्याश्रमात्तस्मात्क्षणादन्तर्द्धिमागतः । मुहूर्ताभ्युत्थितः प्रोच्चैस्तरङ्ग इव वारिणः ॥ १६ ॥

mama puṇyāśramā tasmātkṣaṇādantarddhimāgataḥ | muhūrtābhyutthitaḥ procchais taraṅga iva vāriṇaḥ || 16 ||

In an instant he vanished from my sacred hermitage - he had risen up for just a moment, high, like a wave of water.

एक ही पल में वह मेरे पवित्र आश्रम से गायब हो गया - वह बस एक पल के लिए ऊँचा उठा था, जैसे पानी की कोई लहर उठती है।

1.2.17

तस्मिन्प्रयाते भगवत्यहं विस्मयमागतः । पुनस्तत्र भरद्वाजमपृच्छं स्वस्थया धिया ॥ १७ ॥

tasmin prayāte bhagavatya ahaṃ vismayam āgataḥ | punas tatra bharadvājam aprcchaṃ svasthayā dhiyā || 17 ||

When the Lord had left, I was filled with wonder. Then, with a calm mind, I again asked Bharadvaja there.

जब वह भगवान चले गए, तो मैं चकित रह गया। फिर, शांत मन से, मैंने वहाँ फिर से भरद्वाज से पूछा।

1.2.18

किमेतद्ब्रह्मणा प्रोक्तं भरद्वाज वदाशु मे । इत्युक्तेन पुनः प्रोक्तं भरद्वाजेन तेन मे ॥ १८ ॥

kim etad brahmaṇā proktaṁ bharadvāja vadāśu me | ityuktena punaḥ proktaṁ bharadvājena tena me || 18 ||

'What is this that Brahma has said, Bharadvaja? Tell me quickly.' When I said this, Bharadvaja spoke to me again.

'ब्रह्मा ने यह क्या कहा है, भरद्वाज? मुझे जल्दी बताओ।' जब मैंने ऐसा कहा, तो भरद्वाज ने मुझसे फिर से कहा।

1.2.19

भरद्वाज उवाच । एतदुक्तं भगवता यथा रामायणं कुरु । सर्वलोकहितार्थाय संसारार्णवतारकम् ॥ १९ ॥

bharadvāja uvāca | etad uktaṁ bhagavatā yathā rāmāyaṇaṁ kuru | sarvalokahitārthāya saṁsārārṇavatārakam || 19 ||

Bharadvaja said: The Lord has said this - 'Compose the Ramayana, for the good of all people, as the means to cross the ocean of worldly existence.'

भरद्वाज ने कहा - भगवान ने यह कहा है: 'रामायण की रचना करो, सब लोगों की भलाई के लिए, जो संसार के सागर को पार करने का साधन बने।'

1.2.20

मह्यं च भगवन्ब्रूहि कथं संसारसंकटे । रामो व्यवहृतो ह्यस्मिन्भरतश्च महामनाः ॥ २० ॥

mahyam ca bhagavan brūhi katham saṁsārasaṅkaṭe | rāmo vyavahṛto hy asmin bharataś ca mahāmanāḥ || 20 ||

And tell me too, holy one, how Rama conducted himself amid this hardship of worldly life, and Bharata of the great mind.

और मुझे भी बताइए, हे पूज्य, कि इस सांसारिक कठिनाई में राम ने कैसा व्यवहार किया, और महान बुद्धि वाले भरत ने भी कैसा व्यवहार किया।

1.2.21

शत्रुघ्नो लक्ष्मणश्चापि सीता चापि यशस्विनी । रामानुयायिनस्ते वा मन्त्रिपुत्रा महाधियः ॥ २१ ॥

śatrughno lakṣmaṇaścāpi sītā cāpi yaśasvinī | rāmānuyāyinaste vā mantriputrā mahādhiyaḥ || 21 ||

And Shatrughna, and Lakshmana too, and the famous Sita, and those followers of Rama - the wise sons of ministers.

और शत्रुघ्न, और लक्ष्मण भी, और मशहूर सीता भी, और राम के वे अनुयायी - मंत्रियों के बुद्धिमान बेटे भी।

1.2.22

निर्दुःखितां यथैते नु प्राप्तास्तद्ब्रूहि मे स्फुटम् । तथैवाहं भविष्यामि ततो जनतया सह ॥ २२ ॥

nirduḥkhitāṁ yathaitē nu prāptāstadbrūhi me sphuṭam | tathaiivāhaṁ bhaviṣyāmi tato janatayā saha || 22 ||

Tell me clearly how they came to be free from sorrow. Then I too shall become the same, together with everyone else.

मुझे साफ़-साफ़ बताइए कि वे दुख से मुक्त कैसे हुए। फिर मैं भी वैसा ही बन जाऊँगा, बाकी सब लोगों के साथ।

1.2.23

भरद्वाजेन राजेन्द्र वदेत्युक्तोऽस्मि सादरम् । तदा कर्तुं विभोराज्ञामहं वक्तुं प्रवृत्तवान् ॥ २३ ॥

bharadvājena rājendra vadetyukto'smi sādaram | tadā kartuṁ vibhorājñāmaham vaktuṁ pravṛttavān || 23 ||

O great king, Bharadvaja respectfully asked me, 'Please speak.' Then, to carry out the great one's command, I began to speak.

हे महाराज, भरद्वाज ने मुझसे आदरपूर्वक कहा, 'कृपया बोलिए।' तब उस महान पुरुष की आज्ञा का पालन करने के लिए मैंने बोलना शुरू किया।

1.2.24

शृणु वत्स भरद्वाज यथापृष्टं वदामि ते । श्रुतेन येन संमोहमलं दूरे करिष्यसि ॥ २४ ॥

śṛṇu vatsa bharadvāja yathāpṛṣṭaṃ vadāmi te | śruteṇa yena saṃmohamalaṃ dūre kariṣyasi || 24 ||

Listen, child Bharadvaja. I will tell you exactly what you asked. By hearing it, you will drive away the stain of confusion completely.

सुनो वत्स भरद्वाज, तुमने जो पूछा है वही मैं तुम्हें बताता हूँ। इसे सुनकर तुम अपने मोह के मैल को पूरी तरह दूर कर दोगे।

1.2.25

तथा व्यवहर प्राज्ञ यथा व्यवहृतः सुखी । सर्वासंसक्त्या बुद्ध्या रामो राजीवलोचनः ॥ २५ ॥

tathā vyavahara prājña yathā vyavahṛtaḥ sukhī | sarvāsamsaktyā buddhyā rāmo rājīvalocanaḥ || 25 ||

Wise one, act in the world in such a way that your actions make you happy - the way the lotus-eyed Rama acts, his mind not attached to anything at all.

हे बुद्धिमान्, संसार में इस तरह व्यवहार करो कि तुम्हारा व्यवहार तुम्हें सुखी बनाए - जैसे कमल जैसी आँखों वाले राम व्यवहार करते हैं, जिनकी बुद्धि किसी भी चीज़ से बिलकुल आसक्त नहीं है।

1.2.26

लक्ष्मणो भरतश्चैव शत्रुघ्नश्च महामनाःकौसल्या च सुमित्रा च सीता दशरथस्तथा ॥ २६ ॥

lakṣmaṇo bharataścaiva śatrughnaśca mahāmanāḥkausalyā ca sumitrā ca sītā daśarathastathā || 26 ||

Lakshmana, Bharata, and the great-souled Shatrughna; Kausalya, Sumitra, Sita, and Dasharatha as well.

लक्ष्मण, भरत और महान आत्मा वाले शत्रुघ्न; कौसल्या, सुमित्रा, सीता और दशरथ भी।

1.2.27

कृतास्त्रश्चाविरोधश्च बोधपारमुपागताःवसिष्ठो वामदेवश्च मन्त्रिणोऽष्टौ तथेतरे ॥ २७ ॥

kṛtāstraśca'avirodhaśca bodhapāramupāgatāḥvasiṣṭho vāmadevaśca mantriṇo'ṣṭau tathetare || 27 ||

Kritastra and Avirodha have reached the far shore of true knowledge. So have Vasishtha and Vamadeva, the eight ministers, and all the others.

कृतास्त्र और अविरोध सच्चे ज्ञान के परम तट तक पहुँच चुके हैं। वसिष्ठ और वामदेव, आठों मंत्री, और बाकी सब भी वहीं पहुँच चुके हैं।

1.2.28

धृष्टिर्जयन्तो भासश्च सत्यो विजय एव चविभीषणः सुषेणश्च हनुमानिन्द्रजित्तथा ॥ २८ ॥

dhr̥ṣṭirjayanto bhāsaśca satyo vijaya eva cavibhīṣaṇaḥ suṣeṇaśca hanumānindrajittathā || 28 ||

Dhrishti, Jayanta, and Bhasa; Satya and Vijaya too; Vibhishana, Sushena, and Hanuman; and Indrajit as well.

धृष्टि, जयन्त और भास; सत्य और विजय भी; विभीषण, सुषेण और हनुमान; और इन्द्रजित भी।

1.2.29

एतेऽष्टौ मन्त्रिणः प्रोक्ताः समनीरागचेतसःजीवन्मुक्ता महात्मानो यथाप्राप्तानुवर्तिनः ॥ २९ ॥

ete'ṣṭau mantriṇaḥ proktāḥ samanīrāgacetasaḥjīvanmuktā mahātmāno yathāprāptānuvartinaḥ || 29 ||

These eight are called the ministers. Their minds are even and free from passion. They are liberated while still alive, great souls who simply accept whatever comes their way.

इन आठों को मंत्री कहा जाता है। इनका मन सम है और राग से मुक्त है। ये जीते-जी मुक्त हैं, महान आत्माएँ हैं, जो कुछ भी मिले उसी में संतुष्ट रहते हैं।

1.2.30

एतैर्यथा हुतं दत्तं गृहीतमुषितं स्मृतस्तथा चेद्वर्तसे पुत्र मुक्त एवासि संकटात् ॥ ३० ॥

etairiyathā hutaṁ dattaṁ grhītamūṣitaṁ smṛtamtathā cedvartase putra mukta evāsi saṁkaṭāt || 30 ||

If you, my son, conduct yourself the way these men do - in making offerings, in giving, in receiving, in living, and in remembering - then you are indeed free from all trouble.

हे पुत्र, यदि तुम भी इन्हीं की तरह आचरण करो - हवन करने में, देने में, लेने में, रहने में और स्मरण करने में - तो तुम निश्चय ही हर मुसीबत से मुक्त हो।

1.2.31

अपारसंसारसमुद्रपाती लब्ध्वा परां युक्तिमुदारसत्त्वः । न शोकमायाति न दैन्यमेति गतज्वरस्तिष्ठति नित्यतृप्तः ॥ ३१ ॥

apārasaṁsārasamudrapātī labdhvā parāṁ yuktimudārasattvaḥ | na śokamāyāti na dainyameti

gatajvarastiṣṭhati nityatrptaḥ || 31 ||

A person who has fallen into the endless ocean of this world, but who has gained the highest way and has a noble nature, does not fall into grief and does not become wretched. Free from all torment, he remains always content.

जो व्यक्ति इस संसार के अंतहीन सागर में गिरा हुआ है, पर जिसने सर्वश्रेष्ठ उपाय पा लिया है और जो उदार स्वभाव का है, वह न तो शोक में पड़ता है और न ही दीन-हीन होता है। वह हर पीड़ा से मुक्त होकर सदा संतुष्ट रहता है।

Chapter 3

1.3.1

भरद्वाज उवाच । जीवन्मुक्तस्थितिं ब्रह्मन्कृत्वा राघवमादितः । क्रमात्कथय मे नित्यं भविष्यामि सुखी यथा ॥ १ ॥

bharadvāja uvāca | jīvanmuktasthitiṃ brahmankṛtvā rāghavamāditaḥ | kramaatkathaya me nityaṃ bhaviṣyāmi sukhī yathā || 1 ||

Bharadvaja said, "Brahmin, starting with Rama's state of being free while still alive, tell me everything in order, so that I may always be happy."

भरद्वाज ने कहा, "हे ब्राह्मण, राम की जीते-जी मुक्ति की स्थिति से शुरू करके मुझे सब कुछ क्रम से बताइए, ताकि मैं हमेशा सुखी रह सकूँ।"

1.3.2

श्रीवाल्मीकिरुवाच । भ्रमस्य जागतस्यास्य जातस्याकाशवर्णवत् । अपुनःस्मरणं मन्ये साधो विस्मरणं वरम् ॥ २ ॥

śrīvālmīkiruvāca | bhramasya jāgatasyaśasya jātasyākāśavarṇavat | apunahsmaraṇaṃ manye sādho vismaraṇaṃ varam || 2 ||

Sri Valmiki said, "This confusion about the world arose the way a color seems to appear in the empty sky, when nothing is really there. I think, good sir, that forgetting it completely, so that it never comes to mind again, is the best thing."

श्री वाल्मीकि ने कहा, "यह जगत का भ्रम उसी तरह पैदा हुआ जैसे खाली आकाश में कोई रंग दिखाई दे जाए, जबकि वहाँ कुछ है ही नहीं। हे साधु, मुझे लगता है कि इसे पूरी तरह भूल जाना ही सबसे अच्छा है, ताकि यह फिर कभी याद न आए।"

1.3.3

दृश्यात्यन्ताभावबोधं विना तन्नानुभूयते । कदाचित्केनचिन्नाम स्वबोधोऽन्विष्यतामतः ॥ ३ ॥

dr̥śyātyantābhāvabodhaṃ vinā tannaanubhūyate | kadācitskenacinnaṃ svabodhoऽnviṣyatāmatḥ || 3 ||

But no one, ever, experiences that forgetting without first realizing that the visible world does not exist at all. So, whoever you are, seek to know your own true self.

पर यह भूलना तब तक किसी को कभी नहीं होता, जब तक यह न जान लिया जाए कि दिखने वाला यह संसार वास्तव में है ही नहीं। इसलिए, तुम जो भी हो, अपने असली स्वरूप को जानने का प्रयास करो।

1.3.4

स चेह संभवत्येव तदर्थमिदमाततम् । शास्त्रमाकर्णयसि चेत्तत्त्वमाप्स्यसि नान्यथा ॥ ४ ॥

sa ceha saṃbhavatyeva tadarthamidamātataṃ | śāstramākaraṇayasi cet tattvamāpsyasi nānyathā || 4 ||

And that knowledge can indeed be reached in this life; this scripture has been made this long and detailed for that very purpose. If you listen to it carefully, you will reach the truth, and not otherwise.

और यह ज्ञान इसी जीवन में पाया जा सकता है; यह शास्त्र इसी उद्देश्य के लिए इतना विस्तार से रचा गया है। यदि तुम इस शास्त्र को ध्यान से सुनोगे, तो सत्य को पा लोगे, और किसी और तरीके से नहीं।

1.3.5

जगद्भ्रमोऽयं दृश्योऽपि नास्त्येवेत्यनुभूयते । वर्णो व्योम्न इवाखेदाद्विचारेणामुनाऽनघ ॥ ५ ॥

jagadbhramo'ayam dr̥śyo'api nāstyeve'tyanubhūyate | varṇo vyomna ivākhedādvicāreṇāmunā'angha || 5 ||

This confusion we call "the world," although it is seen, is found through this inquiry, without any real struggle, to not exist at all, O sinless one, the way a color seems to appear in the empty sky.

यह भ्रम जिसे हम "संसार" कहते हैं, भले ही दिखाई देता हो, इस विचार से बिना किसी बड़े परिश्रम के यह पता चलता है, हे निष्पाप, कि यह वास्तव में है ही नहीं, जैसे खाली आकाश में कोई रंग दिखाई दे।

1.3.6

दृश्यं नास्तीति बोधेन मनसो दृश्यमार्जनम् । संपन्नं चेत्तदुत्पन्ना परा निर्वाणनिर्वृतिः ॥ ६ ॥

dr̥śyaṃ nāstīti bodhena manaso dr̥śyamārjanam | sampannaṃ cet tadutpannā parā nirvāṇanirvṛtiḥ || 6 ||

When, through the understanding that "the visible world does not exist," the mind is fully cleansed of the visible world, then the highest bliss of liberation is born from that.

जब "यह दिखने वाला संसार है ही नहीं" इस समझ से मन दिखने वाले संसार से पूरी तरह साफ हो जाता है, तब उससे मोक्ष का सबसे ऊँचा आनंद पैदा होता है।

1.3.7

अन्यथा शास्त्रगर्तेषु लुठतां भवतामिह । भवत्यकृत्रिमाज्ञानां कल्पैरपि न निर्वृतिः ॥ ७ ॥

anyathā śāstragarteṣu luṭhatāṃ bhavatāmiha | bhavatyakṛtrimājñānāṃ kalpairapi na nirvṛtiḥ || 7 ||

Otherwise, for people like you who only roll about in the pits of scripture, and whose ignorance is real and deep, liberation will not come even after countless ages.

नहीं तो, तुम जैसे लोग जो सिर्फ शास्त्रों के गड्ढों में लोटते रहते हैं, और जिनका अज्ञान सच्चा और गहरा है, उन्हें युगों-युगों तक भी मुक्ति नहीं मिलेगी।

1.3.8

अशेषेण परित्यागो वासनानां य उत्तमः । मोक्षं इत्युच्यते ब्रह्मन्स एव विमलक्रमः ॥ ८ ॥

aśeṣeṇa parityāgo vāsanānāṃ ya uttamah | mokṣaṃ ityucyate brahmansa eva vimalakramah || 8 ||

To give up all desires completely, leaving nothing behind, is the highest thing to do, and it is called liberation, O Brahmin. This alone is the pure path.

सारी वासनाओं को पूरी तरह त्याग देना, कुछ भी बाकी न छोड़ना, यही सबसे बड़ी बात है, और इसी को मोक्ष कहा जाता है, हे ब्राह्मण। यही शुद्ध मार्ग है।

1.3.9

क्षीणायां वासनायां तु चेतो गलति सत्वरम् । क्षीणायां शीतसंतत्यां ब्रह्मन्निमकणो यथा ॥ ९ ॥

kṣhīṇāyāṃ vāsanāyāṃ tu ceto galati satvaram | kṣhīṇāyāṃ śītasantatyāṃ brahmanhimakaṇo yathā || 9 ||

But once desire is used up, the mind melts away quickly, O Brahmin, the way a grain of frost melts once the spell of cold is broken.

पर वासना खत्म होते ही मन जल्दी पिघल जाता है, हे ब्राह्मण, जैसे ठंड का असर खत्म होते ही बर्फ का एक कण पिघल जाता है।

1.3.10

अयं वासनया देहो ध्रियते भूतपञ्जरः । तनुनान्तर्निविष्टेन मुक्तौघस्तन्तुना यथा ॥ १० ॥

ayaṃ vāsanayā deho dhriyate bhūtapañjarah | tanunāntarniviṣṭena muktaughstantunā yathā || 10 ||

This body, a cage made of the elements, is held together by desire, the way a string of pearls is held together by the thin thread running through the inside of them.

यह शरीर, जो पंच तत्वों का एक पिंजरा है, वासना के कारण टिका रहता है, जैसे मोतियों की माला अंदर से गुजरने वाले पतले धागे से जुड़ी रहती है।

1.3.11

वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा । मलिना जन्मनो हेतुः शुद्धा जन्मविनाशिनी ॥ ११ ॥

vāsanā dvividhā proktā śuddhā ca malinā tathā | malinā janmano hetuḥ śuddhā janmavināśinī || 11 ||

Desire is said to be of two kinds: pure and impure. The impure desire is the cause of birth; the pure desire destroys birth.

वासना दो तरह की कही गई है, शुद्ध और मलिन। मलिन वासना जन्म का कारण है, और शुद्ध वासना जन्म का नाश करने वाली है।

1.3.12

अज्ञानसुघनाकारा घनाहंकारशालिनी । पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता मलिना वासना बुधैः ॥ १२ ॥

ajñānasughanākārā ghanāhaṃkāraśālīnī | punarjanmakarī proktā malinā vāsanā budhaiḥ || 12 ||

The wise call it "impure desire" when it is thick with ignorance, heavy with ego, and brings about rebirth.

जो वासना अज्ञान से भरी हो, घने अहंकार से भरी हो, और फिर से जन्म दिलाने वाली हो, उसे बुद्धिमान लोग "मलिन वासना" कहते हैं।

1.3.13

पुनर्जन्माङ्कुरं त्यक्त्वा स्थिता संभृष्टबीजवत् । देहार्थं ध्रियते ज्ञातज्ञेया शुद्धेति चोच्यते ॥ १३ ॥

punarjanmāṅkuraṃ tyaktvā sthitā saṃbhr̥ṣṭabījavat | dehārthaṃ dhriyate jñātajñeyā śuddheti cocyate || 13 ||

But the desire that has given up the sprout of rebirth, and stays like a seed that has been fully roasted and so can never sprout again, and is kept alive only for the sake of the body, by one who has known what is to be known, that is called "pure desire."

पर जो वासना फिर से जन्म लेने के अंकुर को त्याग चुकी हो, अच्छी तरह भुने हुए बीज की तरह हो जो अब कभी नहीं उगेगा, और जिसे ज्ञानी पुरुष सिर्फ शरीर को बनाए रखने के लिए रखता है, उसे "शुद्ध वासना" कहा जाता है।

1.3.14

अपुनर्जन्मकरणी जीवन्मुक्तेषु देहिषु । वासना विद्यते शुद्धा देहे चक्र इव भ्रमः ॥ १४ ॥

apunarjanmakaraṇī jīvanmukteṣu dehiṣu | vāsanā vidyate śuddhā dehe cakra iva bhramaḥ || 14 ||

In people who are free while still alive, a pure desire remains that does not bring about rebirth. It stays in the body the way a wheel, once set spinning, keeps turning for a while.

जो लोग जीते-जी मुक्त हो चुके हैं, उनमें एक शुद्ध वासना बनी रहती है जो फिर से जन्म नहीं देती, यह शरीर में उसी तरह बनी रहती है जैसे एक बार घुमाया हुआ चक्र कुछ देर तक घूमता रहता है।

1.3.15

ये शुद्धवासना भूयो न जन्मानर्थभाजनम् । ज्ञातज्ञेयास्त उच्यन्ते जीवन्मुक्ता महाधियः ॥ १५ ॥

ye śuddhavāsanā bhūyo na janmānarthabhājanam | jñātajñeyāsta ucyante jīvanmuktā mahādhiyaḥ || 15 ||

Those whose desire is pure, who are no longer subject to the trouble of being born again, who have known what is to be known, they, of great wisdom, are called "free while still alive."

जिनकी वासना शुद्ध हो चुकी है, जो अब दोबारा जन्म लेने के दुख से मुक्त हो चुके हैं, जिन्होंने वह जान लिया है जो जानने योग्य है, ऐसे महाबुद्धिमान लोगों को "जीते-जी मुक्त" कहा जाता है।

1.3.16

जीवन्मुक्तिपदं प्राप्तो यथा रामो महामतिः । तत्तेऽहं शृणु वक्ष्यामि जरामरणशान्तये ॥ १६ ॥

jīvanmuktipadam prāpto yathā rāmo mahāmatih | tatte'haṁ śṛṇu vakṣyāmi jarāmaraṇaśāntaye || 16 ||

Listen, I will tell you how Rama, a man of great wisdom, reached the state of being free while still alive, so that old age and death may come to an end.

सुनो, मैं तुम्हें बताऊँगा कि राम, जो महान बुद्धिमान थे, कैसे जीते-जी मुक्ति की स्थिति तक पहुँचे, ताकि बुढ़ापा और मृत्यु का अंत हो सके।

1.3.17

भरद्वाज महाबुद्धे रामक्रममिमं शुभम् । शृणु वक्ष्यामि तेनैव सर्वं ज्ञास्यसि सर्वदा ॥ १७ ॥

bharadvāja mahābuddhe rāmakramamimam śubham | śṛṇu vakṣyāmi tenaiva sarvaṁ jñāsyasi sarvadā || 17 ||

Bharadvaja, you of great intelligence, listen to this good and complete account of Rama's life. I will tell it to you, and through it alone you will always know everything.

हे भरद्वाज, हे महाबुद्धिमान, राम के इस शुभ जीवन-वृत्तांत को सुनो; मैं इसे तुम्हें बताऊँगा, और इसी से तुम हमेशा सब कुछ जान जाओगे।

1.3.18

विद्यागृहाद्विनिष्क्रम्य रामो राजीवलोचनः । दिवसान्यनयद्देहे लीलाभिरकुतोभयः ॥ १८ ॥

vidyāgrhādviniskramya rāmo rājīvalocanaḥ | divasānyanayaddehe līlābhirakutobhayaḥ || 18 ||

Rama, the lotus-eyed, came out of the school where he had studied, and spent his days at home in play, without any fear.

कमल जैसी आँखों वाले राम, जिस विद्यालय में पढ़े थे वहाँ से बाहर आकर, घर पर बिना किसी डर के खेल-कूद में अपने दिन बिताने लगे।

1.3.19

अथ गच्छति काले तु पालयत्यवनिं नृपे । प्रजासु वीतशोकासु स्थितासु विगतज्वरम् ॥ १९ ॥

atha gacchati kāle tu pālayatyavaninṛpe | prajāsu vītaśokāsu sthitāsu vigatajvaram || 19 ||

Then, as time passed, the king ruled the land, and his subjects lived free from sorrow and free from any distress.

फिर, समय बीतता गया, राजा राज्य की रक्षा करते रहे, और प्रजा दुख और किसी भी पीड़ा से मुक्त होकर रहने लगी।

1.3.20

तीर्थपुण्याश्रमश्रेणीर्द्रष्टुमुत्कण्ठितं मनः । रामस्याभूद्भूषं तत्र कदाचिद्गुणशालिनः ॥ २० ॥

tīrthapuṇyāśramaśreṇīrdr̥ṣṭumutkaṇṭhitaṁ manaḥ | rāmasyābhūdbhūṣam tatra kadācidguṇaśālinaḥ || 20 ||

At that time, Rama, a man full of good qualities, once felt a strong wish in his mind to go and see the many holy places and sacred hermitages.

उसी समय, गुणवान राम के मन में एक बार तीर्थों और पवित्र आश्रमों की पंक्तियों को देखने की तीव्र इच्छा जाग उठी।

1.3.21

राघवश्चिन्तयित्वैवमुपेत्य चरणौ पितुः । हंसः पद्माविव नवौ जग्राह नखकेसरौ ॥ २१ ॥

rāghavaścintayitvaivamupetya caraṇau pituḥ | haṁsaḥ padmāviva navau jagrāha nakhakesarau || 21 ||

Thinking this, Rama went to his father's feet and took hold of his toenails, which were fresh like two lotuses, the way a swan takes hold of the filaments inside two lotuses.

यह सोचकर राम अपने पिता के चरणों में गए और उनके नाखूनों को, जो दो ताजे कमलों जैसे थे, इस तरह पकड़ लिया जैसे कोई हंस दो कमलों की केसर को पकड़ लेता है।

1.3.22

श्रीराम उवाच । तीर्थानि देवसद्मानि वनान्यायतनानि च । द्रष्टुमुत्कण्ठितं तात ममेदं नाथ मानसम् ॥ २२ ॥

śrīrāma uvāca | tīrthāni devasadmāni vanānyāyatanāni ca | draṣṭumutkaṇṭhitam tāta mamedam nātha mānasam || 22 ||

Sri Rama said, "Father, my lord, my mind is eager to see the holy places, the temples of the gods, the forests, and the sacred shrines."

श्री राम ने कहा, "पिताजी, हे स्वामी, मेरा मन तीर्थों, देवताओं के मंदिरों, वनों और पवित्र स्थानों को देखने के लिए उत्सुक है।"

1.3.23

तदेतामर्थितां पूर्वा सफलां कर्तुमर्हसि । न सोऽस्ति भुवने नाथ त्वया योऽर्थी न मानितः ॥ २३ ॥

tadetāmarthitāṁ pūrvāṁ sapthalāṁ kartumarhasi | na so'sti bhuvane nātha tvayā yo'rthī na mānitaḥ || 23 ||

So you ought to make this earlier request of his succeed. There is no one in this world, my lord, who came asking and was not honored by you.

इसलिए आप उसकी इस पहले की गई विनती को अब पूरा करें। हे स्वामी, इस दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो आपके पास कुछ माँगने आया हो और आपने उसका सम्मान न किया हो।

1.3.24

इति संप्रार्थितो राजा वसिष्ठेन समं तदा । विचार्यामुञ्चदेवैनं रामं प्रथममर्थिनम् ॥ २४ ॥

iti saṁprārthito rājā vasiṣṭhena samam tadā | vicāryāmuñcadevainaṁ rāmaṁ prathamamarthinam || 24 ||

Asked like this, the king then thought it over together with Vasishtha, and let Rama go — Rama, who had asked first.

इस तरह विनती किए जाने पर राजा ने वसिष्ठ के साथ मिलकर सोच-विचार किया, और राम को जाने दिया - राम को, जिसने सबसे पहले यह माँग की थी।

1.3.25

शुभे नक्षत्रदिवसे भ्रातृभ्यां सह राघवः । मङ्गलालंकृतवपुः कृतस्वस्त्ययनो द्विजैः ॥ २५ ॥

śubhe nakṣatrādivase bhrāṭṛbhyāṁ saha rāghavaḥ | maṅgalālaṁkṛtavapuḥ kṛtasvastyayano dvijaiḥ || 25 ||

On an auspicious day, under a good star, Raghava, together with his two brothers, his body decked with auspicious ornaments, had brahmins perform blessing rites for him,

एक शुभ दिन, शुभ नक्षत्र में, राघव ने अपने दोनों भाइयों के साथ, शरीर पर मंगल के गहने पहनकर, ब्राह्मणों से मंगल-आशीर्वाद की रस्म करवाई,

1.3.26

वसिष्ठप्रहितैर्विप्रैः शास्त्रज्ञैश्च समन्वितः । स्निग्धैः कतिपयैरेव राजपुत्रवरैः सह ॥ २६ ॥

vasiṣṭhprahitairvipraiḥ śāstrajñaiśca samanvitaḥ | snigdhaiḥ katipayaireva rājaputravaraiḥ saha || 26 ||

joined by brahmins sent by Vasishtha who knew the scriptures well, and by just a few loving, excellent princes,

साथ ही वसिष्ठ के भेजे हुए शास्त्रों के जानकार ब्राह्मणों के साथ, और कुछ थोड़े से प्रेम करने वाले उत्तम राजकुमारों के साथ,

1.3.27

अम्बाभिर्विहिताशीभिरालिङ्ग्यालिङ्ग्य भूषितः । निरगात्स्वगृहात्तस्मात्तीर्थयात्रार्थमुद्यतः ॥ २७ ॥

ambābhirvihitāśībhirālīṅgyālīṅgya bhūṣitaḥ | niragātsvagrūhāttasmāttīrthayātrārthamudyataḥ || 27 ||

embraced again and again by his mothers who gave their blessings, and decked with ornaments, he went out from that home of his, ready to go on a pilgrimage to holy places.

अपनी माताओं से आशीर्वाद पाकर और बार-बार गले लगाया जाकर, गहनों से सजा हुआ, वह अपने घर से निकल पड़ा, तीर्थ-यात्रा पर जाने के लिए तैयार होकर।

1.3.28

निर्गतः स्वपुरात्पौरैस्तूर्यघोषेण वादितः । पीयमानः पुरस्त्रीणां नेत्रैर्भृङ्गौघभङ्गुरैः ॥ २८ ॥

nirgataḥ svapurātpauraiḥstūryaghoṣeṇa vāditaḥ | pīyamānaḥ purastrīṇāṃ netrairbhṛṅgaughabhaṅguraiḥ || 28 ||

Once he had left his own city, the citizens greeted him with the sound of musical instruments, and the women of the city drank him in with their eyes — eyes as restless as a swarm of bees.

अपने ही नगर से निकलकर, नगरवासियों ने बाजों की आवाज़ से उसका स्वागत किया, और नगर की स्त्रियाँ उसे अपनी आँखों से पी रही थीं - वे आँखें भौरों के झुंड की तरह चंचल थीं।

1.3.29

ग्रामीणललनालोलहस्तपद्मापनोदितैः । लाजवर्षैर्विकीर्णात्मा हिमैरिव हिमाचलः ॥ २९ ॥

grāmīṇalalanālahastapadmāpanoditaiḥ | lājavarṣairvikīrṇātmā himairiva himācalaḥ || 29 ||

Showered with roasted rice thrown by the restless lotus-hands of village women, his whole body was covered — like the Himalaya covered with snow.

गाँव की स्त्रियों के चंचल कमल जैसे हाथों से फेंके गए भुने हुए चावलों की बौछार से उसका पूरा शरीर ढक गया - जैसे हिमालय बर्फ से ढक जाता है।

1.3.30

आवर्जयन्विप्रगणान्परिशृण्वन्प्रजाशिषः । आलोकयन्दिगन्तांश्च परिचक्राम जाङ्गलान् ॥ ३० ॥

āvarjayanvipragāṇanpariśṛṇvanprajāśiṣaḥ | ālokeyandigantāṃśca paricakrāma jāṅgalān || 30 ||

Winning over the groups of brahmins, listening to the blessings of the people, and gazing at the far horizons, he wandered through the wild, dry forest lands.

ब्राह्मणों के समूहों का मन जीतते हुए, लोगों के आशीर्वाद सुनते हुए, और दूर के क्षितिज को निहारते हुए, वह सूखे जंगली इलाकों में घूमा।

1.3.31

अथारभ्य स्वकात्तस्मात्क्रमात्कोशलमण्डलात् । स्नानदानतपोध्यानपूर्वकं स ददर्श ह ॥ ३१ ॥

athārabhya svakāttasmātkramātkośhalamaṇḍalāt | snānadānatapodhyānapūrvakaṃ sa dadarśa ha || 31 ||

Then, beginning from his own kingdom of Koshala, he went on to see, step by step — always bathing, giving gifts, doing austerities, and meditating —

फिर, अपने ही कोसल राज्य से शुरू करके, वह क्रम-क्रम से देखने लगा - हर जगह स्नान करते, दान देते, तप करते और ध्यान करते हुए -

1.3.32

नदीतीराणि पुण्यानि वनान्यायतनानि च । जङ्गलानि जनान्तेषु तटान्यब्धिमहीभृताम् ॥ ३२ ॥

nadītīrāṇi puṇyāni vanānyāyatanāni ca | jaṅgalāni janānteṣu taṭānyabdhimahībhṛtām || 32 ||

the sacred river banks, the forests, the sacred shrines, the wild borderlands beyond the settlements, and the shores of the seas and the slopes of the mountains.

पवित्र नदियों के किनारे, जंगल, पवित्र तीर्थ-स्थान, बसी हुई भूमि के परे के जंगली इलाके, और समुद्रों के किनारे तथा पहाड़ों की ढलानें।

1.3.33

मन्दाकिनीमिन्दुनिभां कालिन्दीं चोत्पलामलाम् । सरस्वतीं शतद्रूं च चन्द्रभागामिरावतीम् ॥ ३३ ॥

mandākinīmīndunibhāṃ kālīndīṃ cotpalāmalām | sarasvatīṃ śatadrūṃ ca candrabhāgāmīrāvatīm || 33 ||

the Mandakini, pure like the moon, the Kalindi, spotless like the blue lotus, the Sarasvati, the Shatadru, the Chandrabhaga, and the Iravati.

मंदाकिनी को, जो चाँद जैसी उजली है, कालिंदी को, जो नीले कमल जैसी निर्मल है, सरस्वती को, शतद्रु को, चंद्रभागा को, और इरावती को।

1.3.34

वेणीं च कृष्णवेणीं च निर्विन्ध्यां सरयूं तथा । चर्मण्वतीं वितस्तां च विपाशां बाहुदामपि ॥ ३४ ॥

veṇīṃ ca kṛṣṇaveṇīṃ ca nirvindhyaṃ sarayūṃ tathā | carmaṇvatīṃ vitastāṃ ca vipāśāṃ bāhudāmapī || 34 ||

the Veni, the Krishnaveni, the Nirvindhya, the Sarayu too, the Charmanvati, the Vitasta, the Vipasha, and the Bahuda too.

वेणी को, कृष्णवेणी को, निर्विन्ध्या को, सरयू को भी, चर्मण्वती को, वितस्ता को, विपाशा को, और बाहुदा को भी।

1.3.35

प्रयागं नैमिषं चैव धर्मारण्यं गयां तथा । वाराणसीं श्रीगिरिं च केदारं पुष्करं तथा ॥ ३५ ॥

prayāgaṃ naimiṣaṃ caiva dharmāraṇyaṃ gayāṃ tathā | vārāṇasīṃ śrīgiriṃ ca kedāraṃ puṣkaraṃ tathā || 35 ||

Prayaga, Naimisha, Dharmaranya, and Gaya too, Varanasi, Shrigiri, Kedara, and Pushkara too.

प्रयाग, नैमिष, धर्मारण्य, और गया को भी, वाराणसी, श्रीगिरि, केदार, और पुष्कर को भी।

1.3.36

मानसं च क्रमसरस्तथैवोत्तरमानसम् । वडवावदनं चैव तीर्थवृन्दं स सादरम् ॥ ३६ ॥

mānasaṃ ca kramasarastathāivottaramānasam | vaḍavāvadanaṃ caiva tīrthavṛndaṃ sa sādaram || 36 ||

Lake Manasa, and Kramasara, and likewise Uttara-Manasa, and Vadavavadana too — he visited this whole group of holy places with reverence.

मानसरोवर को, क्रमसर को, और उसी तरह उत्तर-मानस को, और वडवावदन को भी - इन सब तीर्थों के समूह को उसने श्रद्धा के साथ देखा।

1.3.37

अग्नितीर्थं महातीर्थमिन्द्रद्युम्नसरस्तथा । सरांसि सरितश्चैव तथा नदह्रदावलीम् ॥ ३७ ॥

agnitīrthaṃ mahātīrthamindradyumnasarastathā | sarāṃsi saritaścaiva tathā nadahradāvalīm || 37 ||

Agnitirtha, Mahatirtha, and likewise Indradyumna lake, other lakes and rivers too, and rows of streams and pools.

अग्नितीर्थ, महातीर्थ, और उसी तरह इन्द्रद्युम्न सरोवर को, और भी झीलों और नदियों को, और नदी-नालों तथा जलाशयों की कतारों को।

1.3.38

स्वामिनं कार्तिकेयं च शालग्रामं हरिं तथा । स्थानानि च चतुःषष्टिं हरेरथ हरस्य च ॥ ३८ ॥

svāminam kārṭikeyaṃ ca śālagrāmaṃ harim tathā | sthānāni ca catuḥṣaṣṭim hareratha harasya ca || 38 ||

Lord Kartikeya, Shalagrama, and Hari too, and the sixty-four sacred places of Hari and of Hara.

भगवान् कार्तिकेय को, शालग्राम को, और हरि को भी, और हरि तथा हर के चौंसठ पवित्र स्थानों को।

1.3.39

नानाश्चर्यविचित्राणि चतुरब्धितटानि च । विन्ध्यमन्दरकुञ्जांश्च कुलशैलस्थलानि च ॥ ३९ ॥

nānāścaryavicitrāṇi caturabdhitaṭāni ca | vindhyamandarakuñjāṃśca kulaśailasthalāni ca || 39 ||

the strange and wonderful shores of the four seas, the groves of the Vindhya and Mandara mountains, and the places on the great family-mountains.

चारों समुद्रों के अनोखे और अद्भुत किनारों को, विन्ध्य और मंदार पर्वतों के उपवनों को, और बड़े कुल-पर्वतों के स्थानों को।

1.3.40

राजर्षीणां च महतां ब्रह्मर्षीणां तथैव च । देवानां ब्राह्मणानां च पावनानाश्रमाञ्छुभान् ॥ ४० ॥

rājarṣīṇāṃ ca mahatām brahmarṣīṇāṃ tathaiva ca | devānām brāhmaṇānām ca pāvanānāśramāṅchubhān || 40 ||

and the pure, holy hermitages of the great royal sages, of the brahmin sages, of the gods, and of the brahmins.

और महान राजर्षियों के, ब्रह्मर्षियों के, देवताओं के, और ब्राह्मणों के पवित्र और शुभ आश्रमों को।

1.3.41

भूयोभूयः स बभ्राम भ्रातृभ्यां सह मानदः । चतुर्ष्वपि दिगन्तेषु सर्वानेव महीतटान् ॥ ४१ ॥

bhūyobhūyaḥ sa babhrama bhrātṛbhyāṃ saha mānadaḥ | caturṣvapi diganteṣu sarvāneva mahītaṭān || 41 ||

Again and again he wandered, together with his brothers — he who gave honor to others — through all the lands of the earth in all four directions.

बार-बार वह अपने भाइयों के साथ घूमता रहा - वह जो दूसरों को सम्मान देता था - चारों दिशाओं की सारी धरती पर।

1.3.42

अमरकिन्नरमानवमानितः समवलोक्य महीमखिलामिमाम् । उपययौ स्वगृहं रघुनन्दनो विहृतदिक् शिवलोकमिवेश्वरः ॥ ४२ ॥

amarakinnaramānavamānitaḥ samavalokya mahīmakhilāmimām | upayayau svagrhaṃ raghunandano vihr̥tadik śivalokamiveśvaraḥ || 42 ||

Honored by gods, kinnaras, and men, and having seen this whole earth, Raghunandana returned to his own home, having roamed every direction — like the Lord returning to Shiva's world.

देवताओं, किन्नरों और मनुष्यों से सम्मान पाकर, और इस पूरी पृथ्वी को देखकर, रघुनन्दन (राम) अपने घर लौट आया, सभी दिशाओं में घूम चुकने के बाद - जैसे ईश्वर शिवलोक को लौटते हैं।

Chapter 4

1.4.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । रामः पुष्पाञ्जलिब्रातैर्विकीर्णः पुरवासिभिः । प्रविवेश गृहं श्रीमाञ्जयन्तो विष्टपं यथा ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | rāmaḥ puṣpāñjalivrātairvikīrṇaḥ puravāsibhiḥ | praviveśa grhaṁ śrīmāñjayanto viṣṭapaṁ yathā || 1 ||

Sri Valmiki said: The people of the city covered Rama with handfuls of flowers as he entered the house, glorious, like Jayanta entering heaven.

श्री वाल्मीकि ने कहा: नगर के लोगों ने राम पर फूलों की अंजलियाँ बरसाई, और वे उस तेजस्वी घर में प्रवेश कर गए, जैसे जयन्त स्वर्ग में प्रवेश करता है।

1.4.2

प्रणनामाथ पितरं वसिष्ठं भ्रातृबान्धवान् । ब्राह्मणान्कुलवृद्धांश्च राघवः प्रथमागतः ॥ २ ॥

praṇanāmātha pitaraṁ vasiṣṭhaṁ bhrātṛbāndhavan | brāhmaṇāṅkulavṛddhāṁśca rāghavaḥ prathamāgataḥ || 2 ||

Then, having just arrived, Raghava bowed to his father, to Vasishtha, to his brothers and kinsmen, to the brahmins, and to the elders of the family.

फिर, अभी-अभी लौटे हुए राघव ने अपने पिता को, वसिष्ठ को, अपने भाइयों और रिश्तेदारों को, ब्राह्मणों को, और परिवार के बड़े-बूढ़ों को प्रणाम किया।

1.4.3

सुहृद्भिर्भ्रातृभिश्चैव पित्रा द्विजगणेन च । मुहुरालिङ्गिताचारो राघवो न ममौ मुदा ॥ ३ ॥

suhr̥dbhirbhrātṛbhiścaiva pitrā dvijagaṇena ca | muhurāliṅgitācāro rāghavo na mamaḥ mudā || 3 ||

His friends, his brothers, his father, and the group of brahmins embraced him again and again, and Raghava's joy had no limit.

उसके मित्रों, भाइयों, पिता और ब्राह्मणों के समूह ने उसे बार-बार गले लगाया, और राघव का आनंद असीम था।

1.4.4

तस्मिन्गृहे दाशरथेः प्रियप्रकथनैर्मिथः । जुघूर्णुर्मधुरैराशा मृदुवंशस्तनैरिव ॥ ४ ॥

tasmingr̥he dāśaratheḥ priyaparakathanairmithaḥ | jugūrṇurmadhurairāśā mṛduvaṁśastanairiva || 4 ||

In that house of Dasharatha's son, everyone exchanged sweet, loving words with each other, and the sound rose and spread through the air like the soft rustle of bamboo canes.

दशरथ-पुत्र के उस घर में सब लोग आपस में मीठी और प्रेम भरी बातें करते थे, और उसकी आवाज़ चारों ओर वैसे ही गूँजती थी जैसे कोमल बाँस के डंठल सरसराते हैं।

1.4.5

बभूवाथ दिनान्यष्टौ रामागमन उत्सवः । सुखं मत्तजनोन्मुक्तकलकोलाहलाकुलः ॥ ५ ॥

babhūvātha dinānyaṣṭau rāmāgamana utsavaḥ | sukhaṁ matta janonmuktakalakolāhalākulaḥ || 5 ||

For eight days there was a festival to celebrate Rama's return, a happy time, filled with the sweet noise and clamor of delighted people.

राम के लौटने की खुशी में आठ दिनों तक उत्सव चला, एक सुखद समय, जो प्रसन्न लोगों की मीठी चहल-पहल और शोर से भरा था।

1.4.6

उवास स सुखं गेहे ततः प्रभृति राघवः । वर्णयन्विविधाकारान्देशाचारानितस्ततः ॥ ६ ॥

uvāsa sa sukhaṁ gehe tataḥ prabhṛti rāghavaḥ | varṇayanvividhākārāndeśācārānitastataḥ || 6 ||

From then on, Raghava lived happily at home, telling here and there about the many different customs he had seen in different lands.

उसके बाद राघव घर में सुख से रहने लगा, और इधर-उधर विभिन्न देशों की तरह-तरह की रीतियों के बारे में बताता रहा।

1.4.7

प्रातरुत्थाय रामोऽसौ कृत्वा संध्यां यथाविधि । सभासंस्थं ददर्शेन्द्रसमं स्वपितरं तथा ॥ ७ ॥

prātarutthāya rāmo'sau kṛtvā saṁdhyāṁ yathāvidhi | sabhāsaṁsthaṁ dadarśendrasamaṁ svapitaraṁ tathā || 7 ||

Rising in the morning, Rama would perform his morning prayers exactly as they should be done, and then go and see his father seated in the assembly hall, as glorious as the god Indra.

राम सुबह उठकर विधि के अनुसार अपनी संध्या-पूजा करते, फिर सभा में बैठे अपने पिता के पास जाते, जो इन्द्र जैसे तेजस्वी दिखते थे।

1.4.8

कथाभिः सुविचित्राभिः स वसिष्ठादिभिः सह । स्थित्वा दिनचतुर्भागं ज्ञानगर्भाभिरादृतः ॥ ८ ॥

kathābhiḥ suvicitrābhiḥ sa vasiṣṭhādibhiḥ saha | sthitvā dinacaturbhāgaṁ jñānagarbhābhirādṛtaḥ || 8 ||

He would spend a quarter of the day with Vasishtha and the others, honored by their wonderful stories that were full of wisdom.

वह वसिष्ठ और अन्य लोगों के साथ दिन के एक चौथाई हिस्से तक बैठता, और उनकी अद्भुत, ज्ञान से भरी कथाओं से सम्मानित होता।

1.4.9

जगाम पित्रानुज्ञातो महत्या सेनयावृतः । वराहमहिषाकीर्णं वनमाखेटकेच्छया ॥ ९ ॥

jagāma pitrānujñāto mahatyā senayāvṛtaḥ | varāhamahiṣākīrṇaṁ vanamākheṭakecchayā || 9 ||

With his father's permission, and surrounded by a large company of soldiers, he went, wanting to hunt, into a forest full of wild boars and buffaloes.

पिता की अनुमति लेकर और सैनिकों के एक बड़े दल से घिरा हुआ, वह शिकार की इच्छा से जंगली सूअरों और भैंसों से भरे जंगल में गया।

1.4.10

तत आगत्य सदने कृत्वा स्नानादिकं क्रमम् । समित्रबान्धवो भुत्त्वा निनाय ससुहृन्निशाम् ॥ १० ॥

tata āgatya sadane kṛtvā snānādikaṁ kramam | samitrabāndhavo bhuktvā nināya sasuhṛnniśām || 10 ||

Then he came back to the house, bathed and did the rest of his daily routine, ate together with his friends and relatives, and spent the night with his friends.

फिर वह घर लौट आया, स्नान आदि अपनी नित्य क्रिया की, अपने मित्रों और रिश्तेदारों के साथ भोजन किया, और रात मित्रों के साथ बिताई।

1.4.11

एवंप्रायदिनाचारो भ्रातृभ्यां सह राघवः । आगत्य तीर्थयात्रायाः समुवास पितुर्गृहे ॥ ११ ॥

evaṁprāyadinācāro bhrātr̥bhyāṁ saha rāghavaḥ | āgatya tīrthayātrāyāḥ samuvāsa piturgr̥he || 11 ||

With his days mostly going by like this, Rama, back from his pilgrimage, lived in his father's house together with his two brothers.

इसी तरह उसके दिन बीतते रहे, और तीर्थयात्रा से लौटकर राम अपने दोनों भाइयों के साथ पिता के घर में रहने लगा।

नृपतिसंव्यवहारमनोज्ञया सुजनचेतसि चन्द्रिकयानया । परिनिनाय दिनानि स चेष्टया स्तुतसुधारसपेशलयाऽनघ ॥ १२ ॥

*nṛpatisaṁvyavahāramanojñayā sujanacetasi candrikayānayā | parinināya dināni sa ceṣṭayā
stutasudhārasapeśalayā'nagha || 12 ||*

O sinless one, Rama spent his days like this: his conduct toward the king, his father, was so pleasing that it fell on the hearts of good people like moonlight, an activity as sweet and tender as praised nectar.

हे निष्पाप, राम के दिन इस तरह बीतते थे: राजा यानी अपने पिता के प्रति उसका व्यवहार इतना मनभावन था कि वह भले लोगों के मन पर चाँदनी की तरह पड़ता था, और यह आचरण प्रशंसित अमृत रस के समान मधुर और कोमल था।

Chapter 5

1.5.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । अथोनषोडशे वर्षे वर्तमाने रघूद्वहे । रामानुयायिनि तथा शत्रुघ्ने लक्ष्मणेऽपि च ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | athounaṣoḍaśe varṣe vartamāne raghūdvahe | rāmānuyāyini tathā śatrughnē lakṣmaṇē'pi ca || 1 ||

Sri Valmiki said: Then, when Rama, the upholder of the Raghu line, was going through his sixteenth year, and so were Shatrughna, who always followed Rama, and Lakshmana too, श्री वाल्मीकि ने कहा: फिर, जब रघुकुल के वंशज राम अपने सोलहवें वर्ष में चल रहे थे, और उन्हीं की तरह हमेशा राम के साथ रहने वाले शत्रुघ्न, और लक्ष्मण भी उसी उम्र में थे,

1.5.2

भरते संस्थिते नित्यं मातामहगृहे सुखम् । पालयत्यवनिं राज्ञि यथावदखिलाभिमाम् ॥ २ ॥

bhartē samsthitē nityaṁ mātāmahagr̥hē sukham | pālayatyavanīm rājñi yathāvadakhilābhimām || 2 ||

while Bharata lived happily, as always, at his maternal grandfather's house, and the king ruled over this whole earth exactly as he should,

भरत हमेशा की तरह अपने नाना के घर सुख से रह रहे थे, और राजा इस पूरी पृथ्वी पर ठीक जैसा होना चाहिए वैसा ही राज्य कर रहे थे,

1.5.3

जन्यत्रार्थं च पुत्राणां प्रत्यहं सह मन्त्रिभिः । कृतमन्त्रे महाप्राज्ञे तज्ज्ञे दशरथे नृपे ॥ ३ ॥

janyatrārthaṁ ca putrāṇāṁ pratyahaṁ saha mantrabhiḥ | kṛtamantre mahāprājñe tajjñe daśarathē nṛpē || 3 ||

and King Dasharatha, a very wise man who knew how such things should be done, met with his ministers every day to arrange marriages for his sons,

और राजा दशरथ, जो बहुत बुद्धिमान थे और ऐसी बातों के जानकार थे, अपने पुत्रों के विवाह की व्यवस्था के लिए हर दिन मंत्रियों से मिलते थे,

1.5.4

कृतायां तीर्थयात्रायां रामो निजगृहे स्थितः । जगामानुदिनं कार्श्यं शरदीवामलं सरः ॥ ४ ॥

kṛtāyāṁ tīrthayātrāyāṁ rāmo nijagr̥hē sthitaḥ | jagāmānudinam kārśyaṁ śaradīvāmalāṁ saraḥ || 4 ||

once his pilgrimage was finished, Rama, staying in his own house, grew thinner day by day, like a clear lake growing thin in autumn.

तीर्थयात्रा पूरी होने के बाद, राम अपने घर में रहते हुए दिन-प्रतिदिन दुबले होते गए, जैसे शरद ऋतु में कोई स्वच्छ झील पतली हो जाती है।

1.5.5

कुमारस्य विशालाक्षं पाण्डुतां मुखमाददे । पाकफुल्लदलं शुक्लं सालिमालमिवाम्बुजम् ॥ ५ ॥

kumārasya viśālākṣaṁ pāṇḍutaṁ mukhamādadē | pākaphulladalaṁ śuklaṁ sālimālamivāmbujam || 5 ||

The wide-eyed prince's face turned pale, white, like a lotus whose petals have fully opened, ringed by a row of bees.

उस बड़ी आँखों वाले राजकुमार का चेहरा पीला पड़ गया, सफेद, जैसे पूरी तरह खिली हुई कमल की पंखुड़ी, जिसके चारों ओर भँवरों की कतार हो।

1.5.6

कपोलतलसंलीनपाणिः पद्मासनस्थितः । चिन्तापरवशस्तूष्णीमव्यापारो बभूव ह ॥ ६ ॥

kapolatalasaṁlīnapāṇiḥ padmāsanasthitaḥ | cintāparavaśastūṣṇīmavyāpāro babhūva ha || 6 ||

He sat in the lotus posture, his hand resting against his cheek, overcome by worry, silent and doing nothing at all.

वह पद्मासन में बैठा, अपना हाथ गाल पर टिकाए हुए, चिन्ता से अभिभूत होकर चुपचाप और बिना कुछ किए बैठा रहा।

1.5.7

कृशाङ्गश्चिन्तया युक्तः खेदी परमदुर्मानः । नोवाच कस्यचित्किञ्चिल्लिपिकर्मार्पितोपमः ॥ ७ ॥

kṛśāṅgaścintayā yuktaḥ khedī paramadurmanāḥ | novāca kasyacitkiñcil lipikarmārpitopamaḥ || 7 ||

His body grew thin, he was full of worry, in distress, deeply downcast, and he said nothing at all to anyone, like a figure fixed in a painting.

उसका शरीर दुबला हो गया, वह चिन्ता से भरा, दुखी और मन से बहुत उदास था, और किसी से कुछ नहीं बोलता था, जैसे किसी चित्र में बनाई गई कोई आकृति।

1.5.8

खेदात्परिजनेनासौ प्रार्थ्यमानः पुनः पुनः । चकाराह्निकमाचारं परिम्लानमुखाम्बुजः ॥ ८ ॥

khedātparijanenāsau prārthyamānaḥ punaḥ punaḥ | cakārāhnikamācāraṁ parimlānamukhāmbujaḥ || 8 ||

His attendants, worried, begged him again and again, and he, his lotus-like face now withered, went through his daily rituals.

उसके सेवक चिंतित होकर बार-बार उससे विनती करते रहे, और वह, जिसका कमल-सा चेहरा मुरझा गया था, अपने नित्य के कर्मकांड करता रहा।

1.5.9

एवंगुणविशिष्टं तं रामं गुणगणाकरम् । आलोक्य भ्रातरावस्य तामेवाययतुर्दशाम् ॥ ९ ॥

evamguṇaviśiṣṭaṁ taṁ rāmaṁ guṇagaṇākaram | ālokya bhrātarāvasya tāmevāyayaturdaśām || 9 ||

Seeing Rama, who had so many good qualities, a mine of every virtue, in this state, his two brothers too fell into the very same condition.

इतने गुणों वाले, हर सद्गुण की खान जैसे राम को इस हालत में देखकर, उसके दोनों भाई भी उसी दशा में पहुँच गए।

1.5.10

तथा तेषु तनूजेषु खेदवत्सु कृशेषु च । सपत्नीको महीपालश्चिन्ताविवशतां ययौ ॥ १० ॥

tathā teṣu tanūjeṣu khedavatsu kṛṣeṣu ca | sapatnīko mahīpālāścintāvivśatām yayau || 10 ||

So, when his sons had become distressed and thin like this, the king, together with his wife, fell completely under the grip of worry.

इस तरह जब उसके पुत्र दुखी और दुबले हो गए, तो राजा अपनी रानी के साथ पूरी तरह चिन्ता की चपेट में आ गया।

1.5.11

का ते पुत्र घना चिन्तेत्येवं रामं पुनः पुनः अपृच्छत्स्निग्धया वाचा नैवाकथयदस्य सः ॥ ११ ॥

kā te putra ghanā cinte tyevaṁ rāmaṁ punaḥ punaḥ aprcchatsnigdhayā vācā naivākathayadasya saḥ || 11 ||

"My son, what is this heavy worry of yours?" With these words, spoken affectionately, he asked Rama again and again, but Rama told him nothing at all.

"बेटा, तुम्हें किस बात की इतनी गहरी चिन्ता है?" ऐसे प्रेम भरे शब्दों से वह राम से बार-बार पूछता रहा, पर राम ने उसे कुछ नहीं बताया।

1.5.12

न किञ्चित्तात मे दुःखमित्युक्त्वा पितुरङ्गः रामो राजीवपत्राक्षस्तूष्णीमेव स्म तिष्ठति ॥ १२ ॥

na kiñcit tāta me duḥkham ityuktvā pitur aṅkagaḥ rāmo rājīvapatrākṣas tūṣṇīm eva sma tiṣṭhati || 12 ||

Rama, whose eyes were like lotus petals, would sit on his father's lap and say, "Father, I have no sorrow at all," and then just stay silent.

कमल की पंखुड़ी जैसी आँखों वाला राम अपने पिता की गोद में बैठकर कहता, "पिताजी, मुझे कोई दुःख नहीं है," और फिर चुप हो जाता।

1.5.13

ततो दशरथो राजा रामः किं खेदवानिति अपृच्छत्सर्वकार्यज्ञं वसिष्ठं वदतां वरम् ॥ १३ ॥

tato daśaratho rājā rāmaḥ kiṃ khedavān iti apr̥cchat sarvakāryajñaṃ vasiṣṭhaṃ vadatāṃ varam || 13 ||

Then King Dasharatha asked Vasishtha, who knew about every matter and was the best of speakers, "Why is Rama so troubled?"

तब राजा दशरथ ने वसिष्ठ से, जो हर बात के जानकार थे और वक्ताओं में श्रेष्ठ थे, पूछा, "राम इतने दुखी क्यों हैं?"

1.5.14

इत्युक्तश्चिन्तयित्वा स वसिष्ठमुनिना नृपः अस्त्यत्र कारणं श्रीमन्मा राजन्दुःखमस्तु ते ॥ १४ ॥

ityuktas cintayitvā sa vasiṣṭhamuninā nṛpaḥ asty atra kāraṇaṃ śrīman mā rājan duḥkham astu te || 14 ||

Asked this, the sage Vasishtha thought for a moment, and said, "There is indeed a reason for this, O illustrious king. Do not grieve, O king."

यह पूछे जाने पर, ऋषि वसिष्ठ ने थोड़ी देर सोचा और कहा, "हे तेजस्वी राजा, इसका एक कारण है। हे राजन, आप दुखी मत होइए।"

1.5.15

कोपं विषादकलनां विततं च हर्षं नाल्पेन कारणवशेन वहन्ति सन्तः सर्गेण संहतिजवेन विना जगत्यां भूतानि भूप न महान्ति विकारवन्ति ॥ १५ ॥

kopaṃ viṣādakalanāṃ vitataṃ ca harṣaṃ nālpene kāraṇavaśena vahanti santaḥ sargeṇa saṃhrtijavena vinā jagatyāṃ bhūtāni bhūpa na mahānti vikāravanti || 15 ||

Good people do not feel anger, the grip of despair, or great joy without a substantial reason. And, O king, in this world, truly great beings are not shaken by change except through the force that drives creation and dissolution.

अच्छे लोग बिना किसी बड़े कारण के न तो क्रोध करते हैं, न विषाद में डूबते हैं, न अत्यधिक हर्षित होते हैं। और, हे राजन, इस संसार में सचमुच महान प्राणी सृष्टि और प्रलय की शक्ति के बिना किसी बड़े परिवर्तन से विचलित नहीं होते।

Chapter 6

1.6.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । इत्युक्ते मुनिनाथेन संदेहवति पार्थिवे । खेदवत्यास्थिते मौनं किञ्चित्कालप्रतीक्षणे ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvāca | ityukte munināthena saṁdehavati pārthive | khedavatyāsthite maunaṁ kiñcitkālpratīkṣaṇe || 1 ||

Valmiki said: When the great sage had said this, the king was full of doubt. He sat there in sorrow, silent, waiting a little while.

वाल्मीकि जी बोले कि जब महर्षि ने यह बात कही, तो राजा मन में शक करने लगे। वे दुखी होकर चुपचाप बैठे रहे और थोड़ी देर इंतज़ार करते रहे।

1.6.2

परिखिन्नासु सर्वासु राज्ञीषु नृपसदसु । स्थितासु सावधानासु रामचेष्टासु सर्वतः ॥ २ ॥

parikhinnaāsu sarvāsu rājñīṣu nṛpasadmasu | sthitāsu sāvadhānāsu rāmačeṣṭāsu sarvataḥ || 2 ||

All the queens in the king's palace were tired and troubled. They sat there carefully, watching everything Rama did, on every side.

राजा के महल में सारी रानियाँ थकी और परेशान थीं। वे सब सावधानी से बैठी थीं और राम के हर काम को हर तरफ से ध्यान से देख रही थीं।

1.6.3

एतस्मिन्नेव काले तु विश्वामित्र इति श्रुतः । महर्षिरभ्यगाद्द्रष्टुं तमयोध्यानराधिपम् ॥ ३ ॥

etasminneva kāle tu viśvāmitra iti śrutaḥ | maharṣirabhyagāddraṣṭuṁ tamayodhyānarādhīpam || 3 ||

At this very time, the great sage known as Vishvamitra came to see that king of Ayodhya.

ठीक इसी समय विश्वामित्र नाम से जाने जाने वाले महर्षि, अयोध्या के उस राजा से मिलने आए।

1.6.4

तस्य यज्ञोऽथ रक्षोभिस्तथा विलुलुपे किल । मायावीर्यबलोन्मत्तैर्धर्मकार्यस्य धीमतः ॥ ४ ॥

tasya yajño'tha rakṣobhistathā vilulupe kila | māyāvīryabalonmattairdharma-kāryasya dhīmataḥ || 4 ||

The sacrifice of that wise sage, a righteous act, was being destroyed by demons who were drunk with their magical power, their strength and their might.

उस बुद्धिमान ऋषि का यज्ञ, जो एक धार्मिक काम था, राक्षसों द्वारा नष्ट किया जा रहा था। ये राक्षस अपनी माया, बल और ताकत के नशे में चूर थे।

1.6.5

रक्षार्थं तस्य यज्ञस्य द्रष्टुमैच्छत्स पार्थिवम् । नहि शक्नोत्यविघ्नेन समाप्तुं स मुनिः क्रतुम् ॥ ५ ॥

rakṣārthaṁ tasya yajñasya draṣṭumai-cchatsa pārthivam | nahi śaknotyavighnena samāptuṁ sa muniḥ kratum || 5 ||

To protect that sacrifice, he wanted to see the king, because that sage was not able to finish the rite without trouble.

उस यज्ञ की रक्षा के लिए वे राजा से मिलना चाहते थे, क्योंकि वह ऋषि बिना किसी रुकावट के यज्ञ पूरा नहीं कर पा रहे थे।

1.6.6

ततस्तेषां विनाशार्थमुद्यतस्तपसां निधिः । विश्वामित्रो महातेजा अयोध्यामभ्यगात्पुरीम् ॥ ६ ॥

tatasteṣāṃ vināśārthamudyatastapasāṃ nidhiḥ | viśvāmitro mahātejā ayodhyāmbhyagātpurīm || 6 ||

Then Vishvamitra, a storehouse of austerity, a man of great brilliance, set out to destroy those demons and went to the city of Ayodhya.

तब तपस्या के भंडार, महातेजस्वी विश्वामित्र, उन राक्षसों को नष्ट करने की ठान कर अयोध्या नगरी गए।

1.6.7

स राज्ञो दर्शनाकाङ्क्षी द्वाराध्यक्षानुवाच ह । शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाधिनः सुतम् ॥ ७ ॥

sa rājño darśanākāṅkṣī dvārādhyakṣānuvāca ha | śīghramākhyāta māṃ prāptaṃ kauśikaṃ gādhinaḥ sutam || 7 ||

Wanting to see the king, he said to the gatekeepers: "Quickly go and tell him that I have come. I am Kaushika, the son of Gadhi."

राजा से मिलने की इच्छा से उन्होंने द्वारपालों से कहा कि जल्दी जाकर बता दो कि मैं आ गया हूँ, मैं गाधि का पुत्र कौशिक हूँ।

1.6.8

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा द्वास्था राजगृहं ययुः । संभ्रान्तमनसः सर्वे तेन वाक्येन चोदिताः ॥ ८ ॥

tasya tadvacanam śrutvā dvāsthā rājagrhaṃ yayuḥ | saṃbhrāntamanasaḥ sarve tena vākyaena coditāḥ || 8 ||

Hearing his words, the gatekeepers, their minds all excited by what he had said, went into the king's house.

उनकी बात सुनकर द्वारपाल, जिनके मन उस बात से हलचल में आ गए थे, राजा के महल में गए।

1.6.9

ते गत्वा राजसदनं विश्वामित्रमृषिं ततः । प्राप्तमावेदयामासुः प्रतीहाराः पतेस्तदा ॥ ९ ॥

te gatvā rājasadanam viśvāmitramṛṣiṃ tataḥ | prāptamāvedayāmāsuḥ pratihārāḥ pateḥstada || 9 ||

They went to the king's court, and then the guards told the king that the sage Vishvamitra had arrived.

वे राजा के दरबार में गए, और फिर पहरेदारों ने राजा को बताया कि ऋषि विश्वामित्र आ गए हैं।

1.6.10

अथास्थानगतं भूपं राजमण्डलमालिनम् । समुपेत्य त्वरायुक्तो याष्टीकोऽसौ व्यजिज्ञपत् ॥ १० ॥

athāsthānagataṃ bhūpaṃ rājamaṇḍalamālinam | samupetya tvarāyukto yāṣṭīko'sau vyajijñapat || 10 ||

Then Yashtika, the staff-bearer, hurried up to the king, who was sitting in the assembly hall surrounded by a circle of kings, and gave him the news.

तब यष्टीक नाम का सेवक जल्दी से राजा के पास गया, जो सभा में बैठे थे और राजाओं के समूह से घिरे हुए थे, और उसने राजा को यह बात बताई।

1.6.11

देव द्वारि महातेजा बालभास्करभासुरः । ज्वालारुणजटाजूटः पुमाञ्छ्रीमानवस्थितः ॥ ११ ॥

deva dvāri mahātejā bālabhāskarabhāsurah | jvālāruṇajatajūṭaḥ pumāñchrīmānavasthitaḥ || 11 ||

"My lord, at the gate stands a man of great brilliance, shining like the morning sun. His matted hair is red like fire. He is glorious and full of splendor."

हे राजन, द्वार पर एक महातेजस्वी पुरुष खड़े हैं, जो उगते सूरज जैसे चमक रहे हैं। उनकी जटाएँ आग जैसी लाल हैं। वे तेजस्वी और शोभा से भरे हैं।

1.6.12

सभासुरपताकान्तं साश्वेभपुरुषायुधम् । कृतवांस्तं प्रदेशं यस्तेजोभिः कीर्णकाञ्चनम् ॥ १२ ॥

sabhāsurapatākāntaṁ sāśvebhapurūṣāyudham | kṛtavāṁstaṁ pradeśaṁ yastejobhiḥ kīrṇakāñcanam || 12 ||

That place, with its bright flags, its horses, elephants, men and weapons, he has made look, by his own brilliance, as if it were scattered with gold.

उस जगह को, जहाँ चमकते झंडे, घोड़े, हाथी, आदमी और हथियार हैं, उन्होंने अपने तेज से ऐसा बना दिया है मानो वहाँ सोना बिखरा हो।

1.6.13

वीक्ष्यमाणे तु याष्टीके निवेदयति राजनि । विश्वामित्रो मुनिः प्राप्त इत्यनुद्वतया गिरा ॥ १३ ॥

vīkṣyamāṇe tu yāṣṭīke nivedayati rājani | viśvāmitro muniḥ prāpta ityanudvatayā girā || 13 ||

While the king was watching, Yashtika told him in humble words: "The sage Vishvamitra has arrived."

राजा जब यह देख रहे थे, तभी यष्टीक ने विनम्र शब्दों में उन्हें बताया कि ऋषि विश्वामित्र आ गए हैं।

1.6.14

इति याष्टीकवचनमाकर्ण्य नृपसत्तमः । स समन्त्री ससामन्तः प्रोत्तस्थौ हेमविष्टरात् ॥ १४ ॥

iti yāṣṭīkavacanamākarnya nṛpasattamaḥ | sa samantrī sasāmantah prōttasthau hemaviṣṭarāt || 14 ||

Hearing these words of Yashtika, the best of kings got up at once from his golden seat, along with his ministers and his vassal chiefs.

यष्टीक की यह बात सुनकर, राजाओं में सबसे श्रेष्ठ वह राजा अपने मंत्रियों और सामंतों के साथ तुरंत अपने सोने के आसन से उठ खड़े हुए।

1.6.15

पदातिरेव सहसा राज्ञां वृन्देन मालितः । वसिष्ठवामदेवाभ्यां सह सामन्तसंस्तुतः ॥ १५ ॥

padātireva sahasā rājñāṁ vṛndena mālitaḥ | vasiṣṭhavāmadevābhyāṁ saha sāmantasamstutaḥ || 15 ||

On foot, at once, surrounded by a crowd of kings, together with Vasishtha and Vamadeva, praised by the vassal chiefs,

वे तुरंत पैदल ही चल पड़े, राजाओं की भीड़ से घिरे हुए, वसिष्ठ और वामदेव के साथ, और सामंत उनकी प्रशंसा करते जा रहे थे।

1.6.16

जगाम तत्र यत्रासौ विश्वामित्रो महामुनिः । ददर्श मुनिशार्दूलं द्वारभूमाववस्थितम् ॥ १६ ॥

jaḡāma tatra yatrāsau viśvāmitro mahāmuniḥ | dadarśa muniśārdūlaṁ dvārabhūmāvavasthitaṁ || 16 ||

he went to the place where the great sage Vishvamitra was, and he saw that tiger among sages standing at the gate.

वे उस जगह गए जहाँ महर्षि विश्वामित्र खड़े थे, और उन्होंने ऋषियों में श्रेष्ठ उस मुनि को द्वार पर खड़ा देखा।

1.6.17

केनापि कारणेनोर्वीतलमर्कमुपागतम् । ब्राह्मेण तेजसाक्रान्तं क्षात्रेण च महौजसा ॥ १७ ॥

kenāpi kāraṇenorvītalamarkamupāgatam | brāhmeṇa tejasākrāntaṁ kṣātreṇa ca mahaujasā || 17 ||

For some reason, it seemed as if the sun itself had come down to the surface of the earth, filled with the power of a brahmin and the great strength of a kshatriya.

ऐसा लग रहा था मानो किसी कारण से सूरज खुद धरती पर उतर आया हो, जिसमें एक ब्राह्मण का तेज और एक क्षत्रिय की महान शक्ति दोनों भरे हों।

1.6.18

जराजरठया नित्यं तपःप्रसररूक्षया । जटावल्या वृतस्कन्धं ससंध्याभ्रमिवाचलम् ॥ १८ ॥

jarājarṭhayā nityaṁ taphprasasararūkṣayā | jaṭāvalyā vṛtaskandhaṁ sasandhyābhramivācalam || 18 ||

His shoulders were covered by a mass of matted hair, always rough and worn from long austerity and old age. He looked like a mountain wrapped in the red clouds of evening.

उनके कंधे जटाओं के ढेर से ढके थे, जो बुढ़ापे और लंबी तपस्या के कारण हमेशा खुरदरी रहती थीं। वे शाम के लाल बादलों से ढके पहाड़ जैसे लग रहे थे।

1.6.19

उपशान्तं च कान्तं च दीप्तमप्रतिघाति च । निभृतं चोर्जिताकारं दधानं भास्वरं वपुः ॥ १९ ॥

upaśāntaṁ ca kāntaṁ ca dīptamapratighāti ca | nibhṛtaṁ caurjitākāraṁ dadhānaṁ bhāsvaraṁ vapuḥ || 19 ||

He carried a shining body that was calm and lovely, blazing yet unstoppable, quiet, and of a strong, powerful form.

उनका शरीर चमकीला था, शांत भी और सुंदर भी, तेज से जलता हुआ भी पर अजेय, स्थिर, और शक्तिशाली रूप वाला।

1.6.20

पेशलेनातिभीमेन प्रसन्नेनाकुलेन च । गम्भीरेणातिपूर्णेन तेजसा रञ्जितप्रभम् ॥ २० ॥

peśalena atibhīmena prasannenākulena ca | gambhīreṇa atipūrṇena tejasā rañjitaprabham || 20 ||

His splendor was tinged with a radiance that was gentle yet fearsome, serene yet unshaken, deep and utterly full.

उनकी चमक में एक ऐसा तेज मिला था जो कोमल भी था और भयानक भी, शांत भी था और अडिग भी, गहरा और पूरी तरह भरा हुआ।

1.6.21

अनन्तजीवितदशासखीमेकामनिन्दिताम् । धारयन्तं करे श्लक्ष्णां कुण्डीमम्लानमानसम् ॥ २१ ॥

anantajīvitadaśāsakhīmekāmaninditām | dhārayantaṁ kare ślakṣṇāṁ kuṇḍīmamlānamānasam || 21 ||

In his hand he held a smooth water-pot, his one blameless companion through his long, unending life, and his mind was never dimmed.

उनके हाथ में एक चिकना कमंडल था, जो उनके लंबे और अनंत जीवन का एक ही निर्दोष साथी था, और उनका मन कभी उदास नहीं होता था।

1.6.22

करुणाक्रान्तचेतत्तवात्प्रसन्नैर्मधुराक्षरैः । वीक्षणैर्मृतेनेव संसिञ्चन्तमिमाः प्रजाः ॥ २२ ॥

karuṇākrāntacetattavātpṛsannairmadhurākṣaraiḥ | vīkṣaṇairmṛteneva saṁsiñcantamimāḥ prajāḥ || 22 ||

With a heart full of compassion, through his gracious, sweet words and his glances, he was drenching these people as if with nectar.

करुणा से भरे मन के साथ, अपने मीठे और शांत शब्दों से और अपनी नज़रों से, वे इन लोगों को मानो अमृत से सींच रहे थे।

1.6.23

युक्तयज्ञोपवीताङ्ग धवलप्रोन्नतस्रुवम् । अनन्तं विस्मयं चान्तः प्रयच्छन्तमिवेक्षितुः ॥ २३ ॥

yuktayajñopavitāṅga dhavalapronnatasruvam | anantaṁ vismayaṁ cāntaḥ prayacchantamivekṣituḥ || 23 ||

His body was fitted with the sacred thread, and he held a white, raised sacrificial ladle. He seemed to pour endless wonder into the heart of anyone who looked at him.

उसका शरीर यज्ञोपवीत यानी जनेऊ से सजा हुआ था, और उसके हाथ में एक सफ़ेद, ऊँचा उठा हुआ यज्ञ का चम्मच था। जो भी उसे देखता, मानो उसके मन में एक असीम अचरज भर जाता।

1.6.24

सुनिमालोक्य भूपालो दूरादेवानताकृतिः । प्रणनाम गलन्मौलिमणिमानितभूतलम् ॥ २४ ॥

sunimālokya bhūpālo dūrādevānatākṛtiḥ | praṇanāma galanmau liṁaṇimānitabhūtalam || 24 ||

Seeing that excellent sage, the king bowed low even from a distance. He bent down so far that the gem on his slipping crown touched and honored the ground.

उस उत्तम मुनि को देखकर राजा दूर से ही झुक गया। वह इतना नीचे झुका कि उसके मुकुट का रत्न खिसककर ज़मीन को छू गया, मानो धरती को सम्मान दे गया।

1.6.25

मुनिरप्यवनीनाथं भास्वानिव शतक्रतुस्तत्राभिवाद्यांचक्रे मधुरोदारया गिरा ॥ २५ ॥

munirapyavanīnāthaṁ bhāsvāniva śatakratumtatrābhivādayāṁcakre madhurodārayā girā || 25 ||

The sage too greeted the king there, as the sun might greet Indra, in a voice that was both sweet and gracious.

मुनि ने भी वहाँ राजा का अभिवादन किया, ठीक वैसे ही जैसे सूरज इंद्र का अभिवादन करता है, और यह अभिवादन उसने मीठी और उदार वाणी में किया।

1.6.26

ततो वसिष्ठप्रमुखाः सर्व एव द्विजातयः । स्वागतादिक्रमेणैनं पूजयामासुरादृताः ॥ २६ ॥

tato vasiṣṭhapramukhāḥ sarva eva dvijātayaḥ | svāgatādikrameṇainaṁ pūjayāmāsurādṛtāḥ || 26 ||

Then all the brahmins, led by Vasishtha, honored him with respect, greeting him with words of welcome and following the proper order.

फिर वसिष्ठ के नेतृत्व में सभी ब्राह्मणों ने आदरपूर्वक उसका सम्मान किया, स्वागत के शब्दों से शुरू करके उचित क्रम में उसका आदर किया।

1.6.27

दशरथ उवाच । अशङ्कितोपनीतेन भास्वता दर्शनेन ते । साधो स्वनुगृहीताः स्मो रविणेवाम्बुजाकराः ॥ २७ ॥

daśaratha uvāca | aśaṅkitopanītena bhāsvatā darśanena te | sādho svanugṛhītāḥ smo raviṇevāmbujākarāḥ || 27 ||

Dasharatha said: Good sir, your unexpected and radiant appearance has blessed us, the way the sun blesses a bed of lotuses.

दशरथ ने कहा: हे साधु, आपके अचानक हुए तेजस्वी दर्शन से हम धन्य हो गए हैं, ठीक वैसे ही जैसे सूरज से कमल के तालाब खिल उठते हैं।

1.6.28

यदनादि यदक्षुण्णं यदपायविवर्जितम् । तदानन्दसुखं प्राप्तं मया त्वद्दर्शनान्मुने ॥ २८ ॥

yadanādi yadakṣuṇṇaṁ yadapāyavivarjitam | tadānandasukhaṁ prāptaṁ mayā tvaddarśanānmune || 28 ||

O sage, by seeing you I have gained that joy which has no beginning, which never lessens, and which never fades.

हे मुनि, आपको देखकर मुझे वह आनंद और सुख मिला है जिसकी कोई शुरुआत नहीं है, जो कभी घटता नहीं और जो कभी नष्ट नहीं होता।

1.6.29

अद्य वर्तामहे नूनं धन्यानां धुरि धर्मतः । भवदागमनस्येमे यद्वयं लक्ष्यमागताः ॥ २९ ॥

adya vartāmahe nūnaṁ dhanyānāṁ dhuri dharmataḥ | bhavadāgamanasyeme yadvayaṁ lakṣyamāgatāḥ || 29 ||

Today, surely, we stand rightly at the very head of the fortunate, since we have become the very reason for your coming here.

आज निश्चय ही हम धर्म के कारण भाग्यशाली लोगों में सबसे आगे खड़े हैं, क्योंकि हम ही आपके यहाँ आने का कारण बने हैं।

1.6.30

एवं प्रकथयन्तोऽत्र राजानोऽथ महर्षयः । आसनेषु सभास्थानमासाद्य समुपाविशन् ॥ ३० ॥

evaṁ prakathayanto'tra rājāno'tha maharṣayaḥ | āsaneṣu sabhāsthānamāsādya samupāviśan || 30 ||

As they spoke like this, the kings and great sages reached their seats in the assembly hall and sat down.

ऐसी बातें करते हुए राजा और महर्षि सभा-भवन में अपनी-अपनी जगह पर पहुँचकर बैठ गए।

1.6.31

स दृष्ट्वा मालितं लक्ष्म्या भीतस्तमृषिसत्तमम् । प्रहृष्टवदनो राजा स्वयमर्घ्यं न्यवेदयत् ॥ ३१ ॥

sa dr̥ṣṭvā mālitaṁ lakṣmyā bhītaṣṭamṛṣisattamam | prahr̥ṣṭavadano rājā svayamargyaṁ nyavedayat || 31 ||

Seeing that greatest of sages shining with splendor, the king was filled with awe, yet his face was joyful, and he himself offered him the ceremonial water of welcome.

उस श्रेष्ठ मुनि को तेज से चमकता देखकर राजा श्रद्धा और विस्मय से भर गया, फिर भी उसके चेहरे पर खुशी थी, और उसने स्वयं उसे स्वागत का जल यानी अर्घ्य भेंट किया।

1.6.32

स राज्ञः प्रतिगृह्यार्घ्यं शास्त्रदृष्टेन कर्मणा । प्रदक्षिणं प्रकुर्वन्तं राजानं पर्यपूजयत् ॥ ३२ ॥

sa rājñāḥ pratigr̥hya arghyaṁ śāstradr̥ṣṭena karmaṇā | pradakṣiṇaṁ prakurvantaṁ rājānaṁ paryapūjayat || 32 ||

He accepted the water-offering from the king, following the rite laid down in the scriptures. Then, as the king walked around him in reverence, he honored the king in return.

उसने शास्त्र में बताई गई विधि के अनुसार राजा से वह जल ग्रहण किया, और फिर जब राजा आदरपूर्वक उसकी परिक्रमा कर रहा था, तब उसने भी राजा का सम्मान किया।

1.6.33

स राज्ञा पूजितस्तेन प्रहृष्टवदनस्तदा । कुशलं चाव्ययं चैव पर्यपृच्छन्नराधिपम् ॥ ३३ ॥

sa rājñā pūjitastena prahr̥ṣṭavadanastadā | kuśalaṃ cāvyaṃ caiva paryapṛcchannarādhīpam || 33 ||

Honored by the king, he then, with a joyful face, asked the king how he was and whether all was well with him.

राजा द्वारा सम्मानित होकर उसने खुश चेहरे से राजा से पूछा कि वह कैसा है और सब कुशल-मंगल तो है।

1.6.34

वसिष्ठेन समागम्य प्रहस्य मुनिपुंगवः । यथार्हं चार्चयित्वैनं पप्रच्छानामयं ततः ॥ ३४ ॥

vasiṣṭhena samāgamya prahasya munipuṅgavaḥ | yathārhaṃ cārcayitvainam papracchānāmayam tataḥ || 34 ||

That great sage met Vasishtha, smiled, honored him as was fitting, and then asked him how he was.

उस श्रेष्ठ मुनि ने वसिष्ठ से मिलकर मुस्कराते हुए उन्हें यथोचित सम्मान दिया, और फिर उनसे उनका हाल-चाल पूछा।

1.6.35

क्षणं यथार्हमन्योन्यं पूजयित्वा समेत्य च । ते सर्वे हृष्टमनसो महाराजनिवेशने ॥ ३५ ॥

kṣaṇam yathārhamanyonyam pūjayitvā sametya ca | te sarve hr̥ṣṭamanaso mahārājaniveśane || 35 ||

For a moment they all honored one another as was fitting, and came together, all glad at heart, there in the great king's palace.

एक पल के लिए सभी ने एक-दूसरे का उचित सम्मान किया और साथ मिलकर, सब मन में प्रसन्न होकर, राजा के महल में इकट्ठा हुए।

1.6.36

यथोचितासनगता मिथः संवृद्धतेजसःपरस्परेण पप्रच्छुः सर्वेऽनामयमादरात् ॥ ३६ ॥

yathocitāsanagatā mithaḥ saṃvṛddhatejaśparaspāreṇa papracchuḥ sarve'ānāmayamādarāt || 36 ||

Seated in their proper seats, their brilliance growing as they mingled together, they all respectfully asked each other how they were.

अपनी-अपनी उचित जगह पर बैठकर, और आपस में मिलने से जिनका तेज और बढ़ गया था, सब ने आदर से एक-दूसरे का हाल-चाल पूछा।

1.6.37

उपविष्टाय तस्मै स विश्वामित्राय धीमतेपाद्यमर्घ्यं च गां चैव भूयोभूयो न्यवेदयत् ॥ ३७ ॥

upaviṣṭāya tasmai sa viśvāmitrāya dhīmatepādyamarghyaṃ ca gāṃ caiva bhūyobhūyo nyavedayat || 37 ||

To Vishvamitra, that wise sage, now seated, the king offered water for his feet, the welcoming water, and a cow, again and again.

बैठे हुए उस बुद्धिमान विश्वामित्र को राजा ने बार-बार पैर धोने का जल, स्वागत का जल और एक गाय भेंट की।

1.6.38

अर्चयित्वा तु विधिवद्विश्वामित्रमभाषतप्राञ्जलिः प्रयतो वाक्यमिदं प्रीतमना नृपः ॥ ३८ ॥

arcayitvā tu vidhivadviśvāmitramabhāṣataprāñjaliḥ prayato vākyamidam prītamanā nṛpaḥ || 38 ||

After honoring Vishvamitra properly, according to custom, the king, with palms joined and heart full of joy, spoke these words.

विश्वामित्र का विधिपूर्वक सम्मान करने के बाद राजा ने हाथ जोड़कर, संयम से और मन में प्रसन्न होकर ये शब्द कहे।

1.6.39

यथाऽमृतस्य संप्राप्तिर्यथा वर्षमवर्षकेयथान्धस्येक्षणप्राप्तिर्भवदागमनं तथा ॥ ३९ ॥

yathā'mṛtasya saṁprāptir'yathā varṣamavarṣakeyathāndhasyekaṣaṇaprāptirbhavadāgamanam tathā || 39 ||

Your coming is like gaining the nectar of immortality, like rain falling on a place with no rain, like a blind man suddenly gaining sight.

आपका आना वैसा ही है जैसे अमृत मिल जाना, जैसे बिना बारिश वाली जगह पर बारिश हो जाना, और जैसे किसी अंधे को अचानक आँखें मिल जाना।

1.6.40

यथेष्टदारसंपर्कात्पुत्रजन्माऽप्रजावतःस्वप्नदृष्टार्थलाभश्च भवदागमनं तथा ॥ ४० ॥

yatheṣṭadārasaṁparkātputrajanmā'prajāvataḥsvapnadṛṣṭārthalābhaśca bhavadāgamanam tathā || 40 ||

Your coming is like a childless man at last having a son through union with his beloved wife, and like actually gaining the wealth one had only seen in a dream.

आपका आना वैसा ही है जैसे किसी निःसंतान व्यक्ति को अपनी प्रिय पत्नी से पुत्र प्राप्त हो जाना, और जैसे सपने में देखा हुआ धन सचमुच मिल जाना।

1.6.41

यथेप्सितेन संयोग इष्टस्यागमनं यथा । प्रणष्टस्य यथा लाभो भवदागमनं तथा ॥ ४१ ॥

yathepsitena saṁyoga iṣṭasyāgamanam yathā | praṇaṣṭasya yathā lābho bhavadāgamanam tathā || 41 ||

Your coming is like union with what one has longed for, like the arrival of someone dear, like getting back something that was lost.

आपका आना वैसा ही है जैसे अपनी चाही हुई चीज़ मिल जाना, जैसे किसी प्रिय व्यक्ति का आ जाना, और जैसे खोई हुई चीज़ वापस मिल जाना।

1.6.42

यथा हर्षो नभोगत्या मृतस्य पुनरागमात् । तथा त्वदागमाद्ब्रह्मन्स्वागतं ते महामुने ॥ ४२ ॥

yathā harṣo nabhogatyā mṛtasya punarāgamāt | tathā tvadāgamād brahman svāgataṁ te mahāmune || 42 ||

Just as one feels joy at flying through the sky, or joy when someone dead returns again, so do I feel joy at your coming, brahmin. Welcome to you, great sage.

हे ब्राह्मण, जैसी खुशी आकाश में उड़ने से होती है, या किसी मरे हुए व्यक्ति के फिर से लौट आने से होती है, वैसी ही खुशी मुझे आपके आने से हुई है। हे महामुनि, आपका स्वागत है।

1.6.43

ब्रह्मलोकनिवासो हि कस्य न प्रीतिमावहेत् । मुने तवागमस्तद्वत्सत्यमेव ब्रवीमि ते ॥ ४३ ॥

brahmalokanivāso hi kasya na prītimāvahet | mune tavāgamas tadvat satyameva bravīmi te || 43 ||

Who would not feel joy living in Brahma's own world? O sage, your arrival is just like that. I am telling you the plain truth.

ब्रह्मलोक में रहना किसे खुशी नहीं देगा? हे मुनि, आपका आना भी वैसा ही है। मैं आपसे सच कह रहा हूँ।

1.6.44

कश्च ते परमः कामः किं च ते करवाण्यहम् । पात्रभूतोऽसि मे विप्र प्राप्तः परमधार्मिकः ॥ ४४ ॥

kaśca te paramaḥ kāmaḥ kiṃ ca te karavāṇyahaṃ | pātrabhūto'si me vipra prāptaḥ paramadhārmikaḥ || 44 ||

What is your greatest wish, and what can I do for you? Brahmin, you are exactly the right person for me to give to, you who have come here, most righteous of all.

आपकी सबसे बड़ी इच्छा क्या है, और मैं आपके लिए क्या करूँ? हे विप्र, आप मेरे लिए बिलकुल सही पात्र हैं, आप यहाँ आए हैं, और आप सबसे धर्मात्मा व्यक्ति हैं।

1.6.45

पूर्व राजर्षिशब्देन तपसा द्योतितप्रभः । ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तः पूज्योऽसि भगवन्मया ॥ ४५ ॥

pūrvam rājarṣiśabdena tapasā dyotitaprabaḥ | brahmarṣitvam anuprāptaḥ pūjyo'si bhagavan mayā || 45 ||

Long ago you were known by the title of a royal sage, and austerity made your glory shine bright. Now you have reached the state of a brahmin sage. O lord, you deserve my worship.

पहले आपको राजर्षि के नाम से जाना जाता था, और तपस्या से आपका तेज चमक उठा था। अब आप ब्रह्मर्षि की अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। हे भगवन, आप मेरी पूजा के योग्य हैं।

1.6.46

गङ्गाजलाभिषेकेण यथा प्रीतिर्भवेन्मम । तथा त्वद्दर्शनात्प्रीतिरन्तः शीतयतीव माम् ॥ ४६ ॥

gaṅgājālābhiṣekeṇa yathā prītirbhavennmama | tathā tvaddarśanātpṛitirantaḥ śītayatīva mām || 46 ||

Just as I would feel joy from bathing in the water of the Ganga, in the same way the joy of seeing you cools me from within.

जैसे गंगा के जल से नहाकर मुझे खुशी होती, वैसे ही आपको देखने की खुशी मुझे अंदर से ठंडक पहुंचा रही है।

1.6.47

विगतेच्छाभयक्रोधो वीतरागो निरामयः । इदमत्यद्भुतं ब्रह्मन्यद्भवान्मामुपागतः ॥ ४७ ॥

vigatecchābhayakrodho vītarāgo nirāmayāḥ | idamatyadbhutaṃ brahmanyadbhavānmāmupāgataḥ || 47 ||

Your desire, fear and anger are gone; you are free from attachment and free from illness. O brahmin, it is a great wonder that you have come to me.

आपकी इच्छा, डर और गुस्सा खत्म हो चुके हैं; आप आसक्ति से मुक्त हैं और रोग से भी मुक्त हैं। हे ब्राह्मण, यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आप मेरे पास आए हैं।

1.6.48

शुभक्षेत्रगतं चाहमात्मानमपकल्मषम् । चन्द्रबिम्ब इवोन्मग्नं वेदवेद्यविदांवर ॥ ४८ ॥

śubhakṣetragataṃ cāhamātmānamapakalmaṣam | candrabimba ivonmagnaṃ vedavedyavidāṃvara || 48 ||

O best of those who know what the Vedas teach, I feel that I myself have arrived at a sacred place, free from every sin, like the moon's disc risen bright.

हे वेदों के ज्ञान में सबसे श्रेष्ठ, मुझे लगता है कि मैं खुद एक पवित्र जगह पर पहुंच गया हूँ, हर पाप से मुक्त होकर, जैसे चांद की चमकती हुई गोल आकृति ऊपर उठी हो।

1.6.49

साक्षादिव ब्रह्मणो मे तवाभ्यागमनं मतम् । पूतोऽस्यनुगृहीतश्च तवाभ्यागमनान्मुने ॥ ४९ ॥

sākṣādiva brahmaṇo me tavābhyāgamanam matam | pūto'smyanugrṛhītaśca tavābhyāgamanānmune || 49 ||

I take your coming to me as if Brahma himself had come in person. O sage, your arrival has purified me and blessed me.

मैं आपके आने को ऐसे मानता हूँ जैसे खुद ब्रह्मा ही साक्षात् आए हों। हे मुनि, आपके आने से मैं पवित्र और कृतार्थ हो गया हूँ।

1.6.50

त्वदागमनपुण्येन साधो यदनुरञ्जितम् । अद्य मे सफलं जन्म जीवितं तत्सुजीवितम् ॥ ५० ॥

tvadāgamanapuṇyena sādho yadanurañjitam | adya me saphalam janma jīvitam tatsujīvitam || 50 ||

O good man, because of the merit of your coming, my heart is filled with joy. Today my birth has become fruitful, and my life has become a truly good life.

हे साधु, आपके आने के पुण्य से मेरा मन खुशी से भर गया है। आज मेरा जन्म सफल हो गया है, और मेरा जीवन सच में अच्छा जीवन बन गया है।

1.6.51

त्वामिहाभ्यागतं दृष्ट्वा प्रतिपूज्य प्रणम्य च । आत्मन्येव नमाम्यन्तर्दृष्टेन्दुं जलधिर्यथा ॥ ५१ ॥

tvāmihābhyāgataṁ dṛṣṭvā pratipūjya praṇamya ca | ātmanyeva namāmyantardṛṣṭeṇduṁ jaladhiryathā || 51 ||

Seeing you arrived here, I have honored you and bowed to you; and within, in my own self, I bow again, as the ocean swells within itself on seeing the moon.

यहां आपको आया हुआ देखकर, मैंने आपका सम्मान किया और आपको प्रणाम किया; और अपने भीतर, अपनी आत्मा में, मैं फिर से झुकता हूँ, जैसे समुद्र चांद को देखकर अंदर ही अंदर उमड़ पड़ता है।

1.6.52

यत्कार्यं येन वार्थेन प्राप्तोऽसि मुनिपुङ्गव । कृतमित्येव तद्विद्धि मान्योऽसीति सदा मम ॥ ५२ ॥

yatkāryaṁ yena vārthena prāpto'si munipuṅgava | kṛtamityeva tadviddhi mānyo'sīti sadā mama || 52 ||

Whatever task, or for whatever purpose, you have come here, O best of sages, know that it is already done. Know that you are always to be honored by me.

आप जिस भी काम के लिए, या जिस भी वजह से यहां आए हैं, हे मुनियों में श्रेष्ठ, समझ लीजिए कि वह हो चुका है। और यह भी जान लीजिए कि आप हमेशा मेरे लिए सम्मान के योग्य हैं।

1.6.53

स्वकार्ये न विमर्शं त्वं कर्तुमर्हसि कौशिक । भगवन्नास्त्यदेयं मे त्वयि यत्प्रतिपद्यते ॥ ५३ ॥

svakārye na vimarśaṁ tvaṁ kartumarhasi kauśika | bhagavannāstyadeyaṁ me tvayi yatpratipadyate || 53 ||

O Kaushika, you need not hesitate about your own task. O lord, there is nothing of mine that cannot be given, if you ask for it.

हे कौशिक, आपको अपने काम के बारे में झिझकने की जरूरत नहीं है। हे भगवन, मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो आपको मांगने पर न दी जा सके।

1.6.54

कार्यस्य न विचारं त्वं कर्तुमर्हसि धर्मतः । कर्ता चाहमशेषं ते दैवतं परमं भवान् ॥ ५४ ॥

kāryasya na vicāraṃ tvaṃ kartumarhasi dharmataḥ | kartā cāham aśeṣaṃ te daivataṃ paramaṃ bhavān || 54 ||

By what is right, you should not think twice about the task -- I myself will carry it out completely for you. You are my highest god.

धर्म के अनुसार, आपको इस काम के बारे में सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है -- मैं खुद इसे आपके लिए पूरी तरह से कर दूंगा। आप मेरे लिए सबसे बड़े देवता हैं।

1.6.55

इदमतिमधुरं निशम्य वाक्यं श्रुतिसुखमात्मविदा विनीतमुक्तम् । प्रथितगुणयशागुणैर्विशिष्टं मुनिवृषभः परमं जगाम हर्षम् ॥ ५५ ॥

idamatimadhuraṃ niśamya vākyaṃ śrutisukhamātmavidā vinitamuktaṃ | prathitagunaśaśāgunairviśiṣṭaṃ munivṛṣabhaḥ paramaṃ jagāma harṣam || 55 ||

Hearing these very sweet words -- pleasant to the ear, spoken with humility by one who knew the self, marked by his well-known virtue and fame -- the great sage felt the highest joy.

आत्मज्ञानी के द्वारा नम्रता से कहे गए ये बहुत मीठे शब्द सुनकर -- जो सुनने में सुखद थे और जिनमें उसके प्रसिद्ध गुण और यश झलक रहे थे -- उस महान मुनि को सबसे बड़ी खुशी हुई।

Chapter 7

1.7.1

श्रीवाल्मीकिरुवाच । तच्छ्रुत्वा राजसिंहस्य वाक्यमद्भुतविस्तरम् । हृष्टरोमा महातेजा विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥ १ ॥

*śrīvālmīkiruvāca | tacchrutvā rājasimhasya vākyaṃadbhutavistaram | hr̥ṣṭaromā mahātejā
viśvāmitro'bhyabhāṣata || 1 ||*

Shri Valmiki said: After hearing this wonderful, long speech of the lion among kings, Vishvamitra felt a thrill of joy in his body, and the greatly radiant sage began to speak.

श्री वाल्मीकि ने कहा - राजाओं में सिंह के समान उस राजा की यह अद्भुत और लंबी बात सुनकर, महातेजस्वी विश्वामित्र का रोम-रोम खिल उठा, और वे बोलने लगे।

1.7.2

सदृशं राजशार्दूल तवैवैतन्महीतले । महावंशप्रसूतस्य वसिष्ठवशवर्तिनः ॥ २ ॥

sadṛśaṃ rājaśārdūla tavaivaitanmahītale | mahāvaṃśaprasūtasya vasiṣṭhavasavartinah || 2 ||

O tiger among kings, in this world, this fits only you - one who was born in a great family and who lives guided by Vasishtha.

हे राजाओं में श्रेष्ठ वीर, इस दुनिया में यह बात केवल आप पर ही लागू होती है - आप एक महान वंश में जन्मे हैं और वसिष्ठ के मार्गदर्शन में चलते हैं।

1.7.3

यत्तु मे हृद्गतं वाक्यं तस्य कार्यविनिर्णयम् । कुरु त्वं राजशार्दूल धर्मं समनुपालय ॥ ३ ॥

yattu me hṛdgataṃ vākyaṃ tasya kāryavinirṇayam | kurutvaṃ rājaśārdūla dharmam samanupālaya || 3 ||

But there is something in my heart - decide to carry it out and do it. O tiger among kings, follow your duty fully.

लेकिन मेरे मन में एक बात है - उसे पूरा करने का फैसला लीजिए और करिए। हे राजाओं में श्रेष्ठ वीर, अपने धर्म का पूरी तरह पालन कीजिए।

1.7.4

अहं धर्मं समातिष्ठे सिद्धयर्थं पुरुषर्षभ । तस्य विघ्नकरा घोरा राक्षसा मम संस्थिताः ॥ ४ ॥

ahaṃ dharmam samātiṣṭhe siddhayartham puruṣarṣabha | tasya vighnakarā ghorā rākṣasā mama saṁsthitāḥ || 4 ||

O best of men, I am carrying out a sacred rite so that it may succeed, but terrible demons keep appearing near me to spoil it.

हे पुरुषों में श्रेष्ठ, मैं एक यज्ञ को सफल बनाने के लिए कर रहा हूँ, लेकिन भयंकर राक्षस बार-बार मेरे पास आकर उसे बिगाड़ देते हैं।

1.7.5

यदा यदा तु यज्ञेन यजेऽहं विबुधव्रजान् । तदा तदा तु मे यज्ञं विनिघ्नन्ति निशाचराः ॥ ५ ॥

yadā yadā tu yajñena yaje'haṃ vibudhavrajān | tadā tadā tu me yajñaṃ vinighnanti niśācarāḥ || 5 ||

Every time I perform the sacrifice to honor the gods, the demons who wander at night come and wreck my sacrifice.

जब भी मैं देवताओं की पूजा के लिए यज्ञ करता हूँ, तब-तब रात में घूमने वाले राक्षस मेरे यज्ञ को बिगाड़ देते हैं।

1.7.6

बहुशो विहिते तस्मिन्मया राक्षसनायकाः अकिरंस्ते महीं यागे मांसेन रुधिरेण च ॥ ६ ॥

bahuśo vihite tasminmayā rākṣasanāyakāḥ akiraṁste mahīṁ yāge māṁsena rudhireṇa ca || 6 ||

Even though I performed that sacrifice many times, the demon chiefs kept throwing flesh and blood over the sacrificial ground.

मैंने वह यज्ञ कई बार किया, फिर भी राक्षसों के सरदारों ने यज्ञ की जगह पर मांस और खून फेंक दिया।

1.7.7

अवधूते तथाभूते तस्मिन्यागकदम्बके कृतश्रमो निरुत्साहस्तस्माद्देशादुपागतः ॥ ७ ॥

avadhūte tathābhūte tasminyāgakadambake kṛtaśramo nirutsāhastasmāddeśādupāgataḥ || 7 ||

When that whole chain of sacrifices was ruined like this, I grew tired from all my effort and lost heart, so I came here from that place.

जब यज्ञों की यह पूरी श्रृंखला इस तरह बिगड़ गई, तो मैं बहुत मेहनत करने के बाद थक गया और निराश हो गया, इसलिए मैं उस जगह से यहाँ चला आया।

1.7.8

न च मे क्रोधमुत्स्राष्टुं बुद्धिर्भवति पार्थिव तथाभूतं हि तत्कर्म न शापस्तस्य विद्यते ॥ ८ ॥

na ca me krodhamutsraṣṭuṁ buddhirbhavati pārthiva tathābhūtaṁ hi tatkarma na śāpastasya vidyate || 8 ||

And O king, my heart does not want to let out anger, because a sacred rite of this kind does not allow a curse.

और हे राजन, मेरा मन गुस्सा निकालना नहीं चाहता, क्योंकि इस तरह के यज्ञ में शाप देना सही नहीं है।

1.7.9

ईदृशी यज्ञदीक्षा सा मम तस्मिन्महाक्रतौ त्वत्प्रसादादविघ्नेन प्रापयेयं महाफलम् ॥ ९ ॥

īdṛśī yajñadīkṣā sā mama tasminmahākṛtau tvatprasādādavighnena prāpayeyaṁ mahāphalam || 9 ||

Such is my vow for that great sacrifice. Through your kindness, let me finish it without any trouble and get its great reward.

उस महायज्ञ के लिए मेरा व्रत ऐसा ही है। आपकी कृपा से मैं उसे बिना किसी रुकावट के पूरा कर सकूँ और उसका बड़ा फल पा सकूँ।

1.7.10

त्रातुमर्हसि मामार्तं शरणार्थिनमागतम् अर्थिनां यन्निराशत्वं सत्तमेऽभिभवो हि सः ॥ १० ॥

trātumarhasi māmārtaṁ śaraṇārthinamāgatam arthināṁ yannirāśatvaṁ sattame'bhibhavo hi saḥ || 10 ||

You should save me. I am in pain and have come to you seeking shelter. When someone comes asking for help and a good man sends him away disappointed, that is a defeat for the good man.

आप मेरी रक्षा करें। मैं दुखी हूँ और आपकी शरण में आया हूँ। जब कोई मदद माँगने आता है और एक भला आदमी उसे निराश करके भेज देता है, तो यह उस भले आदमी की हार होती है।

1.7.11

तवास्ति तनयः श्रीमान्दृप्तशार्दूलविक्रमः । महेन्द्रसदृशो वीर्ये रामो रक्षोविदारणः ॥ ११ ॥

tavāsti tanayaḥ śrīmāndṛptaśārdūlavikramaḥ | mahendrasadṛśo vīrye rāmo rakṣovidāraṇaḥ || 11 ||

You have a glorious son, as brave as a proud tiger, as mighty as the great Indra - Rama, the destroyer of demons.

आपका एक तेजस्वी पुत्र है, जो घमंडी बाघ जैसा बहादुर है और शक्ति में महान इंद्र जैसा है - राम, जो राक्षसों का नाश करने वाला है।

1.7.12

तं पुत्रं राजशार्दूल रामं सत्यपराक्रमम् । काकपक्षधरं शूरं ज्येष्ठं मे दातुमर्हसि ॥ १२ ॥

taṁ putraṁ rājaśārdūla rāmaṁ satyaparākramam | kākapakṣadharaṁ śūraṁ jyeṣṭhaṁ me dātumarhasi || 12 ||

O tiger among kings, you should give me that son of yours - Rama, whose courage is true, who is brave, who still wears a boy's side-locks, and who is your eldest son.

हे राजाओं में श्रेष्ठ वीर, आप अपने उस पुत्र राम को मुझे दे दीजिए, जिसका साहस सच्चा है, जो बहादुर है, जिसके बाल अभी बालकों जैसे गुँथे हुए हैं, और जो आपका सबसे बड़ा बेटा है।

1.7.13

शक्तो ह्येष मया गुप्तो दिव्येन स्वेन तेजसा । राक्षसा येऽपकर्तारस्तेषां मूर्धविनिग्रहे ॥ १३ ॥

śakto hyeṣa mayā gupto divyena svena tejasā | rākṣasā ye'pakartāraṣṭeṣāṁ mūrdhavinigrahe || 13 ||

Protected by my own divine power, he is fully able to crush the heads of the demons who cause this harm.

मेरी अपनी दिव्य शक्ति से सुरक्षित होकर, वह उन नुकसान पहुँचाने वाले राक्षसों के सिर कुचलने में पूरी तरह सक्षम है।

1.7.14

श्रेयश्चास्य करिष्यामि बहुरूपमनन्तकम् । त्रयाणामपि लोकानां येन पूज्यो भविष्यति ॥ १४ ॥

śreyaścāsyā kariṣyāmi bahurūpamanantakam | trayāṇāmapī lokānāṁ yena pūjyo bhaviṣyati || 14 ||

I will also do good for him in countless ways without end, so that he becomes honored in all three worlds.

मैं उसका भला भी कई तरह से और बिना रुके करूँगा, जिससे वह तीनों लोकों में पूजनीय बन जाएगा।

1.7.15

न च ते राममासाद्य स्थातुं शक्ता निशाचराः । क्रुद्धं केसरिणं दृष्ट्वा वनेरण इवैणकाः ॥ १५ ॥

na ca te rāmamāsādyā sthātuṁ śaktā niśācarāḥ | kruddhaṁ kesariṇaṁ drṣṭvā vaneraṇa ivaiṇakāḥ || 15 ||

And once they face Rama, those night-wandering demons will not be able to stand their ground - just as deer in the forest cannot stand before an angry lion.

और राम का सामना करते ही, वे रात में घूमने वाले राक्षस टिक नहीं पाएँगे - जैसे जंगल में हिरण किसी गुस्से में भरे शेर के सामने खड़े नहीं रह पाते।

1.7.16

तेषां न चान्यः काकुत्स्थाद्योद्धुमुत्सहते पुमान् । ऋते केसरिणः क्रुद्धान्मत्तानां करिणामिव ॥ १६ ॥

teṣāṁ na cānyaḥ kākutsthādyoddhumutsahate pumān | ṛte kesariṇaḥ kruddhānmattānāṁ kariṇāmiva || 16 ||

And apart from Rama, the descendant of Kakutstha, no other man has the courage to fight them - just as no one but an angry lion dares fight maddened elephants.

और राम (ककुत्स्थ के वंशज) के अलावा और कोई पुरुष उनसे लड़ने का साहस नहीं रखता - जैसे मस्त हाथियों से लड़ने की हिम्मत गुस्से में भरे शेर के सिवा किसी में नहीं होती।

1.7.17

वीर्योत्सिक्ता हि ते पापाः कालकूटोपमा रणे । खरदूषणयोर्भृत्याः कृतान्ताः कुपिता इव ॥ १७ ॥

vīryotsiktā hi te pāpāḥ kālakūṭopamā raṇe | kharadūṣaṇayorbhr̥tyāḥ kṛtāntāḥ kupitā iva || 17 ||

Those wicked demons, the servants of Khara and Dushana, are drunk with their own strength - as deadly as poison in battle, like angry Death itself.

वे पापी राक्षस, जो खर और दूषण के सेवक हैं, अपनी ताकत के नशे में चूर हैं - युद्ध में वे जहर जितने घातक हैं, मानो गुस्से में भरा यमराज ही हों।

1.7.18

रामस्य राजशार्दूल सहिष्यन्ते न सायकान् । अनारतगता धारा जलदस्येव पांसवः ॥ १८ ॥

rāmasya rājaśārdūla sahiṣyante na sāyakān | anāratagatā dhārā jaladasyaiva pāṃsavaḥ || 18 ||

O tiger among kings, they will not be able to bear Rama's arrows - just as dust cannot survive the endless downpour from a rain cloud.

हे राजाओं में श्रेष्ठ वीर, वे राम के बाणों को सहन नहीं कर पाएँगे - जैसे धूल बादल की लगातार बरसती धार को सहन नहीं कर पाती।

1.7.19

न च पुत्रकृतं स्नेहं कर्तुमर्हसि पार्थिव । न तदस्ति जगत्स्मिन्यन्न देयं महात्मनाम् ॥ १९ ॥

na ca putrakṛtaṃ snehaṃ kartumarhasi pāṛthiva | na tadasti jagatysminyanna deyaṃ mahātmanām || 19 ||

And O king, do not let your love for your son stop you. There is nothing in this world that great people should refuse to give.

और हे राजन, अपने पुत्र के प्रति प्रेम के कारण मत रुकिए। इस दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसे महान लोगों को देने से मना करना चाहिए।

1.7.20

हन्त नूनं विजानामि हतांस्तान्विद्विराक्षसान् । नह्यस्मदादयः प्राज्ञाः संदिग्धे संप्रवृत्तयः ॥ २० ॥

hanta nūnaṃ vijānāmi hatāṃstānvidhirākṣasān | nahyasmadādayaḥ prājñāḥ saṃdigdhe saṃpravṛttayaḥ || 20 ||

Indeed, I am sure of this - know that those demons are as good as dead already. For wise people like us do not take up something whose result is uncertain.

सच में, मुझे इस बात का पूरा भरोसा है - जान लीजिए कि वे राक्षस मानो पहले ही मारे जा चुके हैं। क्योंकि हम जैसे बुद्धिमान लोग किसी ऐसे काम में हाथ नहीं डालते जिसका नतीजा अनिश्चित हो।

1.7.21

अहं वेद्मि महात्मानं रामं राजीवलोचनम् । वसिष्ठश्च महातेजा ये चान्ये दीर्घदर्शिनः ॥ २१ ॥

ahaṃ vedmi mahātmanāṃ rāmaṃ rājīvalocanam | vasiṣṭhaśca mahātejā ye cānye dīrghadarśinaḥ || 21 ||

I know that Rama, with his lotus-like eyes, is truly great - and so does the greatly radiant Vasishtha, and other far-seeing people.

मैं जानता हूँ कि कमल जैसी आँखों वाला राम सचमुच महान है - और यही बात महातेजस्वी वसिष्ठ और दूसरे दूरदर्शी लोग भी जानते हैं।

1.7.22

यदि धर्मो महत्त्वं च यशस्ते मनसि स्थितम् । तन्मह्यं समभिप्रेतमात्मजं दातुमर्हसि ॥ २२ ॥

yadi dharmo mahattvaṃ ca yaśaste manasi sthitam | tanmahyaṃ samabhipretamātmajaṃ dātumarhasi || 22 ||

If duty, greatness, and good name matter to your heart, then give me the son I want.

अगर धर्म, महानता और अच्छा नाम आपके मन में मायने रखते हैं, तो जिस बेटे को मैं चाहता हूँ, उसे मुझे दे दीजिए।

1.7.23

दशरात्रश्च मे यज्ञो यस्मिन्नामेण राक्षसाः । हन्तव्या विघ्नकर्तारो मम यज्ञस्य वैरिणः ॥ २३ ॥

daśarātraśca me yajño yasminrāmeṇa rākṣasāḥ | hantavyā vighnakartāro mama yajñasya vairiṇaḥ || 23 ||

My sacrifice lasts ten nights, and during it, Rama must kill the demons who cause trouble - the enemies of my sacrifice.

मेरा यज्ञ दस रातों तक चलेगा, और इस दौरान राम को उन विघ्न डालने वाले राक्षसों को मारना होगा, जो मेरे यज्ञ के दुश्मन हैं।

1.7.24

अत्राप्यनुज्ञां काकुत्स्थ ददतां तव मन्त्रिणः । वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे तेन रामं विसर्जय ॥ २४ ॥

atrāpyanuññāṃ kākutstha dadatāṃ tava mantrināḥ | vasiṣṭhapramukhāḥ sarve tena rāmaṃ visarjaya || 24 ||

In this matter too, O descendant of Kakutstha, let your ministers, led by Vasishtha, all give their consent - and then send Rama with me.

हे ककुत्स्थ के वंशज, इस बारे में भी वसिष्ठ के नेतृत्व में आपके सारे मंत्री अपनी सहमति दें - और उसके बाद राम को मेरे साथ भेज दीजिए।

1.7.25

नात्येति कालः कालज्ञ यथायं मम राघव । तथा कुरुष्व भद्रं ते मा च शोके मनः कृथाः ॥ २५ ॥

nātyeti kālaḥ kālajña yathāyaṃ mama rāghava | tathā kuruṣva bhadraṃ te mā ca śoke manaḥ kṛthāḥ || 25 ||

O Raghava, you who understand the value of time, please act so that this time of mine does not slip away. May good come to you - do not let your mind sink into sorrow.

हे रघुवंशी, आप समय की कीमत समझते हैं, इसलिए ऐसा कीजिए कि मेरा यह समय बेकार न जाए। आपका भला हो, अपने मन को दुख में मत डालिए।

1.7.26

कार्यमण्वपि काले तु कृतमेत्युपकारताम् । महदप्युपकारोऽपि रिक्ततामेत्यकालतः ॥ २६ ॥

kāryamaṇvapi kāle tu kṛtametyupakāratām | mahadapyupakāro'pi riktatāmetryakālataḥ || 26 ||

Even a small task, done at the right time, becomes truly useful. But even a big favor, done at the wrong time, becomes worthless.

छोटा-सा काम भी अगर सही समय पर किया जाए तो बहुत काम का साबित होता है। लेकिन बड़ी से बड़ी मदद भी अगर गलत समय पर की जाए तो बेकार हो जाती है।

1.7.27

इत्येवमुक्त्वा धर्मात्मा धर्मार्थसहितं वचः । विरराम महातेजा विश्वामित्रो मुनीश्वरः ॥ २७ ॥

ityevamuktvā dharmātmā dharmārthasahitaṃ vacaḥ | virarāma mahātejā viśvāmitro munīśvaraḥ || 27 ||

Having said this - words full of both duty and good sense - the righteous and greatly radiant Vishvamitra, the greatest of sages, stopped speaking.

धर्म और अर्थ से भरी यह बात कहकर, धर्मात्मा और महातेजस्वी मुनियों में श्रेष्ठ विश्वामित्र चुप हो गए।

श्रुत्वा वचो मुनिवरस्य महानुभावस्तूष्णीमतिष्ठदुपपन्नपदं स वक्तुम् । नो युक्तियुक्तकथनेन विनैति तोषं
धीमानपूरितमनोऽभिमतश्च लोकः ॥ २८ ॥

*śrutvā vaco munivarasya mahānubhāvas tūṣṇīmatīṣṭhadupapannapadaṃ sa vaktum | no yuktivyuktakathanena
vinaiti toṣaṃ dhīmānapūritamano'bhimataśca lokaḥ || 28 ||*

Having heard the words of that great sage, the noble king stayed silent for a while, even though he had a fitting answer ready to give - because a thoughtful person, when his mind is not yet fully settled, and a person the world looks up to, feels satisfied only when he speaks after careful reasoning.

उस श्रेष्ठ मुनि की बात सुनकर, वह महान राजा कुछ देर के लिए चुप रहे, हालाँकि उनके पास देने के लिए एक सही जवाब तैयार था - क्योंकि जब तक मन में बात पूरी तरह साफ न हो, एक सोच-समझने वाला और सम्मानित व्यक्ति तभी संतुष्ट होता है जब वह ठीक से सोच-समझकर बात करे।

Chapter 8

1.8.1

अष्टमः सर्गः वाल्मीकिरुवाच । तच्छ्रुत्वा राजशार्दूलो विश्वामित्रस्य भाषितम् । मुहूर्तमासीन्निश्चेष्टः सदैन्यं चेदमब्रवीत् ॥ १ ॥

aṣṭamaḥ sargaḥ vālmīkiruvāca | tacchrutvā rājaśārdūlo viśvāmitrasya bhāṣitam | muhūrtamāśīnniśceṣṭaḥ sadainyaṃ cedamabravīt || 1 ||

Valmiki said: Hearing these words of Vishwamitra, the great king sat still without moving for a while. Then, full of sorrow, he said this.

वाल्मीकि ने कहा कि विश्वामित्र की यह बात सुनकर वह महान राजा कुछ देर तक चुपचाप, बिना हिले-डुले बैठा रहा। फिर बहुत दुखी होकर उसने यह कहा।

1.8.2

ऊनषोडशवर्षोऽयं रामो राजीवलोचनः । न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः ॥ २ ॥

ūnaṣoḍaśavarṣo'yaṃ rāmo rājīvalocanaḥ | na yuddhayogyatāmasya paśyāmi saha rākṣasaiḥ || 2 ||

This Rama, whose eyes are like lotuses, is not yet sixteen years old. I do not see in him the fitness to fight against the demons.

यह राम, जिसकी आँखें कमल जैसी हैं, अभी सोलह साल का भी नहीं हुआ है। मुझे इसमें राक्षसों से लड़ने की योग्यता नज़र नहीं आती।

1.8.3

इयमक्षौहिणी पूर्णा यस्याः पतिरहं प्रभो । तया परिवृतो युद्धं दास्यामि पिशिताशिनाम् ॥ ३ ॥

iyamakṣauhiṇī pūrṇā yasyāḥ patirahaṃ prabho | tayā parivṛto yuddhaṃ dāsyāmi piśitāśinām || 3 ||

O lord, I command this entire army of mine. Surrounded by it, I myself will fight the flesh-eating demons.

हे स्वामी, इस पूरी सेना का मुखिया मैं हूँ। इसी सेना के साथ मैं खुद मांस खाने वाले राक्षसों से युद्ध करूँगा।

1.8.4

इमे हि शूरा विक्रान्ता भृत्या मन्त्रविशारदाः । अहं चैषां धनुष्पाणिर्गोप्ता समरमूर्धनि ॥ ४ ॥

ime hi śūrā vikrāntā bhṛtyā mantraviśāradāḥ | ahaṃ caiṣāṃ dhanuṣpāṇirgoptā samaramūrdhani || 4 ||

These soldiers of mine are brave, courageous, and skilled in strategy. And I, bow in hand, will protect them at the front of the battle.

मेरे ये सैनिक बहादुर, पराक्रमी और युद्ध-नीति में कुशल हैं। और मैं खुद हाथ में धनुष लेकर युद्ध के मोर्चे पर इनकी रक्षा करूँगा।

1.8.5

एभिः सहैव वीराणां महेन्द्रमहतामपि । ददामि युद्धं मत्तानां करिणामिव केसरी ॥ ५ ॥

ebhiḥ sahaiva vīrāṇāṃ mahendramahatāmapī | dadāmi yuddhaṃ mattānāṃ kariṇāmiva kesarī || 5 ||

Together with these soldiers, I will fight even warriors as mighty as Indra, the way a lion fights maddened elephants.

इन्हीं सैनिकों के साथ मैं इंद्र जैसे बड़े-बड़े शूरवीरों से भी युद्ध कर सकता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे शेर मस्त हाथियों से भिड़ जाता है।

1.8.6

बालो रामस्त्वनीकेषु न जानाति बलाबलम् । अन्तःपुरादृते दृष्टा नानेनान्या रणावनिः ॥ ६ ॥

bālo rāmastvanīkeṣu na jānāti balābalam | antaḥpurādṛte dṛṣṭā nānenānyā raṇāvaniḥ || 6 ||

Rama is only a child. He does not know how to judge strength and weakness among armies in battle. Except for the inner palace, he has never seen any other battlefield.

राम अभी बच्चा है। युद्ध में सेनाओं की ताकत और कमज़ोरी को पहचानना वह नहीं जानता। महल के भीतरी हिस्से के अलावा उसने और कोई युद्धभूमि कभी देखी ही नहीं है।

1.8.7

न शस्त्रैः परमैर्युक्तो न च युद्धविशारदः । नवास्त्रैः शूरकोटीनां तज्ज्ञः समरभूमिषु ॥ ७ ॥

na śastraiḥ paramairyukto na ca yuddhaviśāradaḥ | navāstraiḥ śūrakotīnāṃ tajjñāḥ samarabhūmiṣu || 7 ||

He has not mastered the finest weapons, and he is not skilled in war. On the battlefield, he does not even know the special weapons that crores of warriors use.

उसने सबसे अच्छे हथियार चलाना नहीं सीखा है, और वह युद्ध में कुशल भी नहीं है। युद्धभूमि में करोड़ों वीर जिन खास अस्त्रों का प्रयोग करते हैं, वह उन्हें भी नहीं जानता।

1.8.8

केवलं पुष्पखण्डेषु नगरोपवनेषु च । उद्यानवनकुञ्जेषु सदैव परिशीलनम् ॥ ८ ॥

kevalam puṣpakhaṇḍeṣu nagaropavaneṣu ca | udyānavanakujñeṣu sadaiva pariśīlanam || 8 ||

His whole practice, always, has only been in flower gardens, in the parks near the city, and in gardens, groves, and leafy bowers.

उसका सारा अभ्यास बस फूलों के बागों में, शहर के बगीचों में, और उद्यानों, वनों तथा लताकुंजों में ही रहा है।

1.8.9

विहर्तुमेष जानाति सह राजकुमारकैः । कीर्णपुष्पोपहारासु स्वकास्वजिरभूमिषु ॥ ९ ॥

vigartumeṣa jānāti saha rājakumārakaiḥ | kīrṇapuṣpopahārāsu svakāsvajirabhūmiṣu || 9 ||

He only knows how to play with other princes, in his own courtyards strewn with flowers set out as offerings.

वह बस इतना जानता है कि दूसरे राजकुमारों के साथ अपने आँगन में खेले, जहाँ भेंट के रूप में फूल बिखरे गए हों।

1.8.10

अद्य त्वतितरां ब्रह्मन्मम भाग्यविपर्ययात् । हिमेनेव हि पद्माभः संपन्नो हरिणः कृशः ॥ १० ॥

adya tvatitarāṃ brahmannmama bhāgyaviparyayāt | himeneva hi padmābhaḥ saṃpanno hariṇaḥ kṛśaḥ || 10 ||

Now, Brahmin, because my luck has turned bad, he, whose glow was once like a lotus, has become thin as a deer, as if struck by frost.

हे ब्राह्मण, आज मेरा भाग्य बिगड़ जाने से, जिसकी चमक कमल जैसी थी, वह अब पाला पड़े कमल की तरह मुरझाकर दुबले हिरन जैसा हो गया है।

1.8.11

नात्तुमन्नानि शक्नोति न विहर्तुं गृहावनिम् । अन्तःखेदपरीतात्मा तूष्णीं तिष्ठति केवलम् ॥ ११ ॥

nāttumannāni śaknoti na vihartuṃ grhāvanim | antaḥkhedaparītātmā tūṣṇīm tiṣṭhati kevalam || 11 ||

He cannot eat food, and he cannot move about the grounds of the house. His mind full of inner sorrow, he simply stays silent.

वह न तो भोजन कर पा रहा है, न घर के आँगन में घूम पा रहा है। मन ही मन दुख से भरा हुआ, वह बस चुपचाप बैठा रहता है।

1.8.12

सदारः सहभृत्योऽहं तत्कृते मुनिनायक । शरदीव पयोवाहो नूनं निःसारतां गतः ॥ १२ ॥

sadāraḥ sahabhṛtyo'haṃ tatkr̥te munināyaka | śarādīva payovāho nūnaṃ niḥsāratāṃ gataḥ || 12 ||

O leader of sages, because of this, I, together with my wife and servants, have truly become empty of substance, like a rain-cloud in autumn.

हे मुनियों के स्वामी, इसी वजह से मैं अपनी पत्नी और सेवकों समेत बिलकुल खोखला हो गया हूँ, जैसे शरद ऋतु में बादल पानी से खाली हो जाता है।

1.8.13

ईदृशोऽसौ सुतो बाल आधिनाऽथ वशीकृतः । कथं ददामि तं तुभ्यं योद्धुं सह निशाचरैः ॥ १३ ॥

īdṛśo'sau suto bāla ādhinā'tha vaśīkr̥taḥ | katham dadāmi taṃ tubhyaṃ yoddhum saha niśācaraiḥ || 13 ||

This son of mine is a mere child, and now he is overcome by deep inner anguish. How can I give him to you to fight the night-wandering demons?

मेरा यह बेटा अभी बच्चा ही है, और अभी वह गहरे मानसिक कष्ट से घिरा हुआ है। मैं उसे राक्षसों से लड़ने के लिए आपको कैसे दे दूँ?

1.8.14

अपि बालाङ्गनासङ्गादपि साधो सुधारसात् । राज्यादपि सुखायैव पुत्रस्नेहो महामते ॥ १४ ॥

api bālāṅganāsāṅgādapi sādho sudhārasāt | rājyādapi sukhāyaiva putrasneho mahāmate || 14 ||

O virtuous, wise one, a father's love for his son gives more happiness than being with a young woman, more than the nectar of immortality, more even than a kingdom.

हे साधु, हे महाबुद्धिमान, पुत्र का प्रेम सुख देने में एक युवती के साथ रहने से भी बढ़कर है, अमृत के रस से भी बढ़कर है, और राज्य से भी बढ़कर है।

1.8.15

ये दुरन्ता महारम्भास्त्रिषु लोकेषु खेददाःपुत्रस्नेहेन सन्तोऽपि कुर्वन्ते तानसंशयम् ॥ १५ ॥

ye durantā mahārambhāstriṣu lokeṣu khedadāḥputrasnehena santo'pi kurvante tānasamśayam || 15 ||

Even good, virtuous people take up hard, endless undertakings that bring trouble in all three worlds. They do this, without doubt, simply out of love for a son.

यहाँ तक कि अच्छे और सज्जन लोग भी, बेटे के प्रेम के कारण, ऐसे कठिन और अंतहीन कामों में लग जाते हैं जो तीनों लोकों में दुख देने वाले होते हैं, इसमें कोई शक नहीं।

1.8.16

असवोऽथ धनं दारास्त्यज्यन्ते मानवैः सुखम् । न पुत्रो मुनिशार्दूल स्वभावो ह्येष जन्तुषु ॥ १६ ॥

asavo'tha dhanam dārāstyajyante mānavaiḥ sukham | na putro muniśārdūla svabhāvo hyeṣa jantuṣu || 16 ||

People can give up their lives, their wealth, even their wives, without much trouble, but not a son. O tiger among sages, this is simply the nature of living beings.

मनुष्य अपनी जान, धन, यहाँ तक कि पत्नी को भी आसानी से छोड़ सकते हैं, लेकिन बेटे को नहीं। हे मुनियों में श्रेष्ठ, प्राणियों का यही स्वभाव है।

1.8.17

राक्षसाः क्रूरकर्माणः कूटयुद्धविशारदाः । रामस्तान्योधयत्वित्थं युक्तिरेवातिदुःसहा ॥ १७ ॥

rākṣasāḥ krūrakarmāṇaḥ kūṭayuddhaviśāradaḥ | rāmastānyodhayatvittham yuktirevātiduḥsahā || 17 ||

These demons act cruelly, and they are experts in deceitful, treacherous warfare. That Rama should fight them, this very idea is unbearable to me.

ये राक्षस क्रूर कर्म करने वाले और छल-कपट भरे युद्ध में निपुण हैं। राम इनसे लड़े, यह विचार ही मेरे लिए असहनीय है।

1.8.18

विप्रयुक्तो हि रामेण मुहूर्तमपि नोत्सहे । जीवितुं जीविताकांक्षी च रामं नेतुमर्हसि ॥ १८ ॥

viprayukto hi rāmeṇa muhūrtamapi notsahē | jīvitum jīvitākāṃkṣī ca rāmaṇ nētumarhasi || 18 ||

Separated from Rama, I could not go on living even for a moment. If you wish me to remain alive, you must not take Rama with you.

राम से बिछड़कर मैं एक पल भी जीवित नहीं रह सकूँगा। अगर आप चाहते हैं कि मैं जीवित रहूँ, तो राम को अपने साथ मत ले जाइए।

1.8.19

नववर्षसहस्राणि मम जातस्य कौशिक । दुःखेनोत्पादितास्त्वेते चत्वारः पुत्रका मया ॥ १९ ॥

navavarṣasahasrāṇi mama jātasya kauśika | duḥkhenotpāditāstvetē catvāraḥ putrakā mayā || 19 ||

O Kaushika, it has been nine thousand years since I was born. Only with great difficulty did I produce these four sons.

हे कौशिक, मुझे जन्मे नौ हजार वर्ष हो चुके हैं। बड़ी कठिनाई से मैंने ये चार पुत्र प्राप्त किए हैं।

1.8.20

प्रधानभूतस्तेष्वेव रामः कमललोचनः । तं विनेह त्रयोऽप्यन्ये धारयन्ति न जीवितम् ॥ २० ॥

pradhānabhūtasteṣvēva rāmaḥ kamalalocanaḥ | taṁ vinēha trayō'pyanyē dhārayanti na jīvitam || 20 ||

Among them, Rama, whose eyes are like lotuses, is the foremost. Without him, the other three would not be able to hold on to their lives either.

इन सबमें कमल जैसी आँखों वाला राम सबसे प्रमुख है। उसके बिना, बाकी तीनों भी अपना जीवन नहीं बचा पाएंगे।

1.8.21

स एव रामो भवता नीयते राक्षसान्प्रति । यदि तत्पुत्रहीनं त्वं मृतमेवाशु विद्धि माम् ॥ २१ ॥

sa eva rāmo bhavatā nīyate rākṣasānprati | yadi tatputrahīnaṁ tvaṁ mṛtamevāśu viddhi mām || 21 ||

That very Rama is the one you are taking to face the demons. If that happens, know that I, having lost my son, will soon be as good as dead.

वही राम है जिसे आप राक्षसों के सामने ले जा रहे हैं। अगर ऐसा हुआ, तो जान लीजिए कि पुत्र खोकर मैं भी जल्द ही मरा हुआ जैसा हो जाऊँगा।

1.8.22

चतुर्णामात्मजानां हि प्रीतिरत्रैव मे परा । ज्येष्ठं धर्ममयं तस्मान्न रामं नेतुमर्हसि ॥ २२ ॥

caturṇāmātma-jānāṃ hi prītiratraiva me parā | jyeṣṭhaṃ dharmamayam tasmānna rāmaṃ netumarhasi || 22 ||

Of all my four sons, my deepest love is for this one. So you should not take Rama, my eldest son, who is the very embodiment of righteousness.

मेरे चारों पुत्रों में मेरा सबसे गहरा प्रेम इसी के लिए है। इसलिए आप मेरे सबसे बड़े पुत्र राम को, जो धर्म का रूप है, मत ले जाइए।

1.8.23

निशाचरबलं हन्तुं मुने यदि तवेप्सितम् । चतुरङ्गसमायुक्तं मया सह बलं नय ॥ २३ ॥

niśācarabalaṃ hantum mune yadi tavepsitam | caturāṅgasamāyuktaṃ mayā saha balaṃ naya || 23 ||

O sage, if you wish to destroy the demons' army, then take my army along with me. It is a complete force of elephants, chariots, cavalry, and foot soldiers.

हे मुनि, अगर आप राक्षसों की सेना का नाश करना चाहते हैं, तो मेरे साथ मेरी पूरी सेना ले चलिए, जिसमें हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल सैनिक शामिल हैं।

1.8.24

किंवीर्या राक्षसास्ते तु कस्य पुत्राः कथं च ते । कियत्प्रमाणाः के चैव इति वर्णय मे स्फुटम् ॥ २४ ॥

kiṃvīryā rākṣasāste tu kasya putrāḥ katham ca te | kiyatpramāṇāḥ ke caiva iti varṇaya me sphuṭam || 24 ||

How powerful are those demons? Whose sons are they, and how did they come to be? How big are they, and who exactly are they? Please explain all this to me clearly.

वे राक्षस कितने शक्तिशाली हैं? वे किसके पुत्र हैं, और कैसे हैं? उनका आकार कितना बड़ा है, और वे असल में हैं कौन? कृपया मुझे यह सब साफ-साफ बताइए।

1.8.25

कथं तेन प्रकर्तव्यं तेषां रामेण रक्षसाम् । मामकैर्बालकैर्ब्रह्मन्मया वा कूटयोधिनाम् ॥ २५ ॥

katham tena prakartavyam teṣāṃ rāmeṇa rakṣasām | māmakairbālakairbrahmannmayā vā kūṭayodhinām || 25 ||

O Brahmin, how should Rama deal with those demons who fight by deceit and trickery, with the help of my other young sons, or with me?

हे ब्राह्मण, छल-कपट से लड़ने वाले उन राक्षसों का सामना राम कैसे करे, मेरे बाकी बच्चों की मदद से, या मेरे साथ?

1.8.26

सर्वं मे शंस भगवन्यथा तेषां महारणे । स्थातव्यं दुष्टभाग्यानां वीर्योत्सिक्ता हि राक्षसाः ॥ २६ ॥

sarvaṃ me śaṃsa bhagavanyathā teṣāṃ mahāraṇe | sthātavyam duṣṭabhāgyānāṃ vīryotsiktā hi rākṣasāḥ || 26 ||

Venerable one, tell me everything, how one must stand against them in this great battle, against these demons of evil fortune who are so arrogant about their own strength.

हे भगवन, मुझे सब कुछ बताइए, इस महायुद्ध में उन दुर्भाग्य राक्षसों के सामने कैसे डटा जाए, जो अपनी ताकत पर बहुत घमंड करते हैं।

1.8.27

श्रूयते हि महावीर्यो रावणो नाम राक्षसः । साक्षाद्वैश्रवणभ्राता पुत्रो विश्रवासो मुनेः ॥ २७ ॥

śrūyate hi mahāvīryo rāvaṇo nāma rākṣasaḥ | sākṣādvaivaravabhrātā putro viśravaso muneḥ || 27 ||

I have heard that there is a very powerful demon named Ravana, the very brother of Vaishravana, and the son of the sage Vishrava.

मैंने सुना है कि रावण नाम का एक बहुत शक्तिशाली राक्षस है, वह साक्षात वैश्रवण का भाई है, और ऋषि विश्रवा का पुत्र है।

1.8.28

स चेत्तव मखे विघ्नं करोति किल दुर्मतिः । तत्संग्रामे न शक्ताः स्मो वयं तस्य दुरात्मनः ॥ २८ ॥

sa cet tava makhe vighnaṁ karoti kila durmatih | tatsaṁgrāme na śaktāḥ smo vayaṁ tasya durātmanaḥ || 28 ||

If that evil-minded Ravana truly disrupts your sacrifice, then we would not be able to stand against him, that wicked being, in battle.

अगर वह दुर्बुद्धि रावण सचमुच आपके यज्ञ में विघ्न डालता है, तो उस दुष्टात्मा से युद्ध में हम टिक नहीं पाएंगे।

1.8.29

काले काले पृथग्ब्रह्मन्भूरिवीर्यविभूतयः । भूतेष्वभ्युदयं यान्ति प्रलीयन्ते च कालतः ॥ २९ ॥

kāle kāle prthagbrahmanbhūrivīryavibhūtayaḥ | bhūteṣvabhyudayaṁ yānti praliyante ca kālataḥ || 29 ||

O Brahmin, from time to time, different beings rise to great power and glory, and then, in time, that power fades away and disappears.

हे ब्राह्मण, समय-समय पर अलग-अलग प्राणी बड़ी शक्ति और महिमा पाकर उभरते हैं, और फिर समय के साथ वह शक्ति मिट जाती है।

1.8.30

अद्यास्मिंस्तु वयं काले रावणादिषु शत्रुषु । न समर्थाः पुरः स्थातुं नियतेरेष निश्चयः ॥ ३० ॥

adyāsmiṁstu vayaṁ kāle rāvaṇādiṣu śatruṣu | na samarthāḥ puraḥ sthātuṁ niyater eṣa niścayaḥ || 30 ||

But right now, against enemies like Ravana, we are not able to stand our ground. This is simply what fate has certainly decided.

पर अभी, इस समय, रावण जैसे शत्रुओं के सामने हम टिक नहीं सकते। यह तो नियति का निश्चित फैसला है।

1.8.31

तस्मात्प्रसादं धर्मज्ञ कुरु त्वं मम पुत्रके । मम चैवाल्पभाग्यस्य भवान्हि परदैवतम् ॥ ३१ ॥

tasmātprasādaṁ dharmajña kurutvaṁ mama putrake | mama caivālpabhāgyasya bhavānhi paradaivatam || 31 ||

So, you who know what is right, please show mercy to my son. For you are the highest god to me, a man of little fortune.

इसलिए, हे धर्म के जानकार, आप मेरे बेटे पर दया कीजिए। क्योंकि मुझ अभागे के लिए आप ही सबसे बड़े देवता हैं।

1.8.32

देवदानवगन्धर्वा यक्षाः पतगपन्नगाः । न शक्ता रावणं योद्धुं किं पुनः पुरुषा युधि ॥ ३२ ॥

devadānavagandharvā yakṣāḥ patagapannagāḥ | na śaktā rāvaṇaṁ yoddhum kiṁ punaḥ puruṣā yudhi || 32 ||

Gods, danavas, gandharvas, yakshas, birds, and serpents are not able to fight Ravana, so what chance do mere men have in battle against him?

देवता, दानव, गंधर्व, यक्ष, पक्षी और नाग भी रावण से युद्ध नहीं कर सकते, फिर साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या है।

1.8.33

महावीर्यवतां वीर्यमादते युधि राक्षसः । तेन सार्धं न शक्ताः स्म संयुगे तस्य बालकैः ॥ ३३ ॥

mahāvīryavatāṃ vīryamādatte yudhi rākṣasaḥ | tena sārdhaṃ na śaktāḥ sma saṃyuge tasya bālakaiḥ || 33 ||

In battle, that demon can strip away the strength of even the mightiest warriors. My children and I are not capable of fighting him in single combat.

युद्ध में वह राक्षस बड़े-बड़े बलवानों की शक्ति भी छीन लेता है। मैं अपने बच्चों के साथ मिलकर भी उससे युद्ध करने में समर्थ नहीं हूँ।

1.8.34

अयमन्यतमः कालः पेलवीकृतसज्जनः । राघवोऽपि गतो दैन्यं यतो वार्धकजर्जरः ॥ ३४ ॥

ayamanyatamaḥ kālaḥ pelavīkṛtasajjanaḥ | rāghavo'pi gato dainyaṃ yato vārdhakajarjaraḥ || 34 ||

This is one of those times that wears down even good people. Even I, a descendant of Raghu, have fallen into misery, because old age has worn me out and broken me down.

यह ऐसा समय है जो अच्छे लोगों को भी कमज़ोर बना देता है। मैं, रघुवंशी होकर भी, दुख में डूब गया हूँ, क्योंकि बुढ़ापे ने मुझे जर्जर कर दिया है।

1.8.35

अथवा लवणं ब्रह्मन्यज्ञघ्नं तं मधोः सुतम् । कथयत्वसुरप्रख्यं नैव मोक्ष्यामि पुत्रकम् ॥ ३५ ॥

athavā lavaṇaṃ brahmanyajñaghnaṃ taṃ madhoḥ sutam | kathayatvasuraprakhyam naiva mokṣyāmi putrakam || 35 ||

Or, Brahmin, if it is Lavana you mean, that son of Madhu who destroys sacrifices, well-known as a demon, even so, I will never let my son go.

या फिर, हे ब्राह्मण, अगर आप लवण की बात कर रहे हैं, मधु के उस पुत्र की, जो यज्ञों का नाश करता है और राक्षस के नाम से जाना जाता है, तब भी मैं अपने पुत्र को नहीं भेजूँगा।

1.8.36

सुन्दोपसुन्दयोश्चैव पुत्रौ वैवस्वतोपमौ यज्ञविघ्नकरौ ब्रूहि न ते दास्यामि पुत्रकम् ॥ ३६ ॥

sundopasundayoścaiva putrau vaivasvatopamau yajñavighnakarau brūhi na te dāsyāmi putrakam || 36 ||

And if you mean the two sons of Sunda and Upasunda, who are as fearsome as Yama, and who disturb sacrifices, say what you will, but I will not give you my son.

और अगर आप सुंद और उपसुंद के उन दो पुत्रों की बात कर रहे हैं, जो यमराज के समान भयंकर हैं और यज्ञों में विघ्न डालते हैं, आप जो चाहे कहिए, पर मैं अपना पुत्र नहीं दूँगा।

1.8.37

अथ नेष्यसि चेद्ब्रह्मंस्तद्धतोऽस्म्यहमेव ते अन्यथा तु न पश्यामि शाश्वतं जयमात्मनः ॥ ३७ ॥

atha neṣyasi cedbrahmaṃstadhato'sm yahameva te anyathā tu na paśyāmi śāśvataṃ jayamātmanaḥ || 37 ||

But if you take him anyway, Brahmin, then it is as good as you killing me. Yet if I do not send him, I see no lasting triumph for myself either.

फिर भी हे ब्राह्मण, अगर आप उसे ले ही गए, तो यह मानो आपने मुझे मार डाला। और अगर मैं उसे न भेजूँ, तो भी मुझे अपने लिए कोई स्थायी विजय नज़र नहीं आती।

इत्युत्त्वा मृदु वचनं रघूद्वहोऽसौ कल्लोले मुनिमतसंशये निमग्नः नाज्ञासीत्क्षणमपि निश्चयं महात्मा प्रोद्वीचाविव जलधौ स
मुह्यमानः ॥ ३८ ॥

*ityuktvā mṛdu vacanaṃ raghūdvaḥo'sau kallole munimataśaṃśaye nimagnaḥ nājñāsītkṣaṇamapi niścayaṃ
mahātmā prodveecāviva jaladhau sa muhyamānaḥ || 38 ||*

Having said these gentle words, that great-souled descendant of Raghu sank into a wave of doubt about the sage's intention. Even for a moment, he could not reach any certainty, bewildered like someone caught in the towering waves of the ocean.

यह कोमल वचन कहकर, रघुवंश का वह महान पुरुष मुनि की मंशा को लेकर संदेह की लहर में डूब गया। वह एक पल के लिए भी कोई निश्चय नहीं कर पाया, जैसे समुद्र की ऊँची लहरों में कोई व्यक्ति घबरा जाता है, वैसे ही वह घबरा गया।

Chapter 9

1.9.1

वाल्मीकिरुवाच तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य स्नेहपर्याकुलेक्षणम् समन्युः कौशिको वाक्यं प्रत्युवाच महीपतिम् ॥ १ ॥

vālmīkiruvāca tacchrutvā vacanaṁ tasya snehaparyākulekṣaṇam samanyuḥ kauśiko vākyaṁ pratyuvāca mahīpatim || 1 ||

Valmiki said: After hearing the king's words, whose eyes were troubled with love, Kaushika, filled with anger, spoke back to the king.

वाल्मीकि ने कहा राजा की बात सुनकर, जिसकी आँखें प्रेम से भर आई थीं, कौशिक गुस्से से भर गए और राजा को जवाब दिया।

1.9.2

करिष्यामीति संश्रुत्य प्रतिज्ञां हातुमर्हसि स भवान्केसरी भूत्वा मृगतामिव वाञ्छसि ॥ २ ॥

kariṣyāmiṭi saṁśrutya pratijñāṁ hātumarhasi sa bhavānkesarī bhūtvā mṛgatāmiva vāñchasi || 2 ||

You had promised, "I will do it." You should not go back on that promise. You were like a lion, and now you wish to become like a deer.

तुमने वादा किया था, "मैं यह करूँगा।" अब तुम्हें अपना वादा नहीं तोड़ना चाहिए। तुम शेर की तरह थे, और अब हिरण जैसा बनना चाहते हो।

1.9.3

राघवाणामयुक्तोऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः न कदाचन जायन्ते शीतांशोरुष्णरश्मयः ॥ ३ ॥

rāghavāṇāmayukto'yaṁ kulasya'sya viparyayaḥ na kadācana jāyante śītāṁśoruṣṇarāśmayah || 3 ||

This going back on your word does not suit the family of the Raghus. Cool moonbeams never turn into hot sun rays.

अपनी बात से मुकर जाना रघुवंश को शोभा नहीं देता। ठंडी चाँदनी कभी गरम धूप नहीं बनती।

1.9.4

यदि त्वं न क्षमो राजनामिष्यामि यथागतम् हीनप्रतिज्ञं काकुत्स्थ सुखी भव सबान्धवः ॥ ४ ॥

yadi tvaṁ na kṣamo rājan gamiṣyāmi yathāgatam hīnapratijñā kākutstha sukhī bhava sabāndhavaḥ || 4 ||

If you are not able to keep your word, O king, I will go back the way I came. Kakutstha, you who broke your promise, be happy with your family.

हे राजा, अगर तुम अपना वादा नहीं निभा सकते, तो मैं जैसे आया था वैसे ही वापस चला जाऊँगा। हे ककुत्स्थ, तुमने अपना वादा तोड़ दिया, अब अपने परिवार के साथ सुखी रहो।

1.9.5

वाल्मीकिरुवाच तस्मिन्कोपपरीतेऽथ विश्वामित्रे महात्मनि चचाल वसुधा कृत्स्ना सुरांश्च भयमाविशत् ॥ ५ ॥

vālmīkiruvāca tasmin kopaparīte'tha viśvāmitre mahātmani cacāla vasudhā kṛtsnā surāṁśca bhayamāviśat || 5 ||

Valmiki said: When the great soul Vishvamisra was overcome with anger, the whole earth shook, and fear entered the gods.

वाल्मीकि ने कहा जब महान विश्वामित्र गुस्से से भर गए, तो पूरी धरती काँप उठी और देवताओं में डर समा गया।

1.9.6

क्रोधाभिभूतं विज्ञाय जगन्मित्रं महामुनिम् । धृतिमान्सुव्रतो धीमान्वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥ ६ ॥

krodhābhībhūtaṁ vijñāya jagannmitraṁ mahāmunim | dhṛtimānsuvrato dhīmānvasiṣṭho vākyaṁ abravīt || 6 ||

Realizing that the great sage, friend of the whole world, was overcome with anger, Vasishtha, who was steady, true to his vows, and wise, spoke these words.

यह जानकर कि पूरी दुनिया के मित्र, वह महान ऋषि, गुस्से से भर गए हैं, वसिष्ठ ने, जो धैर्यवान, अपने व्रत के पक्के और बुद्धिमान थे, यह बात कही।

1.9.7

वसिष्ठ उवाच । इक्ष्वाकूणां कुले जातः साक्षाद्धर्म इवापरः । भवान्दशरथः श्रीमांस्त्रैलोक्यगुणभूषितः ॥ ७ ॥

vasiṣṭha uvāca | ikṣvākūṇāṁ kule jātaḥ sākṣāddharma ivāparaḥ | bhavāndaśarathaḥ

śrīmāṁstrailokyaguṇabhūṣitaḥ || 7 ||

Vasishtha said: You were born in the family of the Ikshvakus, and you are like dharma itself in another form. You, Dasharatha, are glorious, adorned with the good qualities of all three worlds. वसिष्ठ ने कहा तुम इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हो, और तुम मानो साक्षात धर्म ही हो। हे दशरथ, तुम तेजस्वी हो, और तीनों लोकों के अच्छे गुणों से सजे हो।

1.9.8

धृतिमान्सुव्रतो भूत्वा न धर्मं हातुमर्हसि । त्रिषु लोकेषु विख्यातो धर्मेण यशसा युतः ॥ ८ ॥

dhṛtimānsuvrato bhūtvā na dharmaṁ hātumarhasi | triṣu lokeṣu vikhāto dharmeṇa yaśasā yutaḥ || 8 ||

Being steady and true to your vows, you should not abandon dharma. You are famous in all three worlds, known for your dharma and your good name.

धैर्यवान और अपने व्रत के पक्के होकर, तुम्हें धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। तुम तीनों लोकों में मशहूर हो, अपने धर्म और अपनी अच्छी प्रतिष्ठा के लिए जाने जाते हो।

1.9.9

स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व न धर्मं हातुमर्हसि । मुनेस्त्रिभुवनेशस्य वचनं कर्तुमर्हसि ॥ ९ ॥

svadharmaṁ pratipadyasva na dharmaṁ hātumarhasi | munestribhuvaneśasya vacanaṁ kartumarhasi || 9 ||

Take up your own duty; you should not abandon dharma. You should do what this sage, the lord of the three worlds, has asked.

अपना कर्तव्य निभाओ; तुम्हें धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। इस ऋषि की बात माननी चाहिए, जो तीनों लोकों के स्वामी हैं।

1.9.10

करिष्यामीति संश्रुत्य तत्ते राजन्नकुर्वतः । इष्टापूर्तं हरेद्धर्मं तस्माद्रामं विसर्जय ॥ १० ॥

kariṣyāmīti saṁśrutya tatte rājannakurvataḥ | iṣṭāpūrtaṁ harēddharmaṁ tasmādrāmaṁ visarjaya || 10 ||

O king, you promised, "I will do it." If you do not do that, dharma will take away the merit of your sacrifices and your charitable works. So send Rama away with him.

हे राजा, तुमने वादा किया था, "मैं यह करूँगा।" अगर तुम वह नहीं करते, तो धर्म तुम्हारे यज्ञों और तुम्हारे दान-पुण्य के फल छीन लेगा। इसलिए राम को इनके साथ भेज दो।

1.9.11

इक्ष्वाकुवंशजातोऽपि स्वयं दशरथोऽपि सन् । न पालयसि चेद्वाक्यं कोऽपरः पालयिष्यति ॥ ११ ॥

ikṣvākuvaṃśajāto'pi svayaṃ daśaratho'pi san | na pālayasi cedvākyaṃ ko'paraḥ pālayiṣyati || 11 ||

You were born in the Ikshvaku family, and you yourself are Dasharatha. If you do not keep your word, who else will keep his?

तुम इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए हो, और तुम खुद दशरथ हो। अगर तुम अपनी बात नहीं निभाओगे, तो और कौन निभाएगा?

1.9.12

युष्मदादिप्रणीतेन व्यवहारेण जन्तवः । मर्यादां न विमुञ्चन्ति तां न हातुं त्वमर्हसि ॥ १२ ॥

yuṣmadādipraṇītena vyavahāreṇa jantavaḥ | maryādāṃ na vimuñcanti tāṃ na hātuṃ tvamarhasi || 12 ||

Because of the conduct set down by you and the kings before you, living beings do not cross the limit of good behavior. You should not abandon that limit either.

तुमने और तुमसे पहले के राजाओं ने जो व्यवहार बनाया है, उसी के कारण लोग अच्छे बर्ताव की सीमा नहीं लांघते। तुम्हें भी वह सीमा नहीं छोड़नी चाहिए।

1.9.13

गुप्तं पुरुषसिंहेन ज्वलनेनामृतं यथा । कृतास्त्रमकृतास्त्रं वा नैनं शक्यन्ति राक्षसाः ॥ १३ ॥

guptaṃ puruṣasiṃhena jvalanena mṛtaṃ yathā | kṛtāstram akṛtāstram vā nainaṃ śakyaṃti rākṣasāḥ || 13 ||

This lion among men guards him, the way fire guards nectar. So the demons will not be able to touch him, whether he carries divine weapons or not.

यह शेर जैसा आदमी उसकी रक्षा करता है, जैसे आग अमृत की रक्षा करती है। इसलिए राक्षस उसे छू भी नहीं पाएँगे, चाहे उसके पास दिव्य हथियार हों या न हों।

1.9.14

एष विग्रहवान्धर्म एष वीर्यवतां वरः । एष बुद्ध्याऽधिको लोके तपसां च परायणम् ॥ १४ ॥

eṣa vighrahavāṇdharma eṣa vīryavatāṃ varaḥ | eṣa buddhyā'dhiko loke tapasāṃ ca parāyaṇam || 14 ||

This one is dharma in human form. He is the best among the mighty. He is the wisest in the world, and he is completely devoted to austerity.

यह साक्षात् धर्म है, इंसान के रूप में। यह बलवानों में सबसे श्रेष्ठ है। यह दुनिया में सबसे बुद्धिमान है, और यह पूरी तरह तप में लगा हुआ है।

1.9.15

एषोऽस्त्रं विविधं वेत्ति त्रैलोक्ये सचराचरे । नैतदन्यः पुमान्वेत्ति न च वेत्स्यति कश्चन ॥ १५ ॥

eṣo'straṃ vividhaṃ vetti trailokye sacarācare | naitadanyaḥ pumānvetti na ca vetsyati kaścana || 15 ||

He knows all the different weapons that exist in the three worlds, among everything that moves and everything that does not move. No other man knows this, and no one ever will.

वह तीनों लोकों में, चलने वाली और न चलने वाली हर चीज़ में मौजूद सारे अलग-अलग हथियारों को जानता है। कोई और आदमी इसे नहीं जानता, और कभी कोई नहीं जान पाएगा।

1.9.16

न देवा नर्षयः केचिन्नासुरा न च राक्षसाः । न नागा यक्षगन्धर्वाः समेताः सदृशा मुनेः ॥ १६ ॥

na devā narṣayaḥ kecinnāsura na ca rākṣasāḥ | na nāgā yakṣagandharvāḥ sametāḥ sadṛśā muneḥ || 16 ||

No gods, no sages at all, no demons, no rakshasas, no nagas, no yakshas, no gandharvas—not even all of them together—are equal to this sage.

कोई देवता नहीं, कोई ऋषि नहीं, कोई असुर नहीं, कोई राक्षस नहीं, कोई नाग नहीं, कोई यक्ष या गंधर्व नहीं—सब मिलकर भी इस ऋषि के बराबर नहीं हैं।

1.9.17

अस्त्रमस्मै कृशाश्वेन परैः परमदुर्जयम् । कौशिकाय पुरा दत्तं यदा राज्यं समन्वगात् ॥ १७ ॥

astramasmai kṛśāśvena paraiḥ paramadurjayam | kauśikāya purā dattaṁ yadā rājyaṁ samanvagāt || 17 ||

Long ago, Krishashva gave him weapons that were very hard for others to defeat—he gave them to Kaushika, when the kingdom had come to him.

बहुत पहले कृशाश्व ने उसे ऐसे हथियार दिए थे जिन्हें दूसरों के लिए हरा पाना बहुत मुश्किल था—उन्होंने ये हथियार कौशिक को दिए, जब उन्हें राज्य मिला था।

1.9.18

ते हि पुत्राः कृशाश्वस्य प्रजापतिसुतोपमाः । एनमन्वचरन्वीरा दीप्तिमन्तो महौजसः ॥ १८ ॥

te hi putrāḥ kṛśāśvasya prajāpatisutopamāḥ | enamanvacaranvīrā dīptimanto mahaujasaḥ || 18 ||

The sons of Krishashva were like the sons of Prajapati. Those heroes, glowing and full of great strength, followed him.

कृशाश्व के बेटे प्रजापति के बेटों जैसे थे। वे वीर, चमकीले और बड़ी ताकत वाले, उसके साथ-साथ चलते थे।

1.9.19

जया च सुप्रभा चैव दाक्षायण्यौ सुमध्यमे । तयोस्तु यान्यपत्यानि शतं परमदुर्जयम् ॥ १९ ॥

jayā ca suprabhā caiva dākṣāyaṇyau sumadhyame | tayostu yānyapatyāni śataṁ paramadurjayam || 19 ||

Jaya and Suprabha, both daughters of Daksha, slim-waisted, had a hundred children between them, and those children were very hard to defeat.

जया और सुप्रभा, दोनों दक्ष की बेटियाँ, पतली कमर वाली, उन दोनों के सौ बच्चे थे, और वे बच्चे बहुत मुश्किल से हराए जा सकते थे।

1.9.20

पञ्चाशतं सुताञ्ज्जे जया लब्धवरा पुरा । वधार्थं सुरसैन्यानां ते क्षमाः कामचारिणः ॥ २० ॥

pañcāśataṁ sutāñjajñe jayā labdhvarā purā | vadhārthaṁ surasainyānāṁ te kṣamāḥ kāmācāriṇaḥ || 20 ||

Jaya, who had earlier received a boon, gave birth to fifty sons. They were strong enough to kill even the armies of the gods, and they could go wherever they wished.

जया को पहले एक वरदान मिला था, और उसने पचास बेटों को जन्म दिया। वे इतने बलवान थे कि देवताओं की सेनाओं को भी मार सकते थे, और वे जहाँ चाहें जा सकते थे।

1.9.21

सुप्रभा जनयामास पुत्रान्पञ्चाशत् परान् । संघर्षान्नाम दुर्धर्षान्दुराकारान्वलीयसः ॥ २१ ॥

suprabhā janayāmāsa putrānpañcāśataṃ parān | saṃgharṣānnāma durdharṣāndurākārānvalīyasah || 21 ||

Suprabha gave birth to another fifty sons, called the Samgharshas. They were hard to face, frightening to look at, and very strong.

सुप्रभा ने पचास और बेटों को जन्म दिया, जिन्हें संघर्ष कहा जाता था। उनका सामना करना कठिन था, देखने में डरावने थे, और बहुत बलवान थे।

1.9.22

एवंवीर्यो महातेजा विश्वामित्रो जगन्मुनिः । न रामगमने बुद्धिं विक्लवां कर्तुमर्हसि ॥ २२ ॥

evaṃvīryo mahātejā viśvāmitro jaganmunih | na rāmagamane buddhiṃ viklavāṃ kartumarhasi || 22 ||

Such is the strength and the great power of Vishvamisra, the sage known to the whole world. You should not let your mind become troubled about Rama's going.

विश्वामित्र की ताकत और महान शक्ति ऐसी ही है, जो पूरी दुनिया में मशहूर ऋषि हैं। राम के जाने को लेकर तुम्हें अपना मन परेशान नहीं करना चाहिए।

1.9.23

अस्मिन्महासत्त्वतमे मुनीन्द्रे स्थिते समीपे पुरुषस्य साधो । प्राप्तेऽपि मृत्यावमरत्वमेति मा दीनतां गच्छ यथा विमूढः ॥ २३ ॥

asminmahāsattvatame munīndre sthite samīpe puruṣasya sādho | prāpte'pi mṛtyāvamaratvameti mā dīnatāṃ gaccha yathā vimūḍhaḥ || 23 ||

Good man, when this greatest of great souls, this lord among sages, stands close to a man, even if death has come for him, he becomes deathless. So do not fall into misery like a fool.

हे भले आदमी, जब यह सबसे महान आत्मा, ऋषियों में सबसे श्रेष्ठ, किसी आदमी के पास खड़ा होता है, तो मौत आने पर भी वह आदमी अमर हो जाता है। इसलिए मूर्ख की तरह दुखी मत हो।

Chapter 10

1.10.1

वाल्मीकिरुवाच । तथा वसिष्ठे ब्रुवति राजा दशरथः सुतम् । संप्रहृष्टमना राममाजुहाव सलक्ष्मणम् ॥ १ ॥

vālmīkiruvāca | tathā vasiṣṭhe bruvati rājā daśarathaḥ sutam | saṁprahr̥ṣṭamanā rāmamājuhāva salakṣmaṇam || 1 ||

Valmiki said: While Vasishtha was speaking like this, King Dasharatha, his heart full of joy, sent for his son Rama, along with Lakshmana.

वाल्मीकि ने कहा कि जब वसिष्ठ यह बात कह रहे थे, तब राजा दशरथ ने बहुत खुश होकर अपने बेटे राम को लक्ष्मण के साथ बुलवाया।

1.10.2

दशरथ उवाच । प्रतिहार महाबाहुं रामं सत्यपराक्रमम् । सलक्ष्मणमविघ्नेन पुण्यार्थं शीघ्रमानय ॥ २ ॥

daśaratha uvāca | pratihāra mahābāhuṁ rāmaṁ satyaparākramam | salakṣmaṇamavighnena puṇyārthaṁ śīghramānaya || 2 ||

Dasharatha said: "Doorkeeper, go quickly and without any delay, and bring the strong-armed Rama, whose courage is true, along with Lakshmana, for this holy purpose."

दशरथ ने कहा कि हे द्वारपाल, बिना किसी रुकावट के जल्दी जाओ और मजबूत भुजाओं वाले, सच्चे पराक्रम वाले राम को लक्ष्मण के साथ इस पुण्य काम के लिए ले आओ।

1.10.3

इति राज्ञा विसृष्टोऽसौ गत्वान्तःपुरमन्दिरम् । मुहूर्तमात्रेणागत्य समुवाच महीपतिम् ॥ ३ ॥

iti rājñā viśṛṣṭo'sau gatvāntaḥpuramandiram | muhūrtaṁātreṇāgatya samuvāca mahīpatim || 3 ||

Sent off by the king with these words, the doorkeeper went to the inner rooms of the palace, and after a short while he came back and spoke to the king.

राजा की यह बात सुनकर द्वारपाल महल के भीतरी कमरों में गया, और थोड़ी देर बाद लौटकर राजा से बोला।

1.10.4

देव दोर्दलिताशेषरिपो रामः स्वमन्दिरे । विमनाः संस्थितो रात्रौ षट्पदः कमले यथा ॥ ४ ॥

deva dordalitāśeṣaripo rāmaḥ svamandire | vimanāḥ saṁsthito rātrau ṣaṭpadaḥ kamale yathā || 4 ||

"My lord, Rama, who has crushed all his enemies with his own arms, sits alone in his room at night, sad and troubled, like a bee shut inside a lotus."

हे महाराज, राम, जिन्होंने अपनी भुजाओं से सारे दुश्मनों को कुचल दिया है, रात में अपने कमरे में उदास बैठे हैं, जैसे कमल के भीतर बंद हुआ भौरा।

1.10.5

आगच्छामि क्षणेनेति वक्ति ध्यायति चैकतः । न कस्यचिच्च निकटे स्थातुमिच्छति खिन्नधीः ॥ ५ ॥

āgacchāmi kṣaṇeneti vakti dhyāyati caikataḥ | na kasyacicca nikate sthātumicchati khinnadhīḥ || 5 ||

He says, "I am coming in a moment," but then sits alone lost in thought. His mind is troubled, and he does not want to stay close to anyone.

वे कहते हैं कि मैं अभी आता हूँ, पर फिर अकेले बैठकर सोचने लगते हैं। उनका मन परेशान है, और वे किसी के पास रहना नहीं चाहते।

1.10.6

इत्युक्तस्तेन भूपालस्तं रामानुचरं जनम् । सर्वमाश्वासयामास पप्रच्छ च यथाक्रमम् ॥ ६ ॥

ityuktastena bhūpālastaṁ rāmānucaraṁ janam | sarvamāśvāsayāmāsa papraccha ca yathākramam || 6 ||

When the doorkeeper said this, the king comforted all of Rama's attendants and questioned them, one after another, in order.

द्वारपाल की यह बात सुनकर राजा ने राम के सभी सेवकों को ढाढ़स बंधाया और उनसे एक-एक करके पूछताछ की।

1.10.7

कथं कीदृग्विधो राम इति पृष्ठो महीभृता । रामभृत्यजनः खिन्नो वाक्यमाह महीपतिम् ॥ ७ ॥

kathaṁ kīḍṛgvidho rāma iti pṛṣṭo mahībhṛtā | rāma bhṛtyajanaḥ khinnō vākya māha mahīpatim || 7 ||

When the king asked, "How is Rama? What is his condition?" Rama's troubled attendants spoke these words to the king.

राजा ने पूछा कि राम कैसे हैं, उनकी हालत कैसी है? तब राम के परेशान सेवकों ने राजा से यह बात कही।

1.10.8

देहयष्टिमिमां देव धारयन्त इमे वयम् । खिन्नाः खेदे परिम्लानतनौ रामे सुते तव ॥ ८ ॥

dehayaṣṭimimāṁ deva dhārayanta ime vayam | khinnāḥ khede parimlānatanau rāme sute tava || 8 ||

"My lord, we go on carrying these bodies of ours, but we are troubled, because your son Rama's body has become pale and worn out with sorrow."

हे महाराज, हम अपने इन शरीरों को ढो तो रहे हैं, पर हम दुखी हैं, क्योंकि आपके बेटे राम का शरीर दुख से पीला और कमजोर हो गया है।

1.10.9

रामो राजीवपत्राक्षो यतः प्रभृति चागतः । सविप्रस्तीर्थयात्रायास्ततः प्रभृति दुर्मनाः ॥ ९ ॥

rāmo rājīvapatrākṣo yataḥ prabhṛti cāgataḥ | saviprastīrthayātrāyāstataḥ prabhṛti durmanāḥ || 9 ||

Ever since Rama, whose eyes are like lotus petals, came back from his pilgrimage to holy places with the brahmins, from that very time he has been sad at heart.

जब से कमल की पंखुड़ियों जैसी आँखों वाले राम ब्राह्मणों के साथ तीर्थयात्रा से लौटे हैं, तभी से वे मन में उदास रहते हैं।

1.10.10

यत्प्रार्थनयास्माकं निजव्यापारमाह्निकम् । सोऽयमाम्लानवदनः करोति न करोति वा ॥ १० ॥

yatnaprārthanayāsmākaṁ nijavyāpāramāhnikam | so'yamāmlānavadanaḥ karoti na karoti vā || 10 ||

Only when we beg him again and again does he do his own daily duties - and even then, his face stays pale and worn, whether he does them or not.

हम बार-बार विनती करें, तभी वे अपने रोज के काम करते हैं, और तब भी उनका चेहरा उदास और मुरझाया रहता है, चाहे वे वह काम करें या न करें।

1.10.11

स्नानदेवार्चनादानभोजनादिषु दुर्मनाः । प्रार्थितोऽपि हि नातृप्तेरश्रात्यशनमीश्वरः ॥ ११ ॥

snānadevārcanādānabhojanādiṣu durmanāḥ | prārthito'pi hi nātr̥pteraśnātyaśanamīśvaraḥ || 11 ||

He is sad in his bathing, in worshipping the gods, in giving gifts, in eating, and in everything else. Even when we beg him, this lord eats his food without any relish, never satisfied.

वे नहाने में, देवताओं की पूजा में, दान देने में, खाने में, हर काम में उदास रहते हैं। हमारे बहुत कहने पर भी यह राजकुमार बिना किसी स्वाद के खाना खाते हैं, उन्हें कभी तृप्ति नहीं मिलती।

1.10.12

लोलान्तःपुरनारीभिः कृतदोलाभिरङ्गणे । नच क्रीडति लीलाभिर्धाराभिरिव चातकः ॥ १२ ॥

lolāntaḥpuranārībhiḥ kṛtadolābhirāṅgaṇe | naca krīḍati līlābhirābhīriva cātakaḥ || 12 ||

He does not play on the swings that the restless women of the palace have set up in the courtyard, just as a chatak bird does not play in a stream of water.

महल की बेचैन स्त्रियों ने आँगन में जो झूले लगाए हैं, उन पर वे नहीं झूलते, ठीक वैसे ही जैसे चातक पक्षी पानी की धार में नहीं खेलता।

1.10.13

माणिक्यमुकुलप्रोता केयूरकटकावलिः । नानन्दयति तं राजन्ध्रौः पातविषयं यथा ॥ १३ ॥

māṇikyamukulaprotā keyūrakatakāvaliḥ | nānandayati taṁ rājandhauḥ pātaviṣayaṁ yathā || 13 ||

O king, even his rows of armlets and bracelets, strung with buds made of ruby, give him no joy - just as the sky gives no joy to something that is falling.

हे राजा, माणिक्य की कलियों से गुँथे उनके बाजूबंद और कंगन भी उन्हें कोई खुशी नहीं देते, ठीक वैसे ही जैसे गिरती हुई किसी चीज़ को आसमान कोई खुशी नहीं देता।

1.10.14

क्रीडद्वधूविलोकेषु वहत्कुसुमवायुषु । लतावलयगेहेषु भवत्यतिविषादवान् ॥ १४ ॥

krīḍadvadhūvilokeṣu vahatkusumavāyuṣu | latāvalayageheṣu bhavatyativiṣādavān || 14 ||

Watching young women at play, feeling the breeze that carries the smell of flowers, sitting in bowers made of flowering vines - in all these, he becomes very sad.

खेलती हुई युवतियों को देखकर, फूलों की खुशबू लिए हवा को महसूस करके, फूलों की लताओं से बनी कुंज में बैठकर - इन सब में वे बहुत उदास हो जाते हैं।

1.10.15

यद्वयमुचितं स्वादु पेशलं चित्तहारि च । बाष्पपूर्णेक्षण इव तेनैव परिखिद्यते ॥ १५ ॥

yaddravyamucitaṁ svādu peśalaṁ cittahāri ca | bāṣpapūrṇekṣaṇa iva tenaiva parikhidyate || 15 ||

Whatever food is proper, tasty, delicate, and pleasing to the mind - that very food makes him sad, and his eyes fill with tears.

जो भी भोजन अच्छा, स्वादिष्ट, नरम और मन को भाने वाला होता है, वही भोजन उन्हें उदास कर देता है, और उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं।

1.10.16

किमिमा दुःखदायिन्यः प्रस्फुरन्तीः पुराङ्गनाः । इति नृत्तविलासेषु कामिनीः परिनिन्दति ॥ १६ ॥

kimimā duḥkhadāyinyāḥ prasphurantīḥ purāṅganāḥ | iti nṛttavilāseṣu kāmīnīḥ parinindati || 16 ||

"Why are these bright, moving city women causing me such pain?" - saying this, he finds fault with the loving women even while they dance and play.

वे कहते हैं कि ये चमकती हुई, घूमती-फिरती शहर की स्त्रियाँ मुझे इतना दुख क्यों दे रही हैं - ऐसा कहकर वे नाचती-खेलती प्रेमी स्त्रियों में भी दोष निकालते हैं।

1.10.17

भोजनं शयनं यानं विलासं स्नानमासनम् । उन्मत्तचेष्टित इव नाभिनन्दत्यनिन्दितम् ॥ १७ ॥

bhōjanaṃ śayanaṃ yānaṃ vilāsaṃ snānamāsanam | unmattacēṣṭita iva nābhinandatyaniṇḍitam || 17 ||

Food, bed, travel, pleasure, bathing, sitting - none of these harmless things please him. He acts like someone who has gone mad.

भोजन, बिस्तर, सवारी, आनंद, नहाना, बैठना - इनमें से कोई भी निर्दोष चीज़ उन्हें अच्छी नहीं लगती। वे ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कोई पागल हो गया हो।

1.10.18

किं संपदा किं विपदा किं गेहेन किमिङ्गितैः । सर्वमेवासदित्युक्त्वा तूष्णीमेकोऽवतिष्ठते ॥ १८ ॥

kiṃ sampadā kiṃ vipadā kiṃ gēhēna kimiṅgitaiḥ | sarvamēvāsadityuktvā tūṣṇīmēkō'vatiṣṭhatē || 18 ||

"What use is wealth? What use is misfortune? What use is a house? What use are signs and gestures?" Saying that everything is worthless, he sits alone in silence.

वे कहते हैं कि धन-दौलत से क्या फायदा, विपत्ति से क्या फायदा, घर से क्या फायदा, इशारों से क्या फायदा - सब कुछ बेकार है, ऐसा कहकर वे अकेले चुपचाप बैठे रहते हैं।

1.10.19

नोदेति परिहासेषु न भोगेषु निमज्जति । न च तिष्ठति कार्येषु मौनमेवावलम्बते ॥ १९ ॥

nōdēti parihāseṣu na bhōgeṣu nimajjati | na ca tiṣṭhati kāryeṣu maunamēvāvalambatē || 19 ||

He does not join in when there is joking. He does not sink into pleasures. He does not stay occupied with his duties. He only holds on to silence.

जब मज़ाक होता है तो वे उसमें शामिल नहीं होते। वे सुख-भोग में नहीं डूबते। वे अपने कामों में भी नहीं टिकते। वे बस चुप्पी साधे रहते हैं।

1.10.20

विलोलालकवल्लर्यो हेलालितलोचनाः । नानन्दयन्ति तं नार्यो मृग्यो वनतरुं यथा ॥ २० ॥

vilolālakavallaryō hēlāvalitalōcanāḥ | nānandayanti taṃ nāryō mṛgyō vanataruṃ yathā || 20 ||

Women with hair curling like tendrils, and eyes turned toward him playfully, do not delight him - just as deer do not delight a forest tree.

जिनके बाल लताओं की तरह घुँघराले हैं और जिनकी आँखें अठखेली से घूमती हैं, ऐसी स्त्रियाँ उन्हें खुश नहीं करतीं, ठीक वैसे ही जैसे हिरण किसी जंगल के पेड़ को खुश नहीं करते।

1.10.21

एकान्तेषु दिगन्तेषु तीरेषु विपिनेषु च । रतिमायात्यरण्येषु विक्रीत इव जन्तुषु ॥ २१ ॥

ekānteṣu diganteṣu tīreṣu vipineṣu ca | ratimāyātyaraṇyeṣu vikrīta iva jantuṣu || 21 ||

He finds pleasure only in lonely places - in distant regions, on riverbanks, in thickets - in the forests, among wild creatures, like someone who has been sold as a slave.

उन्हें खुशी सिर्फ अकेली जगहों में मिलती है - दूर-दराज इलाकों में, नदी किनारों पर, झाड़ियों में - जंगलों में, जंगली जानवरों के बीच, जैसे कोई गुलाम बनाकर बेचा गया इंसान।

1.10.22

वस्त्रपानाशनादानपराङ्मुखतया तया । परिव्राद्धर्मिणं भूय सोऽनुयाति तपस्विनम् ॥ २२ ॥

vastrapānāśanādānaparāṇmukhatayā tayā | parivrāḍḍharminam bhūya so'nuyāti tapasvinam || 22 ||

By turning away from clothes, drink, food, and other such things, he now follows the path of a wandering ascetic devoted to hard practice.

कपड़ों, पीने-खाने और ऐसी बाकी चीज़ों से मुँह मोड़कर, अब वे कठोर तप में लगे हुए एक घूमने वाले संन्यासी का रास्ता अपना रहे हैं।

1.10.23

एक एव वसन्देशे जनशून्ये जनेश्वर । न हसत्येकया बुद्ध्या न गायति न रोदिति ॥ २३ ॥

eka eva vasandeśe janśūnye janeśvara | na hasatyekayā buddhyā na gāyati na roditi || 23 ||

O king, he lives entirely alone in a place empty of people. With his mind fixed on one single thought, he does not laugh, he does not sing, and he does not cry.

हे राजा, वह बिल्कुल अकेला एक ऐसी जगह में रहता है जहाँ कोई इंसान नहीं है। उसका मन एक ही बात पर टिका रहता है, इसलिए वह न हँसता है, न गाता है और न रोता है।

1.10.24

बद्धपद्मासनः शून्यमना वामकरस्थले । कपोलतलमाधाय केवलं परितिष्ठति ॥ २४ ॥

baddhapadmāsanaḥ śūnyamanā vāmakarasthale | kapolatalamādhāya kevalam paritiṣṭhati || 24 ||

He sits fixed in the lotus posture, his mind blank, resting his cheek on the palm of his left hand, and he simply stays like that.

वह पद्मासन में बैठा रहता है, उसका मन खाली रहता है, अपना गाल अपने बाएँ हाथ की हथेली पर टिकाए रखता है, और बस वैसे ही बैठा रहता है।

1.10.25

नाभिमानमुपादत्ते न च वाञ्छति राजताम् । नोदेति नास्तमायाति सुखदुःखानुवृत्तिषु ॥ २५ ॥

nābhimānamupādatte na ca vāñchati rājatām | nudeti nāstamāyāti sukhaduḥkhānuvṛttiṣu || 25 ||

He does not take any pride in himself, and he does not wish for a kingdom. When pleasure and pain keep coming one after another, he neither rises up with joy nor sinks down with sorrow.

वह अपने बारे में कोई घमंड नहीं रखता, और राज्य पाने की इच्छा भी नहीं करता। सुख और दुख जब बार-बार आते रहते हैं, तो न वह खुशी से ऊपर उठता है और न दुख से नीचे गिरता है।

1.10.26

न विद्मः किमसौ याति किं करोति किमीहते । किं ध्यायति किमायाति कथं किमनुधावति ॥ २६ ॥

na vidmaḥ kimasau yāti kiṁ karoti kimīhate | kiṁ dhyāyati kimāyāti katham kimanudhāvati || 26 ||

We do not know where he goes, what he does, what he wants, what he thinks about, where he comes from, or how and what he runs after.

हमें नहीं पता कि वह कहाँ जाता है, क्या करता है, क्या चाहता है, किस बारे में सोचता है, कहाँ से आता है, और वह कैसे और किस चीज़ के पीछे भागता है।

1.10.27

प्रत्यहं कृशतामेति प्रत्यहं याति पाण्डुताम् । विरागं प्रत्यहं याति शरदन्त इव द्रुमः ॥ २७ ॥

pratyahaṃ kṛśatāmeti pratyahaṃ yāti pāṇḍutām | virāgaṃ pratyahaṃ yāti śaradanta iva drumah || 27 ||

Every day he grows thinner, every day he turns pale, every day he loses his glow, like a tree at the end of autumn.

हर दिन वह और दुबला होता जाता है, हर दिन उसका रंग पीला पड़ता जाता है, हर दिन उसकी चमक कम होती जाती है, जैसे शरद ऋतु के अंत में कोई पेड़ हो जाता है।

1.10.28

अनुयातौ तथैवैतौ राजञ्छत्रुघ्नलक्ष्मणौ । तादृशावेव तस्यैव प्रतिबिम्बाविव स्थितौ ॥ २८ ॥

anuyātau tathaivaitau rājāñchatrugṇnalakṣmaṇau | tādr̥śāveva tasyeva pratibimbāviva sthitau || 28 ||

O king, Shatrughna and Lakshmana follow him in just the same way. They too are exactly like him, standing there like his own reflections.

हे राजा, शत्रुघ्न और लक्ष्मण भी बिलकुल उसी तरह उसके पीछे-पीछे चलते हैं। वे दोनों भी उसी जैसे हो गए हैं, मानो उसकी परछाई बनकर खड़े हों।

1.10.29

भृत्यै राजभिरम्बाभिः सम्पृष्टोऽपि पुनः पुनः । उक्त्वा न किञ्चिदेवेति तूष्णीमास्ते निरीहितः ॥ २९ ॥

bhṛtyai rājabhirambābhiḥ sampr̥ṣṭo'pi punaḥ punaḥ uktvā na kiñcīdeveti tūṣṇīmāste nirīhitaḥ || 29 ||

Even when the servants, the kings, and the mothers ask him again and again, he says nothing at all, and sits silently, wanting nothing.

सेवक, राजा और माताएँ जब उससे बार-बार पूछते हैं, तब भी वह कुछ नहीं कहता, चुपचाप बैठा रहता है, और उसे कुछ भी नहीं चाहिए होता।

1.10.30

आपातमात्रहृद्येषु मा भोगेषु मनः कृथाः । इति पार्श्वगतं भव्यमनुशास्ति सुहृज्जनम् ॥ ३० ॥

āpātamātrahṛdyeṣu mā bhogeṣu manaḥ kṛthāḥ | iti pārs̥vagataṃ bhavayamanuśāsti suhṛjjanaṃ || 30 ||

"Do not set your heart on pleasures that feel good only for a moment" — this is what he tells the good friend who sits close by his side.

"ऐसे सुखों में मन मत लगाओ जो बस एक पल के लिए ही अच्छे लगते हैं" — यही बात वह अपने पास बैठे अच्छे दोस्त से कहता है।

1.10.31

नानाविभवरम्यासु स्त्रीषु गोष्ठीगतासु च । पुरस्थितमिवास्नेहो नाशमेवानुपश्यति ॥ ३१ ॥

nānāvibhavaramyāsu strīṣu goṣṭhīgatāsu ca | purasthitamivāsneho nāśamevānupaśyati || 31 ||

When he looks at women who are beautiful with many kinds of riches and who gather together in company, he feels no affection for them, as if he were only watching something standing in front of him, and he sees in them only their coming end.

जब वह उन स्त्रियों को देखता है जो अलग-अलग तरह के धन-वैभव से सुंदर लगती हैं और साथ मिलकर बैठी होती हैं, तब भी उसे उनसे कोई लगाव नहीं होता, जैसे वह बस सामने खड़ी किसी चीज़ को देख रहा हो, और उसे उनमें बस उनका आने वाला अंत ही दिखता है।

1.10.32

नीतमायुरनायासपदप्राप्तिविवर्जितैः । चेष्टितैरिति काकल्या भूयोभूयः प्रगायति ॥ ३२ ॥

nītamāyuranāyāsapadaprāptivivarjitaiḥ | ceṣṭitairiti kākalyā bhūyobhūyaḥ pragāyati || 32 ||

"My life has gone by in efforts that never brought me to the state where there is no more struggle" — saying this, he sings it over and over again in a low, faint voice.

"मेरी ज़िंदगी ऐसी कोशिशों में बीत गई जो मुझे कभी उस हाल तक नहीं ले गई जहाँ कोई मेहनत ही न बचे" — यह कहकर वह इसे बार-बार धीमी, कमज़ोर आवाज़ में गाता रहता है।

1.10.33

सम्राड्भवेति पार्श्वस्थं वदन्तमनुजीविनम् । प्रलपन्तमिवोन्मत्तं हसत्यन्यमना मुनिः ॥ ३३ ॥

samrāḍbhaveti pāśvasthaṁ vadantamanujīvinam | pralapantamivonmattaṁ hasatyananyamanā munīḥ || 33 ||

When a servant standing beside him says, "May you become the emperor!" — the sage, his mind somewhere else, laughs at him as if he were a raving madman.

जब उसके पास खड़ा कोई सेवक कहता है, "आप सम्राट बन जाइए!" — तो वह मुनि, जिसका मन कहीं और लगा रहता है, उस पर ऐसे हँसता है जैसे वह कोई बड़बड़ाता हुआ पागल हो।

1.10.34

न प्रोक्तमाकर्णयति ईक्षते न पुरोगतम् । करोत्यवज्ञां सर्वत्र सुसमेत्यापि वस्तुनि ॥ ३४ ॥

na proktamākārṇayati īkṣate na purogatam | karotyavajñāṁ sarvatra susametyāpi vastuni || 34 ||

He does not listen to what is said to him, he does not even look at what is right in front of him. He shows disrespect toward everything, even toward things that come to him well-suited and pleasing.

जो कुछ उससे कहा जाता है वह नहीं सुनता, यहाँ तक कि जो उसके सामने है उसे भी नहीं देखता। वह हर चीज़ की अनदेखी करता है, यहाँ तक कि जो चीज़ें उसे बिलकुल अनुकूल और पसंद आने लायक होकर मिलती हैं, उनकी भी।

1.10.35

अप्याकाशसरोजिन्या अप्याकाशमहावने । इत्थमेतन्मन इति विस्मयोऽस्य न जायते ॥ ३५ ॥

apyākāśasarojinyā apyākāśamahāvane | itthametannaṁ iti vismayo'sya na jāyate || 35 ||

Even at the thought of a lotus pond in the sky, even at a great forest in the sky, even at the thought "such is this mind" — he feels no surprise at all.

आकाश में खिले किसी कमल-तालाब के खयाल से भी, आकाश के किसी बड़े जंगल के खयाल से भी, और "मन ऐसा ही होता है" इस खयाल से भी — उसे कोई हैरानी नहीं होती।

1.10.36

कान्तामध्यगतस्यापि मनोऽस्य मदनेषवः न भेदयन्ति दुर्भेद्यं धारा इव महोपलम् ॥ ३६ ॥

kāntāmadhyagatasyāpi mano'sya madaneṣavaḥ na bhedayanti durbhedyam dhārā iva mahopalam || 36 ||

Even when he is close beside a beautiful woman, the arrows of the god of love cannot pierce his mind, which is hard to break, just as a jet of falling water cannot break a great rock.

वह किसी सुंदर स्त्री के पास भी हो, तब भी कामदेव के बाण उसके मन को नहीं भेद पाते, क्योंकि उसका मन इतना कठोर है, जैसे गिरती हुई पानी की धार किसी बड़ी चट्टान को नहीं तोड़ पाती।

1.10.37

आपदामेकमावासमभिवाञ्छसि किं धनम् अनुशिष्येति सर्वस्वमर्थिने संप्रयच्छति ॥ ३७ ॥

āpadāmekamāvāsamabhivāñchasi kiṃ dhanam anuśiṣyēti sarvasvamarthine saṃprayacchati || 37 ||

"Why do you want wealth, when wealth is the one home where all misfortunes live?" — teaching this, he gives away everything he owns to anyone who asks him for it.

"तुम धन क्यों चाहते हो, जबकि धन तो वह एक घर है जहाँ सारी मुसीबतें रहती हैं?" — यह सिखाते हुए वह जो कुछ भी माँगे उसे अपना सब कुछ दे देता है।

1.10.38

इयमापदियं संपदित्येवं कल्पनामयः मनसोऽभ्युदितो मोह इति श्लोकान्प्रगायति ॥ ३८ ॥

īyamāpadiyam saṃpadityevaṃ kalpanāmayaḥ manaso'bhyudito moha iti ślokānpragāyati || 38 ||

"This is a misfortune, this is good fortune" — such ideas are made only of imagination; this is a delusion that has risen up from the mind — saying this, he sings these verses.

"यह मुसीबत है, यह अच्छा भाग्य है" — ऐसी बातें सिर्फ मन की कल्पना हैं; यह तो मन से उठा हुआ एक भ्रम है — यह कहकर वह ये बातें गाता रहता है।

1.10.39

हा हतोऽहमनाथोऽहमित्याक्रन्दपरोऽपि सन् न जनो याति वैराग्यं चित्रमित्येव वक्त्यसौ ॥ ३९ ॥

hā hato'hamanātho'hamityākrandaparo'pi san na jano yāti vairāgyaṃ citramityeva vaktyasau || 39 ||

Even when a person cries out in grief, "Alas, I am ruined, I am helpless!" — that person still does not turn toward giving up desire. Seeing this, he just says, "How strange this is!"

जब कोई इंसान दुख में चिल्लाकर कहता है, "हाय, मैं बर्बाद हो गया, मैं बेसहारा हूँ!" — फिर भी वह इंसान इच्छाओं को छोड़ने की तरफ नहीं मुड़ता। यह देखकर वह बस इतना कहता है, "यह कितना अजीब है!"

1.10.40

रघुकाननशालेन रामेण रिपुघातिना भृशमित्थं स्थितेनैव वयं खेदमुपागताः ॥ ४० ॥

raghukānanaśālena rāmeṇa ripughātinā bhr̥ṣamitthaṃ sthiteṇaiva vayaṃ khedamupāgatāḥ || 40 ||

Because of Rama, the great tree of the Raghu family's forest, the killer of enemies, being so deeply fixed in this state, we have fallen into great sorrow.

राम के, जो रघुकुल रूपी जंगल के सबसे बड़े पेड़ हैं और दुश्मनों को मारने वाले हैं, इस तरह गहरे डूबे रहने की वजह से हम बहुत दुखी हो गए हैं।

1.10.41

न विद्मः किं महाबाहो तस्य तादृशचेतसः । कुर्मः कमलपत्राक्ष गतिरत्र हि नो भवान् ॥ ४१ ॥

na vidmaḥ kiṃ mahābāho tasya tādr̥śacetasaḥ | kurmaḥ kamalapatrākṣa gatiratra hi no bhavān || 41 ||

O mighty-armed one, we do not know what to do about him, whose mind has become like this. O lotus-eyed one, you alone are our way forward in this matter.

हे बड़ी-बड़ी भुजाओं वाले, हमें समझ नहीं आता कि उसका क्या करें, जिसका मन ऐसा हो गया है। हे कमल की पंखड़ी जैसी आँखों वाले, इस मामले में आप ही हमारा सहारा हैं।

1.10.42

राजानमथवा विप्रमुपदेशारमग्रतः । हसत्यज्ञमिवाव्यग्रः सोऽवधीरयति प्रभो ॥ ४२ ॥

rājānamathavā vipramupadeṣṭāramagrataḥ | hasatyajñamivāvyagraḥ so'vadhīrayati prabho || 42 ||

O lord, whether it is a king or a learned teacher standing before him giving advice, he stays calm and laughs at them as if they were fools, and pays them no attention.

हे स्वामी, चाहे कोई राजा हो या कोई विद्वान गुरु हो, जो उसके सामने खड़े होकर उसे सलाह दें, वह शांत बना रहता है और उन पर ऐसे हँसता है जैसे वे मूर्ख हों, और उनकी तरफ ध्यान ही नहीं देता।

1.10.43

यदेवेदमिदं स्फारं जगन्नाम यदुत्थितम् । नैतद्वस्तु नचैवाहमिति निर्णय संस्थितः ॥ ४३ ॥

yadevedamidam sphāraṁ jagannāma yadutthitam | naitadvastu na caivāhamiti nirṇaya saṁsthitaḥ || 43 ||

Whatever this vast thing called the world is, whatever has come into being — "this is not real, and I am not this either" — having decided this firmly, he stays fixed in it.

यह जो विशाल चीज़ दुनिया कहलाती है, जो कुछ भी बना है — "यह असली नहीं है, और मैं भी यह नहीं हूँ" — यह पक्का तय करके वह इसी बात पर टिका रहता है।

1.10.44

नारौ नात्मनि नो मित्रे न राज्ये न च मातरि । न संपदा न विपदा तस्यास्था न विभो बहिः ॥ ४४ ॥

nārau nātmani no mitre na rājye na ca mātari | na saṁpadā na vipadā tasyāsthā na vibho bahiḥ || 44 ||

O lord, he has no concern at all — not for an enemy, not for himself, not for a friend, not for the kingdom, and not for his mother. Neither through good fortune nor through bad fortune does he care for anything outside himself.

हे स्वामी, उसे किसी की परवाह नहीं है — न दुश्मन की, न खुद की, न दोस्त की, न राज्य की, न अपनी माँ की। न अच्छे भाग्य से और न बुरे भाग्य से, उसे अपने अलावा किसी बाहरी चीज़ की चिंता नहीं है।

1.10.45

निरस्तास्थो निराशोऽसौ निरीहोऽसौ निरास्पदः । न मूढो न च मुक्तोऽसौ तेन तप्यामहे भृशम् ॥ ४५ ॥

nirastāstho nirāśo'sau nirīho'sau nirāspadaḥ | na mūḍho na ca mukto'sau tena tapyāmahe bhṛśam || 45 ||

He has thrown away all concern, he has no hope, he has no desire to do anything, and he has no fixed place to rest in. He is not a fool, and yet he is not free either — this is why we are suffering so much.

उसने हर चिंता को त्याग दिया है, उसे कोई उम्मीद नहीं है, उसे कुछ भी करने की इच्छा नहीं है, और उसका कहीं कोई टिकाव नहीं है। वह मूर्ख भी नहीं है, फिर भी वह मुक्त भी नहीं है — इसी वजह से हम बहुत दुखी हैं।

1.10.46

किं धनेन किमम्बाभिः किं राज्येन किमीहया । इति निश्चयवानन्तः प्राणत्यागपरः स्थितः ॥ ४६ ॥

kiṁ dhanena kimambābhiḥ kiṁ rājyena kimīhayā | iti niścayavānantaḥ prāṇatyāgaparaḥ sthitaḥ || 46 ||

"What use is wealth, what use are the mothers, what use is a kingdom, what use is any effort?" — being firmly convinced of this within himself, he stays ready to give up his very life.

"धन से क्या फायदा, माताओं से क्या फायदा, राज्य से क्या फायदा, किसी भी कोशिश से क्या फायदा?" — मन ही मन यह पक्का मानकर, वह अपनी जान तक त्यागने के लिए तैयार बैठा रहता है।

1.10.47

भोगेऽप्यायुषि राज्येषु मित्रे पितरि मातरि । परमुद्वेगमायातश्चातकोऽवग्रहे यथा ॥ ४७ ॥

bhoge'pyāyuṣi rājyeṣu mitre pitari mātari | paramudvegamāyātaścāta'kō'vagrahe yathā || 47 ||

Toward pleasure, toward life itself, toward kingdoms, toward friend, father, and mother, he has come to feel the deepest distress, like a chataka bird in a drought.

सुख की तरफ, अपनी जिंदगी की तरफ, राज्यों की तरफ, दोस्त, पिता और माँ की तरफ, उसे सबसे गहरी बेचैनी महसूस होने लगी है, जैसे सूखे में कोई चातक पक्षी तड़पता है।

1.10.48

इति तोके समायातां शाखाप्रसरशालिनीम् । आपत्तामलमुद्धर्तुं समुदेतु दयापरः ॥ ४८ ॥

iti toke samāyātāṃ śākhāprasaraśālīnīm | āpattāmalamuddhartuṃ samudetu dayāparaḥ || 48 ||

This is the misfortune that has come upon this child, a misfortune that has spread out like the branches of a tree. Let someone full of compassion come forward to root it out completely.

यह वह मुसीबत है जो इस बालक पर आ पड़ी है, ऐसी मुसीबत जो पेड़ की डालियों की तरह फैल गई है। कोई दयालु व्यक्ति आगे आए और इसे पूरी तरह से जड़ से उखाड़ दे।

1.10.49

तस्य तादृक्स्वभावस्य समग्रविभवान्वितम् । संसारजालमाभोगि प्रभो प्रतिविषायते ॥ ४९ ॥

tasya tāḍṛkṣvabhāvasya samagravibhavanvitaṃ | saṃsārajālamābhogi prabho prativīṣāyate || 49 ||

O lord, for him, whose nature has become like this, the whole net of worldly life — even though it is full of every kind of riches and spread out wide — tastes like poison to him.

हे स्वामी, जिसका स्वभाव ऐसा हो गया है, उसके लिए यह संसार का पूरा जाल — भले ही वह हर तरह के वैभव से भरा हो और चारों तरफ फैला हो — उसे जहर जैसा लगता है।

1.10.50

ईदृशः स्यान्महासत्त्वः क इवास्मिन्महीतले । प्रकृते व्यवहारे तं यो निवेशयितुं क्षमः ॥ ५० ॥

īḍṛśaḥ syānmahāsattvaḥ ka ivāsmiṇmahītale | prakṛte vyavahāre taṃ yo niveśayituṃ kṣamaḥ || 50 ||

Who is there on this earth, so great in spirit, who is able to bring him back into ordinary worldly life?

इस धरती पर ऐसा कौन महान व्यक्ति होगा, जो उसे वापस सामान्य सांसारिक जीवन में ला सके?

1.10.51

मनसि मोहमपास्य महामनाः सकलमार्तितमः किल साधुताम् । सफलतां नयतीह तमो हरन् दिनकरो भुवि भास्करतामिव ॥ ५१ ॥

manasi mohamapāsy mahāmanāḥ sakalamārtitamaḥ kila sādhitām | saphalatām nayatīha tamo haran dinakaro bhuvi bhāskarātāmiva || 51 ||

Having thrown delusion out of his mind, this great person turns all this darkness of pain into goodness here, and makes it bear fruit — just as the sun, driving away darkness, becomes the true giver of light on the earth.

अपने मन से भ्रम को निकालकर, यह महान इंसान दुख के इस पूरे अंधेरे को यहाँ भलाई में बदल देता है, और उसे सफल बना देता है — बिल्कुल वैसे ही जैसे सूरज अंधेरे को दूर करके धरती पर सच्चा प्रकाश देने वाला बन जाता है।

Chapter 11

1.11.1

विश्वामित्र उवाच । एवं चेत्तन्महाप्राज्ञा भवन्तो रघुनन्दनम् । इहानयन्तु त्वरिता हरिणं हरिणा इव ॥ १ ॥

viśvāmitra uvāca | evaṃ cet tanmahāprājñā bhavanto raghunandanam | ihānayantu tvaritā hariṇam hariṇā iva || 1 ||

Vishvamisra said: "If this is so, then you very wise sages, quickly bring Rama here, the way one deer draws another deer."

विश्वामित्र ने कहा: "अगर ऐसा है, तो आप बड़े बुद्धिमान लोग जल्दी से राम को यहाँ ले आइए, जैसे एक हिरण दूसरे हिरण को खींच लाता है।"

1.11.2

एष मोहो रघुपतेर्नापद्भ्यो न च रागतः । विवेकवैराग्यवतो बोध एव महोदयः ॥ २ ॥

eṣa moho raghupaternāpadbhyo na ca rāgataḥ | vivekavairāgyavato bodha eva mahodayaḥ || 2 ||

This confusion in Rama's mind is not because of any real trouble, and not because of any desire either. For someone who has understanding and wants nothing from the world, this very awakening is a great blessing.

राम के मन की यह उलझन न तो किसी सच्ची मुसीबत की वजह से है, न किसी इच्छा की वजह से। जिसके पास सही-गलत की समझ है और जो दुनिया से कुछ नहीं चाहता, उसके लिए यह जागना खुद ही एक बड़ी अच्छी बात है।

1.11.3

इहायातु क्षणाद्राम इह चैव वयं क्षणात् । मोहं तस्यापनेष्यामो मारुतोऽद्रेर्घनं यथा ॥ ३ ॥

ihāyātu kṣaṇādrāma iha caiva vayaṃ kṣaṇāt | mohaṃ tasyāpaneṣyāmo māruto'dre'rghanam yathā || 3 ||

Let Rama come here right now, and let us also come here right now. We will take away his confusion, the way the wind blows a cloud away from a mountain.

राम अभी इसी वक्त यहाँ आ जाए, और हम भी अभी यहाँ आ जाएँ। हम उसकी उलझन को दूर कर देंगे, जैसे हवा पहाड़ से बादल को उड़ा ले जाती है।

1.11.4

एतस्मिन्मार्जिते युक्त्या मोहे स रघुनन्दनः । विश्रान्तिमेष्यति पदे तस्मिन्वयमिवोत्तमे ॥ ४ ॥

etasminmārjite yuktyā mohe sa raghunandanaḥ | viśrāntimeṣyati pade tasminvayamivottame || 4 ||

When this confusion is cleared away by right thinking, Rama will find rest in that highest state, just as we have found it.

जब सही सोच से यह उलझन साफ हो जाएगी, तब राम को भी उसी सबसे ऊँची अवस्था में शांति मिलेगी, जैसे हमें मिली है।

1.11.5

सत्यतां मुदितां प्रज्ञां विश्रान्तिमपतापताम् । पीनतां वरवर्णत्वं पीतामृत इवैष्यति ॥ ५ ॥

satyatāṃ muditāṃ prajñāṃ viśrāntimapatāpatām | pīnatāṃ varavarṇatvaṃ pītāmṛta iva iṣyati || 5 ||

He will get truthfulness, joy, understanding, rest, freedom from pain, a strong healthy body, and a fine complexion, as if he had drunk the nectar of immortality.

उसे सच्चाई, खुशी, समझ, शांति, दुख से छुटकारा, एक मज़बूत सेहतमंद शरीर और अच्छा रंग-रूप मिलेगा, मानो उसने अमृत पी लिया हो।

1.11.6

निजां च प्रकृतामेव व्यवहारपरम्पराम्परिपूर्णमना मान्य आचरिष्यत्यखण्डितम् ॥ ६ ॥

nijāṃ ca prakṛtāmeva vyavahāraparamparāmparipūrṇamanā mānya ācarīṣyatyakhaṇḍitam || 6 ||

With a fully content mind, and respected by all, he will go on doing his own everyday work in the usual way, without a break.

पूरे मन से संतुष्ट होकर, और सबके आदर के साथ, वह अपना रोज़ का काम हमेशा की तरह, बिना रुके करता रहेगा।

1.11.7

भविष्यति महासत्त्वो ज्ञातलोकपरावरः सुखदुःखदशाहीनः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥ ७ ॥

bhaviṣyati mahāsattvo jñātalokaparāvaraḥ sukhaduḥkhaḍaśāhīnaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ || 7 ||

He will become a person of great strength of mind who has seen both the higher and the lower sides of the world, free from the states of pleasure and pain, and to whom a lump of mud, a stone, and gold are all the same.

वह इतना मज़बूत मन वाला इंसान बनेगा जिसने दुनिया का ऊपर और नीचे, दोनों पहलू देख लिया है। उसे सुख और दुख दोनों नहीं छू पाएँगे, और उसके लिए मिट्टी का ढेला, पत्थर और सोना, तीनों बराबर होंगे।

1.11.8

इत्युक्ते मुनिनाथेन राजा संपूर्णमानसः प्राहिणोद्राममानेतुं भूयो दूतपरम्पराम् ॥ ८ ॥

ityukte munināthena rājā saṃpūrṇamānasah prāhiṇodrāma mānetuṃ bhūyo dūtaparamparām || 8 ||

When the lord of sages had said this, the king, his heart now fully satisfied, sent another line of messengers to bring Rama.

मुनियों के स्वामी के यह कहने पर, राजा का मन पूरी तरह संतुष्ट हो गया, और उसने राम को लाने के लिए फिर से एक-के-बाद-एक दूत भेजे।

1.11.9

एतावताथ कालेन रामो निजगृहासनात्पितुः सकाशमागन्तुमुत्थितोऽर्क इवाचलात् ॥ ९ ॥

etāvatātha kālena rāmo nijagr̥hāsanaātpituḥ sakāśamāgantumutthito'rka ivācalāt || 9 ||

After this much time had passed, Rama got up from his seat in his own house to go into his father's presence, like the sun rising up from a mountain.

इतना समय बीतने के बाद, राम अपने घर की जगह से उठा, अपने पिता के पास जाने के लिए, जैसे सूरज पहाड़ से ऊपर उठता है।

1.11.10

वृतः कतिपयैर्भृत्यैर्भ्रातृभ्यां च जगाम हृत्पुण्यं स्वपितुः स्थानं स्वर्गं सुरपतेरिव ॥ १० ॥

vṛtaḥ katipayairbhr̥tyairbhr̥atr̥bhyaṃ ca jagāma hṛtṣuṇyaṃ svapituḥ sthānaṃ svargaṃ surapateriva || 10 ||

Surrounded by a few servants and by his two brothers, he went to his father's sacred place, dear to his heart, like going to the heaven of Indra, the king of gods.

कुछ सेवकों और अपने दोनों भाइयों के साथ, वह अपने पिता की उस पवित्र जगह पर गया, जो उसके दिल के करीब थी, मानो वह देवताओं के राजा इंद्र के स्वर्ग में जा रहा हो।

1.11.11

दूरादेव ददर्शासौ रामो दशरथं तदावृतं राजसमूहेन देवौघेनेव वासवम् ॥ ११ ॥

dūrādeva dadarśāsau rāmo daśaratham tadāvṛtaṁ rājasamūhena devaugheneva vāsavam || 11 ||

From far away, Rama saw Dasharatha, who at that time was surrounded by a crowd of kings, like Indra surrounded by a crowd of gods.

दूर से ही राम ने दशरथ को देखा, जो उस समय राजाओं की भीड़ से घिरे हुए थे, जैसे इंद्र देवताओं की भीड़ से घिरे रहते हैं।

1.11.12

वसिष्ठविश्वामित्राभ्यां सेवितं पार्श्वयोर्द्वयोःसर्वशास्त्रार्थतज्ज्ञेन मन्त्रिवृन्देन मालितम् ॥ १२ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrābhyāṁ sevitaṁ pārsvayordvayoḥsarvaśāstrārthatajjñeṇa mantrivṛndena mālitaṁ || 12 ||

Dasharatha was attended on both sides by Vasishtha and Vishvamisra, and surrounded by a group of ministers who knew the meaning of all the scriptures.

दशरथ के दोनों तरफ वशिष्ठ और विश्वामित्र खड़े थे, और उनके चारों ओर वे मंत्री थे जो सारे शास्त्रों का मतलब जानते थे।

1.11.13

चारुचामरहस्ताभिः कान्ताभिः समुपासितम्कुम्भिरिव मूर्ताभिः संस्थिताभिर्यथोचितम् ॥ १३ ॥

cārucāmarahastābhiḥ kāntābhiḥ samupāsitaṁkumbhiriva mūrtābhiḥ saṁsthitābhiryathocitaṁ || 13 ||

He was being served by lovely women holding beautiful fly-whisks, each standing in her right place, like the directions of the sky come alive as women, each standing exactly where she should.

सुंदर स्त्रियाँ हाथों में सुंदर चँवर लिए उनकी सेवा कर रही थीं, हर एक अपनी सही जगह पर खड़ी थी, मानो दिशाएँ खुद स्त्री का रूप लेकर अपनी-अपनी जगह पर खड़ी हो गई हों।

1.11.14

वसिष्ठविश्वामित्राद्यास्तथा दशरथादयःददृशू राघवं दूरादुपायान्तं गुहोपमम् ॥ १४ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrādyāstathā daśarathādayaḥdadṛśū rāghavaṁ dūrādupāyāntaṁ guhopamaṁ || 14 ||

Vasishtha, Vishvamisra and the others, and also Dasharatha and the others, saw Rama from far away, coming toward them, looking like Guha, the god of war.

वशिष्ठ, विश्वामित्र और बाक़ी लोगों ने, और दशरथ और बाक़ी लोगों ने, सबने दूर से राम को अपनी तरफ़ आते देखा, जो युद्ध के देवता गुह जैसा दिख रहा था।

1.11.15

सत्त्वावष्टभदगर्भेण शल्येनेव हिमाचलमिश्रितं सकलसेव्येन गम्भीरेण स्फुटेन च ॥ १५ ॥

sattvāvaṣṭabdhagarbheṇa śalyeneva himācalamśritaṁ sakalasevyena gambhīreṇa sphuṭena ca || 15 ||

He was someone all could rely on, deep and clear, his inside made firm by his own inner strength, the way a great snow mountain is made firm by the rock inside it.

वह ऐसा था कि सब उस पर भरोसा कर सकते थे, गहरा भी और साफ़ भी। उसके अंदर की मज़बूती उसकी अपनी हिम्मत से बनी थी, जैसे किसी बड़े बर्फ़ीले पहाड़ की मज़बूती उसके अंदर की चट्टान से बनती है।

1.11.16

सौम्यं समं शुभाकारं विनयोदारमानसम्कान्तोपशान्तवपुषं परस्यार्थस्य भाजनम् ॥ १६ ॥

saumyaṃ samaṃ śubhākāraṃ vinayodāramānasamkāntopāśāntavapuṣaṃ parasyārthasya bhājanam || 16 ||

He was gentle, even-tempered, of a good and pleasant look, noble-minded through humility, lovely and calm in body, and a true support for the good of others.

वह कोमल स्वभाव का, हर हाल में एक-सा रहने वाला, देखने में भला-भला था। विनम्रता से उसका मन बड़ा था, उसका शरीर सुंदर और शांत था, और वह दूसरों की भलाई के लिए सहारा था।

1.11.17

समुद्यद्यौवनारम्भं वृद्धोपशमशोभनमनुद्विग्नमनानन्दं पूर्णप्रायमनोरथम् ॥ १७ ॥

samudyadyauvanārambhaṃ vṛddhopaśamaśobhanamanudvignamanānandaṃ pūrṇaprāyamanoratham || 17 ||

His youth was just beginning to rise, yet he was beautiful with the calm of an old, wise man. His mind held a joy that was never disturbed, and almost all his wishes were already fulfilled.

उसकी जवानी अभी शुरू ही हुई थी, फिर भी उसमें एक बूढ़े समझदार आदमी जैसी शांति की सुंदरता थी। उसके मन में जो खुशी थी वह कभी डगमगाती नहीं थी, और उसकी लगभग सारी इच्छाएँ पहले से ही पूरी हो चुकी थीं।

1.11.18

विचारितजगद्वात्रं पवित्रगुणगोचरम्महासत्त्वैकलोभेन गुणैरिव समाश्रितम् ॥ १८ ॥

vicāritajagadyātraṃ pavitraguṇagocarammahāsattvāikalobhena guṇairiva samāśritam || 18 ||

He had thought deeply about how the world works, and only pure, good qualities could reach him. It was as if all good qualities had come and settled on him, out of sheer greed to be part of someone with such a great and noble spirit.

उसने इस बारे में गहराई से सोच रखा था कि दुनिया कैसे चलती है, और सिर्फ शुद्ध, अच्छे गुण ही उस तक पहुँच पाते थे। ऐसा लगता था मानो सारे अच्छे गुण खुद आकर उस पर बस गए हों, सिर्फ इसलिए कि वे इतने महान और भले इंसान का हिस्सा बनना चाहते थे।

1.11.19

उदारमार्यमापूर्णमन्तःकरणकोटरमविक्षुभितया वृत्त्या दर्शयन्तमनुत्तमम् ॥ १९ ॥

udāramāryamāpūrṇamantaḥkaraṇakoṭaramavikṣubhitayā vṛttyā darśayantamanuttamam || 19 ||

He was generous, of noble birth, and completely full inside, in the depth of his heart. Through his calm, undisturbed way of behaving, he showed that nothing was higher than him.

वह उदार था, अच्छे कुल का था, और अपने दिल की गहराई में पूरी तरह भरा हुआ था। अपने शांत, बिना घबराए हुए व्यवहार से वह दिखा देता था कि उससे बढ़कर कोई नहीं है।

1.11.20

एवंगुणगणाकीर्णो दूरादेव रघूद्वहःपरिमेयस्मिताच्छाच्छस्वहाराम्बरपल्लवः ॥ २० ॥

evaṅguṇagaṇākīrṇo dūrādeva raghūdvaḥparimeyasmitācchācchāsvarāmbapallavaḥ || 20 ||

Rama, the pride of the Raghu family, was full of all these good qualities, and could be told apart even from far away, by his gentle, clear smile, and by his bright necklace and the loose end of his garment moving as he walked.

राम, रघु परिवार का गौरव, इन सारे अच्छे गुणों से भरा हुआ था, और उसे दूर से ही पहचाना जा सकता था, उसकी कोमल, साफ़ मुस्कान से, और उसकी चमकती माला और चलते समय हिलते हुए कपड़े के छोर से।

1.11.21

प्रणनाम चलच्चारुचूडामणिमरीचिनाशिरसा वसुधाकम्पलोलदेवाचलश्रिया ॥ २१ ॥

praṇanāma calaccārucūdāmaṇimarīcināśīrasā vasudhākampaloladevācalaśriyā || 21 ||

He bowed down his head, on which his lovely crest-jewel swayed and flashed as he moved, and that head, in its splendor, looked like a divine mountain shaking and making the earth tremble.

उसने अपना सिर झुकाया, जिस पर हिलते हुए सुंदर मुकुट-मणि की चमक थी, और उसका वह सिर देखने में ऐसा लग रहा था जैसे देवताओं का कोई पहाड़ हिल रहा हो और धरती काँप रही हो।

1.11.22

एवं मुनिन्द्रे ब्रुवति पितुः पादाभिवन्दनम्कर्तुमभ्याजगामाथ रामः कमललोचनः ॥ २२ ॥

evaṃ munīndre bruvati pituḥ pādābhivandanamkartumabhyājagāmātha rāmaḥ kamalalocanaḥ || 22 ||

While the lord of sages was saying this, Rama, whose eyes were like lotuses, came forward to bow down and touch his father's feet.

जब मुनियों के स्वामी यह कह रहे थे, तभी कमल जैसी आँखों वाला राम अपने पिता के पैर छूकर प्रणाम करने के लिए आगे आया।

1.11.23

प्रथमं पितरं पश्चान्मुनी मान्यैकमानितौततो विप्रांस्ततो बन्धूस्ततो गुरुगणान्सुहृत् ॥ २३ ॥

prathamam pitaram paścānmunī mānyaikamānitautato viprāṃstato bandhūṃstato gurugaṇānsuhṛt || 23 ||

First he bowed to his father, then to the two sages who alone deserved the highest honor, then to the brahmins, then to his relatives, then to the group of elders and teachers, being a true friend to everyone.

पहले उसने अपने पिता को प्रणाम किया, फिर उन दो मुनियों को जो सबसे ज़्यादा आदर के हक़दार थे, फिर ब्राह्मणों को, फिर अपने रिश्तेदारों को, फिर बड़ों और गुरुओं के समूह को, और वह सबका एक सच्चा दोस्त बना रहा।

1.11.24

जग्राह च ततो दृष्ट्या मनाङ्गूर्ध्ना तथा गिराराजलोकेन विहितां तां प्रणामपरम्पराम् ॥ २४ ॥

jagrāha ca tato dṛṣṭyā manāṅgūrdhnā tathā girārājalokena vihitāṃ tāṃ praṇāmaparamparām || 24 ||

Then, with a look, with a slight bow of his head, and also with words, he received that long line of greetings which the gathered kings offered him.

फिर एक नज़र से, सिर को थोड़ा झुकाकर, और कुछ शब्दों से भी, उसने वहाँ जुटे राजाओं की तरफ़ से आने वाले उन एक-के-बाद-एक प्रणामों को स्वीकार किया।

1.11.25

विहिताशीर्मुनिभ्यां तु रामः सुसममानसःआससाद पितुः पुण्यं समीपं सुरसुन्दरः ॥ २५ ॥

vihitāśīrmunibhyāṃ tu rāmaḥ susamamānasaḥāsasāda pituḥ puṇyaṃ samīpaṃ surasundaraḥ || 25 ||

Blessed by the two sages, his mind perfectly calm and even, Rama, beautiful as a god, then reached close to his father, into that sacred presence.

दोनों मुनियों का आशीर्वाद पाकर, अपने मन को पूरी तरह शांत और स्थिर रखते हुए, देवता जैसा सुंदर राम अपने पिता के उस पवित्र करीब पहुँच गया।

1.11.26

पादाभिवन्दनपरं तमथासौ महीपतिःशिरस्यभ्यालिलिङ्गाशु चुचुम्ब च पुनःपुनः ॥ २६ ॥

pādābhivandanaparaṁ tamathāsau mahīpatiḥśirasyabhyālilingāśu cucumba ca punaḥpunaḥ || 26 ||

Then, as Rama was bending to touch his feet, Dasharatha quickly held his head close and hugged him, and kissed him again and again.

तभी, जब राम उनके पैर छूने के लिए झुक रहा था, दशरथ ने जल्दी से उसका सिर पकड़कर उसे गले लगा लिया और उसे बार-बार चूमा।

1.11.27

शत्रुघ्नं लक्ष्मणं चैव तथैव परवीरहाआलिलिङ्ग घनस्नेहो राजहंसोऽम्बुजे यथा ॥ २७ ॥

śatrughnaṁ lakṣmaṇaṁ caiva tathaiva paravīrahāālilinga ghanasneho rājahaṁso'mbuje yathā || 27 ||

And Dasharatha, the slayer of enemy heroes, embraced Shatrughna and Lakshmana in the same way, with deep love, the way a royal swan settles on a lotus.

और दुश्मन के बड़े-बड़े योद्धाओं को मार गिराने वाले दशरथ ने शत्रुघ्न और लक्ष्मण को भी उसी तरह, गहरे प्यार से गले लगाया, जैसे एक राजहंस कमल के फूल पर बैठा है।

1.11.28

उत्सङ्गे पुत्र तिष्ठेति वदत्यथ महीपतौभूमौ परिजनास्तीर्णे सोंऽशुकेऽथ न्यविक्षत ॥ २८ ॥

utsaṅge putra tiṣṭheti vadatyatha mahīpataubhūmau parijanāstīrṇe soṁ'shuke'tha nyavikṣata || 28 ||

While the king was saying, "Sit in my lap, my son," Rama sat down on the cloth that the attendants had spread on the ground.

जब राजा कह रहे थे, "बेटा, मेरी गोद में बैठ जा," तब राम उस कपड़े पर बैठ गया जो सेवकों ने ज़मीन पर बिछा दिया था।

1.11.29

राजोवाचपुत्र प्राप्तविवेकस्त्वं कल्याणानां च भाजनमजडवज्जीर्णया बुद्ध्या खेदायात्मा न दीयताम् ॥ २९ ॥

rājovācaputra prāptavivekastvaṁ kalyāṇānāṁ ca bhājanamajḍavajjīrṇayā buddhyā khedāyātmā na dīyatām || 29 ||

The king said: My son, you have gained the power to tell right from wrong, and you are fit to receive every good thing. Do not hand yourself over to sorrow with a worn-out mind, like someone who cannot think clearly.

राजा ने कहा: बेटा, तुझमें सही-गलत परखने की समझ आ गई है, और तू हर अच्छी चीज़ पाने के लायक है। किसी नासमझ इंसान की तरह अपनी थकी-हारी बुद्धि से अपने आप को दुख के हवाले मत कर।

1.11.30

वृद्धविप्रगुरुप्रोक्तं त्वाद्दृशेनानुतिष्ठतापदमासाद्यते पुण्यं न मोहमनुधावता ॥ ३० ॥

vṛddhaviप्रगुरuproktam tvāddṛśēnānutiṣṭhatāpadamāsādyate puṇyam na mohamanudhāvatā || 30 ||

Someone like you, who follows what elders, brahmins, and teachers have taught, reaches the good, blessed goal, not someone who runs after confusion.

तुझ जैसा इंसान, जो बड़ों, ब्राह्मणों और गुरुओं की बताई बात पर चलता है, अच्छे और शुभ लक्ष्य तक पहुँचता है, न कि वह जो उलझन के पीछे भागता है।

1.11.31

तावदेवापदो दूरे तिष्ठन्ति परिपेलवाः यावदेव न मोहस्य प्रसरः पुत्र दीयते ॥ ३१ ॥

tāvadevā''pado dūre tiṣṭhanti paripelavāhyāvadeva na mohasya prasaraḥ putra dīyate || 31 ||

Troubles, even small, weak ones, stay far away only for as long as, my son, you do not let confusion spread and take hold.

मुसीबतें, चाहे वे कितनी भी छोटी और कमज़ोर हों, तभी तक दूर रहती हैं, बेटा, जब तक तू उलझन को फैलने और जड़ जमाने नहीं देता।

1.11.32

श्रीवसिष्ठ उवाचराजपुत्र महाबाहो शूरस्त्वं विजितास्त्वयादुरुच्छेदा दुरारम्भा अप्यमी विषयारयः ॥ ३२ ॥

śrīvasiṣṭha uvācarārajaputra mahābāho śūrastvaṃ vijitāstvyādurucchedā durārambhā apyamī viṣayārayaḥ || 32 ||

Sri Vasishtha said: Prince, mighty-armed one, you are brave, you have already conquered these enemies in the form of the senses, enemies that are hard to destroy and even hard to start fighting.

श्री वशिष्ठ ने कहा: राजकुमार, बलशाली भुजाओं वाले, तू बहादुर है, तूने इंद्रियों के रूप में मौजूद उन दुश्मनों को पहले ही जीत लिया है, जिन्हें खत्म करना मुश्किल है और जिनसे लड़ना शुरू करना भी मुश्किल है।

1.11.33

किमतज्ज्ञ इवाज्ञानां योग्ये व्यामोहसागरेविनिमज्जसि कल्लोलबहुले जाड्यशालिनि ॥ ३३ ॥

kimatajjña ivājñānāṃ yogye vyāmoḥasāgarevinimajjasi kallolabahule jāḍyaśālīni || 33 ||

Then why are you sinking, as if you did not know this, like someone who is ignorant, into an ocean of confusion, an ocean fit only for the ignorant, full of big waves, and full of dullness?

फिर तू ऐसा क्यों कर रहा है, मानो तुझे यह पता ही न हो, किसी अनजान इंसान की तरह, उलझन के एक समंदर में डूब रहा है, ऐसा समंदर जो सिर्फ अनजान लोगों के लायक है, बड़ी-बड़ी लहरों से भरा है, और सुस्ती से भरा है?

1.11.34

विश्वामित्र उवाच चलन्नीलोत्पलव्यूहसमलोचनलोलताम्बूहि चेतःकृतां त्यक्त्वा हेतुना केन मुह्यसि ॥ ३४ ॥

viśvāmitra uvāca calannīlotpalavyūhasamalocanalolatāmbūhi cetaḥkṛtāṃ tyaktvā hetunā kena muhyasi || 34 ||

Vishvamisra said: Your eyes are restless, like a mass of blue lotuses swaying in the wind. Tell us plainly, without hiding anything, for what reason are you so confused?

विश्वामित्र ने कहा: तेरी आँखें बेचैन हैं, जैसे हवा में हिलते नीले कमलों का एक झुंड। साफ़-साफ़ बता, कुछ भी छुपाए बिना, किस वजह से तू इतनी उलझन में है?

1.11.35

किंनिष्ठाः के च ते केन कियन्तः कारणेन तेआधयः प्रविलुम्पन्ति मनो गेहमिवाखवः ॥ ३५ ॥

kiṃniṣṭhāḥ ke ca te kena kiyantaḥ kāraṇena teādhayaḥ pravilumpanti mano gehamivākhavaḥ || 35 ||

What are these worries based on? What are they? By what and how many are they caused? These anxieties are eating away at your mind, the way mice eat away at a house.

ये चिंताएँ आखिर किस बात पर टिकी हैं? ये हैं क्या? किस वजह से और कितनी हैं? ये फ़िक्रें तेरे मन को उसी तरह खाए जा रही हैं, जैसे चूहे किसी घर को खा जाते हैं।

1.11.36

मन्ये नानुचितानां त्वमाधीनां पदमुत्तममापत्सु चा'प्रयोज्यं ते निहीना अपि चाधयः ॥ ३६ ॥

manye nānucitānāṃ tvamādhīnāṃ padamuttamamāpatsu cā'prayojyaṃ te nihīnā api cādhayaḥ || 36 ||

I do not think you are the kind of person who should carry such unfitting worries. Even in real trouble, one should not give in to such anxieties, and yours, in any case, are petty ones.

मुझे नहीं लगता कि तू ऐसा इंसान है जिसे ऐसी बेजा चिंताएँ पालनी चाहिए। सच्ची मुसीबत में भी ऐसी फ़िक्रों के आगे झुकना ठीक नहीं, और तेरी फ़िक्रें तो वैसे भी छोटी-छोटी हैं।

1.11.37

यथाभिमतमाशु त्वं ब्रूहि प्राप्स्यसि चानघसर्वमेव पुनर्येन भेत्यन्ते त्वां तु नाधयः ॥ ३७ ॥

yathābhimatamāśu tvam brūhi prāpsyasi cānaghasarvameva punaryena bhetsyante tvāṃ tu nādhayaḥ || 37 ||

Speak quickly, just as you wish, you who have done no wrong, and you will get back everything, so that these anxieties will never trouble you again.

जल्दी बोल, जैसा तू चाहता है, हे निर्दोष, और तुझे सब कुछ फिर से मिल जाएगा, ताकि ये फ़िक्रें तुझे फिर कभी न सता सकें।

1.11.38

इत्युक्तमस्य सुमते रघुवंशकेतुराकर्ण्य वाक्यमुचितार्थविलासगर्भमस्त्याज खेदमभिगर्जति वारिवाहे बर्ही यथा त्वनुमिताभिमतार्थसिद्धिः ॥ ३८ ॥

ityuktamasya sumate raghuvaṃśaketurākarnya vākyamucitārthavilāsagarbhamtatyāja khedamabhigarjati vārivāhe barhī yathā tvanumitābhimatārthasiddhiḥ || 38 ||

O wise one, when Rama, the pride of the Raghu family, heard this speech spoken to him, full of fitting and pleasing meaning, he threw off his sorrow, the way a peacock throws off its gloom when a rain cloud thunders, because he could already sense that he would get what he wished for. हे समझदार, जब रघु परिवार के गौरव राम ने यह बात सुनी, जो उसी से कही गई थी और सही, सुंदर अर्थ से भरी थी, तो उसने अपना दुख उतार फेंका, जैसे बादल के गरजने पर मोर अपनी उदासी उतार फेंकता है, क्योंकि उसे पहले से ही यह एहसास हो गया था कि उसे वही मिलेगा जो वह चाहता है।

Chapter 12

1.12.1

वाल्मीकिरुवाच । इति पृष्ठो मुनीन्द्रेण समाश्वस्य च राघवः । उवाच वचनं चारु परिपूर्णार्थमन्थरम् ॥ १ ॥

vālmīkiruvāca | iti prṣṭo munīndreṇa samāśvasy ca rāghavaḥ | uvāca vacanam cāru paripūrṇārthamantharam || 1 ||

Valmiki said: When the greatest of the sages asked him this, Rama steadied himself, then spoke beautiful words, unhurried and full of meaning.

वाल्मीकि जी ने कहा, मुनियों में सबसे बड़े ऋषि के इस तरह पूछने पर राम ने पहले खुद को संभाला, फिर सुंदर शब्दों में, धीरे-धीरे और पूरी बात समझाते हुए बोले।

1.12.2

श्रीराम उवाच । भगवन्भवता पृष्ठो यथावदधुनाऽखिलम् । कथयाम्यहमज्ञोऽपि को लङ्घयति सद्वचः ॥ २ ॥

śrīrāma uvāca | bhagavanbhavatā prṣṭo yathāvadadhunā'khilam | kathayāmyahamajñō'pi ko laṅghayati sadvacaḥ || 2 ||

Shri Rama said: Lord, since you have asked me, I will now tell you everything exactly as it is. Even though I do not know much, who can refuse the words of a good and wise man?

श्रीराम ने कहा, हे भगवन, आपने पूछा है इसलिए अब मैं आपको सब कुछ ठीक-ठीक बताता हूँ। मैं कुछ खास नहीं जानता, फिर भी किसी सज्जन की अच्छी बात को कोई कैसे टाल सकता है।

1.12.3

अहं तावदयं जातो निजेऽस्मिन्पितृसद्वनि । क्रमेण वृद्धिं संप्राप्तः प्राप्तविद्यश्च संस्थितः ॥ ३ ॥

ahaṁ tāvadayam jāto nīje'sminpitṛsadvani | krameṇa vṛddhiṁ saṁprāptaḥ prāptavidyaśca saṁsthitaḥ || 3 ||

I was born here, in my own father's house. Little by little I grew up, and after finishing my studies, I settled down.

मैं यहीं, अपने पिता के घर में पैदा हुआ। धीरे-धीरे बड़ा हुआ, और पढ़ाई-लिखाई पूरी करके यहीं रहने लगा।

1.12.4

ततः सदाचारपरो भूत्वाहं मुनिनायक । विहृतस्तीर्थयात्रार्थमुर्वीमम्बुधिमेखलाम् ॥ ४ ॥

tataḥ sadācāraparo bhūtvāhaṁ munināyaka | vihṛtastīrthayātrārthamurvīmambudhimekhalām || 4 ||

Then, chief of sages, I began to live by good conduct, and to visit holy places I travelled across this whole earth, which wears the ocean like a belt around it.

फिर, हे मुनिश्रेष्ठ, मैं अच्छे आचरण से रहने लगा और तीर्थयात्रा के लिए इस पूरी पृथ्वी पर घूमा, जिसके चारों ओर समुद्र किसी करधनी की तरह बंधा है।

1.12.5

एतावताथ कालेन संसारास्थामिमां हरन् । समुद्भूतो मनसि मे विचारः सोऽयमीदृशः ॥ ५ ॥

etāvatātha kālena saṁsārāsthāmimāṁ haran | samudbhūto manasi me vicāraḥ so'yamīdṛśaḥ || 5 ||

After all this time, a thought arose in my mind, a thought that took away my trust in worldly life.

इतने समय के बाद मेरे मन में एक ऐसा विचार उठा, जिसने संसार पर मेरे भरोसे को छीन लिया।

1.12.6

विवेकेन परीतात्मा तेनाहं तदनु स्वयम् । भोगनीरसया बुद्ध्या प्रविचारितवानिदम् ॥ ६ ॥

vivekena parītātmā tenāhaṃ tadanu svayam | bhoganīrasayā buddhyā pravīcāritavānidam || 6 ||

Filled with this understanding, I myself then thought it over carefully, with a mind that had lost all taste for pleasures.

इस समझ से भरकर मैंने खुद ही, ऐसी बुद्धि से जिसमें भोग-विलास का कोई स्वाद नहीं रह गया था, इस बात पर गहराई से सोचा।

1.12.7

किंनामेदं बत सुखं येयं संसारसंततिः । जायते मृतये लोको म्रियते जननाय च ॥ ७ ॥

kiṇnāmedaṃ bata sukhaṃ yeyaṃ saṃsārasaṃtatiḥ | jāyate mṛtaye loko mriyate jananaḥ ca || 7 ||

What kind of happiness is this, this endless chain of worldly life, where people are born only to die, and die only to be born again?

यह कैसा सुख है, यह संसार की यह अंतहीन कड़ी, जिसमें लोग जन्म लेते हैं मरने के लिए, और मरते हैं फिर से जन्म लेने के लिए?

1.12.8

अस्थिराः सर्व एवेमे सचराचरचेष्टिताः । आपदां पतयः पापा भावा विभवभूमयः ॥ ८ ॥

asthirāḥ sarva eveme sacarācaraceṣṭitāḥ | āpadāṃ patayaḥ pāpā bhāvā vibhavabhūmayāḥ || 8 ||

Everything is unsteady, the doings of every creature that moves and every creature that does not move. Evil states of mind are the source of troubles, yet these same fleeting things are also called the source of prosperity.

सब कुछ अस्थिर है, चलने वाले और न चलने वाले, हर प्राणी के काम अस्थिर हैं। बुरी अवस्थाएँ मुसीबतों की जड़ हैं, और यही अस्थिर चीज़ें धन-संपत्ति की जड़ भी कहलाती हैं।

1.12.9

अयःशलाकासदृशाः परस्परमसङ्गिनः । श्लिष्यन्ते केवलं भावा मनःकल्पनया स्वया ॥ ९ ॥

ayaḥśalākāsadr̥śāḥ parasparamasaṅgināḥ | śliṣyante kevalaṃ bhāvā manaḥkalpanayā svayā || 9 ||

These things are like iron rods that do not naturally join together. They only seem joined because the mind imagines it so.

ये चीज़ें लोहे की सलाखों जैसी हैं जो अपने-आप आपस में जुड़ी नहीं होतीं। ये जुड़ी हुई सिर्फ इसलिए लगती हैं क्योंकि मन ऐसी कल्पना करता है।

1.12.10

मनःसमायत्तमिदं जगदाभोगि दृश्यते । मनश्चासदिवाभाति केन स्म परिमोहिताः ॥ १० ॥

manaḥsamāyattamidaṃ jagadābhogi dṛśyate | manaścāsadivābhāti kena sma parimohitāḥ || 10 ||

This whole world, which looks so full of pleasures, is seen to depend entirely on the mind. And the mind itself, looked at closely, seems unreal. So what is it that has fooled us so completely?

यह पूरी दुनिया, जो सुखों से भरी दिखती है, पूरी तरह मन पर निर्भर है। और मन खुद भी, गौर से देखने पर, झूठा जैसा लगता है। तो फिर हम किस चीज़ से इतने भ्रमित हो गए हैं?

1.12.11

असतैव वयं कष्टं विकृष्टा मूढबुद्धयः । मृगतृष्णाम्भसा दूरे वने मुग्धमृगा इव ॥ ११ ॥

asataiva vayaṃ kaṣṭaṃ vikṛṣṭā mūḍhabuddhayah | mṛgatr̥ṣṇāmbhasā dūre vane mugdhamṛgā iva || 11 ||

We, with our foolish minds, are painfully dragged along by something that is not even real, just like bewildered deer that are lured deep into a forest by the false water of a mirage.

हम मूर्ख लोग, बड़े कष्ट के साथ, एक ऐसी चीज़ के पीछे खिंचे चले जाते हैं जो असल में है ही नहीं, बिलकुल वैसे जैसे भोले हिरण मृगतृष्णा के झूठे पानी के पीछे जंगल में दूर तक भटक जाते हैं।

1.12.12

न केनचिच्च विक्रीता विक्रीता इव संस्थिताः । बत मूढा वयं सर्वे जानाना अपि शाम्बरम् ॥ १२ ॥

na kenacicca vikrītā vikrītā iva saṁsthitāḥ | bata mūḍhā vayaṃ sarve jānānā api śāmbaram || 12 ||

No one has actually bought us, yet we live as if we were slaves who had been sold. What fools we are, we know it is all just an illusion, a magician's trick, and still we live this way.

हमें किसी ने खरीदा नहीं, फिर भी हम ऐसे रहते हैं जैसे किसी ने हमें खरीदकर गुलाम बना लिया हो। हम कितने मूर्ख हैं, हम जानते हैं कि यह सब एक जादूगर का खेल है, फिर भी हम ऐसे ही जीते रहते हैं।

1.12.13

किमेतेषु प्रपञ्चेषु भोगा नाम सुदुर्भगाः । मुधैव हि वयं मोहात्संस्थिता बद्धभावनाः ॥ १३ ॥

kimeteṣu prapañceṣu bhogā nāma sudurbhagāḥ | mudhaiva hi vayaṃ mohātsaṁsthitā baddhabhāvanāḥ || 13 ||

In this whole show of the world, what are these things called pleasures? They are truly unlucky and wretched. Only out of confusion do we uselessly stay bound by our own beliefs.

इस सारे संसार के तमाशे में, इन्हें जो भोग-सुख कहते हैं, वे असल में बड़े ही अभाग्य हैं। हम बस मोह के कारण, बेकार ही अपने खयालों में बंधे रहते हैं।

1.12.14

आ ज्ञातं बहुकालेन व्यर्थमेव वयं वने । मोहे निपतिता मुग्धाः श्वभ्रे मुग्धा मृगा इव ॥ १४ ॥

ā jñātaṃ bahukālena vyarthameva vayaṃ vane | mohe nipatitā mugdhāḥ śvabhre mugdhā mṛgā iva || 14 ||

After all this time, I have finally understood: we have been wandering pointlessly in this forest, fallen into confusion like foolish deer that stumble blindly into a pit.

इतने लंबे समय के बाद अब समझ आया है, हम इस जंगल में बेकार ही भटकते रहे, मोह में गिरे रहे, बिलकुल वैसे जैसे भोले हिरण अनजाने में किसी गड्ढे में जा गिरते हैं।

1.12.15

किं मे राज्येन किं भोगैः कोऽहं किमिदमागतम् । यन्मिथ्यैवास्तु तन्मिथ्या कस्य नाम किमागतम् ॥ १५ ॥

kiṃ me rājyena kiṃ bhogaiḥ ko'haṃ kimidamāgatam | yanmithyai (vā)stu tanmithyā kasya nāma kimāgatam || 15 ||

What use is a kingdom to me? What use are these pleasures? Who am I? What is this that has come about? Whatever is false is simply false, so whose is it really, and what is it that has come here at all?

मुझे राज्य से क्या लेना, भोग-विलास से क्या लेना? मैं कौन हूँ? यह सब क्या आ गया है? जो झूठा है वह झूठा ही है, तो फिर यह किसका है, और क्या चीज़ यहाँ आई है?

1.12.16

एवं विमृशतो ब्रह्मन्सर्वेष्वेव ततो मम । भावेष्वरतिरायाता पथिकस्य मरुष्विव ॥ १६ ॥

evaṃ vimṛśato brahmansarveṣveva tato mama | bhāveṣvaratirāyātā pathikasya maruṣviva || 16 ||

As I thought this over, brahmin, I lost all liking for everything, the way a traveller loses his liking for the desert he must cross.

हे ब्राह्मण, ऐसा सोचते-सोचते मेरा हर चीज़ से मन उचट गया, बिल्कुल वैसे जैसे किसी यात्री का मन रेगिस्तान से उचट जाता है।

1.12.17

तदेतद्भगवन्ब्रूहि किमिदं परिणश्यति । किमिदं जायते भूयः किमिदं परिवर्धते ॥ १७ ॥

tadetadbhagavanbrūhi kimidaṃ pariṇasyati | kimidaṃ jāyate bhūyaḥ kimidaṃ parivardhate || 17 ||

So, lord, please tell me this: what is it that dies away? What is it that is born again? What is it that keeps growing?

तो हे भगवन, अब आप मुझे यह बताइए, यह क्या चीज़ है जो नष्ट हो जाती है? यह क्या है जो बार-बार जन्म लेती है? यह क्या है जो बढ़ती चली जाती है?

1.12.18

जरामरणमापच्च जननं संपदस्तथा । आविर्भावतिरोभावैर्विवर्धन्ते पुनःपुनः ॥ १८ ॥

jarāmaraṇamāpacca jananaṃ saṃpadas tathā | āvirbhāvatirobhāvairvivardhante punaḥpunaḥ || 18 ||

Old age and death, misfortune, birth, and also wealth, all of them keep multiplying, again and again, by appearing and then disappearing.

बुढ़ापा और मौत, मुसीबत, जन्म, और साथ ही धन-दौलत, ये सब बार-बार आते और मिटते रहते हैं, और इसी तरह बढ़ते चले जाते हैं।

1.12.19

भोगैस्तैरेव तुच्छैर्वयममी किल । पश्य जर्जरतां नीता वातैरिव गिरिद्रुमाः ॥ १९ ॥

bhogais taireva tucchairvayam amī kila | paśya jarjaratāṃ nītā vātairiva giridrumāḥ || 19 ||

By these very same petty pleasures, look, we have been worn down and broken, just like mountain trees battered by strong winds.

देखो, इन्हीं छोटे-मोटे भोगों से हम कैसे टूट-फूट गए हैं, बिल्कुल वैसे जैसे पहाड़ के पेड़ तेज़ हवाओं से टूट-फूट जाते हैं।

1.12.20

अचेतना इव जनाः पवनैः प्राणनामभिः । ध्वनन्तः संस्थिता व्यर्थं यथा कीचकवेणवः ॥ २० ॥

acetanā iva janāḥ pavanaiḥ prāṇanāmabhiḥ | dhvanantaḥ saṃsthitā vyartham yathā kīcakaveṇavaḥ || 20 ||

People stand there like unconscious things, making noise for nothing because of the winds we call the breath of life, just like hollow bamboo reeds that whistle uselessly in the wind.

लोग मानो निर्जीव चीज़ों की तरह खड़े हैं, प्राण नाम की हवाओं से बेकार ही आवाज़ करते रहते हैं, बिल्कुल खोखले बांस की तरह जो हवा में बेकार सांय-सांय बजते रहते हैं।

1.12.21

शाम्यतीदं कथं दुःखमिति तप्तोऽस्मि चिन्तया । जरद्गुम इवोग्रेण कोटरस्थेन वह्निना ॥ २१ ॥

śāmyatīdaṃ katham duḥkhamiti taptō'smi cintayā | jaradruma ivōgrēṇa kōṭarasthēna vahninā || 21 ||

Wondering how this suffering can ever be calmed, I burn with worry, like an old tree burning from a fierce fire hidden inside its hollow trunk.

यह दुःख कैसे शांत हो, यही सोचते-सोचते मैं चिन्ता से जलता रहता हूँ, बिल्कुल वैसे जैसे कोई बूढ़ा पेड़ अपने खोखले तने के भीतर छिपी भयंकर आग से जलता है।

1.12.22

संसारदुःखपाषाणनीरन्ध्रहृदयोऽप्यहम् । निजलोकभयादेव गलद्वाष्पं न रोदिमि ॥ २२ ॥

saṃsāraduḥkha pāṣāṇa nīrandhrāhṛdayō'pyaham | nijalōkabhayādeva galadvāṣpaṃ na rōdimi || 22 ||

My heart has become like a solid stone, without a single crack, from the sorrow of this worldly life. Even so, I do not let my tears fall, only because I fear what people around me would think.

संसार के दुःख से मेरा हृदय पत्थर जैसा हो गया है, जिसमें कोई दरार तक नहीं है। फिर भी मैं आँसू बहाकर नहीं रोता, बस इसलिए क्योंकि मुझे डर है कि लोग क्या कहेंगे।

1.12.23

शून्या मन्मुखवृत्तीस्ताः शुष्करोदननीरसाः । विवेक एव हृत्संस्थो ममैकान्तेषु पश्यति ॥ २३ ॥

śūnyā manmukhavṛttīstāḥ śuṣkarōdananīrasāḥ | viveka eva hṛtsaṃsthō mamaikāntēṣu paśyati || 23 ||

My face shows only empty expressions now, dry and joyless, like a hollow, tearless weeping. Only my own power of judgment, sitting inside my heart, watches this when I am alone.

अब मेरे चेहरे पर बस खाली भाव रह गए हैं, सूखे और बेस्वाद, मानो बिना आँसुओं का रोना हो। इसे बस मेरी विवेक-बुद्धि ही देखती है, जो मेरे हृदय में बैठी है, जब मैं अकेला होता हूँ।

1.12.24

भृशं मुह्यामि संस्मृत्य भावाभावमयीं स्थितिम् । दारिद्य्रेणेव सुभगो दूरे संसारचेष्टया ॥ २४ ॥

bhṛśaṃ muhyāmi saṃsmṛtya bhāvābhāvamayīm sthitim | dāridryeṇēva subhagō dūre saṃsāraceṣṭayā || 24 ||

When I remember how everything simply comes into being and then goes out of it, I become completely bewildered, like a once-wealthy man who has fallen into poverty and is now shut out of the everyday business of the world.

जब मुझे याद आता है कि हर चीज़ बस बनती है और फिर मिट जाती है, तो मैं पूरी तरह घबरा जाता हूँ, बिल्कुल वैसे जैसे कोई कभी का धनी आदमी गरीब हो जाने पर दुनिया के कामकाज से दूर हो जाता है।

1.12.25

मोहयन्ति मनोवृत्तिं खण्डयन्ति गुणावलिम् । दुःखजालं प्रयच्छन्ति विप्रलम्भपराः श्रियः ॥ २५ ॥

mohayanti manōvṛttiṃ khaṇḍayanti guṇāvalim | duḥkhajālaṃ prayacchanti vipralambhaparāḥ śriyaḥ || 25 ||

Riches that only deceive us confuse the mind, destroy every good quality in us, and give us nothing but a web of suffering.

जो धन-संपत्ति सिर्फ धोखा देती है, वह मन को भ्रमित करती है, हमारे सारे अच्छे गुणों को तोड़ देती है, और बदले में सिर्फ दुःख का जाल देती है।

1.12.26

चिन्तानिचयचक्राणि नानन्दाय धनानि मे । संप्रसूतकलत्राणि गृहाण्युग्रापदामिव ॥ २६ ॥

cintānicayacakrāṇi nānandāya dhanāni me | samprasūtakalatrāṇi grhāṇyugrāpadāmiva || 26 ||

My wealth is nothing but a wheel of endless worries; it brings me no joy at all. My home, with wife and children, feels like a house full of terrible troubles.

मेरा धन सिर्फ ढेर सारी चिंताओं का पहिया है, इससे मुझे कोई खुशी नहीं मिलती। मेरा घर, पत्नी और बच्चों के साथ, मानो घोर मुसीबतों का घर बन गया है।

1.12.27

विविधदोषदशापरिचिन्तनैर्विततभङ्गुरकारणकल्पितैः । मम न निर्वृतिमेति मनो मुने निगडितस्य यथा वनदन्तिनः ॥ २७ ॥

vividhadoṣadaśāparicintanairvitata bhaṅgurakāraṇakalpitaiḥ | mama na nirvṛtīmeti mano mune nigaditasya yathā vanadantīnaḥ || 27 ||

My mind can find no peace, sage, because I keep dwelling again and again on all kinds of faults and troubles, things built up from causes that spread wide yet are flimsy and fragile. It is like a wild forest elephant that has been chained down.

हे मुनि, तरह-तरह के दोषों और मुसीबतों के बारे में बार-बार सोचते रहने से, जो कारण फैले हुए भी हैं और कमज़ोर भी, मेरे मन को कहीं चैन नहीं मिलता, बिलकुल वैसे जैसे किसी जंगली हाथी को जंजीरों से बांध दिया गया हो।

1.12.28

खलाः कालेकाले निशि निशितमोहैकमिहिकागतालोके लोके विषयशतचौराः सुचतुराःप्रवृत्ताः प्रोद्युक्ता दिशिदिशि विवेकैकहरणे रणे शक्तास्तेषां क इव विदुषाःप्रोज्झ्य सुभटाः ॥ २८ ॥

khalāḥ kālekāle niśi niśitamohaikamihikāgatāloke loke viṣayaśatacaurāḥ sucaturāḥpravṛttāḥ prodyuktā diśidiśi vivekaikaharaṇe raṇe śaktāsteṣāṃ ka iva viduṣaḥprojjhya subhaṭāḥ || 28 ||

Wicked thieves come again and again, at night, in a world where a thick fog of confusion blocks out the light. These thieves are the many objects of the senses, cunning and active, striving hard in every direction, powerful in the one battle that matters, robbing us of our good judgment. Among all of us, which wise man is a strong enough warrior to throw them off?

रात के अंधेरे में, जहाँ घने मोह का कोहरा उजाले को ढक लेता है, वहाँ ये चालाक चोर बार-बार आते हैं। ये चोर और कोई नहीं, इंद्रियों के सैकड़ों विषय हैं। ये बड़े चतुर हैं, हर दिशा में सक्रिय हैं और जोर लगाते रहते हैं, और एक ही लड़ाई में माहिर हैं, हमारी विवेक-बुद्धि को चुरा लेने की लड़ाई में। इन बुद्धिमानों में से कौन इतना बड़ा योद्धा है जो इन्हें भगा सके?

Chapter 13

1.13.1

श्रीराम उवाच । इयमस्मिन्स्थितोदारा संसारे परिकल्पिता । श्रीर्मुने परिमोहाय सापि नूनं कदर्थदा ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | iyamasminsthitodārā saṁsāre parikalpitā | śrīrmune parimohāya sāpi nūnaṁ kadarthadā || 1 ||

Shri Rama said: This so-called splendor, this grand thing people imagine exists in this world - Fortune herself, sage - is truly there only to confuse us, and she gives nothing but misery.

श्रीराम ने कहा, यह तथाकथित शान-शौकत, यह बड़ी चीज़ जिसे लोग इस दुनिया में मौजूद समझ बैठे हैं - यह लक्ष्मी भी, हे मुनि, सचमुच सिर्फ हमें भरमाने के लिए है, और यह सिवाय दुख के कुछ नहीं देती।

1.13.2

उल्लासबहुलानन्तकल्लोलानलमाकुलान् । जडान्प्रवहति स्फारान्प्रावृषीव तरङ्गिणी ॥ २ ॥

ullāsabahulānantakallolānalamākulān | jaḍānpravahati sphārānpṛāvṛṣīva taraṅgiṇī || 2 ||

Like a river in the rainy season, she pours out huge, dull waves - waves full of brief excitement, endless, and utterly restless.

जैसे बरसात के मौसम में नदी बड़ी-बड़ी, सुस्त लहरें बहाती है, वैसे ही यह लक्ष्मी पल भर की खुशी से भरी, अनगिनत और बेहद बेचैन लहरें उठाती है।

1.13.3

चिन्तादुहितरो बह्वयो भूरिदुर्ललितैधिताः । चञ्चलाः प्रभवन्त्यस्यास्तरङ्गाः सरितो यथा ॥ ३ ॥

cintāduhitaro bahvayo bhūridurlalitaidhitāḥ | cañcalāḥ prabhavantyasyāstarṅgāḥ sarito yathā || 3 ||

Many daughters called Worry are born from her, daughters grown big on far too much spoiling. They are restless, springing from her just as waves spring from a river.

इससे चिन्ता नाम की बहुत सी बेटियाँ जन्म लेती हैं, जो बहुत ज़्यादा लाड़-प्यार से बिगड़कर बड़ी हुई हैं। ये बेचैन हैं, ठीक वैसे ही जैसे नदी से लहरें पैदा होती हैं।

1.13.4

एषा हि पदमेकत्र न निबध्नाति दुर्भगा । दग्धेवानियताचारमितश्चेतश्च धावति ॥ ४ ॥

eṣā hi padamekatra na nibadhnāti durbhagā | dagdhevāniyatācāramitaścetśca dhāvati || 4 ||

This unlucky one never plants her foot in one place. Like someone on fire, she runs here and there with no fixed course.

यह बदनसीब लक्ष्मी कभी एक जगह पैर नहीं टिकाती। जैसे कोई जलता हुआ इंसान बिना किसी ठिकाने के इधर-उधर भागता है, वैसे ही यह इधर से उधर दौड़ती रहती है।

1.13.5

जनयन्ती परं दाहं परामृष्टाङ्गिका सती । विनाशमेव धत्तेऽन्तर्दीपलेखेव कज्जलम् ॥ ५ ॥

janayantī paraṁ dāhaṁ parāmṛṣṭāṅgikā satī | vināśameva dhatte'ntardīpalekheva kajjalam || 5 ||

She causes intense burning, and even though she seems to hold the body close, she brings nothing but ruin - just like the flame of a lamp, which for all its light leaves behind nothing but black soot.

यह बहुत तेज़ जलन पैदा करती है, और भले ही यह शरीर को गले लगाती हुई सी लगे, यह सिवाय बर्बादी के कुछ नहीं लाती - बिल्कुल वैसे जैसे दीये की लौ रोशनी देकर भी पीछे सिर्फ काली कालिख छोड़ जाती है।

1.13.6

गुणागुणविचारेण विनैव किल पार्श्वगम् । राजप्रकृतिवन्मूढा दुरारूढाऽवलम्बते ॥ ६ ॥

guṇāguṇavicāreṇa vinaiva kila pārśvagam | rājaparakṛtivanmūḍhā durārūḍhā'valambate || 6 ||

Without ever weighing anyone's good or bad qualities, this foolish Fortune, fickle as the temper of a king, leans on whoever stands beside her - though she herself is hard to hold on to.

किसी के भी अच्छे या बुरे गुण तौले बिना, यह मूर्ख लक्ष्मी राजा के मिज़ाज जैसी चंचल है और जो भी उसके पास खड़ा हो, उसी का सहारा ले लेती है - जबकि खुद इसे संभालना बहुत मुश्किल है।

1.13.7

कर्मणा तेनतेनैषा विस्तारमनुगच्छति । दोषाशीविषवेगस्य यत्क्षीरं विस्तरायते ॥ ७ ॥

karmanā tenatenaeṣā vistāramanugacchati | doṣāśīviṣavegasya yatksīraṁ vistarāyate || 7 ||

Through one act or another she keeps on spreading, the way the poison of a deadly snake spreads through milk and taints all of it.

यह किसी न किसी काम के ज़रिए फैलती चली जाती है, ठीक वैसे ही जैसे ज़हरीले साँप का ज़हर दूध में मिलकर पूरे दूध में फैल जाता है।

1.13.8

तावच्छीतमृदुस्पर्शाः परे स्वे च जने जनाः । वात्ययेव हिमं यावच्छ्रिया न परुषीकृताः ॥ ८ ॥

tāvacchītamṛdusparśāḥ pare sve ca jane janāḥ | vātyayeva himaṁ yāvacchriyā na paruṣīkṛtāḥ || 8 ||

People, whether strangers or one's own family, stay cool and gentle to the touch only until Fortune turns them harsh - just as snow stays soft only until a storm hardens it.

लोग, चाहे पराए हों या अपने, तब तक ही ठंडे और नरम स्वभाव के रहते हैं जब तक लक्ष्मी उन्हें कठोर नहीं बना देती - बिल्कुल वैसे जैसे बर्फ तब तक नरम रहती है जब तक आँधी उसे सख्त नहीं कर देती।

1.13.9

प्राज्ञाः शूराः कृतज्ञाश्च पेशला मृदवश्च ये । पांसुमुष्ट्येव मणयः श्रिया ते मलिनीकृताः ॥ ९ ॥

prājñāḥ śūrāḥ kṛtajñāśca peśalā mṛdavaśca ye | pāṁsumuṣṭyeva maṇayaḥ śriyā te malinīkṛtāḥ || 9 ||

Wise men, brave men, men who remember a kindness done to them, men of gentle and refined nature - wealth soils every one of them, just as a fistful of dust dulls a gem.

जो लोग बुद्धिमान हैं, बहादुर हैं, एहसान मानने वाले हैं, और जिनका स्वभाव नरम और सुंदर है - धन-दौलत उन सबको मैला कर देती है, ठीक वैसे जैसे मुट्ठी भर धूल किसी रत्न को धुँधला कर देती है।

1.13.10

न श्रीः सुखाय भगवन्दुःखायैव हि वर्धते । गुप्ता विनाशनं धत्ते मृतिं विषलता यथा ॥ १० ॥

na śrīḥ sukhāya bhagavanduḥkhāyaiva hi vardhate | guptā vināśanaṁ dhatte mṛtiṁ viṣalatā yathā || 10 ||

Wealth, venerable one, does not grow to bring happiness; it grows only to bring suffering. Kept hidden away, it brings ruin and death, like a poisonous vine.

हे पूज्य, धन-दौलत सुख देने के लिए नहीं बढ़ती, यह सिर्फ दुख देने के लिए बढ़ती है। छुपाकर रखी हुई यह बर्बादी और मौत लाती है, ठीक वैसे जैसे कोई ज़हरीली बेल।

1.13.11

श्रीमानजननिन्द्यश्च शूरश्चाप्यविकत्थनः । समदृष्टिः प्रभुश्चैव दुर्लभाः पुरुषास्तयः ॥ ११ ॥

śrīmānjananindyaśca śūraścāpyavikatthanah| samadrṣṭiḥ prabhuścaiva durlabhāḥ puruṣāstrayaḥ|| 11||

Three kinds of men are hard to find: a rich man whom people do not condemn, a brave man who does not boast, and a powerful man who looks upon everyone alike.

तीन तरह के लोग मिलना मुश्किल है - एक अमीर आदमी जिसकी लोग निंदा न करें, एक बहादुर आदमी जो डींग न मारे, और एक ताकतवर आदमी जो सबको एक जैसी नज़र से देखे।

1.13.12

एषा हि विषमा दुःखभोगिनां गहना गुहा । घनमोहगजेन्द्राणां विन्ध्यशैलमहातटी ॥ १२ ॥

eṣā hi viṣamā duḥkhabhogināṃ gahanā guhā| ghanamohagajendrāṇāṃ vindhyaśailamahātātī|| 12||

This Fortune is a dangerous, dense cave for those who suffer in it. She is the great cliff-face of the Vindhya mountains, where elephants maddened by thick delusion wander.

यह लक्ष्मी दुख भोगने वालों के लिए एक खतरनाक, घनी गुफा है। यह विन्ध्य पहाड़ की उस बड़ी चट्टान जैसी है जहाँ घोर मोह में डूबे हाथी घूमते रहते हैं।

1.13.13

सत्कार्यपद्मरजनी दुःखकैरवचन्द्रिका । सुदृष्टिदीपिकावात्या कल्लोलौघतरङ्गिणी ॥ १३ ॥

satkāryapadmarajanī duḥkhakairavacandrikā| sudṛṣṭidīpikāvātyā kallolaughatarangiṇī|| 13||

She is nightfall to the lotus of good deeds, and moonlight to the night-lily of sorrow. She is a storm that blows out the lamp of clear sight, and a river swollen with a flood of huge waves.

यह अच्छे कामों के कमल के लिए रात है, और दुख के रात-कुमुद के लिए चाँदनी है। यह साफ समझ के दीये को बुझा देने वाला तूफ़ान है, और बड़ी-बड़ी लहरों की बाढ़ से भरी नदी है।

1.13.14

संभ्रमाभ्रादिपदवी विषादविषवर्धिनी । केदारिका विकल्पानां खेदायभयभोगिनी ॥ १४ ॥

saṃbhramābhrādipadavī viṣādaviṣavardhinī| kedārikā vikalpānāṃ khedāyabhayabhoginī|| 14||

She is the road along which confusion gathers like clouds. She feeds and swells the poison of despair. She is the small field where doubts are grown like a crop. She feeds on fear and leaves behind only grief.

यह वह रास्ता है जिस पर बादलों की तरह उलझन इकट्ठी होती है। यह निराशा के ज़हर को खिलाकर बढ़ाती है। यह वह छोटा खेत है जिसमें शक और दुविधा फ़सल की तरह उगाई जाती है। यह डर को खाकर पीछे सिर्फ़ ग़म छोड़ जाती है।

1.13.15

हिमं वैराग्यवल्लीनां विकारोलूकयामिनी । राहुदंष्ट्रा विवेकेन्दोः सौजन्याम्भोजचन्द्रिका ॥ १५ ॥

himaṃ vairāgyavallīnāṃ vikārolūkayāminī| rāhudaṃṣṭrā vivekendōḥ saujanāmbhōjacandrikā|| 15||

She is frost to the vine of dispassion, killing it. She is the night that lets the owl of corruption fly. She is the fang of Rahu biting the moon of good judgment. She is the moonlight that closes the lotus of a kind heart.

यह वैराग्य की बेल के लिए पाला है, जो उसे मार देता है। यह वह रात है जिसमें भ्रष्टाचार का उल्लू उड़ान भरता है। यह विवेक के चाँद को डसने वाला राहु का दाँत है। यह वह चाँदनी है जो अच्छे दिल के कमल को बंद कर देती है।

1.13.16

इन्द्रायुधवदालोलनानारागमनोहरा । लोला तडिदिवोत्पन्नध्वंसिनी च जडाश्रया ॥ १६ ॥

indrāyudhavadālolanānārāgamanoharā | lolā taḍidivotpannadhvamsinī ca jaḍāśrayā || 16 ||

She charms with restless, shifting colors, like a rainbow. She is fickle like lightning, appearing only to vanish in an instant. And she takes shelter in dull minds.

यह इंद्रधनुष की तरह बेचैन, बदलते रंगों से मन को लुभाती है। यह बिजली की तरह चंचल है, बस एक पल में दिखकर गायब हो जाती है। और यह सुस्त दिमागों में ही टिकती है।

1.13.17

चापलावजितारण्य नकुली नकुलीनजा । विप्रलम्भनतात्पर्यजितोग्रमृगतृष्णिका ॥ १७ ॥

cāpalāvajitāraṇya nakulī nakulīnajā | viprāmbhanatātparyajitogramṛgatṛṣṇikā || 17 ||

In restlessness she outdoes the wild mongoose, and like the mongoose she is not of noble birth. Deceiving people is her real purpose - in that, she surpasses even the fierce mirage.

बेचैनी में यह जंगली नेवले को भी पीछे छोड़ देती है, और नेवले की तरह ही यह किसी अच्छे कुल की नहीं है। लोगों को धोखा देना ही इसका असली मकसद है - इसमें यह भयानक मृगतृष्णा को भी मात दे देती है।

1.13.18

लहरीवैकरूपेण पदं क्षणमकुर्वती । चला दीपशिखेवातिदुर्ज्ञेयगतिगोचरा ॥ १८ ॥

laharīvaikarūpeṇa padam kṣaṇamakurvati | calā dīpaśikhevātīdurjñeyagatigocarā || 18 ||

She never keeps her footing, not even for a moment, changing her shape again and again like a wave. She is restless like the flame of a lamp, and her movements are almost impossible to foresee.

यह एक पल के लिए भी पैर नहीं टिकाती, लहर की तरह बार-बार रूप बदलती रहती है। यह दीये की लौ की तरह बेचैन है, और इसकी चाल का अंदाज़ा लगाना लगभग नामुमकिन है।

1.13.19

सिंहिव विग्रहव्यग्रकरीन्द्रकुलपोथिनी । खड्गधारेव शिशिरा तीक्ष्णतीक्ष्णाशयाश्रया ॥ १९ ॥

siṃhīva vighrahavyagrakarīndrakulapothinī | khaḍgadhāreva śīśirā tīkṣṇatīkṣṇāśayāśrayā || 19 ||

She is like a lioness crushing whole herds of elephants that are busy fighting each other. She is like the edge of a sword - cool to the touch, yet trusted only by the sharpest, most ruthless minds.

यह उस शेरनी की तरह है जो आपस में लड़ते हुए हाथियों के पूरे झुंड को कुचल डालती है। यह तलवार की धार की तरह है - छूने में ठंडी, मगर इस पर भरोसा सिर्फ सबसे तेज़ और सबसे बेरहम दिमाग वाले ही करते हैं।

1.13.20

नानयापहृतार्थिन्या दुराधिपरिलीनया । पश्याम्यभव्यया लक्ष्म्या किंचिद्दुःखादृते सुखम् ॥ २० ॥

nānayāpahṛtārthinyā durādhiparilīnayā | paśyāmyabhavyayā lakṣmyā kiṃcidduḥkhādṛte sukham || 20 ||

This Lakshmi snatches away the very thing a seeker is after, and she herself is sunk in wicked, anxious thoughts; there is nothing good in her. Looking at her, I see no happiness anywhere, nothing but suffering.

यह लक्ष्मी चाहने वाले से वही छीन लेती है जो वह चाहता है, और खुद बुरे, बेचैन विचारों में डूबी रहती है - इसमें कुछ भी अच्छा नहीं है। इसे देखकर मुझे कहीं भी ज़रा सी भी खुशी नज़र नहीं आती, सिर्फ दुख नज़र आता है।

1.13.21

दूरेणोत्सारिताऽलक्ष्म्या पुनरेव समादरात् अहो बताश्लिष्यतीव निर्लज्जा दुर्जना सदा ॥ २१ ॥

dūreṇotsāritā'lakṣmyā punareva samādarāt aho batāśliṣyatīva nirlajjā durjanā sadā || 21 ||

Ah, even after driving misfortune far away, she turns right back and seems to embrace it again with great regard. She is always like this - shameless and wicked.

अफ़सोस, बदकिस्मती को दूर भगाने के बाद भी, यह फिर पलटकर उसे बड़े आदर से गले लगा लेती-सी लगती है। यह हमेशा से ऐसी ही है - बेशर्म और दुष्ट।

1.13.22

मनोरमा कर्षति चित्तवृत्तिं कदर्थसाध्या क्षणभङ्गुरा च व्यालावलीगात्रविवृत्तदेहा श्वभ्रोत्थिता पुष्पलतेव लक्ष्मीः ॥ २२ ॥

manoramā karṣati cittavṛttiṃ kadarthasādhyā kṣaṇabhaṅgurā ca vyālāvalīgātravivṛttadehā śvabhrotthitā puṣpalateva lakṣmīḥ || 22 ||

Lakshmi is lovely to the mind and draws the mind toward her, but she is won only through misery. She is fragile, breaking apart in an instant. Her body is wound about with coils of snakes, for she has risen up out of a snake pit - like a flowering vine grown up out of a pit of serpents.

लक्ष्मी मन को भाती है और मन को अपनी ओर खींचती है, मगर यह सिर्फ़ दुख उठाकर ही पाई जाती है। यह बहुत नाज़ुक है और पल भर में टूट जाती है। इसका शरीर साँपों के फंदों में लिपटा हुआ है, क्योंकि यह साँपों के एक बिल से निकली है - बिल्कुल वैसे जैसे कोई फूलों की बेल साँपों के गढ़े से उग आई हो।

Chapter 14

1.14.1

श्रीराम उवाच । आयुः पल्लवकोणाग्रलम्बाम्बुकणभङ्गुरम् । उन्मत्तमिव संत्यज्य यात्यकाण्डे शरीरकम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | āyuhḥ pallavakoṇāgralambāmbukaṇabhāṅguram | unmattamiva saṁtyajya yātyakāṇḍe śarīrakam || 1 ||

Sri Rama said: Life is as fragile as a drop of water trembling at the tip of a leaf's edge. Leaving the body suddenly, with no warning, it goes away like a madman running off.

श्रीराम ने कहा: जीवन उतना ही कमज़ोर है जितनी पत्ते की नोक पर काँपती हुई पानी की एक बूँद। यह शरीर को अचानक, बिना किसी चेतावनी के, ऐसे छोड़ जाता है जैसे कोई पागल भाग जाता है।

1.14.2

विषयाशीविषासङ्गपरिजर्जरचेतसाम् । अप्रौढात्मविवेकानामायुरायासकारणम् ॥ २ ॥

viṣayāśīviṣaṅgaparijarjaracetasām | aprauḍhātmaivivekānāmāyurāyāsakāraṇam || 2 ||

For those whose minds are worn ragged by clinging to sense pleasures — poisonous snakes in disguise — and whose understanding of the self is still weak, life itself becomes a cause of trouble. जिनका मन विषय-भोगों से चिपके रहने के कारण थक-चूर हो चुका है — ऐसे विषय जो असल में ज़हरीले साँप हैं — और जिनकी आत्मा को समझने की शक्ति अभी कच्ची है, उनके लिए जीवन खुद ही दुख और थकान का कारण बन जाता है।

1.14.3

ये तु विज्ञातविज्ञेया विश्रान्ता वितते पदे । भावाभावसमाश्वासमायुस्तेषां सुखायते ॥ ३ ॥

ye tu vijñātavijñeyā viśrāntā vitate pade | bhāvābhāvasamāśvāsamāyusteṣāṃ sukhāyate || 3 ||

But those who have known all that needs to be known, and who rest in that vast, all-pervading state, feel steady whether things come or go, whether they exist or not — for them life becomes pleasant.

लेकिन जिन्होंने वह सब जान लिया है जो जानने योग्य है, और जो उस विशाल, सब जगह फैली हुई अवस्था में टिके हुए हैं, वे स्थिर रहते हैं चाहे चीज़ें आएँ या जाएँ, रहें या न रहें — उनके लिए जीवन सुखद बन जाता है।

1.14.4

वयं परिमिताकारपरिनिष्ठितनिश्चयाः । संसाराभ्रतडित्पुञ्जे मुने नायुषि निर्वृताः ॥ ४ ॥

vayaṁ parimitākārapariniṣṭhitaniścayāḥ | saṁsārābhraṭaḍitpuñje mune nāyusi nirvṛtāḥ || 4 ||

As for us, sage, whose certainty is fixed only on this limited body — we find no peace in a life that is nothing but a flash of lightning in the clouds of this world.

लेकिन हम, हे मुनि, जिनका विश्वास बस इस सीमित शरीर पर टिका है — हमें ऐसे जीवन में कोई शांति नहीं मिलती जो संसार के बादलों में बिजली की एक चमक भर है।

1.14.5

युज्यते वेष्टनं वायोराकाशस्य च खण्डनम् । ग्रथनं च तरङ्गाणामास्था नायुषि युज्यते ॥ ५ ॥

yujyate veṣṭanam vāyorākāśasya ca khaṇḍanam | grathanam ca taraṅgāṇāmāsthā nāyuṣi yujyate || 5 ||

One could sooner wrap up the wind, cut the sky into pieces, or string the waves together like beads — but one cannot place trust in life.

हवा को लपेट लेना, आकाश के टुकड़े कर देना, या लहरों को मोतियों की तरह पिरो देना — यह सब हो सकता है, पर जीवन पर भरोसा करना नहीं हो सकता।

1.14.6

पेलवं शरदीवाभ्रमस्नेह इव दीपकः । तरङ्गक इवालोलं गतमेवोपलक्ष्यते ॥ ६ ॥

pelavam śaradīvābhra masneha iva dipakaḥ | taraṅga iva lolaṁ gatamevopalakṣyate || 6 ||

Delicate as an autumn cloud, like a lamp that has run out of oil, trembling like a little wave — life is noticed only after it has already slipped away.

जीवन शरद ऋतु के बादल जितना नाजुक है, तेल खत्म हो चुके दीये जैसा है, एक छोटी लहर जैसा काँपता रहता है — और इसका पता तभी चलता है जब यह पहले ही निकल चुका होता है।

1.14.7

तरङ्गं प्रतिबिम्बेन्दुं तडित्पुञ्जं नभोम्बुजम् । ग्रहीतुमास्थां बध्नामि न त्वायुषि हतस्थितौ ॥ ७ ॥

taraṅgam pratibimbenduṁ taḍitpuñjam nabhombum | grahitumāsthāṁ badhnāmi na tvāyuṣi hatasthitau || 7 ||

I would sooner set my heart on catching a wave, or the moon's reflection, or a mass of lightning, or a lotus growing in the sky — but not on this life, whose end is already fixed.

मैं लहर को, चाँद के प्रतिबिम्ब को, बिजली की चमक को, या आकाश में उगे कमल को पकड़ने में अपना मन लगा सकता हूँ — पर इस जीवन में नहीं, जिसका अंत पहले से तय है।

1.14.8

अविश्रान्तमनाः शून्यमायुराततमीहते । दुःखायैव विमूढोऽन्तर्गर्भमश्वतरी यथा ॥ ८ ॥

aviśrāntamanāḥ śūnyamāyurātataamīhate | duḥkhāyaiva vimūḍho'ntargarbhamśvatarī yathā || 8 ||

A restless mind chases after this hollow, drawn-out life, but being deluded, all it gets is suffering — like a female mule carrying a foal in her womb, a burden that will destroy her.

बेचैन मन इस खोखले, लंबे खिंचे जीवन के पीछे भागता है, पर मूर्खतावश उसे मिलता सिर्फ दुख है — जैसे एक खच्चरी अपने पेट में बच्चा लिए हो, जो बोझ उसे ही नष्ट कर देगा।

1.14.9

संसारसंसृतावस्यां फेनोऽस्मिन्सर्गसागरे । कायवल्लयाम्भसो ब्रह्मञ्जीवितं मे न रोचते ॥ ९ ॥

saṁsārasaṁsṛtāvasyāṁ pheno'smin sargaśāgare | kāyavallayāmbhaso brahmañjīvitam me na rocate || 9 ||

In this flow of worldly existence, in this ocean of creation, my body is a fragile creeper and my life is just foam on its water. Brahmin, I take no delight in such a life.

संसार के इस बहाव में, सृष्टि के इस समुद्र में, मेरा शरीर एक कमजोर बेल है और मेरा जीवन उसके पानी पर बना झाग भर है। हे ब्राह्मण, मुझे ऐसे जीवन में कोई खुशी नहीं मिलती।

1.14.10

प्राप्यं संप्राप्यते येन भूयो येन न शोच्यते । पराया निर्वृतेः स्थानं यत्तज्जीवितमुच्यते ॥ १० ॥

prāpyaṃ samprāpyate yena bhūyo yena na śocyate | parāyā nirvṛteḥ sthānaṃ yattajjīvitamucyate || 10 ||

Only that is truly called life which lets a person reach the highest goal, which ends all future sorrow, and which becomes a home of supreme peace.

जीवन सच में उसी को कहा जाता है जिससे इंसान अपने सबसे बड़े लक्ष्य को पा ले, जिससे आगे कभी दुख न हो, और जो सबसे बड़ी शांति का घर बन जाए।

1.14.11

तरवोऽपि हि जीवन्ति जीवन्ति मृगपक्षिणः । स जीवति मनो यस्य मननेन न जीवति ॥ ११ ॥

taravo'pi hi jīvanti jīvanti mṛgapakṣiṇaḥ | sa jīvati mano yasya mananena na jīvati || 11 ||

Even trees live, and animals and birds live too. But the one who really lives is the one whose mind does not live by constant thinking.

पेड़ भी जीते हैं, पशु-पक्षी भी जीते हैं। पर सच में वही जीता है जिसका मन लगातार सोचते रहने से नहीं जीता।

1.14.12

जातास्त एव जगति जन्तवः साधुजीविताः । ये पुनर्नेह जायन्ते शेषा जरठगर्दभाः ॥ १२ ॥

jātāsta eva jagati jantavaḥ sādhujīvitāḥ | ye punarneha jāyante śeṣa jarṭhagardabhāḥ || 12 ||

Only those beings in this world have truly lived well who are never born here again. All the rest are like worn-out old donkeys.

इस दुनिया में सच में अच्छा जीवन उन्हीं प्राणियों ने जिया है जो यहाँ फिर कभी जन्म नहीं लेते। बाकी सब बूढ़े, थके हुए गधों जैसे हैं।

1.14.13

भारोऽविवेकिनः शास्त्रं भारो ज्ञानं च रागिणः । अशान्तस्य मनो भारो भारोऽनात्मविदो वपुः ॥ १३ ॥

bhāro'vivekinḥ śāstraṃ bhāro jñānaṃ ca rāgiṇaḥ | aśāntasya mano bhāro bhāro'nātmavidō vapuḥ || 13 ||

Scripture is a burden to a person with no discernment. Knowledge is a burden to a person full of craving. The mind is a burden to a person who has no peace. And the body is a burden to a person who does not know the true self.

जिसमें सही-गलत परखने की समझ नहीं, उसके लिए शास्त्र भी बोझ है। जो लालच से भरा है, उसके लिए ज्ञान भी बोझ है। जिसे शांति नहीं मिली, उसके लिए मन बोझ है। और जो अपने असली स्वरूप को नहीं जानता, उसके लिए शरीर भी बोझ है।

1.14.14

रूपमायुर्मनो बुद्धिरहंकारस्तथेहितम् । भारो भारधरस्येव सर्वं दुःखाय दुर्धियः ॥ १४ ॥

rūpamāyurbudhirmano buddhiraḥamkārastathehitam | bhāro bhāradharasyeva sarvaṃ duḥkhāya durdhiyaḥ || 14 ||

For a person of poor understanding, the body, the lifespan, the mind, the intellect, the sense of "I," and every effort — all of it only adds suffering, like fresh loads piled onto someone who is already carrying a heavy burden.

जिसकी समझ कमज़ोर है, उसके लिए शरीर, उम्र, मन, बुद्धि, "मैं" का भाव, और हर कोशिश — यह सब सिर्फ दुख बढ़ाते हैं, जैसे पहले से बोझ उठाए किसी इंसान पर और बोझ लाद दिया जाए।

1.14.15

अविश्रान्तमनापूर्णमापदां परमास्पदम् । नीडं रोगविहङ्गानामायुरायासनं दृढम् ॥ १५ ॥

aviśrāntamanāpūrṇamāpadāṃ paramāspadam | nīḍaṃ rogavihāṅgānāmāyurāyāsanam dṛḍham || 15 ||

Life is full of restlessness. It is the greatest home of misfortunes, a nest for the birds of disease, a solid, lasting source of trouble.

जीवन बेचैनी से भरा है। यह मुसीबतों का सबसे बड़ा घर है, बीमारियों रूपी पक्षियों का घोंसला है, और तकलीफ़ का एक पक्का, टिका हुआ ठिकाना है।

1.14.16

प्रत्यहं खेदमुत्सृज्य शनैरलमनारतम् । आखुनेव जरच्छुभ्रं कालेन विनिहन्यते ॥ १६ ॥

pratyahaṃ khedamutsṛjya śanairalamanāratam | ākhuneva jaracchubhraṃ kālena vinihanyate || 16 ||

Every day, quietly, little by little, without pause, life is worn down and destroyed by time — just as a rat gnaws away at an old white cloth.

हर दिन, चुपचाप, थोड़ा-थोड़ा करके, बिना रुके, समय जीवन को घिसकर खत्म कर देता है — बिल्कुल वैसे ही जैसे एक चूहा किसी पुराने सफ़ेद कपड़े को कुतर-कुतर कर खा जाता है।

1.14.17

शरीरबिलविश्रान्तैर्विषदाहप्रदायिभिः । रोगैरापीयते रौद्रैर्व्यालैरिव वनानिलः ॥ १७ ॥

śarīrabilaviśrāntairviṣadāhapradāyibhiḥ | rogairāpīyate raudrairvyālairiva vanānilaḥ || 17 ||

Life is drunk away by fierce diseases that live in the hollows of the body and bring burning poison — the way fierce serpents in a forest swallow up the very air.

जीवन को वे भयानक बीमारियाँ पी जाती हैं जो शरीर के छेदों-गड्ढों में बसी रहती हैं और जलता हुआ ज़हर देती हैं — बिल्कुल वैसे ही जैसे जंगल में खूँखार साँप हवा तक को निगल जाते हैं।

1.14.18

प्रसुवानैरविच्छेदं तुच्छैरन्तरवासिभिः । दुःखैरावृश्च्यते क्रूरैर्घुणैरिव जरद्भुमः ॥ १८ ॥

prasuvānairavicchedaṃ tucchairantaravāsibhiḥ | duḥkhairāvṛścyate krūrairghuṇairiva jaradṛbhuṃ || 18 ||

Life is gnawed through without a break by cruel sufferings — small yet constant, living inside, always oozing pain — the way an old tree is eaten through by wood-boring worms.

जीवन को वे क्रूर दुख बिना रुके कुतरते रहते हैं — जो छोटे मगर लगातार हैं, अंदर ही बसे रहते हैं, और हमेशा पीड़ा रिसाते रहते हैं — बिल्कुल वैसे ही जैसे किसी पुराने पेड़ को घुन अंदर से खा जाते हैं।

1.14.19

नूनं निगरणायाशु घनगर्धमनारतम् । आखुर्माज्जरकेणेव मरणेनावलोक्यते ॥ १९ ॥

nūnaṃ nigaraṇāyāśu ghanagardhamanāratam | ākhurmārjārakeṇeva maraṇenāvalokyate || 19 ||

Death watches life closely and constantly, greedy to swallow it up quickly — the way a cat watches a mouse.

मौत जीवन को लगातार, बड़ी बारीकी से देखती रहती है, उसे जल्दी से निगल जाने की लालच में — बिल्कुल वैसे ही जैसे बिल्ली चूहे को घूरती रहती है।

1.14.20

गन्धादिगुणगर्भिण्या शून्ययाऽशक्तिवेश्यया । अन्नं महाशनेनेव जरया परिजीर्यते ॥ २० ॥

gandhādiguṇagarbhīṇyā śūṇyayā'saktiveśyayā | annaṃ mahāśaneneva jarayā parijīryate || 20 ||

Old age wastes the body away completely, the way a huge eater finishes off a meal — old age that seems full of the charms of the senses, like smell, but is really just an empty, powerless prostitute. बुढ़ापा शरीर को पूरी तरह चट कर जाता है, जैसे कोई बड़ा खाने वाला पूरा खाना खत्म कर देता है — ऐसा बुढ़ापा जो देखने में गंध जैसे इंद्रिय-सुखों से भरा लगता है, पर असल में एक खाली, ताकत-विहीन वेश्या जैसा है।

1.14.21

दिनैः कतिपयैरेव परिज्ञाय गतादरम् । दुर्जनः सुजनेनेव यौवनेनावमुच्यते ॥ २१ ॥

dinaiḥ katipayaireva parijñāya gatādarām | durjanaḥ sujaneneva yauvanenāvamucyate || 21 ||

After only a few days, youth realizes it is no longer valued and leaves — the way a good person walks away from a bad one.

बस कुछ ही दिनों में जवानी को यह समझ आ जाता है कि अब उसे कोई आदर नहीं मिल रहा, और वह चली जाती है — बिल्कुल वैसे ही जैसे एक भला इंसान किसी बुरे इंसान का साथ छोड़ देता है।

1.14.22

विनाशसुहृदा नित्यं जरामरणबन्धुना । रूपं खिङ्गवरेणेव कृतान्तेनाभिलष्यते ॥ २२ ॥

vināśasuhṛdā nityaṃ jarāmaraṇabandhunā | rūpaṃ khiṅgavareṇeva kṛtāntenābhilaṣyate || 22 ||

Beauty is desired by Death — Death, who is always a friend to destruction, forever bound to old age and dying — the way a skilled hunter desires his prey.

सुंदरता को मौत चाहती है — वह मौत जो हमेशा विनाश की दोस्त है, जो बुढ़ापे और मरने से हमेशा जुड़ी रहती है — बिल्कुल वैसे ही जैसे एक माहिर शिकारी अपने शिकार को चाहता है।

1.14.23

स्थिरतया सुखभासितया तया सततमुज्जितमुत्तमफल्गु च । जगति नास्ति तथा गुणवर्जितं मरणभाजनमायुरिदं यथा ॥ २३ ॥

sthīratayā sukhabhāsitayā tayā satatamujjītamuttamaphalgu ca | jagati nāsti tathā guṇavarjitam maraṇabhājanamāyuridaṃ yathā || 23 ||

In this world, nothing is as empty of any real worth as this life, this vessel that carries us straight to death. It looks steady, it looks full of pleasure, yet it keeps being thrown away — it seems like the finest thing, but it is really worthless.

इस दुनिया में इस जीवन जैसी बेकार कोई चीज़ नहीं है, जो हमें सीधे मौत तक ले जाने वाला एक बर्तन भर है। यह देखने में स्थिर लगता है, सुख से भरा लगता है, फिर भी यह हर बार फेंक दिया जाता है — यह सबसे बढ़िया चीज़ लगता है, पर असल में बिल्कुल बेकार है।

Chapter 15

1.15.1

श्रीराम उवाच । मुधैवाभ्युत्थितो मोहान्मुधैव परिवर्धते । मिथ्यामयेन भीतोऽस्मि दुरहंकारशत्रुणा ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | mudhaivābhyutthito mohānmudhaiva parivardhate | mithyāmayena bhīto'smi durahaṁkāraśatruṇā || 1 ||

Sri Rama said: This ego rises out of delusion for no real reason, and for no real reason it keeps growing. I am afraid of this enemy made of pure falsehood — this troublesome sense of "I."

श्रीराम ने कहा: यह अहंकार बिना किसी वजह के मोह से उठ खड़ा होता है, और बिना किसी वजह के बढ़ता ही रहता है। मुझे इस दुश्मन से डर लगता है जो पूरी तरह झूठ से बना है — यह परेशान करने वाला "मैं" का भाव।

1.15.2

अहंकारवशादेव दोषकोशकदर्थताम् । ददाति दीनदीनानां संसारो विविधाकृतिः ॥ २ ॥

ahaṁkāravāśādeva doṣakośakadarthatām | dadāti dīnadīnānāṁ saṁsāro vividhākṛtiḥ || 2 ||

It is only because of the ego that this world, which takes so many different shapes, torments the most wretched people with a whole storehouse of troubles.

सिर्फ अहंकार की वजह से ही यह संसार, जो इतने अलग-अलग रूप लेता है, सबसे दुखी लोगों को तरह-तरह की मुसीबतों के पूरे ढेर से सताता है।

1.15.3

अहंकारवशादापदहंकाराहुराधयः । अहंकारवशादीहा त्वहंकारो ममामयः ॥ ३ ॥

ahaṁkāravāśādāpadaahaṁkārahurādhaḥ | ahaṁkāravāśādīhā tvahaṁkāro mamāmayah || 3 ||

Calamity comes from the power of the ego. They say mental anguish also comes from the ego.

Craving comes from the power of the ego. Truly, the ego is my disease.

मुसीबत अहंकार की ताकत से आती है। कहते हैं मन की पीड़ा भी अहंकार से ही आती है। लालच भी अहंकार की ताकत से आता है। सच तो यह है कि अहंकार ही मेरी बीमारी है।

1.15.4

तमहंकारमाश्रित्य परमं चिरवैरिणम् । न भुजे न पिबाम्यम्भः किमु भोगान्भुजे मुने ॥ ४ ॥

tamaṁkāramāśritya paramaṁ ciravairiṇam | na bhuje na pibāmyambhaḥ kimu bhogānbhuje mune || 4 ||

Because of this ego — my greatest, oldest enemy — I cannot eat, I cannot even drink water. How then could I enjoy any pleasures at all, sage?

इस अहंकार की वजह से — जो मेरा सबसे बड़ा, सबसे पुराना दुश्मन है — मैं न तो खा पाता हूँ, न पानी तक पी पाता हूँ। फिर हे मुनि, मैं भोग-विलास का सुख कैसे उठा सकता हूँ?

1.15.5

संसाररजनी दीर्घा माया मनसि मोहिनी । ततोऽहंकारदोषेण किरातेनेव वागुरा ॥ ५ ॥

saṁsārarajanī dīrghā māyā manasi mohinī | tato'haṁkāradoṣeṇa kirāteneva vāgurā || 5 ||

The night of this world is long, and illusion keeps clouding the mind. Then, because of the fault of the ego, it becomes like a net a hunter sets to trap his prey.

इस संसार की रात बहुत लंबी है, और माया मन को लगातार भरमाती रहती है। फिर, अहंकार के दोष के कारण, यह वैसे ही बन जाता है जैसे कोई शिकारी अपने शिकार को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

1.15.6

यानि दुःखानि दीर्घाणि विषमाणि महान्ति च । अहंकारात्प्रसूतानि तान्यगात्खदिरा इव ॥ ६ ॥

yāni duḥkhāni dīrghāṇi viṣamāṇi mahānti ca | ahaṁkāratprasūtāni tānyagātkhadirā iva || 6 ||

All those sorrows that are long-lasting, harsh, and great are born from the ego — they spring up like thorny khadira trees growing from the ground.

वे सारे दुःख जो लंबे, कठोर और बड़े होते हैं, अहंकार से ही पैदा होते हैं — वे ज़मीन से उगते काँटेदार खदिर के पेड़ों की तरह फूट पड़ते हैं।

1.15.7

शमेन्दुसैहिकेयास्यं गुणपद्महिमाशनिम् । साम्यमेघशरत्कालमहंकारं त्यजाम्यहम् ॥ ७ ॥

śamendusaiṁhikeyāsyam guṇapadmahimāśanim | sām्यameghaśaratkālamahaṁkāraṁ tyajāmyaham || 7 ||

I give up this ego. It swallows the moon of my inner calm, the way the demon Rahu swallows the moon during an eclipse. It destroys the lotus of my good qualities, the way frost and hail destroy a lotus. And it scatters the clouds of my inner balance, the way autumn scatters the rain clouds from the sky.

मैं इस अहंकार को छोड़ देता हूँ। यह मेरी शांति रूपी चाँद को उसी तरह निगल जाता है जैसे ग्रहण में राहु नाम का राक्षस चाँद को निगल जाता है। यह मेरे गुणों रूपी कमल को उसी तरह बर्बाद कर देता है जैसे पाला और ओले किसी कमल को बर्बाद कर देते हैं। और यह मेरी समता रूपी बादलों को उसी तरह तितर-बितर कर देता है जैसे शरद ऋतु आकाश से बारिश के बादलों को हटा देती है।

1.15.8

नाहं रामो न मे वाञ्छा भावेषु न च मे मनः । शान्त आसितुमिच्छामि स्वात्मनीव जिनो यथा ॥ ८ ॥

nāhaṁ rāmo na me vāñchā bhāveṣu na ca me manaḥ | śānta āsitumicchāmi svātmanīva jino yathā || 8 ||

I am not this "Rama"; I have no craving for things, and my mind does not run after them. I want to stay peaceful, resting in my own true self, like a victor who has conquered himself.

मैं यह "राम" नहीं हूँ; मुझे किसी चीज़ की लालसा नहीं है, और मेरा मन उनके पीछे नहीं भागता। मैं शांत रहना चाहता हूँ, अपने असली स्वरूप में टिककर, बिल्कुल वैसे ही जैसे कोई विजेता जिसने खुद पर जीत हासिल कर ली हो।

1.15.9

अहंकारवशाद्यद्यन्मया भुक्तं हुतं कृतम् । सर्वं तत्तदवस्त्वेव वस्त्वहंकाररिक्तता ॥ ९ ॥

ahaṁkāravashādyadyanmayā bhuktaṁ hutaṁ kṛtam | sarvaṁ tattadavastveva vastvahaṁkārariktatā || 9 ||

Whatever I have enjoyed, offered in sacrifice, or done under the power of the ego — all of it is really nothing at all. The only real thing is being empty of this ego.

मैंने अहंकार के वश में जो कुछ भी भोगा है, हवन में चढ़ाया है, या किया है — वह सब सच में कुछ भी नहीं है। सच्ची चीज़ बस एक ही है — इस अहंकार से खाली हो जाना।

1.15.10

अहमित्यस्ति चेद्ब्रह्मन्नहमापदि दुःखितः । नास्ति चेत्सुखितस्तस्मादनहंकारिता वरम् ॥ १० ॥

ahamityasti cedbrahmannahamāpadi duḥkhitaḥ | nāsti cetsukhitastasmādanahaṁkāritā varam || 10 ||

Brahmin, if this sense of "I" exists, then when trouble comes, "I" suffer. If it does not exist, one stays happy even then. So it is better to have no ego at all.

हे ब्राह्मण, अगर यह "मैं" का भाव है, तो मुसीबत आने पर "मैं" ही दुखी होता हूँ। अगर यह न हो, तो उसी मुसीबत में भी इंसान सुखी रहता है। इसलिए अहंकार का बिल्कुल न होना ही बेहतर है।

1.15.11

अहंकारं परित्यज्य मुने शान्तमनस्तया । अवतिष्ठे गतोद्वेगो भोगौघो भङ्गुरास्पदः ॥ ११ ॥

ahaṁkāraṁ parityajya mune śāntamanastayā | avatiṣṭhe gatodvego bhogaugho bhaṅgurāspadaḥ || 11 ||

Sage, having given up the ego, I remain calm and free of anxiety, with a peaceful mind — since this whole flood of worldly pleasures is only a fragile, crumbling resting place anyway.

हे मुनि, अहंकार को छोड़कर, मैं शांत मन से, बिना किसी घबराहट के टिका रहता हूँ — क्योंकि सुख-भोगों का यह पूरा सैलाब है ही एक कमज़ोर, टूट जाने वाला ठिकाना।

1.15.12

ब्रह्मन्यावदहंकारवारिदः परिजृम्भते । तावद्विकासमायाति तृष्णाकुटजमञ्जरी ॥ १२ ॥

brahmaṇyāvadahaṁkāravāridaḥ parijṛmbhate | tāvadvikāsamāyāti tṛṣṇākuṭajamañjarī || 12 ||

Brahmin, as long as the cloud of ego keeps spreading, the flower clusters of craving — like kutaja blossoms in the rains — keep on blooming.

हे ब्राह्मण, जब तक अहंकार का बादल फैलता रहता है, तब तक लालच के फूलों के गुच्छे — बरसात में खिलने वाले कुटज के फूलों की तरह — खिलते ही रहते हैं।

1.15.13

अहंकारघने शान्ते तृष्णा नवतडिल्लता । शान्तदीपशिखावृत्त्या क्वापि यात्यतिसत्त्वरम् ॥ १३ ॥

ahaṁkāraghane śānte tṛṣṇā navataḍillatā | śāntadīpaśikhāvṛtṭyā kvāpi yātyatisatṭvaram || 13 ||

When the cloud of ego is stilled, craving — a streak of fresh lightning — vanishes somewhere very quickly, just like the flame of a lamp that has been put out.

जब अहंकार का बादल थम जाता है, तो लालच — जो ताज़ी बिजली की एक लकीर जैसी है — बहुत तेज़ी से कहीं गायब हो जाती है, बिल्कुल वैसे ही जैसे बुझ चुके दीये की लौ गायब हो जाती है।

1.15.14

अहंकारमहाविन्ध्ये मनोमत्तमहागजः । विस्फूर्जति घनास्फोटैः स्तनितैरिव वारिदः ॥ १४ ॥

ahaṁkāramahāvindhye manomattamahāgajaḥ | visphūrjati ghanāsphoṭaiḥ stanitairiva vāridaḥ || 14 ||

On the great Vindhya mountain range of ego, the huge, wild elephant of the mind trumpets loudly with thunderous roars, like a rain cloud rumbling with thunder.

अहंकार के विशाल विन्ध्य पर्वत पर, मन नाम का बड़ा, मस्त हाथी ज़ोर-ज़ोर से गरजता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे बारिश का बादल गड़गड़ाहट से गरजता है।

1.15.15

इह देहमहारण्ये घनाहंकारकेसरी । योऽयमुल्लसति स्फारस्तेनेदं जगदाततम् ॥ १५ ॥

iha dehamahāraṇye ghanāhaṁkārakeśarī | yo'ayamullasati sphārastene'daṁ jagadātataṁ || 15 ||

In this great forest of the body, there roams a huge, powerful lion called ego. It is because of this lion that this whole world spreads out as it does.

इस शरीर रूपी बड़े जंगल में, अहंकार नाम का एक विशाल, ताकतवर शेर घूमता रहता है। इसी शेर की वजह से यह पूरी दुनिया इस तरह फैली हुई है।

1.15.16

तृष्णातन्तुलवप्रोता बहुजन्मपरम्परा अहंकारोग्रखिङ्गेन कण्ठे मुक्तावली कृता ॥ १६ ॥

tr̥ṣṇātantulavaprotā bahujanmaparamparā ahaṁkārograkhiṅgena kaṇṭhe muktāvalī kṛtā || 16 ||

The long chain of many births, strung together on threads of craving, has been made into a pearl necklace around the neck by that fierce hunter, the ego.

कई जन्मों की यह लंबी कड़ी, जो लालच के धागों में पिरोई गई है, उसे उस क्रूर शिकारी अहंकार ने गले में पहनने वाली मोतियों की माला बना दिया है।

1.15.17

पुत्रमित्रकलत्रादितन्त्रमन्त्रविवर्जितम् प्रसारितमनेनेह मुनेऽहंकारवैरिणा ॥ १७ ॥

putramitra kalatrāditantrammantrivivarjitam prasāritamaneneha mune'haṁkāravairiṇā || 17 ||

This whole tangle of sons, friends, wives, and the rest — with no real order or reason to it — has been spread out here, sage, by this enemy called ego.

बेटों, दोस्तों, पत्नियों और बाकी सबका यह पूरा उलझा हुआ जाल — जिसमें कोई असली तरतीब या वजह नहीं है — इसे यहाँ, हे मुनि, इस दुश्मन अहंकार ने फैलाया है।

1.15.18

प्रमार्जितेऽहमित्यस्मिन्पदे स्वयमपि द्रुतम् प्रमार्जिता भवन्त्येते सर्व एव दुराधयः ॥ १८ ॥

pramārjite'hamityasminpade svayamapi drutam pramārjitā bhavantye te sarva eva durādhayaḥ || 18 ||

Once this notion of "I" is wiped away, then, all by itself and very quickly, every one of these troubling anxieties gets wiped away too.

जैसे ही यह "मैं" का ख्याल मिट जाता है, वैसे ही अपने आप, बहुत तेज़ी से, ये सारी परेशान करने वाली चिंताएँ भी मिट जाती हैं।

1.15.19

अहमित्यम्बुदे शान्ते शनैश्च शमशातिनी मनोगगनसंमोहमिहिका क्वापि गच्छति ॥ १९ ॥

ahamityambude śānte śanaiśca śamaśātinī manogagana sammohami hikā kvāpi gacchati || 19 ||

When the cloud called "I" is stilled, then little by little the fog of delusion — the very thing that destroys inner peace — clears away from the sky of the mind and disappears somewhere.

जब "मैं" नाम का बादल थम जाता है, तो धीरे-धीरे मोह का कोहरा — जो शांति को ही नष्ट करता है — मन के आकाश से छूट जाता है और कहीं गायब हो जाता है।

1.15.20

निरहंकारवृत्तेर्मे मौख्याच्छोकेन सीदतः यत्किञ्चिदुचितं ब्रह्मस्तदाख्यातुमिहार्हसि ॥ २० ॥

nirahaṁkāravṛtterme maurkhyācchokena sīdataḥ yatkiñciducitaṁ brahmaṁstadaākhyātumihārhasi || 20 ||

Brahmin, I want to live free of this ego, yet out of my own foolishness I am sinking into grief.

Please tell me whatever is right and fitting for me now.

हे ब्राह्मण, मैं इस अहंकार से मुक्त होकर जीना चाहता हूँ, फिर भी अपनी ही मूर्खता से मैं दुख में डूबता जा रहा हूँ। कृपया मुझे बताइए जो कुछ भी अभी मेरे लिए सही और उचित है।

सर्वापदां निलयमध्रुवमन्तरस्थमुन्मुक्तमुत्तमगुणेन न संश्रयामि । यत्नादहंकृतिपदं परितोऽतिदुःखं शेषेण मां समनुशाधि
महानुभाव ॥ २१ ॥

*sarvāpadāṃ nilayamadhruvamantarasthamunmuktamuttamaguṇena na saṃśrayāmi | yatnādahaṅkṛtipadaṃ
parito'tiduḥkhaṃ śeṣeṇa māṃ samanuśādhi mahānubhāva || 21 ||*

With real effort, I refuse to take shelter any longer in this unsteady home of every calamity that lives inside me — something only the highest virtue can free me from. This state called "ego" brings intense suffering on every side. Great one, please teach me the rest.

पूरी कोशिश के साथ, मैं अब इस डगमगाते घर में शरण नहीं लूँगा जो मेरे अंदर बसी हर मुसीबत का ठिकाना है — जिससे छुटकारा सिर्फ सबसे ऊँचे गुण से ही मिल सकता है। "अहंकार" नाम की यह अवस्था चारों तरफ भारी दुख देती है। हे महानुभाव, कृपया मुझे बाकी सब सिखाइए।

Chapter 16

1.16.1

श्रीराम उवाच । दोषैर्जर्जरतां याति सत्कार्यादार्यसेवनात् । वातान्तःपिच्छलववच्चेतश्चलति चञ्चलम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | doṣairjarjaratāṃ yāti satkāryādāryasevanāt | vātāntaḥpicchalavavacchetaścalati cañcalam || 1 ||

Sri Rama said: My mind is worn ragged by its own faults and turns away from good deeds and from serving the wise; like a wisp of down caught inside the wind, it moves about, restless and unsteady.

श्रीराम ने कहा: मेरा मन अपने ही दोषों की वजह से घिस-घिसकर टूट जाता है, और अच्छे काम करने तथा समझदार लोगों की सेवा करने से दूर हो जाता है; जैसे हवा में उड़ता हुआ रूई का फाहा इधर-उधर हिलता है, वैसे ही मेरा मन बेचैन होकर डोलता रहता है।

1.16.2

इतश्चेतश्च सुव्यग्रं व्यर्थमेवाभिधावति । दूरादूरतरं दीनं ग्रामे कौलेयको यथा ॥ २ ॥

itaścetaśca suvyagram vyarthamevābhidhāvati | dūrāddūratarāṃ dīnaṃ grāme kauleyako yathā || 2 ||

It rushes here and there in great agitation, running about for no reason, going farther and farther away, miserable, like a stray dog in a village.

यह बहुत घबराहट में इधर-उधर दौड़ता है, बिना किसी मतलब के भागता रहता है, दूर से और दूर होता चला जाता है, बेचारा — जैसे गाँव में कोई आवारा कुत्ता भटकता रहता है।

1.16.3

न प्राप्नोति क्वचित्किञ्चित्प्राप्तैरपि महाधनैः । नान्तः संपूर्णतामेति करण्डक इवाम्बुभिः ॥ ३ ॥

na prāpnoti kvacitkiñcit prāptairapi mahāadhanaiḥ | nāntaḥ sampūrṇatāmeti karaṇḍaka ivāmbubhiḥ || 3 ||

Even after gaining great wealth, it never gets anything anywhere; inside, it never becomes full, like a basket that water can never fill.

बड़ी से बड़ी दौलत पा लेने पर भी इसे कहीं कुछ नहीं मिलता; अंदर से यह कभी नहीं भरता, जैसे कोई टोकरी पानी से कभी नहीं भरती।

1.16.4

नित्यमेव मुने शून्यं कदाशावागुरावृतम् । न मनो निवृत्तिं याति मृगो यूथादिव च्युतः ॥ ४ ॥

nityameva mune śūnyaṃ kadāśāvāgurāvṛtam | na mano nivṛtiṃ yāti mṛgo yūthādiva cyutaḥ || 4 ||

O sage, my mind is always empty, wrapped in the snare of false hope, and it never comes to rest — like a deer that has strayed from its herd.

हे मुनि, मेरा मन हमेशा खाली रहता है, झूठी उम्मीद के जाल में लिपटा रहता है, और कभी शांत नहीं होता — जैसे झुंड से बिछड़ा हुआ कोई हिरण भटकता रहता है।

1.16.5

तरङ्गतारलां वृत्तिं दधदालूनशीर्णताम् । परित्यज्य क्षणमपि हृदये याति न स्थितिम् ॥ ५ ॥

taraṅgataralāṃ vṛttiṃ dadhadālūnaśīrṇatām | parityajya kṣaṇamapi hṛdaye yāti na sthitim || 5 ||

Its condition tosses like a wave, worn and crumbling; even if it drops that state for a moment, it never finds stillness in the heart.

इसकी हालत लहर जैसी डगमगाती रहती है, घिसी-पिटी और बिखरी हुई; एक पल के लिए भी यह हालत छूट जाए, तो भी दिल को कभी चैन नहीं मिलता।

1.16.6

मनो मननविक्षुब्धं दिशो दश विधावति । मन्दराहननोद्धूतं क्षीरार्णवपयो यथा ॥ ६ ॥

mano mananavikṣubdham diśo daśa vidhāvati | mandarāhananoddhūtaṁ kṣīrārṇavapayo yathā || 6 ||

The mind, churned up by its own thinking, runs wild in all ten directions, like the Ocean of Milk's water stirred up by the churning of Mount Mandara.

मन अपने ही सोच-विचार से मथकर बेचैन हो जाता है और सभी दस दिशाओं में दौड़ने लगता है, जैसे मंदराचल पर्वत के मथने से क्षीरसागर का पानी उछलने लगता है।

1.16.7

कल्लोलकलितावर्तं मायामकरमालितम् । न निरोद्धुं समर्थोऽस्मि मनोमयमहार्णवम् ॥ ७ ॥

kallolakalitāvartaṁ māyāmakaramālitam | na niroddhuṁ samartha'smi manomayamahārṇavam || 7 ||

I am not able to hold back this great ocean made of mind — its waves form whirlpools, and it is lined with the crocodiles of illusion.

मैं मन के इस विशाल समुद्र को नहीं रोक पाता — इसकी लहरों से भँवर बनते हैं, और इसमें माया के मगरमच्छ भरे हुए हैं।

1.16.8

भोगदूर्वाङ्कुराकाङ्क्षी श्वभ्रपातमचिन्तयन् । मनोहरिणको ब्रह्मन्दूरं विपरिधावति ॥ ८ ॥

bhogadūrvāṅkurākāṅkṣī śvabhrapātamacintayan | manohariṇako brahmandūraṁ viparidhāvati || 8 ||

O brahmin, craving the grass-shoots of pleasure and never thinking of the pit it may fall into, my mind, like a deer, runs far away in every direction.

हे ब्राह्मण, सुख रूपी दूब की कोंपलें पाने की चाह में, और आगे के गड्ढे के बारे में बिना सोचे, मेरा मन हिरण की तरह दूर-दूर तक भागता रहता है।

1.16.9

न कदाचन मे चेतः स्वामालूनविशीर्णताम् । त्यजत्याकुलया वृत्त्या चञ्चलत्वमिवार्णवः ॥ ९ ॥

na kadācana me cetaḥ svāmālūnaviśīrṇatām | tyajatyākulayā vṛtṭyā cañcalatvamivārṇavaḥ || 9 ||

My mind never even once gives up its own torn and shattered state; agitated in its behaviour, it stays as restless as the sea.

मेरा मन कभी भी अपनी टूटी-बिखरी हालत नहीं छोड़ता; इसका खैया हमेशा बेचैन रहता है, यह समुद्र की तरह चंचल बना रहता है।

1.16.10

चेतश्चञ्चलया वृत्त्या चिन्तानिचयचञ्चुरम् । धृतिं बध्नाति नैकत्र पञ्जरे केसरी यथा ॥ १० ॥

cetaścañcalayā vṛtṭyā cintānicayacāñcuram | dhṛtiṁ badhnāti naikatra pañjare kesarī yathā || 10 ||

My mind, always restless, quivering under a heap of worries, cannot hold still in one place — like a lion pacing in a cage.

मेरा मन हमेशा बेचैन रहता है, ढेर सारी चिंताओं से काँपता रहता है, और एक जगह टिक नहीं पाता — जैसे पिंजरे में बंद शेर इधर-उधर घूमता रहता है।

1.16.11

मनो मोहरथारूढं शरीरात्समतासुखम् । हरत्यपहतोद्वेगं हंसः क्षीरमिवाम्भसः ॥ ११ ॥

mano moharathārūḍhaṁ śarīrātsamatāsukham | haratyapahatodvegam haṁsaḥ kṣīramivāmbhasaḥ || 11 ||

My mind, riding the chariot of delusion, steals from my body that peaceful, untroubled happiness of even-mindedness — the way a swan draws out only the milk from water.

मेरा मन मोह के रथ पर बैठकर मेरे शरीर से समता का वह शांत सुख चुरा लेता है, जिसमें कोई घबराहट नहीं होती — जैसे हंस पानी में से सिर्फ दूध निकाल लेता है।

1.16.12

अनल्पकल्पनातलपे विलीनाश्चित्तवृत्तयः । मुनीन्द्र न प्रबुध्यन्ते तेन तप्येऽहमाकुलः ॥ १२ ॥

analpakalpanātalpe vilīnāścittavṛttayaḥ | munīndra na prabudhyante tena tapye'hamākulaḥ || 12 ||

O lord of sages, the mind's thoughts sink into an endless bed of imagination and never wake up from it; because of this I suffer, troubled.

हे श्रेष्ठ मुनि, मन के विचार कल्पना के एक बहुत बड़े बिस्तर में डूब जाते हैं और फिर कभी नहीं जागते; इसी वजह से मैं परेशान होकर दुखी रहता हूँ।

1.16.13

क्रोडीकृतदृढग्रन्थितृष्णासूत्रे स्थितात्मना । विहगो जालकेनेव ब्रह्मन्बद्धोऽस्मि चेतसा ॥ १३ ॥

kroḍīkṛtadṛḍhagrānthitṛṣṇāsūtre sthitātmanā | vihago jālakenēva brahmaṇbaddho'smi cetasā || 13 ||

O brahmin, I am tied down by my own mind, as a bird is tied down by a net — a mind whose very nature clings fast to the tightly knotted thread of craving.

हे ब्राह्मण, मैं अपने ही मन से बंधा हुआ हूँ, जैसे कोई पक्षी जाल में बंधा हो — यह मन अपनी प्रकृति से ही तृष्णा की कसकर बँधी हुई गाँठ से चिपका रहता है।

1.16.14

संततामर्षधूमेन चिन्ताज्वालाकुलेन च । वह्निनेव तृणं शुष्कं मुने दग्धोऽस्मि चेतसा ॥ १४ ॥

santatāmarṣadhūmena cintājvālākulena ca | vahneneva tṛṇaṁ śuṣkaṁ mune dagdho'smi cetasā || 14 ||

O sage, my mind burns me the way fire burns dry grass — its smoke is my constant anger, its flame is my restless worry.

हे मुनि, मेरा मन मुझे उसी तरह जलाता है जैसे आग सूखी घास को जलाती है — इसका धुआँ मेरा लगातार गुस्सा है, और इसकी लपट मेरी बेचैन चिंता है।

1.16.15

क्रूरेण जडतां यातस्तृष्णाभार्यानुगामिना । शवं कौलेयकेनेव ब्रह्मन्मुक्तोऽस्मि चेतसा ॥ १५ ॥

krūreṇa jaḍatāṁ yātastrṣṇābhāryānugāminā | śavaṁ kauleyakeneva brahmaṇmukto'smi cetasā || 15 ||

O brahmin, my mind has grown cruel and dull, chasing after its wife, craving, and it has abandoned me, the way a dog abandons a corpse.

हे ब्राह्मण, मेरा मन क्रूर और सुस्त हो गया है, अपनी पत्नी तृष्णा के पीछे भागता है, और मुझे इस तरह छोड़ गया है जैसे कोई कुत्ता किसी लाश को छोड़कर चला जाता है।

1.16.16

तरङ्गतरलास्फालवृत्तिना जडरूपिणा । तटवृक्ष इवौघेन ब्रह्मन्नीतोऽस्मि चेतसा ॥ १६ ॥

taraṅgataralāsphālavṛttinā jaḍarūpiṇā | taṭavṛkṣa ivaughēna brahmannīto'smi cētasā || 16 ||

O brahmin, my dull-natured mind, tossing and lashing about like unsteady waves, has swept me away — like a tree on the riverbank carried off by a flood.

हे ब्राह्मण, मेरा सुस्त मन बेचैन लहरों की तरह उछलता-पटकता है, और मुझे बहा ले गया है — जैसे बाढ़ किनारे के किसी पेड़ को बहा ले जाती है।

1.16.17

अवान्तरनिपाताय शून्ये वा भ्रमणाय च । तृणं चण्डानिलेनेव दूरे नीतोऽस्मि चेतसा ॥ १७ ॥

avāntaranipātāya śūnyē vā bhramaṇāya ca | tṛṇaṃ caṇḍānilēnēva dūre nīto'smi cētasā || 17 ||

My mind has carried me far away, the way a fierce wind carries off a blade of straw — to crash down somewhere, or to whirl about in empty space.

मेरा मन मुझे दूर तक बहा ले गया है, जैसे तेज़ आँधी किसी तिनके को उड़ा ले जाती है — कहीं गिरने के लिए, या खाली आकाश में घूमते रहने के लिए।

1.16.18

संसारजलधेरस्मान्नित्यमुत्तराणोन्मुखः । सेतुनेव पयःपूरो रोधितोऽस्मि कुचेतसा ॥ १८ ॥

saṃsārajaladhērasmānnityamuttaraṇōnmukhaḥ | sētunēva payaḥpūrō rōdhitō'smi kucētasā || 18 ||

Though I always want to cross over this ocean of worldly life, my own wretched mind blocks me, the way a dike holds back a flood of water.

मैं हमेशा इस संसार-रूपी समुद्र को पार करना चाहता हूँ, फिर भी मेरा यह बुरा मन मुझे रोक देता है, जैसे कोई बाँध पानी की बाढ़ को रोक देता है।

1.16.19

पातालाद्गच्छता पृथ्वीं पृथ्व्याः पातालगामिना । कूपकाष्ठं कुदाम्नेव वेष्टितोऽस्मि कुचेतसा ॥ १९ ॥

pātālādgacchatā pṛthvīm pṛthvyāḥ pātālagāminā | kūpakāṣṭhaṃ kudāmnēva vēṣṭitō'smi kucētasā || 19 ||

My wicked mind has wound itself around me, like a rough rope wound around a well's wooden beam — going endlessly down from the surface into the well's depth, and back up from the depth to the surface.

मेरे बुरे मन ने मुझे उसी तरह लपेट रखा है, जैसे कुएँ की लकड़ी को कोई खुरदरी रस्सी लपेट देती है — जो बार-बार ऊपर धरती से नीचे कुएँ की गहराई में जाती है, और फिर गहराई से ऊपर धरती पर आती है।

1.16.20

मिथ्यैव स्फाररूपेण विचाराद्विशाररुणा । बालो वेतालकेनेव गृहीतोऽस्मि कुचेतसा ॥ २० ॥

mithyaiva sphārarūpēṇa vicārādvishararuṇā | bālō vētālakēnēva gr̥hīto'smi kucētasā || 20 ||

My wicked mind, huge in appearance but completely false — a thing that crumbles the moment it is examined — has seized me, the way a ghost seizes a child.

मेरा बुरा मन देखने में बहुत बड़ा लगता है, पर है पूरी तरह झूठा — जाँचते ही यह बिखर जाता है — और इसने मुझे उसी तरह पकड़ लिया है जैसे कोई भूत किसी बच्चे को पकड़ लेता है।

1.16.21

वह्नेरुष्णातरः शैलादपि कष्टतरक्रमः । वज्रादपि दृढो ब्रह्मन्दुर्निग्रहमनोग्रहः ॥ २१ ॥

vahneruṣṇatarah śailādapi kaṣṭatarakramah | vajrādapi dṛḍho brahmandurnigrahamanograhah || 21 ||

O brahmin, this grip called the mind is hotter than fire, harsher in its course than a mountain, harder than a diamond, and impossible to hold back.

हे ब्राह्मण, मन नाम की यह पकड़ आग से भी ज़्यादा गरम है, पहाड़ से भी ज़्यादा कठोर चाल वाली है, हीरे से भी ज़्यादा सख्त है, और इसे रोकना नामुमकिन है।

1.16.22

चेतः पतति कार्येषु विहगः स्वामिषेष्विव । क्षणेन विरतिं याति बालः क्रीडनकादिव ॥ २२ ॥

cetaḥ patati kāryeṣu vihagaḥ svāmiṣeṣviva | kṣaṇena viratiṃ yāti bālaḥ kṛīḍanakādiva || 22 ||

The mind pounces on its tasks the way a bird swoops on its own prey, but in an instant it drops them, the way a child drops a toy.

मन अपने कामों पर उसी तरह झपटता है जैसे कोई पक्षी अपने ही शिकार पर झपटता है, पर एक पल में ही उसे छोड़ देता है, जैसे कोई बच्चा अपना खिलौना छोड़ देता है।

1.16.23

जडप्रकृतिरालोलो विततावर्तवृत्तिमान् । मनोऽब्धिरहितव्यालो दूरं नयति तात माम् ॥ २३ ॥

jaḍaprakṛtirālolo vitatāvartavṛttimān | mano'bdhirahitavyālo dūraṃ nayati tāta mām || 23 ||

Father, this ocean of my mind — dull by nature, always tossing, full of wide whirlpools and vicious serpents — carries me far away.

हे पिता, मेरे मन का यह समुद्र — जो स्वभाव से सुस्त है, हमेशा हिलता रहता है, और जिसमें बड़े-बड़े भँवर और खूँखार साँप भरे हैं — मुझे दूर तक बहा ले जाता है।

1.16.24

अप्यब्धिपानान्महतः सुमेरून्मूलनादपि । अपि वह्न्यशनात्साधो विषमश्चित्तनिग्रहः ॥ २४ ॥

apyabdhīpānānmaḥataḥ sumerūnmūlanādapi | api vahnnyaśanātsādho viṣamaścittanigrahaḥ || 24 ||

Good sir, controlling the mind is harder than drinking the great ocean dry, harder than uprooting Mount Sumeru, harder even than eating fire.

हे सज्जन, मन को काबू में करना समुद्र को पी जाने से भी कठिन है, सुमेरु पर्वत को जड़ से उखाड़ने से भी कठिन है, और आग खा जाने से भी कठिन है।

1.16.25

चित्तं कारणमर्थानां तस्मिन्सति जगत्त्रयम् । तस्मिन्क्षीणे जगत्क्षीणं तच्चिकित्स्यं प्रयत्नतः ॥ २५ ॥

cittaṃ kāraṇamarthānāṃ tasminsati jagatṭrayam | tasminḥkṣīṇe jagatkṣīṇaṃ taccikitsyaṃ prayatnataḥ || 25 ||

The mind is the cause of everything; when it exists, the three worlds exist; when it is destroyed, the world is destroyed. So it must be treated with real effort.

मन ही हर चीज़ का कारण है; जब यह रहता है, तब तीनों लोक रहते हैं; जब यह नष्ट हो जाता है, तब यह संसार भी नष्ट हो जाता है। इसलिए इसका इलाज पूरी मेहनत से करना चाहिए।

चित्तादिमानि सुखदुःखशतानि नूनमभ्यागतान्यगवरादिव काननानि । तस्मिन्विवेकवशतस्तनुतां प्रयाते मन्ये मुने निपुणमेव गलन्ति तानि ॥ २६ ॥

cittādimāni sukhaduḥkhaśatāni nūnamabhyāgatānyagavarādiva kānanāni | tasmīnvivekavaśatastanutām prayāte manye mune nīpuṇameva galanti tāni || 26 ||

Hundreds of pleasures and pains surely arise from the mind, the way forests spring from a great mountain. I think, O sage, that when this mind is worn thin by the power of discernment, all of them melt away completely.

सैकड़ों सुख और दुख निश्चय ही मन से पैदा होते हैं, जैसे किसी बड़े पहाड़ से जंगल पैदा होते हैं। हे मुनि, मुझे लगता है कि जब विवेक की शक्ति से यह मन पतला पड़ जाता है, तब ये सारे सुख-दुख पूरी तरह गल जाते हैं।

सकलगुणजयाशा यत्र बद्धा महद्भिस्तमरिमिह विजेतुं चित्तमभ्युत्थितोऽहम् । विगतरतितयान्तर्नाभिनन्दामि लक्ष्मीं जडमलिनविलासां मेघलेखामिवेन्दुः ॥ २७ ॥

sakalaguṇajayāśā yatra baddhā mahadbhistamarimih vijetum cittamabhyutthito'ham | vigataratitayāntarnābhinandāmi lakṣmīm jaḍamalinavilāsāṃ meghalekhāmivenduḥ || 27 ||

The hope of winning every virtue is fixed on conquering that one enemy — the mind — and even the great sages have anchored their hope there; I too have risen up here to conquer it. Since all delight has left me inside, I do not welcome Lakshmi, whose pleasures are dull and tainted, just as the moon takes no delight in a streak of cloud.

हर अच्छे गुण को पाने की आशा उसी एक दुश्मन को जीतने पर टिकी है — यानी मन को जीतने पर — और बड़े-बड़े मुनियों ने भी अपनी आशा वहीं टिकाई है; मैं भी उसे जीतने के लिए यहाँ उठ खड़ा हुआ हूँ। मेरे भीतर से सारी खुशी जा चुकी है, इसलिए मैं लक्ष्मी का स्वागत नहीं करता, जिसके सुख फीके और मैले हैं, जैसे चाँद बादल की एक धारी का स्वागत नहीं करता।

Chapter 17

1.17.1

श्रीराम उवाच । हार्दान्धकारशर्वर्या तृष्णयेह दुरन्तया । स्फुरन्ति चेतनाकाशे दोषकौशिकपङ्क्तयः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | hārdāndhakāraśarvryā tṛṣṇayeha dūrantayā | sphuranti cetanākāśe doṣakaūśikapāṅkatayaḥ || 1 ||

Rama said: In the dark night of my heart, made by this craving that never ends, rows of owls -- which are my faults -- flicker across the sky of my mind.

राम ने कहा कि इस कभी न खत्म होने वाली तृष्णा ने मेरे दिल में जो अंधेरी रात बना दी है, उसमें मेरे मन के आकाश में मेरे दोष उल्लुओं की तरह झुंड बनाकर चमक रहे हैं।

1.17.2

अन्तर्दाहप्रदायिन्या समूढरसमार्दवः । पङ्क आदित्यदीप्त्येव शोषं नीतोऽस्मि चिन्तया ॥ २ ॥

antardāhapradāyinyā samūḍharasamārdavaḥ | paṅka ādityadīptyeva śoṣaṃ nīto'smi cintayā || 2 ||

This worry burns me inside and has dried up all my softness, the way the sun's heat dries wet mud. I have been dried up completely by this worry.

इस चिंता ने मुझे अंदर से जला दिया है और मेरी सारी नरमी सुखा दी है, जैसे सूरज की गर्मी गीली मिट्टी को सुखा देती है। मैं इस चिंता से पूरी तरह सूख गया हूँ।

1.17.3

मम चित्तमहारण्येव्यामोहतिमिराकुले । शून्ये ताण्डविनी जाता भृशमाशापिशाचिका ॥ ३ ॥

mama cittamahāraṇyevyāmohatimirākule | śūnye tāṇḍavinī jātā bhr̥śamāśāpiśācikā || 3 ||

In the great forest of my mind, dark with confusion and empty inside, a she-demon called desire dances wildly.

मेरे मन के इस बड़े जंगल में, जो भ्रम के अंधेरे से भरा और अंदर से खाली है, आशा नाम की एक राक्षसी जोर-जोर से नाच रही है।

1.17.4

वचोरचितनीहारा काञ्चनोपवनोज्ज्वला । नूनं विकासमायाति चिन्ताचणकमञ्जरी ॥ ४ ॥

vacoracitanīhārā kāñcanopavanōjjvalā | nūnaṃ vikāsamāyāti cintācaṇakamañjarī || 4 ||

The flowering branch of my worries, a gram plant, is covered with a mist made of empty words and shines bright like a golden garden -- it is surely coming into full bloom now.

मेरी चिंताओं की यह चने की बेल, जो शब्दों की धुंध से ढकी है और सोने के बगीचे जैसी चमक रही है, अब जरूर पूरी तरह खिल रही है।

1.17.5

अलमन्तर्भ्रमायैव तृष्णातरलिताशया । आयाता विषमोल्लासमूर्मिरम्बुनिधाविव ॥ ५ ॥

alamantarbhramāyāiva tṛṣṇātaralitāśayā | āyātā viṣamollāsamūrmirambunidhāviva || 5 ||

This craving, stirring up my mind like water, has come only to confuse me from within -- like a wild wave rising in the ocean.

यह तृष्णा, जिसने मेरे मन को पानी की तरह अस्थिर कर दिया है, बस मुझे अंदर से भटकाने के लिए आई है, जैसे समुद्र में कोई भयंकर लहर उठती है।

1.17.6

उद्दामकल्लोलरवा देहाद्रौ वहतीह मे । तरङ्गतरलाकारा तरत्तृष्णातरङ्गिणी ॥ ६ ॥

uddāmakallolaravā dehādrau vahatīha me | taraṅgataralākārā taratṛṣṇātarāṅgiṇī || 6 ||

A river of craving flows through the mountain that is my body. It roars like wild waves, and its shape is restless, always surging.

तृष्णा की एक नदी मेरे शरीर रूपी पहाड़ में बह रही है। यह जंगली लहरों की तरह गरजती है और इसका रूप हमेशा बेचैन और उफनता रहता है।

1.17.7

वेगं सरोद्धुमुदितो वात्ययेव जरत्तृणम् । नीतः कलुषया क्वापि तृष्णया चित्तचातकः ॥ ७ ॥

vegam saroddhumudito vātyayeva jaratṛṇam | nītaḥ kaluṣayā kvāpi tṛṣṇayā cittacātaḥ || 7 ||

The cataka bird of my mind rose up trying hard to fight the force of this craving, but this dirty, muddied craving has swept it away somewhere, the way a whirlwind sweeps away an old dry straw.

मेरे मन का चातक पक्षी इस तृष्णा के वेग को रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन इस गंदी तृष्णा ने उसे कहीं दूर बहा दिया, जैसे आंधी किसी सूखे तिनके को उड़ा ले जाती है।

1.17.8

यां यामहमतीवास्थां संश्रयामि गुणश्रियाम् । तां तां कृन्तति मे तृष्णा तन्त्रीमिव कुमूषिका ॥ ८ ॥

yām yāmahamatīvāsthāṃ saṁśrayāmi guṇaśriyām | tāṃ tāṃ kṛntati me tṛṣṇā tantṛīmiva kumūṣikā || 8 ||

Whatever strong hope of some good quality I lean on, my craving cuts it away, just as a mouse gnaws through a string.

किसी भी अच्छे गुण की जिस बड़ी उम्मीद का मैं सहारा लेता हूँ, मेरी यह तृष्णा उसे काट देती है, जैसे कोई चूहा किसी डोरी को कुतर देता है।

1.17.9

पयसीव जरत्पर्णं वायाविव जरत्तृणम् । नभसीव शरन्मेघश्चिन्ताचक्रे भ्रमाम्यहम् ॥ ९ ॥

payasīva jaratparṇam vāyāviva jaratṛṇam | nabhasīva śaranmeghaścintācakre bhramāmyaham || 9 ||

Like an old leaf on water, like an old straw in the wind, like an autumn cloud in the sky, I am whirled around in the wheel of worry.

जैसे पानी पर कोई पुराना पत्ता, जैसे हवा में कोई सूखा तिनका, जैसे आकाश में शरद ऋतु का कोई बादल, वैसे ही मैं चिन्ता के चक्र में घूम रहा हूँ।

1.17.10

गन्तुमास्पदमात्मीयमसमर्थधियो वयम् । चिन्ताजाले विमुह्यामो जाले शकुनयो यथा ॥ १० ॥

gantumāspadamātmīyamasarthaḥ dhiyo vayam | cintājāle vimuhyāmo jāle śakunayo yathā || 10 ||

Unable in mind to reach our own true home, we stay bewildered, caught in the net of worry, like birds caught in a net.

अपने असली घर तक पहुँचने में मन से असमर्थ होकर, हम चिन्ता के जाल में उलझे रहते हैं, जैसे पक्षी किसी जाल में फँस जाते हैं।

1.17.11

तृष्णाभिधानया तात दग्धोऽस्मि ज्वालाया तथा । यथा दाहोपशमनमाशंके नामृतैरपि ॥ ११ ॥

tṛṣṇābhidhānayā tāta dagdho'smi jvālayā tathā | yathā dāhopaśamanamāśaṅke nāmṛtairapi || 11 ||

Dear one, I am burnt by the flame called craving in such a way that I do not think even nectar could put out this burning.

हे प्रिय, तृष्णा नाम की इस आग ने मुझे इस तरह जला दिया है कि मुझे लगता है इसकी जलन को अमृत भी नहीं बुझा सकता।

1.17.12

दूरं दूरमितो गत्वा समेत्य च पुनःपुनः । भ्रमत्याशु दिगन्तेषु तृष्णोन्मत्ता तुरङ्गमी ॥ १२ ॥

dūraṃ dūramito gatvā sametya ca punaḥpunaḥ | bhramatyāśu diganteṣu tṛṣṇonmattā turangamī || 12 ||

Craving, like a mad mare, goes far, far away from here, comes back again and again, and quickly wanders off in every direction.

तृष्णा किसी पागल घोड़ी की तरह यहाँ से बहुत दूर चली जाती है, फिर बार-बार लौट आती है, और तेजी से हर दिशा में भटकती है।

1.17.13

जडसंसर्गिणी तृष्णा कृतोर्ध्वाधोगमागमा । क्षुब्धा ग्रन्थिमती नित्यमारघट्टाग्ररज्जुवत् ॥ १३ ॥

jaḍasaṃsargiṇī tṛṣṇā kṛtordhvādhogamāgamā | kṣubdhā granthimatī nityamāraghaṭṭāgrarajjuvat || 13 ||

Craving, tangled up with dull matter, moving up and down, restless, and full of knots, is always like the rope of a water-wheel.

तृष्णा, जो जड़ चीजों से जुड़ी रहती है, ऊपर-नीचे होती रहती है, बेचैन रहती है और गांठों से भरी रहती है, हमेशा किसी रहट की रस्सी जैसी होती है।

1.17.14

अन्तर्ग्रथितया देहे सर्वदुश्छेदयाऽनया । रज्ज्वेवाशु बलीवर्दस्तृष्णया वाह्यते जनः ॥ १४ ॥

antargrahitayā dehe sarvaduśchedayā'nayā | rajjvevāśu balīvardastṛṣṇayā vāhyate janah || 14 ||

By this craving that is tied up inside the body and is very hard to cut, a person is dragged along quickly, the way an ox is dragged by a rope.

शरीर के अंदर बंधी इस तृष्णा से, जिसे काटना बहुत मुश्किल है, इंसान को तेजी से घसीटा जाता है, जैसे किसी बैल को रस्सी से घसीटा जाता है।

1.17.15

पुत्रमित्रकलत्रादितृष्णया नित्यकृष्टया । खगेष्विव किरात्येदं जालं लोकेषु रच्यते ॥ १५ ॥

putramitra-kalatrādītṛṣṇayā nityakṛṣṭayā | khageṣvīvakirātyedaṃ jālaṃ lokeṣu racyate || 15 ||

Drawn on always by craving for a son, a friend, a wife, and other such things, this net is spread out among people in the world, the way a huntress spreads a net among birds.

बेटे, दोस्त, पत्नी और ऐसी ही चीजों की तृष्णा से हमेशा खिंचकर, यह जाल लोगों के बीच इस दुनिया में फैलाया जाता है, जैसे कोई शिकारिन पक्षियों के बीच जाल बिछाती है।

1.17.16

भीषयत्यपि धीरं मामन्धयत्यपि सेक्षणम् । खेदयत्यपि सानन्दं तृष्णाकृष्णोव शर्वरी ॥ १६ ॥

bhīṣayatyapi dhīraṃ māmandhayatyapi sekṣaṇam | khedayatyapi sānandaṃ tṛṣṇākṛṣṇeva śarvarī || 16 ||

Craving, like a dark night, frightens me though I am steady, blinds me though I can see well, and troubles me though I am happy.

तृष्णा किसी काली रात की तरह है -- यह मुझे डराती है जबकि मैं धैर्यवान हूँ, यह मुझे अंधा कर देती है जबकि मेरी नजर अच्छी है, और यह मुझे दुखी करती है जबकि मैं आनंद में हूँ।

1.17.17

कुटिला कोमलस्पर्शा विषवैषम्यशंसिनी । दशत्यपि मनाक्स्पृष्टा तृष्णा कृष्णोव भोगिनी ॥ १७ ॥

kuṭilā komalaspr̥ṣā viṣavaiṣamyāśaṁsinī | daśatyapi manākspr̥ṣṭā tṛṣṇā kṛṣṇeva bhoginī || 17 ||

Craving is crooked, soft to the touch, but it promises a fierce poison. Touch it even a little, and it bites -- like a black serpent.

तृष्णा टेढ़ी है, छूने में नरम लगती है, पर यह भयंकर जहर का वादा करती है। इसे थोड़ा सा भी छुओ तो यह डस लेती है, जैसे कोई काला सांप।

1.17.18

भिन्दती हृदयं पुंसां मायामयविधायिनी । दौर्भाग्यदायिनी दीना तृष्णा कृष्णोव राक्षसी ॥ १८ ॥

bhīndatī hṛdayaṁ puṁsāṁ māyāmayavidhāyinī | dāurbhāgyadāyinī dīnā tṛṣṇā kṛṣṇeva rākṣasī || 18 ||

Craving, like a dark demoness, pierces the hearts of men, creates illusions, gives misfortune, and is herself wretched.

तृष्णा किसी काली राक्षसी की तरह है -- यह लोगों के दिल को चीरती है, भ्रम पैदा करती है, बदकिस्मती देती है, और खुद भी दयनीय है।

1.17.19

तन्द्रीतन्त्रीगणैः कोशं दधाना परिवेष्टितम् । नानन्दे राजते ब्रह्मस्तृष्णा जर्जरवल्लकी ॥ १९ ॥

tandṛītantrīgaṇaiḥ koṣaṁ dadhānā pariveṣṭitam | nānande rājate brahmaṁstr̥ṣṇā jarjaravallakī || 19 ||

Sage, craving is a worn-out, broken lute strung with the strings of laziness, its body wrapped all around -- and it never rings out in joy.

हे मुनि, तृष्णा एक टूटी-फूटी सारंगी है जिसमें आलस्य की तारें बंधी हैं और जिसका पूरा ढांचा लिपटा हुआ है -- यह कभी आनंद से नहीं बजती।

1.17.20

नित्यमेवातिमलिना कटुकोन्माददायिनी । दीर्घतन्त्री घनस्नेहा तृष्णा गह्वरवल्लरी ॥ २० ॥

nityamevātimalinā kaṭukonmādadāyinī | dīrghatantrī ghanasneha tṛṣṇā gahvaravallārī || 20 ||

Always very dirty, giving a bitter kind of madness, craving is a creeper in a dark cave, its tendrils long and its sap thick.

हमेशा बहुत गंदी और कड़वा पागलपन देने वाली तृष्णा किसी अंधेरी गुफा की बेल जैसी है, जिसकी लताएं लंबी हैं और जिसका रस गाढ़ा है।

1.17.21

अनानन्दकरी शून्या निष्फला व्यर्थमुन्नता अमङ्गलकरी क्रूरा तृष्णा क्षीणेव मञ्जरी ॥ २१ ॥

anānandakarī śūnyā niṣphalā vyarthamunnatā amaṅgalakarī krūrā tṛṣṇā kṣīṇeva mañjarī || 21 ||

Craving gives no joy; it is empty, fruitless, uselessly tall, brings bad luck, and is cruel -- like a withered flower cluster.

तृष्णा कोई खुशी नहीं देती; यह खाली है, बेकार है, बिना वजह ऊंची है, बदकिस्मती लाती है, और क्रूर है -- जैसे कोई मुरझाया हुआ फूलों का गुच्छा।

1.17.22

अनावर्जितचित्तापि सर्वमेवानुधावति न चाप्नोति फलं किञ्चित् तृष्णा जीर्णेव कामिनी ॥ २२ ॥

anāvarjitacittāpi sarvamevānudhāvati na cāpnoti phalaṁ kiñcit tṛṣṇā jīrṇeva kāmīnī || 22 ||

Craving runs after everything without winning anyone's heart, and gains no fruit at all -- like an old woman whose desire has not left her.

तृष्णा बिना किसी का दिल जीते हर चीज के पीछे भागती है, और उसे कुछ भी हासिल नहीं होता -- जैसे कोई बूढ़ी औरत जिसकी वासना अभी भी बनी हुई हो।

1.17.23

संसारवृन्दे महति नानारससमाकुले भुवनाभोगरङ्गेषु तृष्णा जरठनर्तकी ॥ २३ ॥

saṃsāravṛnde mahati nānārasasamākule bhuvanābhogaraṅgeṣu tṛṣṇā jaraṭhanartakī || 23 ||

In this vast crowd of worldly life, full of all sorts of flavors, on the stages of the world's pleasures, craving is an old, worn-out dancer.

संसार की इस बड़ी भीड़ में, जो तरह-तरह के रसों से भरी है, दुनिया के सुख-भोग के मंचों पर, तृष्णा एक बूढ़ी, थकी हुई नर्तकी है।

1.17.24

जराकुसुमितारूढा पातोत्पातफलावलिः संसारजंगले दीर्घे तृष्णा विषलता तता ॥ २४ ॥

jarākusumitārūdhā pātotpātaphalāvaliḥ saṃsārajangale dīrghē tṛṣṇā viśalatā tatā || 24 ||

In the long forest of this world, craving is a poison vine, spread far and wide, grown tall and flowering with old age, its row of fruits being falls and disasters.

इस संसार के लंबे जंगल में, तृष्णा एक जहरीली बेल है, जो दूर-दूर तक फैली है, बुढ़ापे में भी फूल रही है, और जिसके फल गिरना और मुसीबतें हैं।

1.17.25

यन्न शक्नोति तत्रापि धत्ते ताण्डवितां गतिम् नृत्यत्यानन्दरहितं तृष्णा जीर्णव नर्तकी ॥ २५ ॥

yann na śakroti tatrāpi dhatte tāṇḍavitāṃ gatim nṛtyatyānandarahitaṃ tṛṣṇā jīrṇeva nartakī || 25 ||

Even where she cannot succeed, craving still puts on a wild, dancing gait; she dances without any joy, like a worn-out dancer.

जहां वह सफल नहीं हो सकती, वहां भी तृष्णा जोर-जोर से नाचने की चाल अपना लेती है; वह बिना किसी खुशी के नाचती है, जैसे कोई बूढ़ी थकी हुई नर्तकी।

1.17.26

भृशं स्फुरति नीहारे शाम्यत्यालोक आगते । दुर्लङ्घयेषु पदं धत्ते चिन्ता चपलबर्हिणी ॥ २६ ॥

bhṛśaṃ sphurati nīhāre śāmyatyāloka āgate | durllāṅghayeṣu padaṃ dhatte cintā capalabarhiṇī || 26 ||

Worry, a restless peahen, shines bright and flutters in the mist, but calms down when light comes, and sets its foot even in places hard to cross.

चिन्ता, एक बेचैन मोरनी की तरह, धुंध में खूब चमकती और फड़फड़ाती है, पर जब रोशनी आती है तो शांत हो जाती है, और उन जगहों पर भी पैर रख देती है जहां पहुंचना मुश्किल है।

1.17.27

जडकल्लोलबहुला चिरं शून्यान्तरान्तरा । क्षणमुल्लासमायाति तृष्णा प्रावृत्तरङ्गिणी ॥ २७ ॥

jaḍakallolabahulā ciraṃ śūnyāntarāntarā | kṣaṇamullāsamāyāti tṛṣṇā prāvṛṭtarāṅgiṇī || 27 ||

Craving is like a river in the rainy season: full of dull, choppy waves, empty for long stretches in between, and rising up joyfully only for a moment.

तृष्णा बरसात के मौसम की नदी जैसी है: इसमें बहुत सी सुस्त, उथल-पुथल लहरें होती हैं, बीच-बीच में यह लंबे समय तक खाली रहती है, और सिर्फ एक पल के लिए खुशी से उफनती है।

1.17.28

नष्टमुत्सृज्य तिष्ठन्तं तृष्णा वृक्षमिवापरम् । पुरुषात्पुरुषं याति तृष्णा लोलेव पक्षिणी ॥ २८ ॥

naṣṭamutsṛjya tiṣṭhantaṃ tṛṣṇā vṛkṣamivāparam | puruṣātpuruṣaṃ yāti tṛṣṇā loleva pakṣiṇī || 28 ||

Craving leaves behind a tree that has died and still stands, and moves on to another tree; it goes from person to person, like a restless bird.

तृष्णा किसी मरे हुए, फिर भी खड़े पेड़ को छोड़कर दूसरे पेड़ पर चली जाती है; यह एक इंसान से दूसरे इंसान के पास जाती है, जैसे कोई बेचैन पक्षी।

1.17.29

पदं करोत्यलङ्घ्येऽपि तृप्तापि फलमीहतेचिरं तिष्ठति नैकत्र तृष्णा चपलमर्कटी ॥ २९ ॥

padam karotyalaṅghye'pi tṛptāpi phalamīhateciram tiṣṭhati naikatra tṛṣṇā capalamarkaṭī || 29 ||

Craving is a restless monkey: it puts its foot even where no one can climb, and even when full it still wants more fruit; it never stays in one place for long.

तृष्णा एक चंचल बंदर की तरह है: यह वहां भी पैर रख देती है जहां कोई नहीं चढ़ सकता, और पेट भर जाने पर भी और फल चाहती है; यह कभी एक जगह टिककर नहीं रहती।

1.17.30

इदं कृत्वेदमायाति सर्वमेवासमञ्जसम् । अनारतं च यतते तृष्णा चेष्टेव दैविकी ॥ ३० ॥

idaṃ kṛtvēdamāyāti sarvamevāsamañjasam | anārataṃ ca yatate tṛṣṇā ceṣṭeva daivikī || 30 ||

Doing this, then rushing to do that -- all of it senseless -- craving keeps striving without stopping, like some force of fate that cannot be checked.

यह करके फिर वह करने दौड़ पड़ना -- यह सब बेतुका है -- तृष्णा बिना रुके कोशिश करती रहती है, जैसे किस्मत की कोई ऐसी ताकत जिसे रोका न जा सके।

1.17.31

क्षणमायाति पातालं क्षणं याति नभस्थलम् । क्षणं भ्रमति दिक्कुञ्जे तृष्णा हृत्पद्मषट्पदी ॥ ३१ ॥

kṣaṇamāyāti pātālaṃ kṣaṇam yāti nabhasthalam | kṣaṇam bhramati dikkuñje tṛṣṇā hṛtpadmaṣaṭpadi || 31 ||

Craving is the bee living in the lotus of the heart: for one moment it dives down to the underworld, the next it flies up to the sky, and the next it wanders off in every direction.

तृष्णा दिल के कमल में रहने वाली भौंरी है: एक पल में यह पाताल में उतर जाती है, अगले पल आकाश में उड़ जाती है, और उसके बाद हर दिशा में भटकने लगती है।

1.17.32

सर्वसंसारदोषाणां तृष्णैका दीर्घदुःखदा । अन्तःपुरस्थमपि या योजयत्यतिसंकटे ॥ ३२ ॥

sarvasaṃsāradoṣāṇāṃ tṛṣṇaikā dīrghaduḥkhadā | antaḥpurasthamapi yā yojayatyatisankate || 32 ||

Of all the faults of this worldly life, craving alone gives long-lasting sorrow; it throws even someone living safe inside the palace into the deepest trouble.

इस संसार के सारे दोषों में, अकेली तृष्णा ही लंबे समय तक चलने वाला दुख देती है; यह महल के अंदर सुरक्षित रहने वाले इंसान को भी सबसे बड़ी मुसीबत में डाल देती है।

1.17.33

प्रयच्छति परं जाड्यं परमालोकरोधिनी । मोहनीहारगहना तृष्णा जलदमालिका ॥ ३३ ॥

prayacchati param jādyaṃ paramālokarodhinī | mohanīhāragahanā tṛṣṇā jaladamālikā || 33 ||

Craving is a line of rain clouds, thick with the fog of confusion; it blocks out the highest light and brings on a deep numbness.

तृष्णा बारिश के बादलों की एक कतार है, जो भ्रम की धुंध से घनी है; यह सबसे ऊंची रोशनी को रोक देती है और गहरी सुस्ती ले आती है।

1.17.34

सर्वेषां जन्तुजातानां संसारव्यवहारिणाम् । परिप्रोतमनोमाला तृष्णा बन्धनरज्जुवत् ॥ ३४ ॥

sarveṣāṃ jantujātānāṃ saṃsāravayahāriṇām | pariprotamanomālā tṛṣṇā bandhanarajjuvat || 34 ||

Craving is a garland strung through the minds of all creatures who live and act in this world, binding them like a rope.

तृष्णा एक माला है जो इस संसार में जीने और काम करने वाले सभी जीवों के मन में पिरोई हुई है, और उन्हें रस्सी की तरह बांधे रखती है।

1.17.35

विचित्रवर्णा विगुणा दीर्घा मलिनसंस्थितिः । शून्या शून्यपदा तृष्णा शक्रकार्मुकधर्मिणी ॥ ३५ ॥

vicitravarṇā viguṇā dīrghā malinasansthiṭiḥ | śūnyā śūnyapadā tṛṣṇā śakrakārmukadharminī || 35 ||

Craving is like Indra's bow, the rainbow: many-colored, good for nothing, long, sitting in an impure place, empty, with no place of its own to stand.

तृष्णा इंद्रधनुष जैसी है: कई रंगों वाली, फिर भी बेकार, लंबी, किसी गंदी जगह पर टिकी, खाली, और जिसका अपना कोई ठिकाना नहीं।

1.17.36

अशनिर्गुणसस्यानां फलिता शरदापदाम्भिमं संवित्सरोजानां तमसां दीर्घयामिनी ॥ ३६ ॥

aśanirguṇasasyānāṃ phalitā śaradāpadāmbhimaṃ samvitsarojānāṃ tamasāṃ dīrghayāminī || 36 ||

Craving is a thunderbolt to the crop of good qualities, ripe and ready to bring on autumn's disasters, frost to the lotus of wisdom, and a long night that deepens all darkness.

तृष्णा अच्छे गुणों की फसल के लिए वज्रपात है, जो शरद ऋतु की मुसीबतें लाने के लिए पूरी तरह तैयार है, यह ज्ञान के कमल के लिए पाला है, और हर अंधेरे को और गहरा करने वाली एक लंबी रात है।

1.17.37

संसारनाटकनटी कार्यालयविहंगमीमानसारण्यहरिणी स्मरसंगीतवल्लकी ॥ ३७ ॥

saṃsāranāṭakanaṭī kāryālayavihaṅgamīmānasāraṇyahariṇī smarasamgītavallakī || 37 ||

Craving is an actress in the drama of this world, a bird living in the house of one's daily work, a deer roaming the forest of the mind, and a lute playing the music of desire.

तृष्णा इस संसार के नाटक की एक अभिनेत्री है, रोजमर्रा के काम के घर में रहने वाली एक चिड़िया है, मन के जंगल में घूमने वाली एक हिरणी है, और वासना का संगीत बजाने वाली एक सारंगी है।

1.17.38

व्यवहाराब्धिलहरी मोहमातंगशृङ्खलासर्गन्यग्रोधसुलता दुःखकैरवचन्द्रिका ॥ ३८ ॥

vyavahārābdhilaharī mohamātangaśṛṅkhalāsarganyagrodhasulatā duḥkhakairavacandrikā || 38 ||

Craving is a wave in the ocean of worldly business, a chain that binds the elephant of delusion, a fine creeper on the banyan tree of creation, and moonlight that opens the night-lily of sorrow.

तृष्णा सांसारिक कामकाज के समुद्र की एक लहर है, भ्रम के हाथी को बांधने वाली एक जंजीर है, सृष्टि के बरगद पर उगी एक नाजुक बेल है, और दुख के कुमुद फूल को खिलाने वाली चांदनी है।

1.17.39

जरामरणदुःखानामेका रत्नसमुद्रिका आधिव्याधिविलासानां नित्यं मत्ता विलासिनी ॥ ३९ ॥

jarāmaraṇaduḥkhānāmekā ratnasamudrikā ādhivyādhivilāsānāṃ nityaṃ mattā vilāsinī || 39 ||

Craving is the one jewel-box holding the sorrows of old age and death, and it is the ever-drunk mistress who delights in playing out mental and bodily disease.

तृष्णा वह एक ही रत्न-पेटी है जिसमें बुढ़ापे और मौत के दुख रखे हैं, और यह हमेशा नशे में डूबी वह स्त्री है जो मानसिक और शारीरिक बीमारी का खेल खेलने में आनंद लेती है।

1.17.40

क्षणमालोकविमला सांधकारलवा क्षणम्व्योमवीथ्युपमा तृष्णा नीहारगहना क्षणम् ॥ ४० ॥

kṣaṇamālokavimalā sāndhakāralavā kṣaṇamvyomavīthyupamā tṛṣṇā nīhāragahanā kṣaṇam || 40 ||

Craving is like a lane in the sky: for a moment clear and bright with light, the next moment touched with a bit of darkness, and the next moment thick with fog.

तृष्णा आकाश की एक गली जैसी है: एक पल रोशनी से साफ और चमकदार, अगले पल थोड़े अंधेरे से भरी, और उसके बाद घनी धुंध से ढकी हुई।

1.17.41

गच्छत्युपशमं तृष्णा कायव्यायामशान्तये । तमी घनतमः कृष्णा यथा रक्षोनिवृत्तये ॥ ४१ ॥

gacchatyupśamaṃ tṛṣṇā kāyavyāyāmaśāntaye | tamī ghanatamaḥkṛṣṇā yathā rakṣonivṛttaye || 41 ||

Craving comes to rest only so that the body's exertion may stop, the way a night thick and black with darkness comes only so that demons may retreat.

तृष्णा सिर्फ इसलिए शांत होती है ताकि शरीर की मेहनत रुक जाए, जैसे घने काले अंधेरे वाली रात सिर्फ इसलिए आती है ताकि राक्षस पीछे हट जाएं।

1.17.42

तावन्मुह्यत्ययं मूको लोको विलुलिताशयः । यावदेवानुसंधत्ते तृष्णा विषविषूचिका ॥ ४२ ॥

tāvanmuhyatyayaṃ mūko loko vilulitāśayaḥ | yāvadevānusaṃdhatte tṛṣṇā viṣaviṣūcikā || 42 ||

This silent world stays confused, its mind shaken, only for as long as craving -- a poisonous cholera -- keeps its hold on it.

यह गूंगी दुनिया तब तक ही भ्रमित रहती है, इसका मन तब तक ही हिला रहता है, जब तक तृष्णा नाम की यह जहरीली हैजा इसे जकड़े रहती है।

1.17.43

लोकोऽयमखिलं दुःखं चिन्तयोज्झितयोज्झति । तृष्णाविषूचिकामन्त्रश्चिन्तात्यागो हि कथ्यते ॥ ४३ ॥

loko'yamakhilam duḥkham cintayojjhitayojjhati | tṛṣṇāviṣūcikāmantraścintātyāgo hi kathyate || 43 ||

When this world gives up worry, it gives up all its sorrow along with it; giving up worry, indeed, is said to be the cure -- the mantra -- for the poisonous cholera called craving.

जब यह दुनिया चिन्ता को छोड़ देती है, तो इसके साथ अपना सारा दुख भी छोड़ देती है; चिन्ता को छोड़ देना ही तृष्णा नामक जहरीले हैजे का इलाज, यानी मंत्र, कहा जाता है।

1.17.44

तृणपाषाणकाष्ठादिसर्वमामिषशङ्कया । आददाना स्फुरत्यन्ते तृष्णा मत्स्यी ह्रदे यथा ॥ ४४ ॥

tṛṇapāṣāṇakāṣṭhādisarvamāmiṣaśaṅkayā | ādadānā sphuratyante tṛṣṇā matsyī hrade yathā || 44 ||

Craving grabs at grass, stone, wood, and everything else, mistaking each for food, and in the end it flails and dies, like a fish in a pond that swallows the bait.

तृष्णा घास, पत्थर, लकड़ी और बाकी सब कुछ को खाना समझकर पकड़ लेती है, और आखिर में तड़पकर मर जाती है, जैसे तालाब में कोई मछली चारा निगल लेती है।

1.17.45

रोगार्तिरङ्गनातृष्णा गम्भीरमपि मानवम् । उत्तानतां नयन्त्याशु सूर्याशव इवाम्बुजम् ॥ ४५ ॥

rogārtiraṅganātṛṣṇā gambhīramapi mānavam | uttānatāṃ nayantyaśu sūryāśava ivāmbujam || 45 ||

Craving, the actress who plays out the pain of disease, quickly turns even a deep, dignified man shallow, just as the sun's rays make a lotus flower open flat.

तृष्णा, जो बीमारी के दर्द को निभाने वाली एक अभिनेत्री है, एक गंभीर और गहरे इंसान को भी पल भर में उथला बना देती है, जैसे सूरज की किरणें कमल के फूल को पूरी तरह खोल देती हैं।

1.17.46

अन्तःशून्या ग्रन्थिमत्यो दीर्घस्वाङ्कुरकण्टकाः । मुक्तामणिप्रिया नित्यं तृष्णा वेणुलता इव ॥ ४६ ॥

antaḥśūnyā granthimatyo dīrghasvāṅkurakaṇṭakāḥ | muktaamaṇipriyā nityaṃ tṛṣṇā veṇulatā iva || 46 ||

Craving is always like a bamboo plant: empty inside, full of knots, its own new shoots are long thorns, yet it is always fond of pearls.

तृष्णा हमेशा बांस के पौधे जैसी है: अंदर से खाली, गांठों से भरी, इसकी अपनी नई कोंपलें ही लंबे कांटे हैं, फिर भी इसे हमेशा मोतियों से लगाव रहता है।

1.17.47

अहो बत महच्चित्रं तृष्णामपि महाधियः । दुच्छेदामपि कृन्तन्ति विवेकेनामलासिना ॥ ४७ ॥

aho bata mahaccitraṃ tṛṣṇāmapī mahādhiyaḥ | ducchēdāmapī kṛntanti vivēkēnāmalāsina || 47 ||

Oh, what a great wonder -- even craving, hard as it is to cut, is cut down by truly wise people, using the clean sword of discernment.

वाह, कितनी बड़ी अनोखी बात है -- तृष्णा को काटना कितना भी मुश्किल हो, सच में समझदार लोग इसे विवेक की साफ तलवार से काट देते हैं।

1.17.48

नासिधारा न वज्रार्चिर्न तप्तायःकर्णार्चिषः । तथा तीक्ष्णा यथा ब्रह्मस्तृष्णेयं हृदि संस्थिता ॥ ४८ ॥

nāsīdhārā na vajrārcirna taptāyaḥkaṇārciṣaḥ | tathā tīkṣṇā yathā brahmanastṛṣṇeyam hṛdi samsthitā || 48 ||

Sage, not the edge of a sword, not the flash of a thunderbolt, not the flame of a red-hot spark of iron, is as sharp as this craving sitting in the heart.

हे मुनि, न तो तलवार की धार, न वज्र की चमक, न तपे हुए लोहे की चिंगारी की आग -- इनमें से कोई भी उतनी तेज नहीं है जितनी दिल में बैठी यह तृष्णा है।

1.17.49

उज्ज्वलाऽसिततीक्ष्णाग्रा स्नेहदीर्घदशा परा । प्रकाशा दाहदुःस्पर्शा तृष्णा दीपशिखा इव ॥ ४९ ॥

ujjvalā'sitatīkṣṇāgrā snehadīrghadaśā parā | prakāśā dāhaduḥsparśā tṛṣṇā dīpaśikhā iva || 49 ||

Craving is like the flame of a lamp: blazing bright, its tip sharp and black, its wick long and soaked in oil, giving light all around, yet burning and painful to touch.

तृष्णा दीये की लौ जैसी है: तेज चमकती हुई, जिसका सिरा तीखा और काला है, जिसकी बत्ती लंबी और तेल में डूबी है, जो चारों तरफ रोशनी देती है, फिर भी छूने पर जलाती और दर्द देती है।

1.17.50

अपि मेरुसमं प्राज्ञमपि शूरमपि स्थिरम् । तृणीकरोति तृष्णैका निमेषेण नरोत्तमम् ॥ ५० ॥

api merusamaṁ prājñamapi śūramapi sthiram | tṛṇīkaroti tṛṣṇaikā nimeṣeṇa narottamam || 50 ||

Craving alone, in the blink of an eye, turns even the best of men -- as steady as Mount Meru, wise, brave, and firm -- into a mere blade of grass.

तृष्णा अकेली, पलक झपकते ही, सबसे अच्छे इंसान को भी -- जो मेरु पर्वत जितना अडिग, बुद्धिमान, बहादुर और मजबूत हो -- एक साधारण तिनके जैसा बना देती है।

1.17.51

संस्तीर्णगहना भीमा घनजालरजोमयी । सान्धकारोग्रनीहारा तृष्णा विन्ध्यमहातटी ॥ ५१ ॥

saṁstīrṇagahanā bhīmā ghanajālarajomayī | sāndhakārogranīhārā tṛṣṇā vindhyamahātātī || 51 ||

Craving is like the great slopes of the Vindhya mountains: spread out and thick with dense growth, terrible, full of thick clouds of dust, and covered in a fierce mist mixed with darkness.

तृष्णा विन्ध्य पर्वत की बड़ी ढलानों जैसी है: दूर तक फैली और घने जंगल से भरी, भयानक, धूल के घने बादलों से ढकी, और अंधेरे में मिली हुई भीषण धुंध से घिरी हुई।

एकैव सर्वभुवनान्तरलब्धलक्ष्या दुर्लक्ष्यतामुपगतैव वपुःस्थितैव । तृष्णा स्थिता जगति चञ्चलवीचिमाले क्षीरोदकाम्बुतरले
मधुरेव शक्तिः ॥ ५२ ॥

*ekaiva sarvabhuvanāntaralabdhalakṣyā durlakṣyatāmupagataiva vapuḥsthitaiva | tṛṣṇā sthitā jagati
cañcalavīcimāle kṣīrodakāmbutarale madhureva śaktiḥ || 52 ||*

Craving is one alone, yet its mark is found within every world; it stays right in the body itself, even though it cannot easily be seen or pointed to. It stays in this world the way sweetness stays in the restless, shimmering waves of milk mixed with water -- one and the same everywhere, yet impossible to grasp.

तृष्णा एक ही है, फिर भी इसका निशाना हर दुनिया के अंदर मिलता है; यह शरीर में ही टिकी रहती है, भले ही इसे आसानी से देखा या पहचाना न जा सके। यह इस दुनिया में वैसे ही रहती है जैसे दूध और पानी की बेचैन, चमकती लहरों में मिठास रहती है -- हर जगह एक जैसी, फिर भी पकड़ में न आने वाली।

Chapter 18

1.18.1

श्रीराम उवाच । आर्द्रान्ततन्त्रीगहनो विकारी परिपातवान् । देहः स्फुरति संसारे सोऽपि दुःखाय केवलम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | ādrāntatrantīgahano vikārī paripātavān | dehaḥ sphurati saṁsāre so'pi duḥkhāya kevalam || 1 ||

Shri Rama said: This body, packed inside with wet strings of gut, always changing, always falling apart, shows itself in this world only to bring suffering.

श्री राम ने कहा: यह शरीर, जिसके अंदर गीली आंतों की डोरियां भरी हैं, हमेशा बदलता रहता है, हमेशा टूटता-बिगड़ता रहता है, और यह इस संसार में सिर्फ दुख देने के लिए ही दिखाई देता है।

1.18.2

अज्ञोऽपि तज्ज्ञसदृशो वलितात्मचमत्कृतिः युक्त्या भव्योऽप्यभव्योऽपि न जडो नापि चेतनः ॥ २ ॥

ajñō'pi tajjñasadṛśo valitātmacamatkṛtiḥyuktyā bhavyo'pyabhavyo'pi na jaḍo nāpi cetanaḥ || 2 ||

Though the body knows nothing, it seems as if it knows; it is full of a strange wonder about itself. Thought about carefully, it seems fit at one time and unfit at another; it is neither lifeless matter nor a conscious being.

यह शरीर कुछ नहीं जानता, फिर भी ऐसा लगता है जैसे यह कुछ जानता हो; इसमें अपने बारे में एक अजीब सा चमत्कार भरा है। गौर से सोचें तो कभी यह ठीक लगता है, कभी गलत लगता है; यह न तो निर्जीव पदार्थ है, न ही सचेत जीव है।

1.18.3

जडाजडदृशोर्मध्ये दोलायितदुराशयः । अविवेकी विमूढात्मा मोहमेव प्रयच्छति ॥ ३ ॥

jaḍājaḍadṛśormadhye dolāyitadurāśayaḥ | avivēkī vimūḍhātmā mōhamēva prayacchati || 3 ||

It hangs between looking sentient and looking lifeless, and it wavers with a confused, uncertain mind. Being without judgment and deeply deluded, it produces only confusion.

यह सचेत और निर्जीव दिखने के बीच झूलता रहता है, और उलझी हुई, अनिश्चित सोच से डोलता है। बिना विवेक के, गहरे भ्रम में डूबा हुआ, यह सिर्फ भ्रम ही पैदा करता है।

1.18.4

स्तोकेनानन्दमायाति स्तोकेनायाति खेदिताम् । नास्ति देहसमः शोच्यो नीचो गुणबहिष्कृतः ॥ ४ ॥

stokēnānandamāyāti stokēnāyāti khēditām | nāsti dēhasamaḥ śocyō nīcō guṇabahiṣkṛtaḥ || 4 ||

With a small thing it feels joy, and with a small thing it feels pain. Nothing is as pitiable as the body — a low thing, empty of any good quality.

थोड़ी सी बात से यह खुश हो जाता है, और थोड़ी सी बात से दुखी हो जाता है। शरीर जितना दयनीय कुछ भी नहीं है — यह नीच है, इसमें कोई अच्छा गुण नहीं है।

1.18.5

आगमापायिना नित्यं दन्तकेसरशालिना । विकासस्मितपुष्पेण प्रतिक्षणमलंकृतः ॥ ५ ॥

āgamāpāyinā nityaṁ dantakēsaraśālīnā | vikāsaśmitapuṣpēṇa pratikṣaṇamalaṅkṛtaḥ || 5 ||

At every moment it is decorated by a flower that keeps opening and fading: teeth as its filaments, a smile as its blossom.

हर पल यह एक ऐसे फूल से सजा रहता है जो खिलता है और मुरझा जाता है — इसके रेशे दांत हैं, और खिलती हुई मुस्कान इसका फूल है।

1.18.6

भुजशाखो घनस्कन्धो द्विजस्तम्भशुभस्थितिः । लोचनानिविलाक्रान्तः शिरःपीठबृहत्फलः ॥ ६ ॥

bhujashākho ghanaskandho dvijastambhashubhasthitiḥ | lochanānilivilākrāntaḥ śiraḥpīṭhabṛhatphalaḥ || 6 ||

Its arms are branches, its trunk is thick, its teeth stand like well-placed pillars; its eyes move over it like bees, and its head is its great fruit.

इसकी भुजाएं डालियां हैं, इसका धड़ मोटा तना है, इसके दांत खंभों की तरह करीने से जमे हैं; इसकी आंखें भौरों की तरह इस पर मंडराती हैं, और इसका सिर इसका बड़ा फल है।

1.18.7

श्रवदन्तरसग्रस्तो हस्तपादसुपल्लवः । गुल्मवान्कार्यसंघातो विहङ्गमकृतास्पदः ॥ ७ ॥

śravadantarasagrasto hastapādasupallavaḥ | gulmavāṅkāryasaṅghāto vihaṅgamakṛtāspadaḥ || 7 ||

It drips with sap on the inside; its hands and feet are like tender new shoots; it has thickets of growth all over it, a whole bundle of activities going on, and birds make it their home.

इसके अंदर से रस टपकता रहता है; इसके हाथ-पैर कोमल नई कोंपलों जैसे हैं; इस पर झाड़-झंखाड़ जैसी गांठें हैं, यह ढेर सारे कामों का जमावड़ा है, और पंछी इसे अपना घर बना लेते हैं।

1.18.8

सच्छायो देहवृक्षोऽयं जीवपान्थगणास्पदः । कस्यात्मीयः कस्य पर आस्थानास्थे किलात्र के ॥ ८ ॥

sacchāyo dehavṛkṣo'yaṁ jīvapānthagaṇāspadaḥ | kasyātmīyaḥ kasya para āsthānāsthe kilātra ke || 8 ||

This tree of the body, giving pleasant shade, is a resting place for crowds of traveling souls passing through life. Whose own is it? To whom does it not belong? What here truly deserves trust, and what deserves distrust?

यह देह रूपी वृक्ष अच्छी छाया देता है, और यह जीवन भर यात्रा करते हुए जीवों के झुंड के लिए एक विश्रामस्थल है। यह किसका अपना है? यह किसका पराया है? यहां सच में भरोसा करने लायक क्या है, और अविश्वास करने लायक क्या है?

1.18.9

तात संतरणार्थेन गृहीतायां पुनःपुनः । नावि देहलतायां च कस्य स्यादात्मभावना ॥ ९ ॥

tāta saṁtaraṇārtheṇa grhītāyāṁ punaḥpunaḥ | nāvi dehalatāyāṁ ca kasya syādātmabhāvanā || 9 ||

Dear one, this vine-like body is like a boat taken up again and again only to cross over the sea of existence. Who could feel 'I am this' about it?

हे प्रिय, यह लता जैसा शरीर तो बस पार जाने के लिए बार-बार ली गई एक नाव है। इसे अपना 'मैं' कौन मान सकता है?

1.18.10

देहनाम्नि वने शून्ये बहुगर्तसमाकुले । तनूरुहासंख्यतरौ विश्वासं कोऽधिगच्छति ॥ १० ॥

dehanāmnī vane śūnye bahugartasamākule | tanūruhaśaṅkhyatarau viśvāsaṁ ko'dhigacchati || 10 ||

In this forest called the body — hollow, full of many pits, its countless trees being nothing but hairs — who can feel safe there?

शरीर नाम के इस जंगल में — जो खोखला है, अनेक गड्ढों से भरा है, और जिसके अनगिनत पेड़ असल में सिर्फ रोएं हैं — इसमें कौन भरोसा कर सकता है?

1.18.11

मांसस्राव्यस्थिवलिते शरीरपटहेऽदृढे । मार्जारवदहं तात तिष्ठाम्यत्र गतध्वनौ ॥ ११ ॥

māṃsasnāyvastivvalite śarīrapaṭhe'dṛḍhe | mārjāravadaham tāta tiṣṭhāmyatra gatadhvanau || 11 ||

In this weak drum of a body, bound together with flesh, sinews, and bone, I stay here, dear one, like a cat where the sound has stopped.

मांस, नसों और हड्डियों से बंधे इस कमज़ोर ढोल जैसे शरीर में, हे प्रिय, मैं यहां एक बिल्ली की तरह बैठा हूं, जहां आवाज़ थम चुकी है।

1.18.12

संसारारण्यसंरूढो विलसच्चित्तमर्कटः । चिन्तामञ्जरिताकारो दीर्घदुःखघुणक्षतः ॥ १२ ॥

saṃsārāṇyasaṃrūḍho vilasaccittamarkaṭaḥ | cintāmañjaritākāro dīrghaduḥkhaḡhaḡḡakṣataḥ || 12 ||

It has grown up in the forest of this world, with the restless mind as a monkey playing on it; its flower-clusters are nothing but worries, and long sorrow bores into it like a worm eating wood. यह संसार रूपी जंगल में उगा है, और इस पर खिलवाड़ करता हुआ मन ही इसका बंदर है; इसके गुच्छों में जो फूल खिलते हैं वे दरअसल चिंताएं हैं, और लंबे समय का दुख इसे उसी तरह खा जाता है जैसे घुन लकड़ी को खा जाता है।

1.18.13

तृष्णाभुजङ्गमीगेहं कोप काक कृतालयः । स्मितपुण्योद्गमः श्रीमाञ्छुभाशुभमहाफलः ॥ १३ ॥

trṣṇābhujagāmīgehaḡ kopa kāka kṛtālayaḥ | smitapuṇyodgamaḥ śrīmāñchubhāśubhamahāphalaḥ || 13 ||

It is a home for the she-snake called craving, and a nest built by the crow called anger. It is where a smile of goodness sometimes sprouts; it looks splendid, and it bears great fruits, both good and bad.

यह तृष्णा नाम की मादा सांपिन का घर है, और क्रोध नाम के कौवे ने भी यहां अपना घोंसला बना रखा है। यहीं कभी-कभी पुण्य की मुस्कान भी खिल उठती है; यह देखने में शानदार लगता है, और यह अच्छे-बुरे दोनों तरह के बड़े फल देता है।

1.18.14

सुस्कन्धोघलताजालो हस्तस्तबकसुन्दरः । पवनस्पन्दिताशेषस्वाङ्गावयवपल्लवः ॥ १४ ॥

suskandhoghalatājālo hastastabakasundaraḥ | pavanaspantitāśeṣasvāḡgāvayavapallavaḥ || 14 ||

It has a fine web of vine-like trunks, its hands are as lovely as flower-clusters, and every one of its limbs is a tender shoot trembling in the wind.

इसमें तने जैसी लताओं का एक सुंदर जाल है, इसके हाथ फूलों के गुच्छों जैसे सुंदर हैं, और इसके सारे अंग हवा में कांपती कोमल कोंपलों जैसे हैं।

1.18.15

सर्वेन्द्रियखगाधारः सुजानुस्तम्भ उन्नतः । सरसच्छायया युक्तः कामपान्थनिषेवितः ॥ १५ ॥

sarvendriyakhaḡadhāraḥ sujānustambha unnataḥ | sarasacchāyayā yuktaḥ kāmapānthanisevitaḥ || 15 ||

It is a perch for all the senses, which sit on it like birds. It stands tall, its knees like fine pillars, and it gives cool, pleasant shade where travelers driven by desire come to rest.

यह सभी इंद्रियों का ठिकाना है, जो पंछियों की तरह इस पर बैठी रहती हैं। इसके घुटने सुंदर खंभों की तरह ऊंचे खड़े हैं, यह ठंडी सुहानी छाया देता है, और इच्छा से प्रेरित यात्री इसकी छाया में विश्राम करने आते हैं।

1.18.16

मूर्धसंजनिताऽऽदीर्घशिरोरुहतृणावलिः । अहंकारगृध्रकृतकुलायः सुषिरोदरः ॥ १६ ॥

mūrdhasamjanitā'ādirghasīroruhatrṇāvaliḥ | ahaṁkāragṛdhra-kṛtakulāyaḥ suṣīrodarah || 16 ||

Growing from its head are rows of grass — its long hair; the vulture called ego has built its nest on it; and inside, its belly is hollow.

इसके सिर से घास की कतारें उगी हैं — यानी इसके लंबे बाल; अहंकार नाम का गिद्ध इस पर अपना घोंसला बना चुका है; और अंदर से इसका पेट खोखला है।

1.18.17

विच्छिन्नवासनाजालमूलत्वादुर्लवाकृतिः । व्यायामविरसः कायप्लक्षोऽयं न सुखाय मे ॥ १७ ॥

vicchinnavāsanājālamūlatvādurlavākṛtiḥ | vyāyāmavirasaḥ kāyaplakṣo'yaṁ na sukhāya me || 17 ||

Because its root is a tangled web of desires, this fig tree of a body is hard to cut down; no effort spent on it brings any pleasure — it is not for my happiness.

इसकी जड़ इच्छाओं के उलझे हुए जाल जैसी है, इसलिए इस अंजीर के पेड़ जैसे शरीर को काटना मुश्किल है; इस पर चाहे जितनी मेहनत करो, इसमें कोई आनंद नहीं मिलता — यह मेरे सुख के लिए नहीं है।

1.18.18

कलेवरमहंकारगृहस्थस्य महागृहम् । लुठत्वभ्येतु वा स्थैर्यं किमनेन मुने मम ॥ १८ ॥

kalevaramahaṁkāragṛhasthasya mahāgṛhaṁ | luṭhatvabhyetu vā sthairyam kimanena mune mama || 18 ||

This body is the great house of a householder named Ego. Whether it falls down or stands firm, what does that matter to me, sage?

यह शरीर अहंकार नाम के गृहस्थ का बड़ा घर है। यह गिरे या स्थिर रहे, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है, हे मुनि?

1.18.19

पङ्क्तिबद्धेन्द्रियपशुं वलत्तृष्णागृहाङ्गनम् । रागरञ्जितसर्वाङ्गं नेष्टं देहगृहं मम ॥ १९ ॥

pañktibaddhendriyapaśuṁ valattrṣṇāgrhāṅganam | rāgarañjitasarvāṅgaṁ neṣṭaṁ dehagrhaṁ mama || 19 ||

This house of the body — where the senses are tied up in a row like animals, where craving wanders about the courtyard, and where every part is stained with passion — I do not want it.

यह देह रूपी घर — जिसमें इंद्रियां जानवरों की तरह कतार में बंधी हैं, जिसके आंगन में तृष्णा घूमती रहती है, और जिसका हर हिस्सा राग-रंग में रंगा है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.20

पृष्ठास्थिकाष्ठसंघट्टपरिसंकटकोटरम् । आन्तरज्जुभिराबद्धं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २० ॥

prṣṭhāsthikāṣṭhasaṁghaṭṭaparisaṅkata-koṭaram | āntrarajjubhirābaddhaṁ neṣṭaṁ dehagrhaṁ mama || 20 ||

This house of the body, its inner spaces packed tight where wooden-like backbones meet and jam together, and everything tied up with ropes of gut — I do not want it.

यह देह रूपी घर — जिसमें लकड़ी जैसी रीढ़ की हड्डियां आपस में टकराकर तंग जगहें बना देती हैं, और जो आंतों की रस्सियों से बंधा है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.21

प्रसृतस्नायुतन्त्रीकं रक्ताम्बुकृतकर्दमम् । जरामङ्गोलधवलं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २१ ॥

prasṛtasnāyutantrīkaṃ raktāmbukṛtakardamam | jarāmaṅkoladhavalam neṣṭam dehaḡṛhaṃ mama || 21 ||

Its sinews stretch out like taut cords; blood and water together have turned to mud in it; old age has turned it white like the mankola flower — this house of the body is not dear to me.

इसकी नसें डोरियों की तरह तनी हुई फैली हैं; खून और पानी मिलकर इसमें कीचड़ बन गए हैं; बुढ़ापे ने इसे मंकोल के फूल जैसा सफेद कर दिया है — यह देह रूपी घर मुझे प्रिय नहीं है।

1.18.22

चित्तभृत्यकृतानन्तचेष्टावष्टब्धसंस्थिति । मिथ्यामोहमहास्थूणं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २२ ॥

cittabhṛtyakṛtānantaceṣṭāvaṣṭabdhasaṁsthiti | mithyāmohamahāsthūṇaṃ neṣṭam dehaḡṛhaṃ mama || 22 ||

This house of the body stands only because its servant, the mind, works endlessly to hold it up; its one great pillar is nothing but false delusion — I do not want it.

यह देह रूपी घर केवल इसलिए खड़ा है क्योंकि इसका नौकर मन बिना रुके मेहनत करके इसे थामे रहता है; इसका एकमात्र बड़ा खंभा झूठा मोह है — मुझे यह घर नहीं चाहिए।

1.18.23

दुःखार्भककृताक्रन्दं सुखशय्यामनोरमम् । दुरीहादग्धदासीकं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २३ ॥

duḥkhārbhakakṛtākṛandaṃ sukhaśayyāmanoramam | durīhādagdhadāsīkaṃ neṣṭam dehaḡṛhaṃ mama || 23 ||

In this house of the body, a child named sorrow cries and wails, there is a lovely soft bed of pleasure, and a servant-woman who has been burned by base cravings — I do not want it.

इस देह रूपी घर में, दुख नाम का एक बच्चा रोता-बिलखता रहता है, यहां सुख की एक सुंदर मुलायम सेज है, और एक नौकरानी है जो बुरी इच्छाओं से जल चुकी है — मुझे यह घर नहीं चाहिए।

1.18.24

मलाढ्यविषयव्यूहभाण्डोपस्करसंकटम् । अज्ञानक्षारवलितं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २४ ॥

malāḍhyaviṣayavyūhabhāṇḍopaskarasamkṛtaṃ | ajñānakṣāravali taṃ neṣṭam dehaḡṛhaṃ mama || 24 ||

This house of the body is packed with the pots and furniture of sense-pleasures, all of it full of filth, and it is coated all over with the harsh salt of ignorance — I do not want it.

इस देह रूपी घर में विषय-सुखों के बर्तन और सामान ठसाठस भरे हैं, जो सब गंदगी से भरे हैं, और यह पूरा घर अज्ञान के तीखे नमक से पुता हुआ है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.25

गुल्फगुग्गुलुविश्रान्तजानूर्ध्वस्तम्भमस्तकम् । दीघदोर्दारुसुदृढं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २५ ॥

gulphagugguluviśrāntajānūrdhvastambhamastakam | dīghadoradārusudṛḍhaṃ neṣṭam dehaḡṛhaṃ mama || 25 ||

This house of the body has ankles like lumps of resin at its base, pillars rising from the knees up to the head at the top, and long arms as sturdy as wooden beams — I do not want it.

इस देह रूपी घर में टखने राल की गांठों जैसे नीचे टिके हैं, घुटनों से लेकर सिर तक खंभे उठे हैं, और लंबी भुजाएं मजबूत लकड़ी के शहतीरों जैसी हैं — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.26

प्रकटाक्षगवाक्षान्तः क्रीडत्प्रज्ञागृहाङ्गनम् । चिन्तादुहितृकं ब्रह्मन्नेष्टं देहगृहं मम ॥ २६ ॥

prakatākṣagavākṣāntaḥ krīdatprajñāgrhāṅganam | cintāduhitṛkaṁ brahmannēṣṭaṁ dēhagrhaṁ mama || 26 ||

This house of the body has its eyes as clear little windows, and inside its courtyard understanding plays about; it has worry for a daughter — brahmin, I do not want it.

इस देह रूपी घर की आंखें साफ छोटी खिड़कियों जैसी हैं, इसके आंगन में समझ खेलती रहती है, और चिन्ता इसकी बेटी है — हे ब्राह्मण, मुझे यह घर नहीं चाहिए।

1.18.27

मूर्धजाच्छादनच्छन्नकर्णश्रीचन्द्रशालिकम् । आदीर्घाङ्गुलिनिर्व्यूहं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २७ ॥

mūrdhajācchādanacchannakarṇaśrīcandraśālikam | ādīrghāṅgulinirvyūhaṁ nēṣṭaṁ dēhagrhaṁ mama || 27 ||

In this house of the body, the ear is like a fine little balcony, but hair from the head hangs down and hides it; and it has a row of long fingers — I do not want it.

इस देह रूपी घर में कान एक सुंदर छोटी बालकनी जैसा है, पर सिर के बाल लटककर उसे ढक देते हैं, और इसमें लंबी उंगलियों की एक कतार है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.28

सर्वाङ्गकुड्यसंघातघनरोमयवाङ्कुरम् । संशून्यपेटविवरं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २८ ॥

sarvāṅgakuḍyasamghātaghanaromayavāṅkuram | saṁśūnyapēṭavivaraṁ nēṣṭaṁ dēhagrhaṁ mama || 28 ||

In this house of the body, every limb is a wall thick with hair like sprouting barley, and its belly is a hollow, empty basket — I do not want it.

इस देह रूपी घर में हर अंग एक दीवार है जिस पर जौ के अंकुरों जैसे घने रोएं उगे हैं, और इसका पेट एक खाली टोकरी जैसा खोखला है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.29

नखोर्णनाभिनिलयं सरमारणितान्तरम् । भाङ्गारकारिपवनं नेष्टं देहगृहं मम ॥ २९ ॥

nakhorṇanābhinilayaṁ saramāraṇitāntaram | bhāṅgākāripavanaṁ nēṣṭaṁ dēhagrhaṁ mama || 29 ||

In this house of the body, nails, fine body-hair, and the navel are its little nooks; inside, it growls like a dog, and the wind inside it makes a rumbling, roaring sound — I do not want it.

इस देह रूपी घर में नाखून, रोएं और नाभि इसके छोटे-छोटे कोने हैं; इसके भीतर कुत्ते के गुरनि जैसी आवाज़ आती है, और इसके अंदर की हवा गड़गड़ाहट की आवाज़ करती है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.30

प्रवेशनिर्गमव्यग्रवातवेगमनारतम् । वितताक्षगवाक्षं तन्नेष्टं देहगृहं मम ॥ ३० ॥

praveśanirgamavyagravātavegamanāratam | vitatākṣagavākṣaṁ tannēṣṭaṁ dēhagrhaṁ mama || 30 ||

In this house of the body, breath rushes in and out restlessly without pause, and its wide-open eyes are like windows — I do not want it.

इस देह रूपी घर में सांस बिना रुके बेचैनी से अंदर-बाहर आती-जाती रहती है, और इसकी खुली हुई आंखें खिड़कियों जैसी हैं — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.31

जिह्वामर्कटिकाक्रान्तवदनद्वारभीषणम् । दृष्टदन्तास्थिशकलं नेष्टं देहगृहं मम ॥ ३१ ॥

jihvāmarkaṭikākṛāntavadanadvārabhīṣaṇam | dṛṣṭadantāsthīśakalaṃ neṣṭaṃ dehagr̥haṃ mama || 31 ||

This house of the body is frightening: at its mouth-door a little monkey — the tongue — keeps moving about, and inside one can see the bony bits that are its teeth — I do not want it.

यह देह रूपी घर डरावना है: इसके द्वार यानी मुंह पर एक छोटी बंदरिया जैसी जीभ हरकत करती रहती है, और अंदर हड्डी के टुकड़ों जैसे दांत दिखाई देते हैं — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.32

त्वक्सुधालेपमसृणं यन्त्रसंचारचञ्चलम् । मनः सदाखुनोत्खातं नेष्टं देहगृहं मम ॥ ३२ ॥

tvaksudhālepamasṛṇaṃ yantrasaṃcāracac̣calaṃ | manaḥ sadākhunotkhātaṃ neṣṭaṃ dehagr̥haṃ mama || 32 ||

This house of the body is smooth, plastered over with skin like whitewash, restless like a machine in constant motion, and always being dug into by the mind, which behaves like a mouse — I do not want it.

यह देह रूपी घर त्वचा के लेप से चूने जैसा चिकना बना है, किसी यंत्र की तरह हमेशा चंचल रहता है, और मन नाम का चूहा हमेशा इसे अंदर से खोदता रहता है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.33

स्मितदीपप्रभोद्भासि क्षणमानन्दसुन्दरम् । क्षणं व्याप्तं तमःपूरैर्नेष्टं देहगृहं मम ॥ ३३ ॥

smitadīpaprabhodbhāsi kṣaṇamānandasundaram | kṣaṇaṃ vyāptaṃ tamaḥpūrainneṣṭaṃ dehagr̥haṃ mama || 33 ||

This house of the body shines for a moment with the light of a smile, like a lamp, and looks lovely for a moment in joy — but the next moment it is flooded with darkness — I do not want it.

यह देह रूपी घर कभी मुस्कान के दीये की तरह पल भर चमक उठता है, पल भर आनंद से सुंदर दिखता है — लेकिन अगले ही पल अंधेरे की बाढ़ में डूब जाता है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.34

समस्तरोगायतनं वलीपलितपत्तनम् । सर्वाधिसारगहनं नेष्टं देहगृहं मम ॥ ३४ ॥

samastarogāyatanam valīpalitapattanam | sarvādhisāragahanaṃ neṣṭaṃ dehagr̥haṃ mama || 34 ||

This house of the body is home to every disease, a whole city of wrinkles and grey hair, and a thick jungle made from the very essence of every worry — I do not want it.

यह देह रूपी घर हर बीमारी का घर है, झुर्रियों और सफेद बालों का पूरा शहर है, और हर तरह की चिंता के सार से बना घना जंगल है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.35

अक्षर्क्षोभविषमा शून्या निःसारकोटरा । तमोगहनदिक्कुञ्जा नेष्टा देहाटवी मम ॥ ३५ ॥

akṣarkṣaṣobhaviṣamā śūnyā niḥsārakoṭarā | tamogahanadikkuñjā neṣṭā dehāṭavī mama || 35 ||

This forest of the body is rough and uneven from bears crashing through it, empty inside, its hollows worthless, and its groves in every direction are thick with darkness — I do not want it.

यह देह रूपी जंगल भालुओं की हलचल से ऊबड़-खाबड़ है, अंदर से खाली है, इसकी खोखली जगहें बेकार हैं, और इसकी झाड़ियां हर दिशा में अंधेरे से घनी हैं — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.36

देहालयं धारयितुं न शक्नोमि मुनीश्वर । पङ्कमग्रं समुद्धर्तुं गजमल्पबलो यथा ॥ ३६ ॥

dehālayaṃ dhārayituṃ na śaknōmi munīśvara | paṅkamagnaṃ samuddhartuṃ gajamalpabalo yathā || 36 ||

Greatest of sages, I cannot go on holding up this body-house — it is like someone with little strength trying to pull an elephant out of the mud.

हे मुनियों में श्रेष्ठ, मैं इस देह रूपी घर को अब और नहीं संभाल सकता — जैसे कमज़ोर आदमी कीचड़ में धंसे हाथी को बाहर नहीं खींच सकता।

1.18.37

किं श्रिया किं च राज्येन किं कायेन किमीहितैः । दिनैः कतिपयैरेव कालः सर्वं निकृन्तति ॥ ३७ ॥

kiṃ śriyā kiṃ ca rājyena kiṃ kāyena kimīhitaiḥ | dinaiḥ katipayaireva kālaḥ sarvaṃ nikṛntati || 37 ||

What good is wealth? What good is a kingdom? What good is this body? What good are all our efforts? In just a few days, time cuts everything down.

धन-दौलत से क्या फायदा? राज्य से क्या फायदा? इस शरीर से क्या फायदा? हमारी सारी कोशिशों से क्या फायदा? कुछ ही दिनों में समय सब कुछ काट डालता है।

1.18.38

रक्तमांसमयस्यास्य सबाह्याभ्यन्तरं मुने । नाशैकधर्मिणो ब्रूहि कैव कायस्य रम्यता ॥ ३८ ॥

raktamāṃsamayasyāsya sabāhyābhyantaraṃ mune | nāśaikadharmino brūhi kaiva kāyasya ramyatā || 38 ||

This body is made of blood and flesh, inside and out, and its only real nature, sage, is to be destroyed. Tell me, what is truly lovely about the body?

यह शरीर अंदर और बाहर दोनों तरफ से खून और मांस से बना है, हे मुनि, और इसका एकमात्र सच्चा स्वभाव नष्ट हो जाना है। मुझे बताइए, इस शरीर में सुंदर क्या है?

1.18.39

मरणावसरे काया जीवं नानुसरन्ति ये । तेषु तात कृतघ्नेषु कैवास्था वद धीमताम् ॥ ३९ ॥

marañāvasare kāyā jīvaṃ nānūsaranti ye | teṣu tāta kṛtaghneṣu kaivāsthā vada dhīmatām || 39 ||

At the time of death, the body does not go along with the soul. Tell me, dear one, what trust should wise people place in such an ungrateful thing?

मृत्यु के समय शरीर आत्मा के साथ नहीं जाता। मुझे बताइए, हे प्रिय, बुद्धिमान लोग ऐसी कृतघ्न चीज़ पर क्या भरोसा करें?

1.18.40

मत्तेभकर्णाग्रचलः कायो लम्बाम्बुभङ्गुरः । न संत्यजति मां यावत्तावदेनं त्यजाम्यहम् ॥ ४० ॥

mattebhakarṇāgracalaḥ kāyo lambāmbubhaṅguraḥ | na saṃtyajati māṃ yāvattāvadenam tyajāmyaham || 40 ||

This body is as unsteady as the flapping tip of a rutting elephant's ear, as fragile as a hanging drop of water. Before it can abandon me, I will abandon it.

यह शरीर मस्त हाथी के कान की नोक जितना अस्थिर है, लटकती हुई पानी की बूंद जितना कमज़ोर है। इससे पहले कि यह मुझे छोड़े, मैं ही इसे छोड़ दूंगा।

1.18.41

पवनस्पन्दतरलः पेलवः कायपल्लवः । जर्जरस्तनुवृत्तश्च नेष्टो मे कटुनीरसः ॥ ४१ ॥

pavanaspaṇḍataralāḥ pelavaḥ kāyapallavaḥ | jarjarastanuvṛttaśca neṣṭo me kaṭunīrasaḥ || 41 ||

This body is a delicate shoot, trembling with every pulse of breath, fragile, worn out, thin, harsh, and without any sweetness — I do not want it.

यह शरीर एक नाजूक कोंपल है, जो सांस की हर धड़कन से कांपता है, कमज़ोर, थका हुआ, दुबला, कड़वा और बेस्वाद है — मुझे यह नहीं चाहिए।

1.18.42

भुक्त्वा पीत्वा चिरं कालं बालपल्लवपेलवाम् । तनुतामेत्य यत्नेन विनाशमनुधावति ॥ ४२ ॥

bhuktvā pītvā ciraṃ kālaṃ bālapallavapelavām | tanutāmetya yatnena vināśamanudhāvati || 42 ||

Though for years it has been fed and given drink, and though great care has made it as delicate and graceful as a tender young shoot, this body still keeps running toward its own destruction.

वर्षों तक इसे खिलाया-पिलाया जाता है, और बड़ी मेहनत से इसे एक कोमल नई कोंपल जैसा सुंदर और नाजूक बनाया जाता है, फिर भी यह शरीर अपने विनाश की ओर ही दौड़ता रहता है।

1.18.43

तान्येव सुखदुःखानि भावाभावमयान्यसौ । भूयोऽप्यनुभवन्कायः प्राकृतो हि न लज्जते ॥ ४३ ॥

tānyeva sukhaduḥkhāni bhāvābhāvamayānyasau | bhūyo'pyanubhavankāyaḥ prākṛto hi na lajjate || 43 ||

Feeling the same pleasures and pains over and over again, each one arising only to vanish, this body, being a coarse, base thing, feels no shame about it at all.

वही सुख-दुख बार-बार महसूस करते हुए — जो बनते हैं और फिर मिट जाते हैं — यह शरीर, जो एक ओछी और गंवार चीज़ है, इसमें कोई शर्म महसूस नहीं करता।

1.18.44

सुचिरं प्रभुतां कृत्वा संसेव्य विभवश्रियम् । नोच्छ्रायमेति न स्थैर्यं कायः किमिति पाल्यते ॥ ४४ ॥

suciraṃ prabhutāṃ kṛtvā saṁsevyā vibhavaśrīyam | nocchrāyameti na sthairyam kāyaḥ kimiti pālyate || 44 ||

Even after ruling for a long time and enjoying wealth and glory, the body never gains any lasting greatness or stability. So why should anyone go on cherishing it?

लंबे समय तक राज करने और धन-वैभव का आनंद लेने के बाद भी, शरीर को कोई स्थायी बड़प्पन या स्थिरता नहीं मिलती। तो फिर इसे संजोकर क्यों रखा जाए?

1.18.45

जराकाले जरामेति मृत्युकाले तथा मृतिम् । सम एवाविशेषज्ञः कायो भोगिदरिद्रयोः ॥ ४५ ॥

jarākāle jarāmeti mṛtyukāle tathā mṛtim | sama evāviśeṣajñaḥ kāyo bhogidaridrayoḥ || 45 ||

When it is time to grow old, the body grows old; when it is time to die, it dies. The body treats a rich man and a poor man exactly the same, making no difference between them.

जब बुढ़ापे का समय आता है, तो शरीर बूढ़ा हो जाता है; जब मौत का समय आता है, तो वैसे ही मर जाता है। शरीर अमीर और गरीब दोनों के साथ बिल्कुल एक जैसा व्यवहार करता है, इनमें कोई फर्क नहीं करता।

1.18.46

संसाराम्बोधिजठरे तृष्णाकुहरकान्तरे । सुप्तस्तिष्ठति मुक्तेहो मूकोऽयं कायकच्छपः ॥ ४६ ॥

saṃsārāmbhodhijaṭhare tṛṣṇākuharakāntare | suptastiṣṭhati mukteho mūko'yaṃ kāyakacchapah || 46 ||

In the depths of the ocean of this world, hidden inside a deep cave of craving, this silent tortoise called the body lies asleep, all its striving given up.

इस संसार रूपी समुद्र की गहराई में, तृष्णा की गहरी गुफा के भीतर, शरीर नाम का यह मूक कछुआ सोया पड़ा है, इसकी सारी कोशिश खत्म हो चुकी है।

1.18.47

दहनैकार्थयोग्यानि कायकाष्ठानि भूरिशः । संसाराब्धाविहोह्यन्ते कंचित्तेषु नरं विदुः ॥ ४७ ॥

dahanaikekārtṥayogyāni kāyakāṣṭhāni bhūriśaḥ | saṃsārābhdāvihohyante kaṃcittēṣu naraṃ viduḥ || 47 ||

Bodies are nothing but countless logs of wood, good only for burning, drifting along in the ocean of this world — yet people look at one of these logs and think, 'here is a man.'

शरीर तो बस जलाने लायक लकड़ी के अनगिनत लट्ठों जैसे हैं, जो इस संसार रूपी समुद्र में बहते रहते हैं — फिर भी लोग इनमें से किसी एक लट्ठे को देखकर सोचते हैं, 'यह तो कोई इंसान है।'

1.18.48

दीर्घदौरात्म्यवलया निपातफलपातया । न देहलतया कार्यं किंचिदस्ति विवेकिनः ॥ ४८ ॥

dīrghadourātmyaavalayā nipātaṭṭhalapātayā | na dehalatayā kāryaṃ kiṃcidasti vivekinaḥ || 48 ||

This vine that is the body has twisted itself up with long-standing wickedness, and the only fruit it ever bears is a fall. A person of true understanding has nothing at all to do with this body-vine.

यह देह रूपी लता पुरानी बुराई से ऐंठी हुई है, और इसका फल सिर्फ पतन ही है। जिस व्यक्ति में सच्ची समझ है, उसे इस देह रूपी लता से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

1.18.49

मज्जन्कर्मकोशेषु झटित्येव जरां गतः । न ज्ञायते यात्यचिरात्कः कथं देहदर्दुरः ॥ ४९ ॥

majjankardamakoṣeṣu jhaṭityeva jarāṃ gataḥ | na jñāyate yātyacirātkakaḥ kathaṃ dehadarduraḥ || 49 ||

Like a frog sinking into holes of mud, this body suddenly reaches old age. No one knows how or when this frog-like body will quickly slip away.

कीचड़ के गड्ढों में धंसते हुए मेंढक की तरह, यह शरीर अचानक बुढ़ापे तक पहुंच जाता है। किसी को पता नहीं चलता कि यह मेंढक जैसा शरीर कब और कैसे जल्दी ही खिसक जाएगा।

1.18.50

निःसारसकलारम्भाः कायाश्चपलवायवः । रजोमार्गेण गच्छन्तो दृश्यन्ते नेह केनचित् ॥ ५० ॥

niḥsārasakalārambhāḥ kāyāścapalavāyavaḥ | rajomārgeṇa gacchanto dṛśyante neha kenacit || 50 ||

Bodies are like fickle gusts of wind — everything they undertake comes to nothing. As they move along their dusty path, no one here truly sees them for what they are.

शरीर तेज़ हवा के झोंकों जैसे हैं — इनके सारे काम बेकार साबित होते हैं। ये जिस धूल भरे रास्ते पर चलते हैं, उस पर कोई इन्हें सच में पहचान नहीं पाता।

1.18.51

वायोर्दीपस्य मनसो गच्छतो ज्ञायते गतिः । आगच्छतश्च भगवञ्छरीरस्य कदाचन ॥ ५१ ॥

vāyordīpasya manaso gacchato jñāyate gatiḥ | āgacchatascha bhagavañcharīrasya kadācana || 51 ||

Does anyone truly know how the wind moves, how a lamp's flame goes, how the mind moves? And does anyone, Lord, ever truly know how the body comes or goes?

क्या कोई सच में जानता है कि हवा कैसे चलती है, दीये की लौ कैसे चलती है, मन कैसे चलता है? और हे भगवन, क्या कोई कभी सच में जानता है कि यह शरीर कैसे आता है या कैसे चला जाता है?

1.18.52

बद्धास्था ये शरीरेषु बद्धास्था ये जगत्स्थितौ । तान्मोहमदिरोन्मत्तान्धिग्धिगस्तु पुनःपुनः ॥ ५२ ॥

baddhāsthā ye śarīreṣu baddhāsthā ye jagatsthitau | tānmohamadironmattāndhigdhigastu punaḥpunaḥ || 52 ||

Shame, shame, again and again, on those who place their trust in the body, and on those who place their trust in worldly life — they are simply drunk on the wine of delusion.

जो लोग शरीर पर भरोसा करते हैं, जो लोग सांसारिक जीवन पर भरोसा करते हैं — उन पर बार-बार धिक्कार है, धिक्कार है, वे तो बस मोह की शराब में मस्त हैं।

1.18.53

नाहं देहस्य नो देहो मम नायमहं तथा । इति विश्रान्तचित्ता ये ते मुने पुरुषोत्तमाः ॥ ५३ ॥

nāhaṁ dehasya no deho mama nāyamahaṁ tathā | iti viśrāntacittā ye te mune puruṣottamāḥ || 53 ||

'I do not belong to the body, the body does not belong to me, and I am not this body' — those whose minds have settled into this understanding, sage, are the finest among men.

'मैं शरीर का नहीं हूँ, शरीर मेरा नहीं है, और मैं यह शरीर नहीं हूँ' — जिनका मन इस समझ में शांत होकर टिक गया है, हे मुनि, वे ही मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ हैं।

1.18.54

मानावमानबहुला बहुलाभमनोरमाः । शरीरमात्रबद्धास्थं घ्नन्ति दोषदृशो नरम् ॥ ५४ ॥

mānāvamānabahulā bahulābhamanoramāḥ | śarīramātrabaddhāsthāṁ ghnanti doṣadṛśo naram || 54 ||

These conditions — full of honor and dishonor, delightful with their many gains — destroy the man of faulty understanding who has placed all his trust merely in the body.

मान-अपमान से भरी और बहुत सारे लाभ से लुभावनी लगने वाली ये सांसारिक स्थितियाँ, उस भ्रमित समझ वाले आदमी को बर्बाद कर देती हैं जिसने अपना सारा भरोसा सिर्फ शरीर पर टिका रखा है।

1.18.55

शरीरश्चभ्रशायिन्या पिशाच्या पेशलाङ्गया । अहंकारचमत्कृत्या छलेन छलिता वयम् ॥ ५५ ॥

śarīraśvabhraśāyinyā piśācyā peśalāṅgayā | ahaṁkāracamatkṛtyā chaleṇa chalitā vayam || 55 ||

We have been completely deceived by a demoness who lives hidden in the pit of the body — soft-limbed, working her trick through the deceit called ego.

हमें एक पिशाचिनी ने पूरी तरह धोखा दिया है, जो शरीर रूपी गड्ढे के अंदर छिपी रहती है — कोमल शरीर वाली, जो अहंकार नाम की चाल से हमें छलती है।

1.18.56

प्रज्ञा वराका सर्वैव कायबद्धास्थयानया । मिथ्याज्ञानकुराक्षस्या छलिता कष्टमेकिका ॥ ५६ ॥

prajñā varākā sarvaiva kāyabaddhāsthayānaya | mithyājñānakurākṣasyā chalitā kaṣṭamekikā || 56 ||

Poor understanding, all alone, is tricked completely — how sad — by this demoness called false knowledge, whose whole attachment clings to the body.

बेचारी बुद्धि, बिल्कुल अकेली, इस राक्षसी से पूरी तरह ठगी जाती है — कितने दुख की बात है — इस राक्षसी का नाम है झूठा ज्ञान, और यह शरीर से पूरी तरह चिपकी रहती है।

1.18.57

न किंचिदपि दृश्येऽस्मिन्सत्यं तेन हतात्मना । चित्रं दग्धशरीरेण जनता विप्रलभ्यते ॥ ५७ ॥

na kiñcidapi dṛśye'smin satyaṁ tena hatātmanā | citraṁ dagdhaśarīreṇa janatā vipralabhyate || 57 ||

Nothing at all that we see here is real. And yet, strangely, people are fooled by this ruined, worn-out body, of all things.

जो कुछ भी हम यहां देखते हैं, उसमें कुछ भी सच नहीं है। फिर भी अजीब बात है कि लोग इसी बर्बाद, धिसे-पिटे शरीर से धोखा खा जाते हैं।

1.18.58

दिनैः कतिपयैरेव निर्झराम्बुकणो यथा । पतत्ययमयत्नेन जरठः कायपल्लवः ॥ ५८ ॥

dinaiḥ katipayaireva nirjharāmbukaṇo yathā | patatyayamayatnena jarṭhaḥ kāyapallavaḥ || 58 ||

In just a few days, like a drop of water falling from a waterfall, this old, withered shoot of a body simply falls away, with no effort at all.

बस कुछ ही दिनों में, जैसे झरने से पानी की एक बूंद गिरती है, वैसे ही यह बूढ़ा और मुरझाया हुआ शरीर रूपी कोंपल बिना किसी मेहनत के गिर जाता है।

1.18.59

कायोऽयमचिरापायो बुद्बुदोऽम्बुनिधाविव । व्यर्थं कार्यपरावर्ते परिस्फुरति निष्फलः ॥ ५९ ॥

kāyo'yamacirāpāyo budbudho'mbunidhāuiva | vyarthaṁ kāryaparāvarte parisphurati niṣphalaḥ || 59 ||

This body will soon perish, like a bubble on the ocean. It flickers into being uselessly, amid the endless turning of worldly affairs, and comes to nothing.

यह शरीर जल्दी ही नष्ट हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र में एक बुलबुला बनता है। यह सांसारिक कामों के इस अंतहीन चक्र में बेकार ही उभरता है, और अंत में कुछ हासिल नहीं होता।

1.18.60

मिथ्याज्ञानविकारेऽस्मिन्स्वप्नसंभ्रमपत्तने । काये स्फुटतरापाये क्षणमास्था न मे द्विज ॥ ६० ॥

mithyājñānavikāre'smin svapnasambhramapattane | kāye sphuṭatarāpāye kṣaṇamāsthā na me dvija || 60 ||

This body is nothing but a product of false understanding, a city as confused and unreal as a dream — and its ruin is plain to see. I do not trust it, even for a moment, brahmin.

यह शरीर झूठी समझ की उपज है, एक सपने जितना ही उलझा हुआ और असली शहर जैसा — और इसका नाश तो साफ दिखाई देता है। मुझे इस पर एक पल के लिए भी भरोसा नहीं है, हे ब्राह्मण।

1.18.61

तडित्सु शरदभ्रेषु गन्धर्वनगरेषु च । स्थैर्यं येन विनिर्णीतं स विश्वसितु विग्रहे ॥ ६१ ॥

taḍitsu śaradabhreṣu gandharvanagareṣu ca | sthairyam yena vinirṇītaṁ sa viśvasitu vighrahe || 61 ||

Whoever finds something lasting in a flash of lightning, in autumn clouds, or in a mirage city in the sky — only he should place his trust in the body.

जो कोई बिजली की चमक में, शरद ऋतु के बादलों में, या आकाश में दिखने वाले मायावी शहर में कुछ स्थायी पा ले — वही इस शरीर पर भरोसा करे।

1.18.62

सततभङ्गुरकार्यपरम्परा विजयिजातजयं हठवृत्तिषु । प्रबलदोषमिदं तु कलेवरं तृणमिवाहमपोह्य सुखं स्थितः ॥ ६२ ॥

satatabhaṅgurakāryaparamparā vijayijātajayaṁ haṭhavṛttiṣu | prabaladoṣamidaṁ tu kalevaraṁ tṛṇamivāhamapohya sukhaṁ sthitaḥ || 62 ||

This body — whose endless chain of activities keeps breaking down, which wins its little victories only by force and struggle, and which is full of serious flaws — I have thrown away like a blade of grass, and now I rest at ease, happy.

यह शरीर — जिसके कामों की अंतहीन कड़ी बार-बार टूटती रहती है, जो अपनी छोटी-छोटी जीतें भी सिर्फ ज़ोर-ज़बरदस्ती से हासिल करता है, और जिसमें गंभीर खामियां भरी हैं — मैंने इसे तिनके की तरह फेंक दिया है, और अब मैं चैन से, सुख में बैठा हूँ।

Chapter 19

1.19.1

श्रीराम उवाचलब्ध्वापि तरलाकारे कार्यभारतरंगिणिसंसारसागरे जन्म बाल्यं दुःखाय केवलम् ॥ १ ॥

śrīrāma uvācalabdhvāpi taralākāre kāryabhārataraṅgiṇisaṃsārasāgare janma bālyam duḥkhāya kevalam || 1 ||

Rama said: We are born into this world, which is like a great ocean, always shifting and tossed with waves that are the burdens of daily work. But even after that birth, childhood by itself brings nothing but suffering.

राम ने कहा, हम इस संसार में जन्म लेते हैं, जो एक समुद्र जैसा है, हमेशा हिलता-डुलता और काम के बोझ की लहरों से भरा हुआ। लेकिन जन्म पाकर भी, बचपन अपने आप में सिर्फ दुख ही देता है।

1.19.2

अशक्तिरापदस्तृष्णा मूकता मूढबुद्धितागृध्रता लोलता दैन्यं सर्वं बाल्ये प्रवर्तते ॥ २ ॥

aśaktirāpadastr̥ṣṇā mūkatā mūḍhabuddhitāgr̥dhnutā lolatā dainyaṃ sarvaṃ bālye pravartate || 2 ||

Weakness, troubles, craving, not being able to speak, foolishness, greed, restlessness, and misery - all of these are present in childhood.

कमज़ोरी, मुसीबतें, लालसा, बोल न पाना, मूर्खता, लालच, चंचलता और दुख - ये सब बचपन में मौजूद रहते हैं।

1.19.3

रोषरोदनरौद्रासु दैन्यजर्जरितासु च । दशासु बन्धनं बाल्यमालानं करिणामिव ॥ ३ ॥

roṣarodanaraudrāsu dainyajarjaritāsu ca | daśāsu bandhanaṃ bālyamālānaṃ kariṇāmiva || 3 ||

Childhood is a bondage, tied up in states of anger, crying, fierce moods, and misery, like an elephant tied to its post.

बचपन एक बंधन है, जो गुस्से, रोने, गुस्सैल मिजाज़ और दुख की हालतों में जकड़ा रहता है, जैसे हाथी अपने खूँटे से बंधा रहता है।

1.19.4

न मृतौ न जरारोगे न चापदि न यौवने । ताश्चिन्ताः परिकृन्तन्ति हृदयं शैशवेषु याः ॥ ४ ॥

na mṛtau na jarāroge na cāpadi na yauvane | tāścintāḥ parikṛntanti hṛdayaṃ śaiśaveṣu yāḥ || 4 ||

The worries that tear at the heart in childhood do not come even in death, in the diseases of old age, in real trouble, or in youth.

जो चिंताएँ बचपन में दिल को चीर देती हैं, वैसी चिंताएँ मौत में भी नहीं आतीं, न बुढ़ापे की बीमारी में, न असली मुसीबत में, न जवानी में।

1.19.5

तिर्यग्यातिसमारम्भः सर्वैरेवावधीरितः । लोलो बालसमाचारो मरणादपि दुःखदः ॥ ५ ॥

tiryagjātisamārambhaḥ sarvairēvāvadhīritaḥ | lolo bālasamācāro maraṇādapi duḥkhadaḥ || 5 ||

The behavior of animals is looked down on by everyone. And the restless behavior of a child brings more pain than even death does.

जानवरों जैसा व्यवहार सबकी नज़र में तुच्छ होता है। और बच्चे का चंचल व्यवहार मौत से भी ज़्यादा दुख देता है।

1.19.6

प्रतिबिम्बघनाज्ञानं नानासंकल्पपेलवम् । बाल्यमालूनसंशीर्णमनः कस्य सुखावहम् ॥ ६ ॥

pratibimbaghanaajñānaṃ nānāsaṃkalpapelavam | bālyamālūṇasaṃśīṇamanah kasya sukhāvaham || 6 ||

Childhood is a dense ignorance made of mere reflections, made fragile by countless passing whims, its mind cut up and crumbling - who could this ever bring happiness to?

बचपन महज़ प्रतिबिंबों जैसी घनी अज्ञानता है, जो तरह-तरह की क्षणिक इच्छाओं से कमज़ोर है, और जिसका मन कटा-फटा और बिखरा हुआ है - यह किसे सुख दे सकता है?

1.19.7

जलवह्नयनिलाजस्रजातभीत्या पदे पदे । यद्भयं शैशवेऽबुद्ध्या कस्यापदि हि तद्भवेत् ॥ ७ ॥

jalavahniyanilājasrajātabhityā pade pade | yadbhayaṃ śaiśave'buddhyā kasyāpadi hi tadbhavet || 7 ||

The fear a child feels at every step, born purely from ignorance, out of constant dread of water, fire, and wind, would not come even to someone facing a real disaster.

बच्चे को हर कदम पर जो डर लगता है - पानी, आग और हवा के लगातार बने रहने वाले डर से, सिर्फ नासमझी के कारण - ऐसा डर तो असली मुसीबत में पड़े इंसान को भी नहीं लगता।

1.19.8

लीलासु दुर्विलासेषु दुरीहासु दुराशये । परमं मोहमाधत्ते बालो बलवदापतन् ॥ ८ ॥

līlāsu durvilāseṣu durīhāsu durāśaye | paramaṃ mohamādhatte bālo balavadāpatan || 8 ||

In its games, its bad amusements, its wrong pursuits, and its wicked little schemes, a child falls into the deepest confusion, and falls into it completely.

अपने खेलों में, बुरी मौज-मस्ती में, गलत कोशिशों में और बुरी मंशाओं में, बच्चा गहरे भ्रम में पड़ जाता है, और पूरी तरह पड़ जाता है।

1.19.9

विकल्पकल्पितारम्भं दुर्विलारसं दुरास्पदम् । शैशवं शासनायैव पुरुषस्य न शान्तये ॥ ९ ॥

vikalpakalpitārambhaṃ durvilārasaṃ durāspadam | śaiśavaṃ śāsanāyaiva puruṣasya na śāntaye || 9 ||

Childhood is made up of things begun out of mere fancy, tasting of bad play, and standing on no firm ground. It exists only to be corrected and disciplined, not to give peace.

बचपन सिर्फ मनमानी कल्पना से शुरू हुई चीज़ों से बना होता है, बुरे खेल के स्वाद वाला और बिना किसी ठोस आधार वाला। यह सिर्फ सुधारे और अनुशासित किए जाने के लिए है, शांति देने के लिए नहीं।

1.19.10

ये दोषा ये दुराचारा दुष्क्रमा ये दुराधयः । ते सर्वे संस्थिता बाल्ये दुर्गत इव कौशिकाः ॥ १० ॥

ye doṣā ye durācārā duṣkramā ye durādhayaḥ | te sarve saṁsthitā bālye durgarta iva kauśikāḥ || 10 ||

Whatever faults there are, whatever bad conduct, whatever wrong ways of doing things, whatever troubled thoughts - all of these settle down in childhood, like owls settling in a dark pit.

जो भी दोष हैं, जो भी बुरा आचरण है, जो भी गलत तरीके हैं, जो भी परेशान करने वाले विचार हैं - ये सब बचपन में जा बसते हैं, जैसे उल्लू किसी अंधेरे गड्ढे में जा बसते हैं।

1.19.11

बाल्यं रम्यमिति व्यर्थबुद्धयः कल्पयन्ति ये । तान्मूर्खपुरुषान्ब्रह्मन्धिगस्तु हतचेतसः ॥ ११ ॥

bālyam ramyamiti vyarthabuddhayaḥ kalpayanti ye | tānmūrkhapuruṣānbrahmandhigastu hṛtacetasaḥ || 11 ||

O Brahmin, shame on those foolish men, their minds stolen away, who with their useless thinking imagine that childhood is a delightful thing.

हे ब्राह्मण, धिक्कार है उन मूर्ख लोगों पर, जिनकी बुद्धि व्यर्थ है और मन भटका हुआ है, जो यह सोचते हैं कि बचपन सुहावना होता है।

1.19.12

यत्र दोलाकृति मनः परिस्फुरति वृत्तिषु । त्रैलोक्याऽभव्यमपि तत्कथं भवति तुष्टये ॥ १२ ॥

yatra dolākṛti manah parisphurati vṛttiṣu | trailokyā'bhavyamapi tat katham bhavati tuṣṭaye || 12 ||

Where the mind swings back and forth like a swing among its own moods, how could anything - even something that could never happen in all three worlds - ever satisfy it?

जहाँ मन झूले की तरह अपने ही मूड में हिलता-डुलता रहता है, वहाँ कोई भी चीज़ - चाहे वह तीनों लोकों में भी कभी संभव न हो - उसे संतोष कैसे दे सकती है?

1.19.13

सर्वेषामेव सत्त्वानां सर्वावस्थाभ्य एव हि । मनश्चञ्चलतामेति बाल्ये दशगुणं मुने ॥ १३ ॥

sarveṣāmeva sattvānām sarvāvasthābhya eva hi | manaścañcalatāmeti bālye daśaguṇam mune || 13 ||

O sage, in every kind of being, more than in any other stage of life, the mind becomes ten times more restless in childhood.

हे मुनि, हर तरह के प्राणी में, किसी भी और अवस्था से कहीं ज़्यादा, बचपन में मन दस गुना ज़्यादा चंचल हो जाता है।

1.19.14

मनः प्रकृत्यैव चलं बाल्यं च चलतां वरम् । तयोः संश्लिष्यतोस्त्राता क इवान्तः कुचापले ॥ १४ ॥

manah prakṛtyaiva calam bālyam ca calatām varam | tayoh saṁśliṣyatosatrātā ka ivāntaḥ kucāpale || 14 ||

The mind is restless by its own nature, and childhood is the most restless thing of all. When these two restless things come together, who could hold them steady - any more than one could hold steady the trembling of a young woman's breast?

मन अपने स्वभाव से ही चंचल होता है, और बचपन सबसे ज़्यादा चंचल चीज़ है। जब ये दोनों चंचल चीज़ें आपस में मिल जाती हैं, तो कौन उन्हें थाम सकता है - जैसे कोई किसी युवती की छाती के कंपन को थाम नहीं सकता।

1.19.15

स्त्रीलोचनैस्तडित्पुञ्जैर्वज्जालैस्तरङ्गकैः । चापलं शिक्षितं ब्रह्मञ्छैशवाक्रान्तचेतसः ॥ १५ ॥

strīlocanais taḍitpuñjair jvalājālais taraṅgakaiḥ | cāpalam śikṣitam brahmañ chaisavākṛāntacetasaḥ || 15 ||

O Brahmin, a mind overpowered by childishness becomes as practiced in restlessness as a woman's darting eyes, a flash of lightning, a tongue of flame, or a rippling wave.

हे ब्राह्मण, बचपन से जकड़ा हुआ मन उतना ही चंचल होना सीख लेता है जितनी स्त्री की चंचल आँखें, बिजली की चमक, आग की लपटें, या पानी की लहरें।

1.19.16

शैशवं च मनश्चैव सर्वास्वेव हि वृत्तिषु । भ्रातराविव लक्ष्येते सततं भङ्गुरस्थिति ॥ १६ ॥

śaiśavaṃ ca manaścaiva sarvāsveva hi vṛttiṣu | bhrātarāviva lakṣyete satataṃ bhaṅgurasthitī || 16 ||

Childhood and the mind, in everything they do, look like two brothers - both are always in a fragile, breaking state.

बचपन और मन, अपने हर काम में, दो भाइयों जैसे दिखते हैं - दोनों हमेशा कमज़ोर और टूटती हुई हालत में रहते हैं।

1.19.17

सर्वाणि दुःखभूतानि सर्वे दोषा दुराधयः । बालमेवोपजीवन्ति श्रीमन्तमिव मानवाः ॥ १७ ॥

sarvāṇi duḥkhabhūtāni sarve doṣā durādhayaḥ | bālamevopajīvanti śrīmantaṃ miva mānavāḥ || 17 ||

All sufferings, all faults, all troubled thoughts live off a child, just as people live off a rich man.

सारे दुख, सारे दोष, सारी परेशान करने वाली सोच बच्चे के सहारे जीते हैं, जैसे लोग किसी धनवान के सहारे जीते हैं।

1.19.18

नवं नवं प्रीतिकरं न शिशुः प्रत्यहं यदि । प्राप्नोति तदसौ याति विषवैषम्यमूर्च्छनाम् ॥ १८ ॥

navam navam prītikaram na śiṣuḥ pratyaham yadi | prāpnoti tadasau yāti viṣavaīṣamyamūrcchanām || 18 ||

If a child does not get something new and pleasing every single day, he falls into a fainting fit, as if poisoned.

अगर बच्चे को हर दिन कोई नई और पसंद की चीज़ न मिले, तो वह ऐसे बेहोश हो जाता है जैसे उसे ज़हर लग गया हो।

1.19.19

स्तोकेन वशमायाति स्तोकेनैति विकारिताम् । अमेध्य एव रमते बालः कौलेयको यथा ॥ १९ ॥

stokena vaśamāyāti stokenaiti vikāritām | amedhya eva ramate bālāḥ kauleyako yathā || 19 ||

With a small thing a child is won over, and with a small thing he becomes upset. He takes pleasure only in filth, just like a dog.

छोटी सी बात से बच्चा खुश हो जाता है, और छोटी सी बात से बिगड़ भी जाता है। वह गंदगी में ही मज़ा लेता है, बिल्कुल कुत्ते की तरह।

1.19.20

अजस्रवाष्पवदनः कर्दमाक्तो जडाशयः । वर्षोक्षितस्य तप्तस्य स्थलस्य सदृशः शिशुः ॥ २० ॥

ajasravāṣpavadanaḥ kardamāкто jaḍāśayaḥ | varṣokṣitasya taptasya sthalasya sadṛśaḥ śiṣuḥ || 20 ||

A child, his face always wet with tears, smeared with mud, and dull-minded, is like a patch of hot ground just soaked by rain.

बच्चा, जिसका चेहरा हमेशा आँसुओं से भीगा रहता है, जो कीचड़ से सना रहता है और जिसका मन सुस्त होता है, तपती हुई ज़मीन जैसा होता है जिस पर अभी-अभी बारिश पड़ी हो।

1.19.21

भयाहारपरं दीनं दृष्टादृष्टाभिलाषि च । लोलबुद्धि वपुर्धत्ते बाल्यं दुःखाय केवलम् ॥ २१ ॥

bhayāhāraparaṃ dīnaṃ dṛṣṭā dṛṣṭābhilāṣi ca | lolabuddhi vapurdhatte bālyam duḥkhāya kevalam || 21 ||

Childhood takes on a body that thinks mainly of fear and food, that is pitiful, that longs for things it can see and things it cannot see, and has a restless mind - it exists only for suffering.

बचपन एक ऐसा शरीर धारण करता है जो मुख्य रूप से डर और खाने के बारे में सोचता है, जो दयनीय होता है, जो दिखने वाली और न दिखने वाली चीज़ों की चाह रखता है, और जिसका मन चंचल होता है - यह सिर्फ दुख के लिए होता है।

1.19.22

स्वसंकल्पाभिलषितान्भावानप्राप्य तप्तधीः । दुःखमेत्यबलो बालो विनिष्कृत इवाशये ॥ २२ ॥

svasaṁkalpābhilṣitānbhāvanāprāpya taptadhīḥ | duḥkhame tyabalo bālo viniṣkṛta ivāśaye || 22 ||

Not getting the things his own mind wished for, his mind burning, the helpless child suffers, as if torn out from his own hopes.

अपने ही मन से चाही गई चीज़ें न पाकर, मन में जलन लिए हुए, असहाय बच्चा दुखी होता है, जैसे उसे उसकी अपनी उम्मीदों से ही उखाड़ दिया गया हो।

1.19.23

दुरीहालब्धलक्षाणि बहुवक्रोल्बणानि च । बालस्य यानि दुःखानि मुने तानि न कस्यचित् ॥ २३ ॥

durihālabdhalakṣāṇi bahuvakrolbaṇāni ca | bālasya yāni duḥkhāni mune tāni na kasyacit || 23 ||

O sage, the sufferings of a child, born from wrong pursuits, twisted in many ways, and severe, belong to no one else.

हे मुनि, बच्चे के दुख - जो गलत कोशिशों से पैदा होते हैं, कई तरह से उलझे हुए और गंभीर होते हैं - किसी और को नहीं होते।

1.19.24

बालो बलवता स्वेन मनोरथविलासिना । मनसा तप्यते नित्यं ग्रीष्मेणेव वनस्थली ॥ २४ ॥

bālo balavatā svena manorathavilāsinā | manasā tapyate nityaṁ grīṣmeṇeva vanasthalī || 24 ||

A child is constantly scorched by his own powerful mind, which plays about with wishes and fancies, just as a forest is scorched by the summer heat.

बच्चा अपने ही ताकतवर मन से हमेशा झुलसता रहता है, जो इच्छाओं और कल्पनाओं से खेलता रहता है, ठीक वैसे ही जैसे जंगल गर्मी की तपिश से झुलसता है।

1.19.25

विद्यागृहगतो बालो परामेति कदर्थनाम् । आलान इव नागेन्द्रो विषवैषम्यभीषणाम् ॥ २५ ॥

vidyāgṛhagato bālo parāmeti kadarthanām | ālāna iva nāgendro viṣavaiṣamyabhīṣaṇām || 25 ||

A child who goes to school suffers extreme torment, as terrible as the disorder caused by poison, like a great elephant tied to its post.

जो बच्चा पढ़ने के लिए स्कूल जाता है, उसे बहुत बड़ी पीड़ा सहनी पड़ती है, जो ज़हर के असर जितनी भयानक होती है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बड़ा हाथी खूँटे से बंधा हो।

1.19.26

नानामनोरथमयी मिथ्याकल्पितकल्पना । दुःखायात्यन्तदीर्घाय बालता पेलवाशया ॥ २६ ॥

nānāmanorathamayī mithyākālpitakalpanā | duḥkhāyātyantadīrghāya bālatā pelavāśayā || 26 ||

Childhood, made up of many desires, a falsely imagined fancy with a fragile mind, leads to suffering that lasts a very long time.

बचपन, जो ढेर सारी इच्छाओं से बना होता है, एक झूठी कल्पना है जिसका मन कमज़ोर होता है, और यह बहुत लंबे समय तक चलने वाले दुख की ओर ले जाता है।

1.19.27

संहृष्टो भुवनं भोक्तमिन्दुमादातुमम्बरात् । वाञ्छते येन मौर्व्येण तत्सुखाय कथं भवेत् ॥ २७ ॥

saṁhr̥ṣṭo bhuvaṇaṁ bhoktamindumādātumambarāt | vāñchate yena maurkhyeṇa tatsukhāya katham bhavet || 27 ||

Filled with excitement, a child wishes to enjoy the whole world and to grab the moon down from the sky - how could such foolishness ever bring happiness?

उत्साह से भरा बच्चा पूरी दुनिया को भोगना चाहता है और आसमान से चाँद को पकड़ना चाहता है - ऐसी मूर्खता से भला सुख कैसे मिल सकता है?

1.19.28

अन्तश्चित्तराशक्तस्य शीतातपनिवारणे । को विशेषो महाबुद्धे बालस्योर्वीरुहस्तथा ॥ २८ ॥

antaścittēraśaktasya śītātapanivāraṇē | ko viśeṣō mahābuddhē bālasyaorvīruhastathā || 28 ||

A child cannot protect himself from cold or heat through his own inner strength. What difference is there then, O wise one, between a child and a tree?

बच्चा अपनी भीतरी ताकत से खुद को ठंड या गर्मी से नहीं बचा सकता। तो फिर, हे बुद्धिमान, बच्चे और पेड़ में क्या फर्क रह जाता है?

1.19.29

उद्धीतुमभिवाञ्छन्ति पक्षाभ्यां क्षुत्परायणाः । भयाहारपरा नित्यं बाला विहगधर्मिणः ॥ २९ ॥

udḍītumabhivāñchanti pakṣābhyāṁ kṣutparāyaṇāḥ | bhayāhāraparā nityaṁ bālā vihagadharmināḥ || 29 ||

Driven by hunger, children want to fly with their arms as if they were wings; always caught up in fear and hunger, they act just like birds.

भूख से मजबूर होकर बच्चे अपनी बाहों को पंख समझकर उड़ना चाहते हैं; हमेशा डर और भूख में उलझे रहकर, वे बिल्कुल पंछियों जैसा बर्ताव करते हैं।

1.19.30

शैशवे गुरुतो भीतिर्मातृतः पितृतस्तथा । जनतो ज्येष्ठबालाच्च शैशवं भयमन्दिरम् ॥ ३० ॥

śaiśavē gurutō bhītimātṛtaḥ pitṛtastathā | janatō jyeṣṭhabālācca śaiśavaṁ bhayamandiram || 30 ||

In childhood there is fear of the teacher, fear of the mother, and fear of the father too, fear of people in general, and fear of older children - childhood is a house of fear.

बचपन में गुरु का डर होता है, माँ का डर होता है, और पिता का भी डर होता है, लोगों का डर होता है, और बड़े बच्चों का भी डर होता है - बचपन डर का घर है।

1.19.31

सकलदोषदशाविहताशयं शरणमप्यविवेकविलासिनः । इह न कस्यचिदेव महामुने भवति बाल्यमलं परितुष्टये ॥ ३१ ॥

sakaladoṣadaśāvihitāśayaṁ śaraṇamapyavivekavilāsināḥ | iha na kasyacideva mahāmune bhavati bālyamalaṁ parituṣṭaye || 31 ||

O great sage, childhood, whose very nature is shaped by every kind of fault, though it may be a refuge for those who delight in foolishness, never gives true satisfaction to anyone at all in this world.

हे महामुनि, बचपन, जिसका स्वभाव हर तरह के दोष से बना होता है, भले ही वह मूर्खता में मगन रहने वालों के लिए एक सहारा हो, इस दुनिया में किसी को भी सच्चा संतोष कभी नहीं दे पाता।

Chapter 20

1.20.1

श्रीराम उवाच । बाल्यानर्थमथ त्यक्त्वा पुमानभिहताशयः । आरोहति निपाताय यौवनं संभ्रमेण तु ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | bālyānarthamatha tyaktvā pumānabhihatāśayaḥ | ārohati nipātāya yauvanaṁ sambhrameṇa tu || 1 ||

Sri Rama said: A man leaves behind the trouble of childhood, but his mind is already hurt, and in his hurry he climbs up into youth only to fall.

श्रीराम ने कहा कि इंसान बचपन की तकलीफ़ को पीछे छोड़ देता है, पर उसका मन पहले से ही बिगड़ा हुआ होता है, और जल्दबाज़ी में वह जवानी में चढ़ जाता है, बस गिरने के लिए।

1.20.2

तत्रानन्तविलासस्य लोलस्य स्वस्य चेतसः । वृत्तीरनुभवन्याति दुःखाद्दुःखान्तरं जडः ॥ २ ॥

tatrānantavilāsasya lolasya svasya cetasaḥ | vṛttīranubhavanāyāti duḥkhādduḥkhāntaraṁ jaḍaḥ || 2 ||

There, feeling the endless, restless workings of his own mind, the dull-witted man goes from one sorrow into another.

वहाँ अपने ही मन की बेचैन, अंतहीन हरकतों को महसूस करते हुए मूर्ख आदमी एक दुख से दूसरे दुख में जाता रहता है।

1.20.3

स्वचित्तबिलसंस्थेन नानासंभ्रमकारिणा । बलात्कामपिशाचेन विवशः परिभूयते ॥ ३ ॥

svacittabilasamsthena nānāsambhramakāriṇā | balātkāmapiśācena vivśaḥ paribhūyate || 3 ||

The demon of desire lives hidden in the den of his own mind and stirs up all kinds of confusion; by its force he is left helpless and overpowered.

काम की भूत-प्रेत जैसी ताक़त उसके अपने मन की गुफा में बैठी रहती है और तरह-तरह की उलझनें पैदा करती है; उसके ज़ोर से वह बेबस होकर हार जाता है।

1.20.4

चिन्तानां लोलवृत्तीनां ललनानामिवाऽवृत्तिः । अर्पयत्यवशं चेतो बालानामञ्जनं यथा ॥ ४ ॥

cintānāṁ lolavṛttīnāṁ lalanānāmivā'vṛtīḥ | arpayatyavaśaṁ ceto bālānāmañjanaṁ yathā || 4 ||

Anxious thoughts move about restlessly, as unguarded as the ways of a flirting woman, and they hand over his helpless mind — the way collyrium is put into a child's eyes without asking it.

बेचैन चिन्ताएँ एक भड़कीली औरत की तरह बेलगाम घूमती रहती हैं, और उसके बेबस मन को ऐसे साँप देती हैं जैसे किसी बच्चे की आँखों में उसकी मर्ज़ी पूछे बिना काजल लगा दिया जाता है।

1.20.5

ते ते दोषा दुरारम्भास्तत्र तं तादृशाशयम् । तद्रूपं प्रतिलुम्पन्ति दुष्टास्तेनैव ये मुने ॥ ५ ॥

te te doṣā durārambhāstatra taṁ tāḍṣāśayam | tadrūpaṁ pratilumpanti duṣṭāsteneva ye mune || 5 ||

There, O sage, those hard-to-check faults attack a mind that has become like that, and by that very youth the corrupt faults rob him of his own true nature.

हे मुनि, वहाँ वे रोक़ी न जा सकने वाली बुराइयाँ उस वैसे ही बिगड़े हुए मन पर हमला करती हैं, और उसी जवानी के ज़रिए वे गंदी बुराइयाँ उसके असली स्वभाव को छीन लेती हैं।

1.20.6

महानरकबीजेन संततभ्रमदायिनायौवनेन न ये नष्टा नष्टा नान्येन ते जनाः ॥ ६ ॥

mahānarakabījēna saṁtatabhramadāyīnāyauvanena na ye naṣṭā naṣṭā nānyena te janāḥ || 6 ||

Youth is the seed of a great hell, the giver of constant confusion; whoever is not ruined by it is not ruined by anything else.

जवानी एक बड़े नरक का बीज है, जो लगातार उलझन देती है; जो इससे बर्बाद नहीं होता, वह किसी और चीज़ से बर्बाद नहीं होता।

1.20.7

नानारसमयी चित्रवृत्तान्तनिचयोम्बिताभीमा यौवनभूर्येन तीर्णा धीरः स उच्यते ॥ ७ ॥

nānārasamayī citravṛttāntanīcayombhitābhīmā yauvanabhūryena tīrṇā dhīraḥ sa ucyate || 7 ||

The land of youth is full of many moods, packed with a mass of strange happenings, and it is a fearsome place; whoever gets safely across it is called a steady, wise man.

जवानी की धरती कई तरह के मिज़ाज से भरी है, अजीब-अजीब घटनाओं के ढेर से भरी है, और यह एक डरावनी जगह है; जो इसे सही-सलामत पार कर जाए, उसे ही स्थिर और समझदार आदमी कहते हैं।

1.20.8

निमेषभासुराकारमालोलघनगर्जितम्विद्युत्प्रकाशमशिवं यौवनं मे न रोचते ॥ ८ ॥

nimeṣabhāsurākāramālolaghanagarjitamvidyutprakāśamaśivaṁ yauvanaṁ me na rocate || 8 ||

Youth shines brightly only for the blink of an eye, it rumbles like unsteady storm clouds, it flashes like lightning, and it brings nothing good — youth does not please me.

जवानी सिर्फ़ पलक झपकने भर के लिए चमकती है, यह बेचैन बादलों की तरह गरजती है, बिजली की तरह कौंधती है, और इसमें कुछ भी अच्छा नहीं है — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.9

मधुरं स्वादु तिक्तं च दूषणं दोषभूषणम्सुराकल्लोलसदृशं यौवनं मे न रोचते ॥ ९ ॥

madhuraṁ svādu tiktam ca dūṣaṇam doṣabhūṣaṇamsurākallolasadr̥śam yauvanaṁ me na rocate || 9 ||

Youth is sweet and tasty, and also bitter; it is harmful, and its only ornament is its own faults, like the surging waves of liquor — youth does not please me.

जवानी मीठी और स्वादिष्ट है, और कड़वी भी; यह नुकसानदेह है, इसका गहना बस इसकी अपनी खामियाँ हैं, यह शराब की उठती लहरों जैसी है — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.10

असत्यं सत्यसंकाशमचिराद्विप्रलम्भदम्बप्राङ्गनासङ्गसमं यौवनं मे न रोचते ॥ १० ॥

asatyaṁ satyasamkāśamacirādvipralambhadamsvapnāṅganāsaṅgasamaṁ yauvanaṁ me na rocate || 10 ||

Youth is false though it looks true, and it will soon deceive; it is just like embracing a woman in a dream — youth does not please me.

जवानी झूठी है पर सच जैसी दिखती है, और जल्द ही धोखा दे देगी; यह सपने में किसी औरत को गले लगाने जैसी है — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.11

सर्वस्याग्रे सर्वपुंसः क्षणमात्रमनोहरमान्धर्वनगरप्रख्यं यौवनं मे न रोचते ॥ ११ ॥

sarvasyāgre sarvapuṃsaḥ kṣaṇamātramanoharamandharvanagaraprakhyam yauvanam me na rocate || 11 ||

Youth charms every man, right in front of everyone, but only for a moment; it is just like a city built in the sky — youth does not please me.

जवानी हर आदमी को, सबके सामने, मोहित कर देती है, पर सिर्फ़ एक पल के लिए; यह आसमान में बने एक शहर जैसी है — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.12

इषुप्रपातमात्रं हि सुखदं दुःखभासुरम्दाहपोषप्रदं नित्यं यौवनं मे न रोचते ॥ १२ ॥

iṣuprapātamātram hi sukhadam duḥkhabhāsuramdāhapoṣapradam nityam yauvanam me na rocate || 12 ||

Youth lasts only as long as the flight of an arrow; it gives pleasure but glows with coming pain, and it keeps bringing both burning and short relief — youth does not please me.

जवानी बस एक तीर के उड़ने जितनी देर टिकती है; यह सुख देती है पर आने वाले दुख से चमकती रहती है, और यह लगातार जलन भी देती है और थोड़ी राहत भी — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.13

आपातमात्ररमणं सद्भावरहितान्तरम्वेश्यास्त्रीसंगमप्रख्यं यौवनं मे न रोचते ॥ १३ ॥

āpātamātraramaṇam sadbhāvarahitāntaramveśyāstrīsaṅgamaprakhyam yauvanam me na rocate || 13 ||

Youth pleases only at first sight, and inside it there is no true feeling at all; it is just like being with a prostitute — youth does not please me.

जवानी सिर्फ़ पहली नज़र में अच्छी लगती है, अंदर से इसमें कोई असली भावना नहीं होती; यह किसी वेश्या के साथ रहने जैसी है — जवानी मुझे पसंद नहीं।

1.20.14

ये केचन समारम्भास्ते सर्वे सर्वदुःखदाःतारुण्ये संनिधिं यान्ति महोत्पाता इव क्षये ॥ १४ ॥

ye kecana samārambhāste sarve sarvaduḥkhadāḥtāruṇye saṁnidhiṁ yānti mahotpātā iva kṣaye || 14 ||

Whatever wrong actions there are, all of them bring every kind of sorrow, and all of them gather together in youth — like great calamities gathering at a time of destruction.

जो भी गलत काम होते हैं, वे सब हर तरह का दुख देते हैं, और वे सब जवानी में ही इकट्ठे हो जाते हैं — जैसे विनाश के समय बड़ी-बड़ी आफ़तें इकट्ठी हो जाती हैं।

1.20.15

हार्दान्धकारकारिण्या भैरवाकारवानपियौवनाज्ञानयामिन्या बिभेति भगवानपि ॥ १५ ॥

hārdāndhakārakāriṇyā bhairavākāravānapiyauvanājñānayāminyā bibheti bhagavānapi || 15 ||

Even the Lord, who himself carries a fearsome form, is afraid of it: the night of youth's ignorance, which fills the heart with darkness.

यहाँ तक कि जिसका रूप खुद डरावना है, वह भगवान भी इससे डरता है: जवानी की अनजानपन वाली रात से, जो दिल को अंधेरे से भर देती है।

1.20.16

सुविस्मृतशुभाचारं बुद्धिवैधुर्यदायिनमददात्यतितरामेष भ्रमं यौवनसंभ्रमः ॥ १६ ॥

suvismr̥taśubhācāraṃ buddhivaidhuryadāyinaṃdadātyatitarāmeṣa bhramaṃ yauvanasaṃbhramaḥ || 16 ||

This turmoil of youth gives, more than anything else, a confusion in which good conduct is completely forgotten and the mind is crippled.

जवानी की यह हलचल सबसे ज़्यादा एक ऐसी उलझन देती है, जिसमें अच्छा आचरण पूरी तरह भुला दिया जाता है और अक़ल कमज़ोर हो जाती है।

1.20.17

कान्तावियोगजातेन हृदि दुःस्पर्शवह्निनायौवने दह्यते जन्तुस्तरुर्दावाग्निना यथा ॥ १७ ॥

kāntāviyogajātena hr̥di duḥsparśavahnināyauvane dahyate jantustarurdāvāgninā yathā || 17 ||

In youth, a person is burned in the heart by a fire that is painful even to touch, a fire born from separation from a beloved woman — just as a tree is burned by a forest fire.

जवानी में इंसान दिल में उस आग से जलता है जिसे छूना भी मुश्किल है, वह आग जो अपनी प्रिय स्त्री से बिछड़ने से पैदा होती है — जैसे कोई पेड़ जंगल की आग से जल जाता है।

1.20.18

सुनिर्मलापि विस्तीर्णा पावन्यपि हि यौवनेमतिः कलुषतामेति प्रावृषीव तरङ्गिणी ॥ १८ ॥

sunirmalāpi vistīrṇā pāvanyapi hi yauvanematīḥ kaluṣatāmeti prāvṛṣīva taraṅgiṇī || 18 ||

Even a mind that is very clear, wide, and pure turns muddy in youth — just as a river turns muddy in the rainy season.

बहुत साफ़, चौड़ी और पवित्र सोच भी जवानी में गंदी हो जाती है — जैसे बरसात में नदी गंदली हो जाती है।

1.20.19

शक्यते घनकल्लोला भीमा लङ्घयितुं नदीन तु तारुण्यतरला तृष्णातरलितान्तरा ॥ १९ ॥

śakyate ghanakallolā bhīmā laṅghayitum nadīna tu tāruṇyataralā tṛṣṇātaralitāntarā || 19 ||

One can cross a river that is fearsome with thick waves, but not the restless river that is youth, whose depths are stirred up by endless craving.

घनी लहरों वाली डरावनी नदी को तो पार किया जा सकता है, पर जवानी की बेचैन नदी को नहीं, जिसके अंदर लगातार तरसने से हलचल मची रहती है।

1.20.20

सा कान्ता तौ स्तनौ पीनौ ते विलासास्तदाननम्तारुण्य इति चिन्ताभिर्याति जर्जरतां जनः ॥ २० ॥

sā kāntā tau stanau pīnau te vilāsāstadānanamtāruṇya iti cintābhiryāti jarjaratām janaḥ || 20 ||

With thoughts like 'that woman, those full breasts, that playfulness, that face' — all belonging to youth — a person wears himself down until he falls apart.

'वह औरत, वे भरे हुए स्तन, वह अदा, वह चेहरा' — जवानी से जुड़े ऐसे ही खयालों में इंसान ख़ुद को घिसते-घिसते टूट जाता है।

1.20.21

नरं तरलतृष्णार्ति युवानमिह साधवःपूजयन्ति न तु च्छिन्नं जरत्तृणलवं यथा ॥ २१ ॥

naraṃ taralatṛṣṇārti yuvānamiha sādhaḥpūjayanti na tu cchinnaṃ jaratṛṇalavaṃ yathā || 21 ||

Good people here honor a young man even while he suffers the pain of restless craving, but once he is cast off, they do not honor him — like a cut piece of withered grass.

अच्छे लोग यहाँ एक जवान आदमी का सम्मान करते हैं, भले ही वह बेचैन तड़प से पीड़ित हो, पर जब वह छोड़ दिया जाता है तो उसका सम्मान नहीं करते — जैसे सूखी घास के कटे हुए टुकड़े का कोई सम्मान नहीं करता।

1.20.22

नाशायैव मदार्तस्य दोषमौक्तिकधारिणःअभिमानमहेभस्य नित्यालानं हि यौवनम् ॥ २२ ॥

nāśāyaiva madārtasya doṣamauktikadhāriṇaḥabhimānamahebhasya nityālānaṃ hi yauvanam || 22 ||

Youth is the permanent post to which the elephant of pride is tied — pride that is maddened with intoxication and carries the pearl-like drops of its own fault — and that post exists only to destroy it.

जवानी वह पक्का खूँटा है जिससे घमंड का हाथी बँधा रहता है — वह हाथी जो नशे में पागल है और अपनी ही ख़ामी के मोती जैसी बूँदें लिए फिरता है — और वह खूँटा उसे बर्बाद करने के लिए ही है।

1.20.23

मनोविपुलमूलानां दोषाशीविषधारिणांशोषरोदनवृक्षाणां यौवनं बत काननम् ॥ २३ ॥

manovipulamūlānāṃ doṣāśīviṣadhāriṇāṃśoṣarodanavṛkṣāṇāṃ yauvanam bata kānanam || 23 ||

Youth, alas, is a forest — a forest of trees called withering and weeping, whose roots reach deep into the mind, and which hold venomous snakes of fault.

जवानी, हाय, एक जंगल है — 'मुरझाना' और 'रोना' नाम के पेड़ों का जंगल, जिनकी जड़ें मन की गहराई तक जाती हैं, और जिनमें बुराई के ज़हरीले साँप बैठे रहते हैं।

1.20.24

रसकेसरसंबाधं कुविकल्पदलाकुलमुदुश्चिन्ताचञ्चरीकाणां पुष्करं विद्धि यौवनम् ॥ २४ ॥

rasakesarasambādham kuvikalpadalākulamduścintācāñcarīkāṇāṃ puṣkaraṃ viddhi yauvanam || 24 ||

Know that youth is a lotus, crowded with the fibers of sensual taste, its petals confused with wrong ideas, and swarming with the bees that are evil thoughts.

जान लो कि जवानी एक कमल है, जो स्वाद की डंडियों से ठसाठस भरा है, जिसकी पंखुड़ियाँ ग़लत खयालों से उलझी हैं, और जिसमें बुरे विचारों के भँवरे भिनभिनाते हैं।

1.20.25

कृताकृतकुपक्षाणां हृत्सरस्तीरचारिणामाधिव्याधिविहंगानामालयो नवयौवनम् ॥ २५ ॥

kṛtākṛtakupakṣāṇāṃ hṛtsarastīracāriṇāmādhivyādhivihāṅgānāmālayo navayauvanam || 25 ||

Fresh youth is the nest of the birds called mental worry and bodily disease — birds with crooked, uneven wings, that wander along the shore of the heart's lake.

ताज़ा जवानी 'मानसिक चिन्ता' और 'शरीर की बीमारी' नाम के पंछियों का घोंसला है — टेढ़े-मेढ़े पंखों वाले पंछी, जो दिल की झील के किनारे घूमते रहते हैं।

1.20.26

जडानां गतसंख्यानां कल्लोलानां विलासिनाम् । अनपेक्षितमर्यादो वारिधिर्नवयौवनम् ॥ २६ ॥

jaḍānām gatasamkhyānām kalolānām vilāsinām | anapekṣitamaryādo vāridhirnavayauvanam || 26 ||

Fresh youth is an ocean of countless waves, dull and yet playful, an ocean that respects no limit.

ताज़ा जवानी बेशुमार लहरों का एक समंदर है, सुस्त भी और मस्त भी, ऐसा समंदर जो किसी हद को नहीं मानता।

1.20.27

सर्वेषां गुणसर्गाणां परिरूढरजस्तमाः । अपनेतुं स्थितिं दक्षो विषमो यौवनानिलः ॥ २७ ॥

sarveṣām guṇasargāṇām parirūḍharajastamāḥ | apanetuṁ sthitiṁ dakṣo viṣamo yauvanānilaḥ || 27 ||

The wind of youth is dangerous, and it is skilled at blowing away the steadiness of every virtue — a wind in which passion and dullness have taken deep root.

जवानी की हवा खतरनाक है, और यह हर अच्छे गुण की स्थिरता को उड़ा देने में माहिर है — ऐसी हवा जिसमें राग और सुस्ती की जड़ें गहरी जमी हैं।

1.20.28

नयन्ति पाण्डुतां वक्रमाकुलावकरोत्कटाः । आरोहन्ति परां कोटिं रूक्षा यौवनपांसवः ॥ २८ ॥

nayanti pāṇḍutām vakramākulāvakarotkaṭāḥ | ārohanti parām koṭiṁ rūkṣā yauvanapāṁsavaḥ || 28 ||

The dust of youth is restless and thick with filth; it turns the face pale, and, being harsh, it rises to its highest peak.

जवानी की धूल बेचैन और गंदगी से भरी है; यह चेहरे को पीला कर देती है, और रूखी होकर अपने चरम पर चढ़ जाती है।

1.20.29

उद्वोधयति दोषालिं निकृन्तति गुणावलिम् । नराणां यौवनोल्लासो विलासो दुष्कृतश्रियाम् ॥ २९ ॥

udvodayati doṣāliṁ nikṛntati guṇāvalim | narāṇām yauvanollāso vilāso duṣkṛtaśriyām || 29 ||

The high spirits of youth wake up a whole swarm of faults in men and cut down their row of virtues — it is the playground where the fortunes of bad deeds show themselves.

जवानी का जोश आदमियों में ढेर सारी बुराइयों को जगा देता है और उनकी अच्छाइयों की क़तार काट देता है — यह वह मैदान है जहाँ बुरे कामों की क्रिस्मत खेलती है।

1.20.30

शरीरपङ्कजरजश्चञ्चलां मतिषट्पदीम् । निबध्नन्मोहयत्येष नवयौवनचन्द्रमाः ॥ ३० ॥

śarīrapaṅkajaraśaṁcalāṁ matiṣaṭpādīm | nibadhnannmohayatyēṣa navayauvanacandramāḥ || 30 ||

This moon of fresh youth ties down the mind, a restless bee caught in the pollen of the body's lotus, and it deludes that bee.

ताज़ा जवानी का यह चाँद मन को बाँध देता है, जो शरीर रूपी कमल के पराग में फँसी एक बेचैन मधुमक्खी है, और उसे भ्रमा देता है।

1.20.31

शरीरखण्डकोद्भूता रम्या यौवनवल्लरीलग्नमेव मनोभृङ्गं मदयत्युन्नतिं गता ॥ ३१ ॥

śarīrakhaṇḍakodbhūtā ramyā yauvanavallarīlagnameva manobhṛṅgaṁ madayatyunnatiṁ gatā || 31 ||

The lovely creeper that is youth springs up from a piece of the body, and once it has grown tall, it intoxicates the mind, the bee still clinging to it.

जवानी की सुंदर बेल शरीर के ही एक हिस्से से उगती है, और ऊँची बढ़ने पर यह मन को नशे में डाल देती है, जो मधुमक्खी की तरह उससे चिपका रहता है।

1.20.32

शरीरमरुतापोत्थां युवतामृगतृष्णिकाम्मनोमृगाः प्रधावन्तः पतन्ति विषयावटे ॥ ३२ ॥

śarīramarutāpotthāṃ yuvatāmṛgatṛṣṇikāmmaṇomṛgāḥ pradhāvantaḥ patanti viṣayāvaṭe || 32 ||

Youthfulness is a mirage rising from the heat of the body; the deer that are our minds run eagerly toward it and fall into the pit of the senses.

जवानी शरीर की गर्मी से उठने वाला एक मृगतृष्णा है; मन रूपी हिरण उसकी तरफ़ दौड़ते हैं और विषयों के गड्ढे में गिर पड़ते हैं।

1.20.33

शरीरशर्वरीज्योत्स्ना चित्तकेसरिणः सटालहरी जीविताम्भोधेर्युवता मे न तुष्टये ॥ ३३ ॥

śarīraśarvarījyotsnā cittakesariṇaḥ saṭālaharī jīvitāmbhodheryuvatā me na tuṣṭaye || 33 ||

Youth is the moonlight over the night of the body; it makes the mane of the mind's lion surge like a wave on the ocean of life. It brings me no contentment.

जवानी शरीर की रात पर फैली चाँदनी है; यह मन रूपी शेर के अयाल को जीवन के समंदर पर लहर की तरह उठा देती है। इससे मुझे कोई संतोष नहीं मिलता।

1.20.34

दिनानि कतिचिद्येयं फलिता देहजङ्गलेयुवता शरदस्यां हि न समाश्वासमर्हथ ॥ ३४ ॥

dināni katicidyeyaṃ phalitā dehajaṅgaleyuvatā śaradasyāṃ hi na samāśvāsamarhatha || 34 ||

This youthfulness, having borne fruit for only a few days in the wilderness of the body, is like autumn — you should not place your trust in it.

यह जवानी, जो शरीर के जंगल में बस कुछ दिनों के लिए फल देती है, पतझड़ जैसी है — इस पर भरोसा मत करो।

1.20.35

झटित्येव प्रयात्येव शरीराद्युवताखगः क्षणेनैवाल्पभाग्यस्य हस्ताच्चिन्तामणिर्यथा ॥ ३५ ॥

jhaṭityeva prayātyeva śarīrādyuvatākhaḡaḡkṣaṇenaivālpabhāgyasya hastāccintāmaṇiryathā || 35 ||

The bird that is youth suddenly flies away from the body, all at once — just as a wish-granting jewel slips in an instant from the hand of an unlucky man.

जवानी नाम की चिड़िया अचानक, एक ही झटके में शरीर से उड़ जाती है — जैसे किसी बदकिस्मत आदमी के हाथ से चिंतामणि पल भर में फिसल जाती है।

1.20.36

यदा यदा परां कोटिमध्यारोहति यौवनम् । वल्गन्ति सज्वराः कामास्तदा नाशाय केवलम् ॥ ३६ ॥

yadā yadā parāṃ koṭimadhyārohati yauvanam | valganti saḡvarāḡ kāmāstadā nāśāya kevalam || 36 ||

Whenever youth climbs to its highest point, feverish desires leap up — and then it is only for ruin.

जब भी जवानी अपने चरम पर चढ़ती है, तपती हुई इच्छाएँ उछलने लगती हैं — और तब यह सिर्फ़ बर्बादी के लिए होती है।

1.20.37

तावदेव विवल्गन्ति रागद्वेषपिशाचकाः । नास्तमेति समस्तैषा यावद्यौवनयामिनी ॥ ३७ ॥

tāvadeva vivalganti rāḡadveṣapiśācakāḡ | nāstameti samastaiṣā yāvadyauvanayāminī || 37 ||

Only for as long as this whole night of youth has not yet set do the demons of attachment and hatred keep leaping about.

जब तक जवानी की यह पूरी रात ढली नहीं है, तभी तक राग और द्वेष के भूत-प्रेत उछल-कूद मचाते हैं।

1.20.38

नानाविकारबहुले वराके क्षणनाशिनि । कारुण्यं कुरु तारुण्ये म्रियमाणे सुतै यथा ॥ ३८ ॥

nānāvīkārabahule varāke kṣaṇanāśini | kāruṇyaṃ kuru tāruṇye mriyamāṇe sutai yathā || 38 ||

Show pity to youth — so full of changes, so wretched, gone in a moment — when it is dying, feel for it as you would for a dying son.

जवानी पर दया करो — जो इतने बदलावों से भरी है, इतनी बेचारी है, पल भर में खत्म हो जाने वाली है — जब यह मर रही हो, तो इसके लिए वैसा ही महसूस करो जैसे किसी मरते हुए बेटे के लिए करते हो।

1.20.39

हर्षमायाति यो मोहात्पुरुषः क्षणभङ्गिना । यौवनेन महामुग्धः स वै नरमृगः स्मृतः ॥ ३९ ॥

harṣamāyāti yo mohāt puruṣaḥ kṣaṇabhaṅginā | yauvanena mahāmugdhaḥ sa vai naramṛgaḥ smṛtaḥ || 39 ||

The man who, out of delusion, feels joy because of youth, which shatters in an instant — that man, thoroughly fooled by youth, is indeed called a deer wearing a man's shape.

जो आदमी भ्रम में पड़कर, पल भर में टूट जाने वाली जवानी की वजह से खुश होता है, जवानी से पूरी तरह मूर्ख बना वह आदमी सच में इंसान के रूप में हिरण कहलाता है।

1.20.40

मानमोहान्मदोन्मत्तं यौवनं योऽभिलाष्यति । अचिरेण स दुर्बुद्धिः पश्चात्तापेन युज्यते ॥ ४० ॥

mānamohānmadonmattaṃ yauvanaṃ yo'bhilaṣyati | acireṇa sa durbuddhiḥ paścāttāpena yujyate || 40 ||

Whoever, out of pride and delusion, longs for youth, maddened as it is with intoxication — that foolish man will soon be caught by regret.

जो कोई घमंड और भ्रम में पड़कर नशे में डूबी जवानी की चाह रखता है, वह मूर्ख आदमी जल्द ही पछतावे में फँस जाएगा।

1.20.41

ते पूज्यास्ते महात्मानस्त एव पुरुषा भुवि । ये सुखेन समुत्तीर्णाः साधो यौवनसंकटात् ॥ ४१ ॥

te pūjyāste mahātmānaste eva puruṣā bhuvi | ye sukhena samuttīrṇāḥ sādho yauvanasaṃkaṭāt || 41 ||

O good soul, those who have safely crossed the danger of youth — they alone deserve honor, they are the great souls, they alone are true men on this earth.

हे साधु, जो लोग जवानी के खतरे को आसानी से पार कर गए हैं — वही सम्मान के लायक हैं, वही महान आत्माएँ हैं, इस धरती पर सच्चे इंसान भी वही हैं।

1.20.42

सुखेन तीर्यतेऽम्भोधिरुत्कृष्टमकराकरः । न कल्लोलबलोल्लासि सदोषं हतयौवनम् ॥ ४२ ॥

sukhena tīryate'mbhodhirutkrṣṭamakarākaraḥ | na kallocalabalollāsi sadoṣaṃ hatayauvanam || 42 ||

An ocean, even one crowded with great sea-monsters, can be crossed easily — but not this harmful, deadly youth, surging with the force of its own waves.

बड़े-बड़े समुद्री जीवों से भरा समंदर भी आसानी से पार किया जा सकता है — पर यह नुकसानदेह, जानलेवा जवानी नहीं, जो अपनी ही लहरों के जोर से उछलती रहती है।

विनयभूषितमार्यजनास्पदं करुणयोज्ज्वलमावलितं गुणैः । इह हि दुर्लभमङ्ग सुयौवनं जगति काननमम्बरगं यथा ॥ ४३ ॥

vinayabhūṣitamāryajanāspadam karuṇayojjvalamāvalitaṁ guṇaiḥ | iha hi durlabhamanga suyauvanam jagati kānanamambaragaṁ yathā || 43 ||

Dear one, a truly good youth — adorned with humility, a fit home for noble people, shining with compassion, wrapped round with every virtue — is indeed rare in this world, like a forest floating in the sky.

प्रिय, सच में अच्छी जवानी — जो विनम्रता से सजी हो, जो भले लोगों के रहने लायक हो, जो दया से दमकती हो, जो हर गुण से लिपटी हो — इस दुनिया में सच में दुर्लभ है, जैसे आसमान में तैरता कोई जंगल।

Chapter 21

1.21.1

श्रीराम उवाच । मांसपाञ्चालिकायास्तु यन्त्रलोलेऽङ्गपञ्जरे । स्नाय्वस्थिग्रन्थिशालिन्याः स्त्रियाः किमिव शोभनं ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | māṁsapāñcālikāyāstu yantraloletaṅgapañjare | snāyuvasthigranthiśālinyāḥ striyāḥ kimiva śobhanaṁ || 1 ||

Shri Rama said: A woman is only a doll made of flesh, her body a cage of limbs that move like a machine, held together by joints of muscle and bone. What is truly beautiful about her?

श्रीराम ने कहा कि औरत तो बस मांस की एक गुड़िया है, उसका शरीर हड्डियों और नसों के जोड़ों से बंधा हुआ एक ऐसा पिंजरा है जो मशीन की तरह हिलता-डुलता है। इसमें सुंदर आखिर क्या है?

1.21.2

त्वङ्मांसरक्तबाष्पाम्बु पृथक्कृत्वा विलोचनम् । समालोकय रम्यं चेत्किं मुधा परिमुह्यसि ॥ २ ॥

tvakmāṁsaraktabāṣpāmbu prṭhakṛtvā vilocanam | samālokaya ramyaṁ cetkim mudhā parimuhyasi || 2 ||

Take the eye apart into its parts - skin, flesh, blood, and the water of tears - then look closely and see if it is really lovely. Why fool yourself for nothing?

आंख को उसके हिस्सों में अलग करके देखो - त्वचा, मांस, खून और आंसू का पानी - फिर ध्यान से देखो कि क्या यह सच में सुंदर है। बेकार में खुद को क्यों धोखा दे रहे हो?

1.21.3

इतः केशा इतो रक्तमितीयं प्रमदातनुः । किमेतया निन्दितया करोति विपुलाशयः ॥ ३ ॥

itah keśā ito raktamitīyaṁ pramadātānuḥ | kimetayā ninditayā karoti vipulāśayaḥ || 3 ||

Here is hair, there is blood - that is all this woman's body really is. What does a person of great understanding want with this contemptible thing?

यहां बाल हैं, वहां खून है - औरत का शरीर बस इतना ही है। जिस इंसान की समझ बड़ी है, उसे इस तुच्छ चीज़ से क्या लेना-देना?

1.21.4

वासोविलेपनैर्यानि लालितानि पुनः पुनः । तान्यङ्गान्यङ्गं लुण्ठन्ति क्रव्यादाः सर्वदेहिनाम् ॥ ४ ॥

vāsovilepanairyāni lālītāni punaḥ punaḥ | tānyaṅgānyaṅga luṇṭhanti kravyādāḥ sarvadehinām || 4 ||

The very limbs that are lovingly pampered again and again with clothes and perfumed ointments - those same limbs, in the end, are torn apart and eaten by flesh-eating creatures, as happens to every living body.

जिन अंगों को कपड़ों और खुशबूदार लेप से बार-बार बड़े प्यार से सजाया-संवारा जाता है, वही अंग आखिर में मांस खाने वाले जानवर नोच-नोच कर खा जाते हैं, जैसा हर शरीर के साथ होता है।

1.21.5

मेरुशरुंगतटोल्लाखिगंगाजलरयोपमा । दृष्टा यस्मिन् स्तने सुक्ताहार स्यपोल्लासशालिता ॥ ५ ॥

meruśarugaṭaṭollākḥigangājalarayopamā | dṛṣṭā yasmin stane suktāhāra syapolāsāśālītā || 5 ||

That was the breast on which a pearl necklace was once seen, glowing and splendid, like the rushing water of the Ganga leaping down the slope of Mount Meru's peak.

यही वह छाती थी जिस पर कभी मोतियों का हार चमकता और बहुत सुंदर लगता था, बिल्कुल वैसे जैसे मेरु पर्वत की चोटी की ढलान से गंगा का तेज़ पानी नीचे कूदते हुए बहता है।

1.21.6

श्मशानेषु दिगन्तेषु स एव ललनास्तनः । श्वभिरास्वाद्यते काले लघुपिण्ड इवान्धसः ॥ ६ ॥

śmaśāneṣu diganteṣu sa eva lalanāstanaḥ | śvabhirāsvādyate kāle laghupiṇḍa ivāndhasaḥ || 6 ||

That same woman's breast, out in the distant burning grounds, is eaten by dogs in time, like a small ball of leftover food.

उसी औरत की वह छाती, दूर श्मशान में, समय आने पर कुत्ते ऐसे खा जाते हैं जैसे खाने का कोई छोटा टुकड़ा।

1.21.7

रक्तमांसास्थिदिग्धानि करभस्य यथा वने । तथैवाङ्गानि कामिन्यास्तां प्रत्यपि हि को ग्रहः ॥ ७ ॥

raktamāṃsāsthidigdhāni karabhasya yathā vane | tathaiivāṅgāni kāmīnyāstāṃ pratyapi hi ko grahaḥ || 7 ||

Just as the body of a dead camel lying in the forest is smeared with blood, flesh, and bone, so too are the limbs of a desirable woman. So why should anyone be attached to her?

जैसे जंगल में पड़े मरे हुए ऊंट का शरीर खून, मांस और हड्डी से लथपथ होता है, वैसे ही एक सुंदर औरत के अंग भी होते हैं। फिर उससे इतना मोह क्यों?

1.21.8

आपातरमणीयत्वं कल्पते केवलं स्त्रियाः । मन्ये तदपि नास्त्यत्र मुने मोहैककारणम् ॥ ८ ॥

āpātaramaṇīyatvaṃ kalpate kevalaṃ striyāḥ | manye tadapi nāstyatra mune mohaikakāraṇam || 8 ||

A woman seems pleasing only at first sight, only on the surface. And I think, O sage, that even this so-called loveliness does not really exist - it is nothing but the one and only cause of our delusion.

औरत सिर्फ पहली नज़र में, सिर्फ ऊपर-ऊपर से अच्छी लगती है। और हे मुनि, मुझे तो लगता है कि यह सुंदरता भी असल में है ही नहीं - यह बस हमारे मोह का एक ही कारण है।

1.21.9

विपुलोल्लासदायिन्या मदमन्मथपूर्वकम् । को विशेषो विकारिण्या मदिरायाः स्त्रियास्तथा ॥ ९ ॥

vipulollāsadāyinyā madamanmathapūrvakam | ko viśeṣo vikāriṇyā madirāyāḥ striyāstathā || 9 ||

Both wine and a woman give great excitement mixed with intoxication and lust, and both disturb the mind in the same way. So what real difference is there between wine and a woman?

शराब और औरत दोनों ही नशे और वासना के साथ बड़ी उत्तेजना देती हैं, और दोनों ही मन को एक जैसा बिगाड़ देती हैं। तो फिर शराब और औरत में असल में फर्क ही क्या है?

1.21.10

ललनालानसंलीना मुने मानवदन्तिनः । प्रबोधं नाधिगच्छन्ति दृढैरपि शमाङ्कुशैः ॥ १० ॥

lalanālānasamlīnā mune mānavadantīnaḥ | prabodhaṃ nādhigacchanti dṛḍhairapi śamāṅkuśaiḥ || 10 ||

O sage, men are like elephants tied to the post that is woman. Even the strongest goad of self-control cannot wake them up.

हे मुनि, इंसान उस हाथी की तरह हैं जो औरत नाम के खूंटे से बंधा है। आत्म-संयम का सबसे मज़बूत अंकुश भी उसे होश में नहीं ला पाता।

1.21.11

केशकज्जलधारिण्यो दुःस्पर्शा लोचनप्रियाः । दुष्कृताग्निशिखा नार्यो दहन्ति तृणवन्नरम् ॥ ११ ॥

keśakajjaladhāriṇyo duḥsparśā locanapriyāḥ | duṣkṛtāgnīśikhā nāryo dahanti tṛṇavannaram || 11 ||

Women, whose hair is as black as kohl, may be pleasing to the eyes but hard to bear once touched - they are flames lit by past bad deeds, and they burn a man up like a blade of dry grass.

जिन औरतों के बाल काजल जैसे काले हैं, वे देखने में भली लगती हैं पर छूने पर मुश्किल साबित होती हैं - वे पिछले बुरे कर्मों से जली आग की लपट हैं, और आदमी को सूखी घास के तिनके की तरह जला देती हैं।

1.21.12

ज्वलतामतिदूरेऽपि सरसा अपि नीरसाः । स्त्रियो हि नरकाग्नीनामिन्धनं चारु दारुणम् ॥ १२ ॥

jvalatāmatidūre'pi sarasā api nīrasāḥ | striyo hi narakāgnīnāmīndhanam cāru dāruṇam || 12 ||

Even from far away and even while ablaze, they look moist and fresh, but they are actually dry through and through - women are fuel for the fires of hell, fuel that looks beautiful but is terrible. दूर से देखने पर और जलते हुए भी वे गीली और ताज़ा लगती हैं, पर असल में वे पूरी तरह सूखी होती हैं - औरतें नरक की आग का ईंधन हैं, ऐसा ईंधन जो देखने में सुंदर पर असल में बड़ा भयानक है।

1.21.13

विकीर्णाकारकबरी तरत्तारकलोचना । पुर्णेन्दुबिम्बवदना कुसुमोत्करहासिनी ॥ १३ ॥

vikīrṇākārakabarī tarattāarakalocanā | purṇendubimba vadanā kusumotkarahāsinī || 13 ||

Her hair falls in loose, lovely locks, her eyes dart about like twinkling stars, her face is like the disc of the full moon, and her smile is like a cluster of blossoms.

उसके बाल ढीले होकर खूबसूरती से बिखरे रहते हैं, उसकी आंखें टिमटिमाते तारों की तरह इधर-उधर देखती हैं, उसका चेहरा पूरे चांद जैसा है, और उसकी मुस्कान फूलों के गुच्छे जैसी है।

1.21.14

लीलाविलोलपुरुषा कार्यसंहारकारिणी । परं विमोहनं बुद्धेः कामिनी दीर्घयामिनी ॥ १४ ॥

līlāvilolapuruṣā kāryasaṃhārahārīṇī | paraṃ vimohanam buddheḥ kāmīnī dīrghayāminī || 14 ||

Through her playful ways she makes men restless and unsteady, and she wrecks their proper work. This desirable woman is the mind's greatest deluder - to the man lost in her, she is like one endless, dark night.

अपनी अदाओं से वह मर्दों को बेचैन और डांवाडोल कर देती है, और उनका सही काम-धंधा बिगाड़ देती है। यह मनचाही औरत बुद्धि को सबसे ज़्यादा भरमाने वाली है - उसमें डूबे आदमी के लिए वह एक लंबी, अंधेरी रात जैसी है।

1.21.15

पुष्पाभिराममधुरा करपल्लवशालिनी । भ्रमराक्षिविलासाढ्या स्तनस्तबकधारिणी ॥ १५ ॥

puṣpābhirāmamadhurā karapallavaśālīnī | bhramarākṣivilāsāḍhyā stanastabakadhārīṇī || 15 ||

Sweet and lovely like a flower, with hands as delicate as young leaf-shoots, her playful eyes dark like bees, and her breasts like a cluster of blossoms.

फूल जैसी मीठी और सुंदर, उसके हाथ कोमल नई पत्तियों जैसे हैं, उसकी चंचल आंखें भंवरे जैसी काली हैं, और उसकी छातियां फूलों के गुच्छे जैसी हैं।

1.21.16

पुष्पकेसरगौराङ्गी नरमारणतत्परा ददात्युन्मत्तवैवश्यं कान्ता विषलता यथा ॥ १६ ॥

puṣṭpakesaragaurāṅgī narāmaṇatatparā dadātyunmattavaivaśyaṃ kāntā viṣalatā yathā || 16 ||

Her body is as fair as flower pollen, yet she is set on destroying men. Like a poisonous creeper, this lovely woman drives them into a mad, helpless state.

उसका शरीर फूल के पराग जैसा गोरा है, फिर भी वह मर्दों को बर्बाद करने पर तुली है। यह सुंदर औरत ज़हरीली बेल की तरह उन्हें पागल और लाचार बना देती है।

1.21.17

सत्कार्योच्छ्वासमात्रेण भुजङ्गदलनोत्कया कान्तयोद्ध्रियते जन्तुः करभ्येवोरगो बिलात् ॥ १७ ॥

satkāryocchvāsamātreṇa bhujaṅgadalanoṭkayā kāntayoddhriyate jantuḥ karabhyevorago bilāt || 17 ||

Just as a snake-catcher, with nothing more than a breath meant to look harmless, draws a snake out of its hole in order to tear it apart, so a man is drawn out to his ruin by the beloved who is eager to destroy him.

जैसे सांप पकड़ने वाला सिर्फ एक हल्की सी, बेजान लगने वाली सांस से सांप को उसके बिल से बाहर निकालकर उसे चीर डालता है, वैसे ही आदमी को उसकी प्रेमिका बर्बाद करने के इरादे से बाहर खींच लाती है।

1.21.18

कामनाम्ना किरातेन विकीर्णा मुग्धचेतसाम् नार्यो नरविहंगानामङ्गबन्धनवागुराः ॥ १८ ॥

kāmanāmnā kirātena vikīrṇā mugdhacetāsām nāryo naravihāṅgānāmaṅgabandhanavāgurāḥ || 18 ||

The hunter named Desire has scattered these traps for simple, foolish minds: women are snares that catch the limbs of men, who are like birds caught in a net.

वासना नाम के शिकारी ने भोले-भाले मन वालों के लिए ये जाल बिछा रखे हैं: औरतें ऐसे फंदे हैं जो उन आदमियों के अंगों को जकड़ लेती हैं, जो परिंदों की तरह जाल में फंस जाते हैं।

1.21.19

ललनाविपुलालाने मनोमत्तमतंगजः रतिशृङ्खलया ब्रह्मन्बद्धस्तिष्ठति मूकवत् ॥ १९ ॥

lalanāvīpulālāne manomattamataṅgajaḥ ratishṛṅkhalayā brahmanbaddhastiṣṭhati mūkavat || 19 ||

O Brahmin, the mind is like a mad elephant tied to the huge post that is woman - bound by the chain of desire, it stands there silent and helpless.

हे ब्राह्मण, मन उस पागल हाथी जैसा है जो औरत नाम के बड़े खूँटे से बंधा है - वासना की जंजीर में जकड़ा हुआ वह चुपचाप और लाचार खड़ा रहता है।

1.21.20

जन्मपल्वलमत्स्यानां चित्तकर्दमचारिणाम् पुंसां दुर्वासनारज्जुर्नारी बडिशपिण्डिका ॥ २० ॥

janmapalvalamatsyānāṃ cittakardamacāriṇām puṃsāṃ durvāsanārajjunārī baḍīśapiṇḍikā || 20 ||

Men are like fish in the small pond of this life, moving about in the mud of their own minds. For them, bad desires are the fishing line, and woman is the bait on the hook.

आदमी इस जीवन के छोटे तालाब की मछलियों जैसे हैं, जो अपने ही मन की कीचड़ में घूमते रहते हैं। उनके लिए बुरी इच्छाएं मछली पकड़ने की डोरी हैं, और औरत कांटे पर लगा चारा है।

1.21.21

मन्दुरं च तुरङ्गाणामालानमिव दन्तिनाम् । पुंसां मन्त्र इवाहीनां बन्धनं वामलोचना ॥ २१ ॥

manduraṃ ca turaṅgāṇāmālānamiva dantinām | puṃsāṃ mantra ivāhīnāṃ bandhanaṃ vāmalocanā || 21 ||

As a stable holds horses, as a post holds elephants, and as a charm holds snakes, so a lovely-eyed woman is a bond that holds men.

जैसे अस्तबल घोड़ों को बांधे रखता है, जैसे खूँटा हाथियों को बांधे रखता है, और जैसे मंत्र साँपों को बांधे रखता है, वैसे ही सुंदर आंखों वाली औरत आदमियों को बांधे रखती है।

1.21.22

नानारसवती चित्रा भोगभूमिरियं मुने । स्त्रियमाश्रित्य संयाता परामिह हि संस्थितिम् ॥ २२ ॥

nānārasavatī citrā bhogabhūmiriyaṃ mune | striyamāśritya saṃyātā parāmiha hi saṃsthitim || 22 ||

O sage, this whole varied and colorful ground of worldly pleasure reaches its highest point, right here, in woman.

हे मुनि, यह पूरी दुनिया की तरह-तरह की रंग-बिरंगी सुख-भोग की ज़मीन, यहीं औरत में आकर अपने सबसे ऊँचे मुकाम पर पहुँचती है।

1.21.23

सर्वेषां दोषरत्नानां सुसमुद्रिकयाऽनया । दुःखश्चङ्खला नित्यमलमस्तु मम स्त्रिया ॥ २३ ॥

sarveṣāṃ doṣaratnānāṃ susamudgikayā'nyā | duḥkhaśṅkhalayā nityamalamas tu mama striyā || 23 ||

Enough! Let me be done with this woman forever - she is a fine little box holding every kind of fault, a chain that binds me to endless suffering.

बस! अब मुझे हमेशा के लिए इस औरत से छुटकारा चाहिए - वह हर तरह के दोष से भरा एक सुंदर सा डिब्बा है, एक ऐसी जंजीर जो मुझे हमेशा के दुख से बांधे रखती है।

1.21.24

किं स्तनेन किमक्ष्णा वा किं नितम्बेन किं भुवा । मांसमात्रैकसारेण करोम्यहमवस्तुना ॥ २४ ॥

kiṃ stanena kimakṣṇā vā kiṃ nitambena kiṃ bhuvā | māṃsamātraikasāreṇa karomyaḥamavastunā || 24 ||

What use to me is a breast, an eye, a hip, or a brow, when their only substance is mere flesh? What can I do with something so unreal, so worthless?

मुझे छाती, आंख, कूल्हे या भौंह से क्या मतलब, जब इनमें सिर्फ मांस के सिवा कुछ नहीं है? इस झूठी और बेकार चीज़ का मैं क्या करूँ?

1.21.25

इतो मांसमितो रक्तमितोऽस्थीनीति वासरैः ब्रह्मन्कतिपयैरेव याति स्त्री विशारुताम् ॥ २५ ॥

ito māṃsamito raktamito'sthīnīti vāsaraiḥbrahmankatipayaireva yāti strī viśārūtām || 25 ||

O Brahmin, within just a few days a woman falls apart into pieces - here flesh, there blood, there bones.

हे ब्राह्मण, गिनती के कुछ दिनों में ही औरत का शरीर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है - यहां मांस, वहां खून, वहां हड्डियां।

1.21.26

यास्तात पुरुषैः स्थूलैर्ललिता मनुजैः प्रियाः । ता मुने प्रविभक्ताङ्ग्यः स्वपन्ति पितृभूमिषु ॥ २६ ॥

yāstāt puruṣaiḥ sthūlāirlalitā manujaiḥ priyāḥ | tā mune pravibhaktāṅgyaḥ svapanti pitṛbhūmiṣu || 26 ||

Dear one, the women who are cherished and loved by men caught up in bodily pleasure - those same women, O sage, later lie in the burning grounds with their limbs torn apart.

प्रिय, जिन औरतों को शरीर के सुख में डूबे मर्द बड़े प्यार से चाहते हैं, वही औरतें, हे मुनि, आखिर में श्मशान में अपने कटे-फटे अंगों के साथ पड़ी रहती हैं।

1.21.27

यस्मिन्धनतरस्नेहं मुखे पत्राङ्कुराः स्त्रियः । कान्तेन रचिता ब्रह्मन्पीयते तेन जङ्गले ॥ २७ ॥

yasminghanatarasnehaṁ mukhe patrāṅkurāḥ striyaḥ | kāntena racitā brahmanpīyate tena jaṅgale || 27 ||

The very face on which her lover, with deep affection, once drew delicate leaf-patterns - O Brahmin, that same face is later licked and drained by wild creatures out in the wilderness.

जिस चेहरे पर उसके प्रेमी ने कभी गहरे प्यार से बारीक पत्तों के डिज़ाइन बनाए थे - हे ब्राह्मण, उसी चेहरे को बाद में जंगल में जंगली जानवर चाट-चाट कर खा जाते हैं।

1.21.28

केशाः श्मशानवृक्षेषु यान्ति चामरलेखिकाम् । अस्थीन्युडुवदाभान्ति दिनैरवनिमण्डले ॥ २८ ॥

keśāḥ śmaśānavṛkṣeṣu yānti cāmaralekhikām | asthīnyuḍuvadābhānti dinairavanimaṇḍale || 28 ||

Her hair, caught on the trees of the burning ground, comes to look like a hanging whisk. Her bones, lying scattered on the ground, shine like stars, day after day.

श्मशान के पेड़ों में उलझे उसके बाल किसी लटकते हुए चंवर जैसे दिखने लगते हैं। ज़मीन पर बिखरी उसकी हड्डियां रोज़-रोज़ तारों की तरह चमकती हैं।

1.21.29

पिबन्ति पांसवो रक्तं क्रव्यादाश्चाप्यनेकशः । चर्माणि च शिवा भुङ्क्ते खं यान्ति प्राणवायवः ॥ २९ ॥

pibanti pāṁsavo raktaṁ kravyādāścāpyanekaśaḥ | carmāṇi ca śivā bhuṅkte khaṁ yānti prāṇavāyavaḥ || 29 ||

The dust drinks up her blood, flesh-eating creatures devour her flesh from every side, jackals eat her skin, and her life-breaths go out into the open sky.

धूल उसका खून पी जाती है, मांस खाने वाले जानवर चारों तरफ से उसका मांस खा जाते हैं, गीदड़ उसकी खाल खा जाते हैं, और उसकी प्राण-वायु खुले आसमान में चली जाती है।

1.21.30

इत्येषा ललनाङ्गानामचिरेणैव भाविनी । स्थितिर्मया वः कथिता किं भ्रान्तिमनुधावथ ॥ ३० ॥

ityeṣā lalanāṅgānāmacireṇaiva bhāvinī | sthitirmayā vaḥ kathitā kiṁ bhrāntimanudhāvatha || 30 ||

So, I have told you all what will very soon become of a woman's body. Why do you all keep chasing this delusion?

तो मैंने तुम सबको बता दिया कि औरत के शरीर का बहुत जल्द क्या हाल होने वाला है। फिर तुम सब इस भ्रम के पीछे क्यों भागे जा रहे हो?

1.21.31

भूतपञ्चकसंघट्टसंस्थानं ललनाभिधम् । रसादभिपतत्वेतत्कथं नाम धियान्वितः ॥ ३१ ॥

bhūtapañcakasaṃghaṭṭasaṃsthānaṃ lalanābhidham | rasādabhipatatvetatkathaṃ nāma dhiyānvitaḥ || 31 ||

This thing called "woman" is just a coming-together of the five basic elements. How could anyone with real intelligence fall for it out of mere attraction?

यह जो "औरत" कहलाती है, वह बस पांच तत्वों के मिलने से बनी एक बनावट है। फिर कोई असल में समझदार इंसान सिर्फ आकर्षण की वजह से इस पर कैसे फिसल सकता है?

1.21.32

शाखाप्रतानगहना कट्फलफलमालिनी । सुतालोत्तालतामेति चिन्ता कान्तानुसारिणी ॥ ३२ ॥

śākhāpratānagahanā kaṭṭvamaḥphalamālinī | sūtālottālatāmeti cintā kāntānusārīṇī || 32 ||

The worry that chases after a beloved grows thick with spreading branches and shoots, hung with bitter and sour fruit - it grows tall and towering, like a great palm tree.

प्रेमिका के पीछे-पीछे चलने वाली चिन्ता घनी होकर फैलती हुई शाखाओं और टहनियों से भर जाती है, जिस पर कड़वे और खट्टे फल लगते हैं - वह ताड़ के बड़े पेड़ जितनी ऊंची और विशाल हो जाती है।

1.21.33

कान्दिग्भूततया चेतो घनगर्धान्धमाकुलम् । परं मोहमुपादत्ते यूथभ्रष्टमृगो यथा ॥ ३३ ॥

kāndigbhūtatayā ceto ghanagardhāṇdhamākulam | paraṃ mohamupādatte yūthabhraṣṭamṛgo yathā || 33 ||

Not knowing which way to turn, blind and troubled by thick craving, the mind falls into the deepest delusion - like a deer that has strayed away from its herd.

किस तरफ जाए यह न समझ पाकर, गहरी लालच से अंधा और परेशान होकर, मन सबसे गहरे भ्रम में डूब जाता है - बिल्कुल उस हिरण की तरह जो अपने झुंड से भटक गया हो।

1.21.34

शोच्यतां परमां याति तरुणस्तरुणीपरः । निबद्धः करिणीलोलो विन्ध्यखाते यथा गजः ॥ ३४ ॥

śocyatāṃ paramāṃ yāti taruṇastaruṇīparaḥ | nibaddhaḥ kariṇīlolo vindhyakhāte yathā gajaḥ || 34 ||

A young man who is caught up in a young woman becomes utterly pitiable - trapped, like a bull elephant, eager for a female elephant, that falls into a hidden pit in the Vindhya forest.

जो जवान आदमी किसी जवान औरत में डूबा रहता है, वह बड़ा ही तरस खाने लायक हो जाता है - बिल्कुल उस हाथी की तरह फंस जाता है जो हथिनी के पीछे भागते हुए विन्ध्य के जंगल के छिपे हुए गड्ढे में जा गिरता है।

1.21.35

यस्य स्त्री तस्य भोगेच्छा निःस्त्रीकस्य क्व भोगभूः । स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्पत्यं जगत्पत्यत्वा सुखी भवेत् ॥ ३५ ॥

yasya strī tasya bhogecchā niḥstriikasya kva bhogabhūḥ | striyaṃ tyaktvā jagattpatyaṃ jagattpatyatvā sukhī bhavet || 35 ||

Whoever has a woman has the desire for worldly pleasure; for one without a woman, where is there any ground for pleasure at all? To give up woman is to give up the world, and to give up the world is to become happy.

जिसके पास औरत है, उसके मन में सुख-भोग की चाह भी है; जिसके पास औरत नहीं, उसके लिए सुख-भोग की ज़मीन ही कहाँ बचती है? औरत को छोड़ देना दुनिया को छोड़ देना है, और दुनिया को छोड़कर ही इंसान सुखी हो सकता है।

आपातमात्ररमणेषु सुदुस्तरेषु भोगेषु नाहमलिपक्षतिचञ्चलेषु । ब्रह्मन्त्रमे मरणरोगजरादिभीत्या शाम्याम्यहं परमुपैमि पदं
प्रयत्नात् ॥ ३६ ॥

āpātamātraramaṇeṣu sudustareṣu bhogeṣu nāhamalipakṣaticañcaleṣu | brahmanrame maraṇarogajarādibhītyā śāmyāmyaham paramupaimi padam prayatnāt || 36 ||

O Brahmin, I take no delight in pleasures that charm only for a moment, that are so hard to get past, as restless and fickle as the fluttering wing of a bee. Fearing death, sickness, old age, and all such things, I have grown calm, and through my own effort I am reaching toward the highest state.

हे ब्राह्मण, मुझे उन सुखों में कोई आनंद नहीं आता जो सिर्फ पल भर के लिए भाते हैं, जिनसे पार पाना बड़ा मुश्किल है, और जो भंवरे के पंख की तरह चंचल और बेचैन हैं। मौत, बीमारी, बुढ़ापे वगैरह के डर से मैं शांत हो गया हूं, और अपनी ही कोशिश से उस सबसे ऊंचे पद की ओर बढ़ रहा हूं।

Chapter 22

1.22.1

श्रीराम उवाच । अपर्याप्तं हि बालत्वं बलात्पिबति यौवनम् । यौवनं च जरा पश्चात्पश्य कर्कशतां मिथः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | aparyāptaṁ hi bālatvaṁ balātpibati yauvanam | yauvanam ca jarā paścātpasyā karkaśatāṁ mithaḥ || 1 ||

Sri Rama said: Childhood is not even over, and youth already forces it down and drinks it up. Then old age comes after youth — see how harshly, one after another, they treat each other.

श्रीराम बोले: बचपन अभी पूरा भी नहीं होता कि जवानी जबरदस्ती उसे निगल जाती है। और उसके बाद बुढ़ापा जवानी को निगल जाता है, देखो, ये सब एक-दूसरे के साथ कितनी बेरहमी से पेश आते हैं।

1.22.2

हिमाशनिरिवाम्भोजं वात्येव शरदम्बुकम्देहं जरा नाशयति नदी तीरतरुं यथा ॥ २ ॥

himāśanirivāmbhojaṁ vātyeva śaradambukamdehaṁ jarā nāśayati nadī tīrataruṁ yathā || 2 ||

As hail destroys a lotus, as a storm scatters an autumn cloud, as a river sweeps away a tree on its own bank, so old age destroys the body.

जैसे ओले कमल को बर्बाद कर देते हैं, जैसे आंधी शरद ऋतु के बादल को उड़ा ले जाती है, जैसे नदी अपने ही किनारे के पेड़ को बहा ले जाती है, वैसे ही बुढ़ापा शरीर को नष्ट कर देता है।

1.22.3

जर्जरीकृतसर्वाङ्गी जरा जरठरूपिणी । विरूपतां नयत्याशु देहं विषलवो यथा ॥ ३ ॥

jarjarīkṛtasarvāṅgī jarā jaratharūpiṇī | virūpatāṁ nayatyāśu dehaṁ viṣalavo yathā || 3 ||

Old age breaks every limb and wears an old, worn-out shape of its own; it quickly turns the body ugly, the way a drop of poison does.

बुढ़ापा हर अंग को तोड़-मरोड़ देता है और खुद भी बूढ़ा और घिसा-पिटा सा दिखता है; यह शरीर को उतनी ही जल्दी बदसूरत बना देता है जितनी जल्दी जहर की एक बूंद बना देती है।

1.22.4

शिथिलादीर्णसर्वाङ्गं जराजीर्णकलेवरम् । समं पश्यन्ति कामिन्यः पुरुषं करभं यथा ॥ ४ ॥

śīthilādīrṇasarvāṅgaṁ jarājīrṇakalevaram | samam paśyanti kāmīnyāḥ puruṣaṁ karabhaṁ yathā || 4 ||

A man whose every limb has gone slack and worn, whose body old age has used up — women look at him with no more interest than they would give a camel.

जिस पुरुष के सारे अंग ढीले और घिस चुके हैं, जिसका शरीर बुढ़ापे ने चूस लिया है, उसे स्त्रियां उतनी ही उपेक्षा से देखती हैं जितनी किसी ऊंट को देखती हैं।

1.22.5

अनायासकदर्थिन्या गृहीते जरसा जने । पलाय्य गच्छति प्रज्ञा सपत्न्येवाहताङ्गना ॥ ५ ॥

anāyāsakadarthinyā grhīte jarasā jane | palāyya gacchati prajñā sapatnyevāhatāṅganā || 5 ||

When old age, which wears a person down without even trying, takes hold of someone, good sense runs away from him, like a battered co-wife fleeing the house.

जब बुढ़ापा, जो बिना कुछ किए ही इंसान को तोड़ देता है, किसी को जकड़ लेता है, तो समझ-बूझ ऐसे भाग जाती है जैसे मार खाई हुई सौत घर छोड़कर भाग जाती है।

1.22.6

दासाः पुत्राः स्त्रियश्चैव बान्धवाः सुहृदस्तथा । हसन्त्युन्मत्तकमिव नरं वार्धककम्पितम् ॥ ६ ॥

dāsāḥ putrāḥ striyaścaiva bāndhavāḥ suhr̥dastathā | hasantyunmattakamiva naraṃ vārdhakakampitam || 6 ||

Servants, sons, wives, relatives, and friends — all of them laugh at a man shaking with old age, as if he were a madman.

नौकर, बेटे, पत्नियां, रिश्तेदार और दोस्त, सब बुढ़ापे से कांपते हुए आदमी पर ऐसे हंसते हैं जैसे वह पागल हो।

1.22.7

दुष्प्रेक्ष्यं जरठं दीनं हीनं गुणपराक्रमैः । गृध्रो वृक्षमिवादीर्घं गर्धो ह्यभ्येति वृद्धकम् ॥ ७ ॥

duṣprekṣyaṃ jaraṭhaṃ dīnaṃ hīnaṃ guṇaparākramaḥ | gṛdhrō vṛkṣamivādīrghaṃ gardhō hyabhyēti vṛddhakam || 7 ||

The old man is ugly to look at, worn out, pitiful, stripped of all merit and strength — yet craving still swoops down on him fast, the way a vulture swoops down on a tree.

बूढ़ा आदमी देखने में भद्दा, घिसा-पिटा, दयनीय और गुण-बल से खाली हो चुका होता है, फिर भी लालसा उस पर उतनी ही तेजी से झपटती है जितनी तेजी से गिद्ध किसी पेड़ पर झपटता है।

1.22.8

दन्यदोषमयी दीर्घा हृदि दाहप्रदायिनी । सर्वापदामेकसखी वार्धके वर्धते स्पृहा ॥ ८ ॥

dainyadoṣamayī dīrghā hr̥di dāhapradāyini | sarvāpadāmēkasakhī vārdhakē vardhatē sprhā || 8 ||

In old age, longing keeps growing — full of misery, long-lasting, burning the heart, the one true friend of every misfortune.

बुढ़ापे में तड़प बढ़ती ही जाती है, जो दुख से भरी है, देर तक टिकती है, दिल को जलाती है, और हर मुसीबत की अकेली साथी है।

1.22.9

कर्तव्यं किं मया कष्टं परत्रेत्यतिदारुणम् । अप्रतीकारयोग्यं हि वर्धते वार्धके भयम् ॥ ९ ॥

kartavyaṃ kiṃ mayā kaṣṭhaṃ paratrētyatidāruṇam | apratikārayōgyaṃ hi vardhatē vārdhakē bhayam || 9 ||

"What hard thing must I still do, what awaits me in the world after this one?" — with such terrible thoughts, an incurable fear grows in old age.

"मुझे अभी और कौन सा कष्ट झेलना है, परलोक में मेरा क्या होगा?" ऐसे भयानक विचार बुढ़ापे में एक ऐसा डर बढ़ा देते हैं जिसका कोई इलाज नहीं।

1.22.10

कोऽहं वराकः किमिव करोमि कथमेव च । तिष्ठामि मौनमेवेति दीनतोदेति वार्धके ॥ १० ॥

ko'haṃ varākaḥ kimiva karomi kathameva ca | tiṣṭhāmi maunameveti dīnatodeti vārdhake || 10 ||

"Who am I, poor wretch? What can I do, and how? I will just keep quiet" — this is the kind of helplessness that rises up in old age.

"मैं कौन हूँ, बेचारा? मैं क्या करूँ और कैसे करूँ? मैं तो बस चुप ही रहूँगा" - बुढ़ापे में ऐसी लाचारी उठ खड़ी होती है।

1.22.11

कथं कदा मे किमिव स्वादु स्याद्भोजनं जनात् इत्यजस्रं जरा चैषा चेतो दहति वार्धके ॥ ११ ॥

katham kadā me kimiva svādu syādbhojanam janāt ityajasraṁ jarā caiṣā ceto dahati vārdhake || 11 ||

"How, when, from whom, and what tasty food will I get?" — with such endless worry, this old age keeps burning the mind.

"मुझे कैसे, कब, किससे और कौन सा स्वादिष्ट खाना मिलेगा?" ऐसी लगातार चिंता में यह बुढ़ापा मन को जलाता रहता है।

1.22.12

गर्धोऽभ्युदेति सोल्लासमुपभोक्तुं न शक्यते हृदयं दह्यते नूनं शक्तिदौस्थ्येन वार्धके ॥ १२ ॥

gardho'bhyudeti sollāsamupabhoktuṁ na śakyate hṛdayam dahyate nūnam śaktidausthyena vārdhake || 12 ||

Craving rises up eagerly, but there is no strength left to enjoy anything — in old age the heart truly burns from this failure of the body's power.

लालसा तो बड़े जोश से उठती है, पर भोगने की ताकत ही नहीं बचती, बुढ़ापे में शरीर की शक्ति टूट जाने से दिल सचमुच जल उठता है।

1.22.13

जराजीर्णबकी यावत्कायक्लेशापकारिणी रौति रोगोरगाकीर्णा कायद्रुमशिरःस्थिता ॥ १३ ॥

jarājīrṇabakī yāvatkāyakleśāpakārīṇī rauti rogoragākīrṇā kāyadrumaśiraḥsthitā || 13 ||

Old age is a worn-out crane that harms the body with pain; covered with the snakes of disease, she sits on top of the tree that is the body and screeches on and on.

बुढ़ापा एक जर्जर बगुली है, जो शरीर को कष्ट देकर उसे चोट पहुंचाती है; रोग रूपी सांपों से घिरी हुई वह शरीर रूपी पेड़ की चोटी पर बैठकर लगातार चीखती रहती है।

1.22.14

तावदागत एवाशु कुतोऽपि परिदृश्यते घनान्ध्यतिमिराकाङ्क्षी मुने मरणकौशिकः ॥ १४ ॥

tāvadāgata evāśu kuto'pi paridrśyate ghanāndhyatimirākāṅkṣī mune maraṇakauśikaḥ || 14 ||

And just then, quickly, from somewhere, he is seen coming — O sage, death, the owl that longs for thick, blinding darkness.

और ठीक तभी, कहीं से, तेजी से आता हुआ वह दिखाई पड़ता है, हे मुनि, मृत्यु, वह उल्लू जो घने अंधे कर देने वाले अंधेरे को तरसता है।

1.22.15

सायंसंध्यां प्रजातां वै तमः समनुधावति जरां वपुषि दृष्ट्वैव मृतिः समनुधावति ॥ १५ ॥

sāyaṁsaṁdhyāṁ prajātāṁ vai tamaḥ samanudhāvati jarāṁ vapuṣi dṛṣṭvaiva mṛtiḥ samanudhāvati || 15 ||

Just as darkness follows right behind as soon as evening twilight comes, so death follows right behind the moment it sees old age appear in the body.

जैसे संध्या होते ही अंधेरा उसके पीछे-पीछे दौड़ा आता है, वैसे ही शरीर में बुढ़ापा दिखते ही मृत्यु उसके पीछे-पीछे दौड़ी आती है।

1.22.16

जराकुसुमितं देहद्रुमं दृष्ट्वैव दूरतः । अध्यापतति वेगेन मुने मरणमर्कटः ॥ १६ ॥

jarākusumitaṁ dehadrumaṁ dṛṣṭvaiva dūrataḥ | adhyāpatati vegena mune maraṇamarkaṭaḥ || 16 ||

O sage, the moment death, the monkey, sees from far away that the tree of the body has flowered with old age, he pounces on it fast.

हे मुनि, बुढ़ापे के फूलों से लदे शरीर रूपी पेड़ को दूर से देखते ही, मृत्यु रूपी बंदर तेजी से उस पर टूट पड़ता है।

1.22.17

शून्यं नगरमाभाति भाति च्छिन्नलतो द्रुमः । भात्यनावृष्टिमान्देशो न जराजर्जरं वपुः ॥ १७ ॥

śūnyaṃ nagaramābhāti bhāti cchinnaḥ lato drumah | bhātyanāvṛṣṭimānddeśo na jarājarjaraṃ vapuḥ || 17 ||

An empty city can still look fine. A tree with its creeper cut off can still look fine. A land hit by drought can still look fine. But a body broken down by old age never looks fine.

सूना पड़ा नगर भी ठीक लगता है। जिस पेड़ की बेल कट गई हो, वह भी ठीक लगता है। सूखे से मारा हुआ इलाका भी ठीक लगता है। पर बुढ़ापे से टूटा हुआ शरीर कभी ठीक नहीं लगता।

1.22.18

क्षणाग्निरणायैव कासक्वणितकारिणी । गृध्रीवामिषमादत्ते तरसैव नरं जरा ॥ १८ ॥

kṣaṇān nigaraṇāyaiva kāsakvaṇitakāriṇī | grdhraiva āmiṣamādatte tarasaiva naraṃ jarā || 18 ||

Old age, which makes a person wheeze and cough, grabs him fast, in an instant, only to swallow him — the way a she-vulture snatches at meat.

बुढ़ापा, जो आदमी को खांसी में घरघराहट के साथ हांफा देता है, उसे इस तरह झट से पकड़ लेता है, जैसे गिद्धिनी मांस पर झपट पड़ती है, बस निगलने के लिए।

1.22.19

दृष्ट्वैव सोत्सुकेवाशु प्रगृह्य शिरसि क्षणम् । प्रलुनाति जरा देहं कुमारी कैरवं यथा ॥ १९ ॥

drṣṭvaiva sotsukevāśu pragṛhya śirasi kṣaṇam | pralunāti jarā dehaṃ kumārī kairavaṃ yathā || 19 ||

The instant old age sees the body, eager and quick, it grabs it by the head for a moment and tears it apart — the way a young girl plucks a white lotus.

शरीर को देखते ही बुढ़ापा उतावला होकर झट से उसे सिर से पकड़ लेता है और नोच डालता है, जैसे कोई युवती किसी सफेद कमल को तोड़ डालती है।

1.22.20

सीत्कारकारिणी पांसुपरुषा परिजर्जरम् । शरीरं शातयत्येषा वात्येव तरुपल्लवम् ॥ २० ॥

sītkārakāriṇī pāṃsuparuṣā parijarjaraṃ | śarīraṃ śātayaty eṣā vātyeva tarupallavam || 20 ||

This old age makes a person groan, and it is rough as dust; it wears down the completely broken body, the way a storm strips the tender leaves off a tree.

यह बुढ़ापा आदमी को कराहने पर मजबूर करता है और धूल जैसा खुरदरा होता है; यह पूरी तरह टूट चुके शरीर को ऐसे गिरा देता है जैसे आंधी पेड़ की कोमल पत्तियों को झाड़ देती है।

1.22.21

जरसोपहतो देहो धत्ते जर्जरतां गतः । तुषारनिकराकीर्णपरिम्लानाम्बुजश्रियम् ॥ २१ ॥

jarasopahato deho dhatte jarjaratāṃ gataḥ | tuṣāranikarākīrṇaparimlānāmbujaśriyam || 21 ||

The body struck down by old age turns worn and broken, taking on the sorry beauty of a lotus that has wilted under a heap of frost.

बुढ़ापे की मार खाया हुआ शरीर टूटा-फूटा हो जाता है, और उस मुरझाए हुए कमल जैसा दिखने लगता है जो पाले के ढेर के नीचे दब गया हो।

1.22.22

जरा ज्योत्स्नोदितैवेयं शिरःशिखरिपृष्ठतः । विकासयति संरब्धं वातकासकुमुद्वती ॥ २२ ॥

jarā jyotsnoditaiveyaṃ śiraḥśikhari-prṣṭhataḥ | vikāsayati saṃrabdhaṃ vātakāsakumudvatī || 22 ||

This old age rises like moonlight from behind the peak that is the head, and it makes the white lotus flowers of coughing and wind-sickness burst eagerly into bloom.

यह बुढ़ापा सिर रूपी पहाड़ की चोटी के पीछे से चांदनी की तरह उगता है, और खांसी तथा वात रोग रूपी सफेद कमल के फूलों को जोर-शोर से खिला देता है।

1.22.23

परिपक्वं समालोक्य जराक्षारविधूसरम् । शिरःकूष्माण्डकं भुङ्क्ते पुंसां कालः किलेश्वरः ॥ २३ ॥

paripakvaṃ samālokya jarākṣāravidhūsaram | śiraḥkūṣmāṇḍakaṃ bhuñkte puṃsāṃ kālaḥ kileśvaraḥ || 23 ||

Seeing that a man's head has fully ripened, turned ash-grey with the ash of old age, Time, who truly is everyone's master, eats up that little pumpkin.

आदमी के सिर को पूरी तरह पका हुआ और बुढ़ापे की राख से धूसर देखकर, काल, जो सचमुच सबका मालिक है, उस छोटे कद्दू को खा जाता है।

1.22.24

जराजह्नुसुतोद्युक्ता मूलान्यस्य निकृन्तति । शरीरतीरवृक्षस्य चलत्यायुषि सत्वरम् ॥ २४ ॥

jarājahnusutodyuktā mūlānyasya nikṛntati | śarīratīravṛkṣasya calatyāyūṣi satvaram || 24 ||

Old age, like the river Ganga hard at work, cuts away the roots of the body — the tree standing on its bank — while the stream of life quickly flows on.

बुढ़ापा गंगा नदी की तरह जुटकर, आयु की धारा को तेजी से बहते हुए, शरीर रूपी किनारे के पेड़ की जड़ें काटता जाता है।

1.22.25

जरामार्जारिका भुङ्क्ते यौवनाखुं तथोद्धता । परमुल्लासमायाति शरीरामिषगर्धिनी ॥ २५ ॥

jarāmārjārikā bhuñkte yauvanākhuṃ tathoddhatā | paramullāsamāyāti śarīrāmiṣagardhinī || 25 ||

Old age is a cat craving the flesh of the body; she eats up the mouse that is youth, and rises up in triumphant delight.

बुढ़ापा एक बिल्ली है जो शरीर के मांस की लालची है; वह जवानी रूपी चूहे को खा जाती है और बड़े इतराकर खुश होती है।

1.22.26

काचिदस्ति जगत्यस्मिन्नामङ्गलकरी तथा । यथा जराक्रोशकरी देहजङ्गलजम्बुकी ॥ २६ ॥

kācidasti jagatyasminnāmaṅgalakarī tathā | yathā jarākrośakarī dehajaṅgalajambukī || 26 ||

Is there anything else in this world as unlucky as old age — the jackal of the body's wilderness, whose howl brings only bad luck?

क्या इस दुनिया में बुढ़ापे जैसी बदशगुनी और कोई चीज है? यह शरीर रूपी जंगल की सियारिन है, जिसकी चीख-पुकार अपशकुन लाती है।

1.22.27

कासश्वासससीत्कारा दुःखधूमतमोमयी । जराज्वाला ज्वलत्येषा यस्यासौ दग्ध एव हि ॥ २७ ॥

kāsaśvāsasatīkārā duḥkhadhūmatamomayī | jarājvālā jvalatyēṣā yasyāsau dagdha eva hi || 27 ||

This flame of old age burns on, giving off coughing, hard breathing, and groaning, full of the smoke and darkness of pain — and whoever it catches is truly burnt up.

बुढ़ापे की यह आग जलती रहती है, जिसमें से खांसी, हांफना और कराह उठती है, जो दुख के धुएं और अंधेरे से भरी है, और जिसे यह पकड़ लेती है, वह सचमुच जलकर राख हो जाता है।

1.22.28

जरसा वक्रतामेति शुक्लावयवपल्लवा । तात तन्वी तनुर्नृणां लता पुष्पानता यथा ॥ २८ ॥

jarasā vakratāmeti śuklāvayavapallavā | tāta tanvī tanurnṛṇāṃ latā puṣpānatā yathā || 28 ||

Dear father, through old age the slender body of a man turns crooked, its limbs like young shoots gone white — the way a creeper bends low under the weight of its own flowers.

हे पिता, बुढ़ापे से आदमी का दुबला-पतला शरीर टेढ़ा हो जाता है, उसके अंग सफेद हुए नए अंकुरों जैसे लगने लगते हैं, जैसे कोई बेल अपने ही फूलों के बोझ से झुक जाती है।

1.22.29

जराकर्पूरधवलं देहकर्पूरपादपम् । मुने मरणमातङ्गो नूनमुद्धरति क्षणात् ॥ २९ ॥

jarākarpūradhavalam dehakarpūrapādapam | mune maraṇamātaṅgo nūnamuddharati kṣaṇāt || 29 ||

O sage, death, the elephant, surely uproots in a single instant the camphor tree that is the body, turned white with the camphor of old age.

हे मुनि, बुढ़ापे के कपूर से सफेद हुए शरीर रूपी कपूर के पेड़ को मृत्यु रूपी हाथी पल भर में जड़ से उखाड़ फेंकता है।

1.22.30

मरणस्य मुने राज्ञो जराधवलचामरा । आगच्छतोऽग्रे निर्याति स्वाधिव्याधिपताकिनी ॥ ३० ॥

maraṇasya mune rājño jarādhavalacāmarā | āgacchato'gre niryāti svādhivyādhīpatākinī || 30 ||

O sage, when King Death comes, old age goes ahead of him like his own white fan, and the army of one's own mental pains and bodily diseases marches out before him carrying its flags.

हे मुनि, जब मृत्यु रूपी राजा आता है, तो बुढ़ापा उसके सफेद पंखे की तरह आगे-आगे चलता है, और अपनी ही मानसिक पीड़ाओं और शारीरिक बीमारियों की सेना झंडे लिए आगे बढ़ती है।

1.22.31

न जिताः शत्रुभिः संख्ये प्रविष्टा येऽद्रिकोटरेते जराजीर्णराक्षस्या पश्याशु विजिता मुने ॥ ३१ ॥

na jitāḥ śatrubhiḥ saṁkhye praviṣṭā ye'drikotārete jarājīrṇarākṣasya paśyāśu vijitā mune || 31 ||

Those who were never beaten by enemies in battle, who ran and hid inside mountain caves — see, O sage, how quickly even they are beaten by the she-demon that is worn-out old age.

जो लोग युद्ध में शत्रुओं से कभी नहीं हारे और भागकर पहाड़ों की गुफाओं में जा छिपे, हे मुनि, देखो, वे भी जर्जर बुढ़ापा रूपी राक्षसी से कितनी जल्दी हार जाते हैं।

1.22.32

जरातुषारवलिते शरीरसदनान्तरे शक्रवन्त्यक्षशिशवः स्पन्दितुं न मनागपि ॥ ३२ ॥

jarātuṣāravalite śarīrasadanāntare śaknavantyaśakṣaśiśavaḥ spanditum na manāgapi || 32 ||

When the house that is the body gets covered all over with the frost of old age, the little children that are the senses cannot stir even a little.

जब शरीर रूपी घर बुढ़ापे की पाले से पूरी तरह ढक जाता है, तो उसमें रहने वाले इंद्रियों रूपी बच्चे जरा भी हिल-डुल नहीं पाते।

1.22.33

दण्डतृतीयपादेन प्रस्वलन्ती मुहुर्मुहुःकासाधोवायुमुरजा जरा योषित्प्रनृत्यति ॥ ३३ ॥

daṇḍatrītiyapādena praskhalantī muhurmuḥuḥkāśādhovāyumurajā jarā yoṣitpranṛtyati || 33 ||

Using a stick as her third leg, stumbling again and again, with coughing and the wind passed below as her drumbeat, old age, a woman, keeps on dancing.

लाठी को अपना तीसरा पैर बनाकर, बार-बार लड़खड़ाती हुई, खांसी और नीचे से निकलती वायु को अपना ढोल बनाकर, बुढ़ापा नाम की यह औरत नाचती रहती है।

1.22.34

संसारसंसृतेरस्या गन्धकुट्यां शिरोगतादेहयष्ट्यां जरानाम्नी चामरश्रीर्विराजते ॥ ३४ ॥

saṃsārasaṃsṛterasyā gandhakutyaṃ śirogatādehayaṣṭyāṃ jarānāmnī cāmaraśrīrvirājate || 34 ||

In this endless coming and going of the world, high up on the thin rod that is the body, in its sweet-smelling room, that thing called old age shines like a king's white fan.

इस संसार के अंतहीन आने-जाने में, शरीर रूपी पतली छड़ी की चोटी पर, उसके सुगंधित कमरे में, बुढ़ापा नाम की यह चीज राजा के सफेद पंखे की तरह चमकती है।

1.22.35

जराचन्द्रोदयसिते शरीरनगरे स्थितेक्षणाद्विकासमायाति मुने मरणकैरवम् ॥ ३५ ॥

jarācandrodayasite śarīranagare sthitekṣaṇādvikāsamāyāti mune maraṇakairavam || 35 ||

O sage, the moment the city that is the body turns white with the moonrise of old age, the white lotus that is death bursts into bloom.

हे मुनि, ज्यों ही शरीर रूपी नगर बुढ़ापे के चांद के उगने से सफेद हो जाता है, त्यों ही मृत्यु रूपी सफेद कमल खिल उठता है।

1.22.36

जरासुधालेपसिते शरीरान्तःपुरान्तरे । अशक्तिरार्तिरापञ्च तिष्ठन्ति सुखमङ्गनाः ॥ ३६ ॥

jarāsudhālepasite śarīrāntaḥpurāntare | aśaktirārtirāpacca tiṣṭhanti sukhamaṅganāḥ || 36 ||

Inside the body's inner chambers, whitewashed by the plaster of old age, weakness, pain, and disaster live at ease — like the women who live in a king's private quarters.

शरीर के भीतरी कमरों में, जो बुढ़ापे के सफेद पलस्तर से पुते हैं, कमजोरी, पीड़ा और विपत्ति रूपी स्त्रियां आराम से रहती हैं, जैसे किसी राजा के रनिवास में रहने वाली स्त्रियां।

1.22.37

अभावोऽग्रेसरी यत्र जरा जयति जन्तुषु । कस्तत्रेह समाश्वासो मम मन्दमतेर्मुने ॥ ३७ ॥

abhāvo'gresarī yatra jarā jayati jantuṣu | kastatreha samāśvāso mama mandamater mune || 37 ||

Where destruction itself walks in front and old age wins over every living being — what comfort is left there, O sage, for someone as dull-witted as me?

जहां विनाश खुद सबसे आगे चलता है और बुढ़ापा हर जीव पर जीत पाता है, हे मुनि, वहां मुझ जैसे मंदबुद्धि के लिए भला कौन सा सहारा बचता है?

किं तेन दुर्जीवितदुर्ग्रेण जरागतेनापि हि जीव्यते यत् । जराजगत्यामजिता जनानां सर्वैषणास्तात तिरस्करोति ॥ ३८ ॥

kiṃ tena durjīvitadurgrāheṇa jarāgatena'pi hi jīvyate yat | jarājagatyāmajitā janānām sarvaiṣaṇāstāta tiraskaroti || 38 ||

What is the use of this miserable, stubborn clinging to life, by which a person goes on living even after old age has arrived? Old age, whom nobody in this world has ever conquered, crushes every desire people have, dear father.

उस दुखी और जिद्दी जीने की चाह से क्या फायदा, जिसकी वजह से आदमी बुढ़ापा आने पर भी जीता ही रहता है? हे पिता, बुढ़ापे को इस दुनिया में आज तक कोई नहीं जीत पाया, और यह लोगों की हर इच्छा को कुचल डालता है।

Chapter 23

1.23.1

श्रीराम उवाच । विकल्पकल्पनानल्पजल्पितैरल्पबुद्धिभिः । भेदैरुद्धुरतां नीतः संसारकुहरे भ्रमः ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | vikalpakalpanānalpajalpitaairalpabuddhibhiḥ | bhedairuddhuratāṃ nītaḥ saṃsārakuhare
bhramaḥ || 1 ||

Sri Rama said: People with little sense talk on and on, making up one difference after another, and through these very differences, confusion has grown huge in the deep pit of this world.

श्रीराम ने कहा कि कम समझ वाले लोग बहुत बोलते हैं, वे एक के बाद एक भेद गढ़ते रहते हैं, और इन्हीं भेदों की वजह से इस संसार रूपी गड्ढे में भ्रम बहुत बड़ा हो गया है।

1.23.2

सतां कथमिवास्थेह जायते जालपञ्जरे । बाला एवात्तुमिच्छन्ति फलं मुकुरबिम्बितम् ॥ २ ॥

satāṃ kathamivāstheha jāyate jālapañjare | bālā evāttumicchanti phalaṃ mukurabimbitam || 2 ||

How could wise people ever feel at home in this world, which is like a cage made of net? Only children want to grab a fruit that is just a reflection in a mirror.

भले लोग इस जाल जैसे पिंजरे में भला कैसे मन लगा सकते हैं? सिर्फ बच्चे ही आईने में दिखने वाले फल को पकड़ना चाहते हैं।

1.23.3

इहापि विद्यते येषां पेलवा सुखभावना । आखुस्तन्तुमिवाशेषं कालस्तामपि कृन्तति ॥ ३ ॥

ihāpi vidyate yeṣāṃ pelavā sukhbhāvanā | ākhustantumivāśeṣaṃ kālastāmapi kṛntati || 3 ||

Even people who hold only a thin, weak idea of happiness in this world - time cuts that too, completely, the way a mouse gnaws through a thread.

इस दुनिया में जिन लोगों के पास सुख का बस एक कमज़ोर सा खयाल भी है, समय उसे भी पूरी तरह काट देता है, जैसे चूहा धागे को कुतर देता है।

1.23.4

न तदस्तीह यदयं कालः सकलघस्मरः । ग्रसते तज्जगज्जातं प्रोत्थाब्धिमिव वाडवः ॥ ४ ॥

na tadastīha yadayaṃ kālaḥ sakalaghasmarḥ | grasate tajjagajjātaṃ protthābhimiva vāḍavaḥ || 4 ||

Whatever born world this all-devouring time swallows no longer exists here at all - just as the underwater fire swallows up the rising ocean.

यह सब कुछ निगल जाने वाला समय जिस भी पैदा हुई दुनिया को निगल लेता है, वह यहाँ फिर कहीं बचती ही नहीं, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र के भीतर की आग उठते हुए समुद्र को पी जाती है।

1.23.5

समस्तसामान्यतया भीमः कालो महेश्वरः । दृश्यसत्तामिमां सर्वा कवलीकर्तुमुद्यतः ॥ ५ ॥

samastasāmānyatayā bhīmaḥ kālo maheśvaraḥ | dṛśyasattāmimāṃ sarvāṃ kavalīkartumudyataḥ || 5 ||

Time, the great and terrible lord, treats everyone the same. He stands ready to swallow this whole visible world in one gulp.

समय, वह महान और डरावना ईश्वर, सबके साथ एक जैसा बर्ताव करता है। वह इस पूरी दिखने वाली दुनिया को एक ही निवाले में निगलने के लिए तैयार खड़ा है।

1.23.6

महतामपि नो देवः प्रतिपालयति क्षणम् । कालः कवलितानन्तविश्वो विश्वात्मतां गतः ॥ ६ ॥

mahatāmapi no devaḥ pratipālayati kṣaṇam | kālaḥ kavalitānantaviśvo viśvātmataṁ gataḥ || 6 ||

This god does not spare even the great ones for a single moment. Time has swallowed the endless universe and has itself become the very self of the universe.

यह देवता बड़े-बड़ों को भी एक पल के लिए नहीं छोड़ता। समय ने इस अनंत ब्रह्मांड को निगल लिया है और खुद ही इस ब्रह्मांड की आत्मा बन गया है।

1.23.7

युगवत्सरकल्पाख्यैः किञ्चित्प्रकटतां गतः । रूपैरलक्ष्यरूपात्मा सर्वमाक्रम्य तिष्ठति ॥ ७ ॥

yugavatsarakalpākhyaiḥ kiñcitprakaṭatāṁ gataḥ | rūpairalakṣyarūpātmā sarvamākramya tiṣṭhati || 7 ||

Through such names as 'age', 'year', and 'world-cycle', time shows itself a little. But his real form cannot be seen at all - he stands there, having taken over everything.

युग, वर्ष और कल्प जैसे नामों से समय थोड़ा सा दिखाई देता है, लेकिन उसका असली रूप बिलकुल दिखाई नहीं देता। वह सब कुछ पर कब्ज़ा करके खड़ा है।

1.23.8

ये रम्या ये शुभारम्भाः सुमेरुगुरवोऽपि ये । कालेन विनिगीर्णास्ते गरुडेनेव पन्नगाः ॥ ८ ॥

ye ramyā ye śubhārambhāḥ sumeruguravo'pi ye | kālena vinigīrṇāste garuḍeneva pannagāḥ || 8 ||

Everything beautiful, every good beginning, and everything as huge as Mount Meru - time swallows it all, the way Garuda swallows snakes.

जो कुछ भी सुंदर है, जो भी शुभ शुरुआत है, और जो भी सुमेरु पर्वत जितना विशाल है, समय उन सबको निगल जाता है, जैसे गरुड़ साँपों को निगल जाता है।

1.23.9

निर्दयः कठिनः क्रूरः कर्कशः कृपणोऽधमः । न तदस्ति यदद्यापि न कालो निगिरत्ययम् ॥ ९ ॥

nirdayaḥ kaṭhinaḥ krūraḥ karkaśaḥ kṛpaṇo'dhamah | na tadasti yadadyāpi na kālo nigiratyayam || 9 ||

Merciless, hard, cruel, rough, stingy, low - there is nothing that this time is not swallowing, even right now.

निर्दयी, कठोर, क्रूर, रूखा, कंजूस, नीच - ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे यह समय अभी भी न निगल रहा हो।

1.23.10

कालः कवलनैकान्तमतिरत्ति गिरन्नपि । अनन्तैरपि लोकौघैर्नायं तृप्तो महाशनः ॥ १० ॥

kālaḥ kavalanaikāntamatiratti girannapi | anantairapi lokaughairnāyaṁ tṛpto mahāśanaḥ || 10 ||

Time, whose whole mind is fixed only on swallowing, eats and eats without stopping. Yet even endless crowds of worlds do not satisfy this great eater.

समय, जिसका पूरा मन बस निगलने में लगा रहता है, बिना रुके खाता ही रहता है। फिर भी अनगिनत दुनियाओं से भी यह बड़ा खाने वाला तृप्त नहीं होता।

1.23.11

हरत्ययं नाशयति करोत्यत्ति निहन्ति च । कालः संसारनृत्तं हि नानारूपं यथा नटः ॥ ११ ॥

haratyayaṃ nāśayati karotyatti nihanti ca | kālaḥ saṃsāranṛttaṃ hi nānārūpaṃ yathā naṭaḥ || 11 ||

This time takes things away, destroys them, makes them, eats them, and kills them. Like an actor, he performs the dance of this world, taking many forms.

यह समय चीजों को छीन लेता है, नष्ट कर देता है, बनाता है, खा जाता है और मार डालता है। जैसे एक नट कई रूप धारण करके नाचता है, वैसे ही समय इस संसार का नाच करता है।

1.23.12

भिनत्ति प्रविभागस्थभूतबीजान्यनारतम् । जगत्यसत्तया बन्धाद्दडिमानि यथा शुकः ॥ १२ ॥

bhinatti pravibhāgasthabhūtabījānyanāratam | jagatyasattayā bandhāddāḍimāni yathā śukaḥ || 12 ||

He keeps breaking apart the seeds of all the different kinds of beings spread through the world, snapping the thread that holds them together, the way a parrot breaks open pomegranates.

वह दुनिया में अलग-अलग तरह के जीवों के बीजों को लगातार तोड़ता रहता है, उनके बंधन को तोड़ देता है, जैसे तोता अनार को फोड़ देता है।

1.23.13

शुभाशुभविषाणाग्रविलूनजनपल्लवः । स्फूर्जति स्फीतजनताजीवराजीवनीगजः ॥ १३ ॥

śubhāśubhaviṣāṇāgravilūṇajanapallavaḥ | sphūrjati sphītajanatājīvarājīvanīgajaḥ || 13 ||

He roars like an elephant whose tusks, both lucky and unlucky, cut down people the way tender leaves are cut down - an elephant stirring up the lotus pond that is the life of the crowded multitude.

वह एक हाथी की तरह गरजता है, जिसके दाँत - चाहे शुभ हों या अशुभ - लोगों को कोमल पत्तों की तरह काट डालते हैं। यह हाथी उस कमल के तालाब को मथता है जो भीड़ भरी दुनिया की ज़िंदगी है।

1.23.14

विरिञ्चिमूलब्रह्माण्डबृहद्देवफलद्रुमम् । ब्रह्मकाननमाभोगि परमावृत्य तिष्ठति ॥ १४ ॥

viriñcimūlabrahmāṇḍabṛhaddēvaphaladrumam | brahmakānanamābhogi paramāvṛtya tiṣṭhati || 14 ||

He stands wrapped completely around the whole forest of Brahma - a forest rooted in the creator, whose trees bear the great gods and the universe itself as their fruit.

वह ब्रह्मा के उस पूरे जंगल को पूरी तरह लपेटे हुए खड़ा है - वह जंगल जिसकी जड़ें सृष्टिकर्ता में हैं, और जिसके पेड़ों पर बड़े-बड़े देवता और यह पूरा ब्रह्मांड फल की तरह लगे हैं।

1.23.15

यामिनी भ्रमरापूर्णा रचयन्दिनमञ्जरीः । वर्षकल्पकलावल्लीर्न कदाचन खिद्यते ॥ १५ ॥

yāminī bhramarāpūrṇā racayandinamañjarīḥ | varṣakalpakalāvallīrnā kadācana khidyate || 15 ||

He never gets tired: he goes on making clusters of days like flowers, nights full of buzzing bees, and creepers made of years and cosmic ages.

वह कभी नहीं थकता: वह दिनों के गुच्छे फूलों की तरह बनाता रहता है, भिनभिनाती मधुमक्खियों से भरी रातें बनाता है, और वर्षों तथा कल्पों की बेलें बनाता रहता है।

1.23.16

भिद्यते नावभग्नोऽपि दग्धोऽपि हि न दह्यते । दृश्यते नापि दृश्योऽपि धूर्तचूडामणिर्मुने ॥ १६ ॥

bhidhyate nāvabhagno'pi dagdho'pi hi na dahyate | drśyate nāpi drśyo'pi dhūrtacūḍāmaṇirmune || 16 ||

O sage, even when broken he does not split, even when burned he is not consumed by fire, and even though he can be seen, he is never actually seen. He is the greatest trickster of them all.

हे मुनि, वह टूटने पर भी टूटता नहीं, जलने पर भी जलता नहीं, और दिखने लायक होते हुए भी कभी दिखता नहीं। वह सबसे बड़ा धूर्त है।

1.23.17

एकेनैव निमेषेण किञ्चिदुत्थापयत्यलम् । किञ्चिद्विनाशयत्युच्चैर्मनोराज्यवदाततः ॥ १७ ॥

ekenaiva nimeṣeṇa kiñcidutthāpayaty alam | kiñcidvināśayaty uccair manorājyavadātataḥ || 17 ||

In a single instant, he lifts one thing up completely, and destroys another thing entirely, spreading out everywhere like a castle built only in the mind.

एक ही पल में वह किसी एक चीज़ को पूरी तरह ऊपर उठा देता है, और किसी दूसरी चीज़ को पूरी तरह नष्ट कर देता है, और मन में बने किले की तरह हर जगह फैला रहता है।

1.23.18

दुर्विलासविलासिन्या चेष्टया कष्टषुष्टया । द्रव्यैकरूपकृद्रूपं जनमावर्तयन्स्थितः ॥ १८ ॥

durvilāsavilāsinyā ceṣṭayā kaṣṭaṣuṣṭayā | dravyaika-rūpakṛd-rūpaṁ janamāvartayan sthitaḥ || 18 ||

Through a mischief that enjoys cruelty and feeds on misery, he keeps turning people round and round, reducing every one of them to the same one kind of raw matter.

कूरता में मज़ा लेने वाली और दुख से पलने वाली अपनी शरारत से, वह लोगों को बार-बार घुमाता रहता है, और सबको एक ही तरह के कच्चे माल में बदल देता है।

1.23.19

तृणं पांसुं महेन्द्रं च सुमेरुं पर्णमर्णवम् । आत्मभरितया सर्वमात्मसात्कर्तुमुद्यतः ॥ १९ ॥

tr̥ṇaṁ pāṁsuṁ mahendraṁ ca sumeruṁ parṇam arṇavam | ātmaṁbhari tayā sarvam ātmasāt kartum udyataḥ || 19 ||

A blade of grass, a speck of dust, Indra the king of gods, Mount Meru, a leaf, the ocean - out of pure self-interest, he stands ready to make every one of them his own.

घास का एक तिनका, धूल का एक कण, देवताओं का राजा इंद्र, सुमेरु पर्वत, एक पत्ता, समुद्र - अपने ही स्वार्थ के कारण वह इन सबको अपना बना लेने के लिए तैयार खड़ा है।

1.23.20

क्रौर्यमत्रैव पर्याप्तं लुब्धतात्रैव संस्थिता । सर्वदौर्भाग्यमत्रैव चापलं वापि दुःसहम् ॥ २० ॥

krauryamatraiva paryāptaṁ lubdhatātraiva saṁsthitā | sarvadaurbhāgyamatraiva cāpalaṁ vāpi duḥsaham || 20 ||

Cruelty is complete in him alone. Greed too stays in him alone. Every misfortune is in him alone, and so is an unbearable restlessness.

कूरता पूरी तरह से बस उसी में है। लालच भी बस उसी में टिका है। हर बदकिस्मती बस उसी में है, और वह बर्दाश्त न होने वाली बेचैनी भी बस उसी में है।

1.23.21

प्रेरयँल्लील्यार्केन्दू क्रीडतीव नभस्तले । निक्षिप्तलीलायुगलो निजे बाल इवाङ्गणे ॥ २१ ॥

prerayaṃllīlayārṅkendū krīḍatīva nabhastale | nikṣiptalīlāyugalo nīje bāla ivāṅgaṇe || 21 ||

Playfully rolling the sun and the moon along, he seems to play across the surface of the sky, like a child who has set down a pair of toy balls in his own yard.

सूरज और चाँद को खेल-खेल में घुमाते हुए, वह जैसे आकाश की सतह पर खेल रहा हो, ठीक वैसे जैसे कोई बच्चा अपने ही आँगन में दो गेंदें रखकर खेलता है।

1.23.22

सर्वभूतास्थिमालाभिरापादवलिताकृतिः । विलसत्येव कल्पान्ते कालः कलितकल्पनः ॥ २२ ॥

sarvabhūtāsthimālābhirāpāda-valitākṛtiḥ | vilasatyeva kalpānte kālaḥ kalitakalpanaḥ || 22 ||

At the end of the age, time - his plan now fully carried out - goes on playing in splendor, his whole body wrapped from head to foot in garlands strung from the bones of every creature.

युग के अंत में, समय - जिसकी योजना अब पूरी हो चुकी है - अपनी शान में खेलता रहता है, उसका पूरा शरीर सिर से पाँव तक हर जीव की हड्डियों की मालाओं से लिपटा हुआ है।

1.23.23

अस्योद्दामरवृत्तस्य कल्पान्तेऽङ्गविनिर्गतैः । प्रस्फुरत्यम्बरे मेरुर्भूर्जत्वगिव वायुभिः ॥ २३ ॥

asyoḍḍāmaravṛttasya kalpānte'ṅgavinirgataiḥ | prasphuratyambare merurbhūrjativagiva vāyubhiḥ || 23 ||

At the end of the age, winds burst out from the limbs of this wild, uncontrolled time, and even Mount Meru flutters in the sky like a strip of birch bark.

युग के अंत में, इस बेकाबू और उग्र समय के अंगों से हवाएँ फूट पड़ती हैं, और सुमेरु पर्वत भी आकाश में भोजपत्र की तरह फड़फड़ाने लगता है।

1.23.24

रुद्रो भूत्वा भवत्येष महेन्द्रोऽथ पितामहः । शक्रो वैश्रवणश्चापि पुनरेव न किञ्चन ॥ २४ ॥

rudro bhūtvā bhavatyēṣa mahendro'tha pitāmahaḥ | śakro vaiśravaṇaścāpi punarēva na kiñcana || 24 ||

This time becomes Rudra, then becomes Mahendra, then Brahma the grandfather of all, then Shakra and even Vaishravana - and then, once again, nothing at all.

यह समय रुद्र बन जाता है, फिर महेन्द्र बनता है, फिर सबके पितामह ब्रह्मा बनता है, फिर शक्र और वैश्रवण भी बनता है - और फिर से कुछ भी नहीं रह जाता।

1.23.25

धत्तेऽजस्रोत्थितोद्ध्वस्तान्सर्गानमितभास्वरान् । अन्यान्दधद्विवानक्तं वीचीरब्धिरिवात्मनि ॥ २५ ॥

dhatte'jasroththitoddhvastānsargānamitabhāsvarān | anyāndadhaddivānaktam vīcīrabdhirivātmani || 25 ||

He constantly carries creations that rise up and are destroyed without stopping, endlessly bright, and keeps bringing forth new ones day and night within himself, just as the ocean holds its own waves.

वह लगातार ऐसी सृष्टियों को धारण करता है जो बिना रुके उठती और नष्ट होती रहती हैं, अनगिनत रूप से चमकीली, और वह दिन-रात अपने भीतर नई-नई सृष्टियाँ बनाता रहता है, जैसे समुद्र अपनी लहरों को अपने भीतर धारण करता है।

1.23.26

महाकल्पाभिधानेभ्यो वृक्षेभ्यः परिशातयन् । देवासुरगणान्पक्वान्फलभारानिव स्थितः ॥ २६ ॥

mahākālpābhidhānebhyo vṛkṣebhyaḥ pariśātayan | devāsuraṅgāṇānpakvāṇphalabhārāniva sthitaḥ || 26 ||

He stands shaking down the crowds of gods and demons, ripe like heavy bunches of fruit, from trees called the great cosmic ages.

वह महाकल्प नाम के पेड़ों से देवताओं और असुरों के झुंडों को झाड़कर गिराता रहता है, जैसे पके हुए फलों के भारी गुच्छे गिराए जाते हैं।

1.23.27

कालोऽयं भूतमशकघुंघुमानां प्रपातिनाम् । ब्रह्माण्डोदुम्बरौघानां बृहत्पादपतां गतः ॥ २७ ॥

kālo'yaṁ bhūtamaśakaghūṅghumānāṁ prapātīnām | brahmāṇḍodumbaraughānāṁ bṛhatpādapatāṁ gataḥ || 27 ||

This time has become like a huge tree: living beings fall from it like swarms of buzzing gnats, and the many universes hang on it like clusters of its figs.

यह समय एक विशाल पेड़ की तरह बन गया है: उससे जीव भिनभिनाते मच्छरों के झुंड की तरह गिरते हैं, और अनगिनत ब्रह्मांड उस पर अंजीर के गुच्छों की तरह लगे हुए हैं।

1.23.28

सत्तामात्रकुमुद्वत्या चिज्योत्स्नापरिफुल्लया । वपुर्विनोदयत्येकं क्रियाप्रियतमान्वितः ॥ २८ ॥

sattāmātrakumudvatyā cijjyotsnāparifullayā | vapurvīnodayatyekam kriyāpriyatamānvitaḥ || 28 ||

With the lily pond of pure existence blooming fully under the moonlight of consciousness, he delights his one body, together with action, his most beloved.

शुद्ध अस्तित्व के तालाब में चेतना की चाँदनी से खिले हुए कमलों के बीच, वह अपनी प्रिय क्रिया के साथ मिलकर अपने एक शरीर को आनंदित करता है।

1.23.29

अनन्तापारपर्यन्तबद्धपीठं निजं वपुः । महाशैलवदुत्तुङ्गमवलम्ब्य व्यवस्थितः ॥ २९ ॥

anantāpāraparyāntabaddhapīṭhaṁ nijaṁ vapuḥ | mahāśailavaduttuṅgamavalambya vyavasthitaḥ || 29 ||

He stays firm, resting on his own body, whose base is fixed at the farthest edge of what is endless and shoreless, towering high like a great mountain.

वह अपने ही शरीर पर टिककर स्थिर खड़ा है, जिसका आधार उस अनंत और छोर रहित के सबसे दूर किनारे पर जमा हुआ है, और जो एक बड़े पर्वत की तरह ऊँचा उठा हुआ है।

1.23.30

क्वचिच्छयामतमःश्यामं क्वचित्कान्तियुतं ततम् । द्वयेनापि क्वचिद्रिक्तं स्वभावं भावयन् स्थितः ॥ ३० ॥

kvacicchayāmatamaḥśyāmaṁ kvacitkāntiyutaṁ tatam | dvayenāpi kvacidriktaṁ svabhāvaṁ bhāvayan sthitaḥ || 30 ||

He goes on showing his own nature - in one place dark like deep shadow, in another place spread out bright with beauty, and in yet another place empty of both.

वह अपना स्वभाव दिखाता रहता है - कहीं गहरे अंधेरे जैसा काला, कहीं सुंदरता से चमकता हुआ फैला हुआ, और कहीं इन दोनों से खाली।

1.23.31

संलीनासंख्यसंसारसारया स्वात्मसत्तया । उर्व्येव भारघनया निबद्धपदतां गतः ॥ ३१ ॥

saṁlīnāsaṁkhyasaṁsārasārayā svātmasattayā | urvyeve bhāraghanayā nibaddhapadatāṁ gataḥ || 31 ||

With his own being - in which countless dissolved worlds lie merged as its very core, heavy with their weight like the earth - he has become firmly fixed in place.

अपने ही अस्तित्व से - जिसमें अनगिनत लीन हुई दुनियाएँ उसके सार के रूप में मिली हुई हैं, और जो धरती की तरह भारी है - वह मज़बूती से एक जगह टिक गया है।

1.23.32

न खिद्यते नाद्रियते नायाति न च गच्छति । नास्तमेति न चोदेति महाकल्पशतैरपि ॥ ३२ ॥

na khidyate nādriyate nāyāti na ca gacchati | nāstameti na codeti mahākālpaśatairapi || 32 ||

He never tires, never cares, never comes and never goes. He never sets and never rises, not even across hundreds of great cosmic ages.

वह कभी नहीं थकता, कभी परवाह नहीं करता, न कभी आता है, न कभी जाता है। वह सैकड़ों महाकल्पों में भी न कभी डूबता है, न कभी उगता है।

1.23.33

केवलं जगदारम्भलीलया घनहेलया । पालयत्यात्मनात्मानमनहंकारमाततम् ॥ ३३ ॥

kevalaṁ jagadārambhālīlayā ghanahēlayā | pālayatyātmanātmānamanahāṁkāramātatam || 33 ||

Simply through the easy playfulness of starting the world, he - vast, and free from any sense of 'I' - keeps himself going, all by himself.

बस दुनिया को शुरू करने के सहज खेल से ही, वह - जो विशाल है और जिसमें 'मैं' का कोई भाव नहीं है - खुद अपने आप को बनाए रखता है।

1.23.34

यामिनीपङ्ककलितां दिनकोकनदावलीम् । मेघभ्रमरिकामात्मसरस्यारोपयन्स्थितः ॥ ३४ ॥

yāminīpaṅkakalitāṁ dinakokanadāvalīm | meghabhramarikāmātmasarasyāropayan sthitaḥ || 34 ||

He keeps planting, in the pool that is himself, a row of red day-lotuses grown from the mud of night, with clouds hovering over them like swarms of bees.

वह अपने ही रूपी तालाब में रात की कीचड़ से उगे लाल दिन के कमलों की एक कतार लगाता रहता है, जिन पर बादल मधुमक्खियों के झुंड की तरह मंडराते हैं।

1.23.35

गृहीत्वा कृपणः कृष्णां रजनीं जीर्णमार्जनीम् । आलोककनकक्षोदानाहरत्यभितो गिरिम् ॥ ३५ ॥

gr̥hītvā kṛpaṇaḥ kṛṣṇāṁ rajanīm jīrṇamārjanīm | ālokanakakṣodānāharatyabhito girim || 35 ||

This miser takes the black night as a worn-out broom and sweeps up the gold dust of light from all around the mountain.

यह कंजूस काली रात को एक पुरानी झाड़ू की तरह पकड़ता है और पर्वत के चारों ओर से रोशनी की सोने जैसी धूल को बुहार लेता है।

1.23.36

संचारयन्क्रियाङ्गुल्या कोणकेष्वर्कदीपिकाम् । जगत्सद्मनि कार्पण्यात्क्व किमस्तीति वीक्षते ॥ ३६ ॥

saṃcārayankriyāṅgulyā koṇakeṣvarkadīpikām | jagatsadmani kārpaṇyātkva kimastīti vīkṣate || 36 ||

Moving the sun like a lamp with the finger of his own action into every corner, he looks around the house that is this world, out of sheer stinginess, checking what is where.

अपनी क्रिया रूपी उंगली से सूरज को दीये की तरह हर कोने में घुमाते हुए, वह अपनी कंजूसी के कारण इस दुनिया रूपी घर में चारों तरफ देखता है कि कहाँ क्या है।

1.23.37

प्रेक्ष्याहर्विनिमेषेण सूर्याक्ष्णा पाकवन्त्यलम् । लोकपालफलान्यत्ति जगज्जीर्णवनादयम् ॥ ३७ ॥

prekṣyāharvinimeṣeṇa sūryākṣṇā pākavantyalam | lokapālaphalānyatti jagajjīrṇavanādayam || 37 ||

Watching with the sun as his eye, blinking through each day, to see what has become fully ripe, this time eats the guardians of the world like ripe fruit, picked from the withering forest of this world.

सूरज को अपनी आँख बनाकर, हर दिन पलक झपकाते हुए यह देखता है कि क्या पूरी तरह पक गया है, और फिर यह समय दुनिया के रक्षकों को पके फल की तरह खा जाता है, जिन्हें वह इस मुरझाते हुए जंगल रूपी संसार से तोड़ लेता है।

1.23.38

जगज्जीर्णकुटीकीर्णानर्पयत्युग्रकोटरे । क्रमेण गुणवल्लोकमणीन्मृत्युसमुद्रके ॥ ३८ ॥

jagajjīrṇakuṭīkīrṇānarpayatyugrakotāre | krameṇa guṇavallōkamaṇīnmṛtyusamudgake || 38 ||

One by one, he takes the world's jewel-like beings, full of good qualities, as they lie scattered in the crumbling hut of this world, and places them into the terrible hollow that is the box of death.

एक-एक करके, वह इस दुनिया के अच्छे गुणों से भरे रत्न जैसे जीवों को, जो इस टूटी-फूटी झोंपड़ी रूपी संसार में बिखरे पड़े हैं, उठाकर मृत्यु के उस भयानक डिब्बे में डाल देता है।

1.23.39

गुणैरापूर्यते यैव लोकरत्नावली भृशम् । भूषार्थमिव तामङ्गे कृत्वा भूयो निकृन्तति ॥ ३९ ॥

guṇairāpūryate yaiva lokaratnāvalī bhṛṣam | bhūṣārthamiva tāmaṅge kṛtvā bhūyo nikṛntati || 39 ||

That string of jewels which is the world, richly filled with good qualities, he wears on his own body as if for decoration - and then cuts it off again.

रत्नों की वह माला जो यह दुनिया है, अच्छे गुणों से भरपूर, वह उसे अपने शरीर पर गहने की तरह पहन लेता है - और फिर उसे फिर से काट कर अलग कर देता है।

1.23.40

दिनहंसानुसृतया निशेन्दीवरमालया । तारकेसरयाजस्रं चपलो वलयत्यलम् ॥ ४० ॥

dinahamsānusṛtayā niśendīvaramālayā | tārakesarayājasraṃ capalo valayatyalam || 40 ||

This restless one keeps garlanding himself endlessly with a chain of night-blooming blue lotuses followed closely by the swans of day, a garland that has the stars themselves as its threads of pollen.

यह बेचैन समय बार-बार अपने आप को रात में खिलने वाले नीले कमलों की माला पहनाता रहता है, जिसके पीछे-पीछे दिन के हंस चलते हैं, और जिसकी माला में तारे ही उसके पराग के धागे हैं।

1.23.41

शैलार्णवदुधराशृङ्गजगदूर्णायुसौनिकः । प्रत्यहं पिबते प्रेक्ष्य तारारक्तकणानपि ॥ ४१ ॥

śailārṇadyudharāśṛṅgajagadūrṇāyusounikaḥ | pratyahaṁ pibate prekṣya tārāraktakaṇānapi || 41 ||

Time is like a butcher slaughtering the world pictured as a great ram, whose horns are the peaks of the mountains, the oceans, the sky, and the earth; day after day he watches it and drinks down even the drops of blood that are the stars.

समय मानो एक कसाई है जो इस दुनिया को एक बड़े भेड़े के रूप में काटता है, जिसके सींग पहाड़ों, समुद्रों, आकाश और धरती की चोटियाँ हैं; वह हर दिन उसे देखकर तारों की उन बूंदों को भी पी जाता है जो मानो खून की बूंदें हैं।

1.23.42

तारुण्यनलिनीसोम आयुर्मातङ्गकेसरी । न तदस्ति न यस्यायं तुच्छातुच्छस्य तस्करः ॥ ४२ ॥

tāruṇyanalinīsoma āyurmātaṅgakesarī | na tadasti na yasyāyaṁ tucchātucchasya taskaraḥ || 42 ||

He is like moonlight that closes and withers the day-lotus of youth, and like a lion that hunts the elephant that is one's lifespan. There is nothing, however great or however small, that he does not steal.

वह चाँदनी की तरह है जो जवानी रूपी दिन के कमल को बंद करके मुरझा देता है, और वह उस शेर की तरह है जो उम्र रूपी हाथी का शिकार करता है। चाहे बड़ी चीज़ हो या छोटी, ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वह चुराता न हो।

1.23.43

कल्पकेलिविलासेन पिष्टपातितजन्तुना । अभावो भावभासेन रमते स्वात्मनात्मनि ॥ ४३ ॥

kalpakelivilāsena piṣṭapātitaṣṭantunā | abhāvo bhāvabhāseṇa ramate svātmanātmani || 43 ||

Through the playful sport of the cosmic ages, which grinds creatures down and casts them away, he - who is really nothing at all - appears as if he were something, and in that guise delights in himself, all alone.

कल्पों के खेल-तमाशे के ज़रिए, जो जीवों को पीस डालता है और फेंक देता है, वह - जो असल में कुछ भी नहीं है - कुछ होने जैसा दिखाई देता है, और इसी रूप में अकेला ही अपने आप में आनंद लेता रहता है।

1.23.44

कर्ता भोक्ताथ संहर्ता स्मर्ता सर्वपदं गतः ॥ ४४ ॥

kartā bhoktātha saṁhartā smartā sarvapadaṁ gataḥ || 44 ||

He is the doer, the enjoyer, the destroyer, and the one who remembers - he occupies every single role there is.

वह करने वाला है, भोगने वाला है, नष्ट करने वाला है, और याद रखने वाला भी है - वह हर तरह की भूमिका में मौजूद है।

1.23.45

सकलमप्यकलाकलितान्तरं सुभगदुर्भगरूपधरं वपुः । प्रकटयन्सहसैव च गोपयन् विलसतीह हि कालबलं नृषु ॥ ४५ ॥

sakalamapyakalākālītāntaraṁ subhagadurbhagarūpadharaṁ vapuḥ | prakṭayansahasaiṇa ca gopayanvilasatīhi kālābalaṁ nṛṣu || 45 ||

Time's power is at play here among people. It suddenly shows itself and just as suddenly hides itself - one whole body that takes both lucky and unlucky forms, though deep inside it is filled with something that cannot be broken into parts.

समय की शक्ति यहाँ लोगों के बीच खेल रही है। यह अचानक खुद को दिखा देती है और उतनी ही जल्दी खुद को छिपा भी लेती है - एक पूरा शरीर जो अच्छे और बुरे, दोनों तरह के रूप लेता है, फिर भी उसके अंदर कुछ ऐसा है जिसे टुकड़ों में नहीं बाँटा जा सकता।

Chapter 24

1.24.1

श्रीराम उवाचअस्योद्धामरलीलस्य दूरास्तसकलापदःसंसारे राजपुत्रस्य कालस्याकलितौजसः ॥ १ ॥

śrīrāma uvācaasyodḍāmaralīlasya dūrāstasakalāpadaḥsaṃsāre rājaputrasya kālasyākali taujasaḥ || 1 ||

Sri Rama said: Now hear about this Time - the prince of this world, whose play knows no limit, who throws every misfortune far and wide, and whose strength cannot be measured.

श्रीराम ने कहा - अब सुनो इस काल के बारे में, जो इस संसार का राजकुमार है, जिसका खेल किसी सीमा को नहीं मानता, जो हर मुसीबत को दूर-दूर तक फेंक देता है, और जिसकी ताकत नापी नहीं जा सकती।

1.24.2

अस्यैवाचरतो दीनैर्मुग्धैर्भूतमृगब्रजैःआखेटकं जर्जरिते जगज्जङ्गलजालके ॥ २ ॥

asyaivācarato dīnairmugdhairbhūtamṛgabrajaiḥākṣhetakam jarjarite jagajjaṅgalajālake || 2 ||

This same Time wanders about hunting, treating the poor, bewildered crowds of living beings as his deer, in this old, broken-down, tangled forest of a world.

यही काल शिकार करता हुआ घूमता है; वह बेचारे और भोले-भाले प्राणियों की भीड़ को अपना हिरण मानता है, इस पुराने, टूटे-फूटे और उलझे हुए जंगल जैसे संसार में।

1.24.3

एकदेशोल्लसच्चारुवडवानलपङ्कजाक्रीडापुष्करिणी रम्या कल्पकालमहार्णवः ॥ ३ ॥

ekadeśollasaccāruvaḍavānalapaṅkajakrīḍāpuṣkariṇī ramyā kalpakālamahārṇavaḥ || 3 ||

The great ocean that rises at the end of an age is his lovely playing pool, and in one corner of it the undersea fire glows like a beautiful lotus.

प्रलय के समय उठने वाला वह विशाल सागर उसका सुंदर खेलने-कूदने का तालाब है, और उसके एक कोने में समुद्र के भीतर जलने वाली आग एक सुंदर कमल की तरह चमकती है।

1.24.4

कटुतिक्ताम्लभूताद्यैः सदधिकीरसागरैःतैरेव तैः पर्युषितैर्जगद्भिः कल्बवर्तनम् ॥ ४ ॥

kaṭutiktāmlabhūtādyaiḥ sadadhikīrasāgaraiḥtaireva taiḥ paryuṣitairjagadbhiḥ kalvavartanam || 4 ||

The true oceans of milk and curd, together with things bitter, sharp, and sour, are turned stale by these very worlds and become his tainted food.

दूध और दही के असली सागर, तीखी, कड़वी और खट्टी चीजों के साथ, इन्हीं दुनियाओं की वजह से बासी हो जाते हैं और उसका गंदा खाना बन जाते हैं।

1.24.5

चण्डी चतुरसंचारा सर्वमातृगणान्वितासंसारवनविन्यस्ता व्याघ्री भूतौघघातिनी ॥ ५ ॥

caṇḍī caturasaṃcārā sarvamātrgaṇānvitāsaṃsāra vanavinastyastā vyāghrī bhūtaughaghātīnī || 5 ||

Chandi, moving swiftly and cleverly, joined by all the Mother goddesses, is set loose in the forest of this world as a tigress that kills whole herds of living beings.

चण्डी, जो चतुराई से हर तरफ घूमती है और सभी मातृदेवियों के साथ है, इस संसार रूपी जंगल में एक ऐसी बाघिन बनकर छोड़ी गई है जो प्राणियों के पूरे झुंड को मार डालती है।

1.24.6

ज्ञध्वी करतले ज्ञध्वी पानपात्री रसान्विता । कमलोत्पलकह्लारलोलजालकमालिता ॥ ६ ॥

jñādhvī karatale jñādhvī pānapātrī rasānvitā | kamalotpalakahlāralolajālakamālītā || 6 ||

In her hand she holds a cup filled with drink, and she wears a garland of swaying lotuses - pink lotuses, blue lotuses, and white water lilies.

उसके हाथ में रस से भरा एक पात्र है, और उसने झूलते हुए कमल, नीलकमल और सफेद कुमुद के फूलों की माला पहनी है।

1.24.7

विरावी विकटास्फोटो नृसिंहो भुजपञ्जरे । सटाविकटपीनांसः कृतः क्रीडाशकुन्तकः ॥ ७ ॥

virāvī vikaṭāsphoṭo nṛsiṃho bhujapañjare | saṭāvikatapīnāṃsaḥ kṛtaḥ krīḍāśakuntakaḥ || 7 ||

The Man-Lion Narasimha - roaring, clapping his hands fiercely, with a wild mane and thick shoulders - is turned into nothing more than a toy bird inside the cage of his arms.

नृसिंह भगवान्, जो दहाड़ते हैं और ज़ोर से हाथ पटकते हैं, जिनका अयाल डरावना और कंधे मोटे हैं, वे भी उसकी भुजाओं के पिंजरे में एक खिलौना पक्षी मात्र बना दिए गए हैं।

1.24.8

अलाबुवीणामधुरः शरद्व्योमलसच्छविः । देवः किल महाकालो लीलाकोकिलबालकः ॥ ८ ॥

alābuvīṇāmadhuraḥ śaradvīyomalasacchaviḥ | devaḥ kila mahākālo līlākokilabālakaḥ || 8 ||

The great god Mahakala - as sweet-sounding as a gourd lute, as bright as the autumn sky - is, in truth, nothing but a playful young cuckoo.

महान् देव महाकाल - जो तूम्बे की वीणा जैसे मीठे हैं और शरद ऋतु के आकाश जैसे चमकीले हैं - असल में एक खेलते हुए छोटे कोयल के बच्चे के समान हैं।

1.24.9

अजस्रस्फूर्जिताकारो वान्तदुःखशरावलिः । अभावनामकोदण्डः परिस्फुरति सर्वतः ॥ ९ ॥

ajasrasphūrjitākāro vāntaduḥkhaśarāvaliḥ | abhāvanāmakodaṇḍaḥ parisfurati sarvataḥ || 9 ||

His form never stops flashing and quivering. He spews out endless arrows of sorrow, and with a bow named Not-Noticing, he flickers everywhere at once.

उसका रूप कभी न रुकने वाली चमक और कंपन से भरा है। वह दुःख के तीरों की पूरी कतार उगल देता है, और उसका धनुष 'बेखबरी' नाम का है; वह हर जगह एक साथ चमकता रहता है।

1.24.10

अनुत्तमस्त्वधिकविलासपण्डितो भ्रमच्चलन्परिविलसन्विदारयन् । जरज्जगज्जनितविलोलमर्कटः परिस्फुरद्वपुरिह काल ईहते ॥ १० ॥

anuttamastvadhikavilāsapāṇḍito bhramacchalanparivilasanvidārayan | jarajjagajjanitavilolamarkaṭaḥ parisfuradvapurīha kāla īhate || 10 ||

No one can equal him; he is the greatest master of endless play. He wanders, moves, shines all around, and tears things apart - a restless monkey born from this aging world, his body flickering everywhere - this is how Time acts here.

कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता, वह अनंत खेल का सबसे बड़ा उस्ताद है। वह घूमता है, चलता है, चारों तरफ चमकता है और चीजों को चीर डालता है - यह बूढ़े होते संसार से जन्मा एक बेचैन बंदर है, जिसका शरीर हर जगह टिमटिमाता रहता है - इस तरह काल यहाँ काम करता है।

Chapter 25

1.25.1

श्रीराम उवाच अत्रैव दुर्विलासानां चूडमणिरिहापरः । करोत्यत्तीति लोकेऽस्मिन्दैवं कालश्च कथ्यते ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca atraiva durvilāsānāṃ cūḍamaṇirihāparaḥ | karotyattīti loke'smindaivaṃ kālaśca kathyate || 1 ||

Sri Rama said: Right here is another one - the worst of all troublemakers. Since he both makes things happen and swallows them back up, people in this world call him both Fate and Time.

श्रीराम ने कहा - यहाँ एक और है, जो बुरे कामों में सबसे आगे है। चूँकि वह चीज़ों को बनाता भी है और निगल भी जाता है, इसलिए इस दुनिया में उसे भाग्य और काल दोनों कहा जाता है।

1.25.2

क्रियामात्रादृते यस्य स्वपरिस्पन्दरूपिणः । नान्यदालक्ष्यते रूपं न कर्म न समीहितम् ॥ २ ॥

kriyāmātrādr̥te yasya svaparispandarūpiṇaḥ | nānyadālakṣyate rūpaṃ na karma na samīhitam || 2 ||

Apart from what he actually does, he has no form that can be seen. His very nature is simply movement. No shape of his, no deed of his, no wish of his can be seen except through what happens.

जो वह करता है, उसके अलावा उसका कोई और रूप नहीं दिखता। उसका असली स्वरूप बस हलचल ही है। जो होता है उसके सिवा न उसका कोई आकार दिखता है, न उसका कोई काम, न उसकी कोई इच्छा।

1.25.3

तेनेयमखिला भूतसंततिः परिपेलवा । तापेन हिममालेव नीता विधुरतां भृशम् ॥ ३ ॥

teneyamakhilā bhūtasamtatiḥ paripelavā | tāpena himamāleva nītā vidhuratāṃ bhr̥śam || 3 ||

Because of him, all these fragile living beings have been driven into terrible distress - like a bank of snow melting away helplessly in the heat.

उसी के कारण ये सारे नाज़ुक जीव बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ गए हैं - जैसे गर्मी से बर्फ की परत बेबस होकर पिघल जाती है।

1.25.4

यदिदं दृश्यते किञ्चिज्जगदाभोगि मण्डलम् । तत्तस्य नर्तनागारमिहासावतिनृत्यति ॥ ४ ॥

yadidaṃ dṛśyate kiñcidjagadābhogi maṇḍalam | tattasya nartanāgāramihāsāvatīnṛtyati || 4 ||

This whole wide, spread-out world that we see is nothing but his dance hall, and here he dances on and on without stopping.

यह जो चौड़ा और फैला हुआ संसार दिखाई देता है, वह असल में उसका नाचघर है, और यहाँ वह लगातार बिना रुके नाचता रहता है।

1.25.5

तृतीयं च कृतान्तेति नाम बिभ्रत्सुदारुणम् । कापालिकवपुर्मत्तं दैवं जगति नृत्यति ॥ ५ ॥

tṛtīyaṃ ca kṛtānteti nāma bibhratsudāruṇam | kāpālikavapurmattaṃ daivaṃ jagati nṛtyati || 5 ||

He carries yet a third name too, the most terrible one - Kritanta, the Ender. This same Fate, wild and drunk with power, dances through the world wearing the body of a skull-carrying ascetic.

उसका एक तीसरा नाम भी है, सबसे भयानक नाम - कृतान्त, यानी अंत करने वाला। यही भाग्य, नशे में मस्त होकर, खोपड़ियाँ धारण करने वाले तांत्रिक साधु जैसा शरीर लेकर इस संसार में नाचता है।

1.25.6

नृत्यतो हि कृतान्तस्य नितान्तमिव रागिणः । नित्यं नियतिकान्तायां मुने परमकामिता ॥ ६ ॥

nṛtyato hi kṛtāntasya nitāntamiva rāgiṇaḥ | nityaṁ niyatikāntāyāṁ mune paramakāmitā || 6 ||

Sage, this dancing Kritanta seems utterly passionate - his greatest desire is always for his beloved, Niyati.

हे मुनि, यह नाचता हुआ कृतान्त मानो पूरी तरह आसक्त जान पड़ता है - उसकी सबसे बड़ी चाहत हमेशा अपनी प्रिया नियति के लिए ही रहती है।

1.25.7

शेषः शशिकलाशुभ्रो गङ्गावाहश्च तौ त्रिधा । उपवीते अवीते च उभौ संसारवक्षसि ॥ ७ ॥

śeṣaḥ śaśikalāśubhro gaṅgāvāhaśca tau tridhā | upavīte avīte ca ubhau saṁsāravakṣasi || 7 ||

The serpent Shesha, white as a sliver of the moon, and the flowing river Ganga - together, in three strands, they hang like a sacred thread across the chest of this world.

शेष नाग, जो चाँद की एक कला जैसा सफ़ेद है, और गंगा की धारा - ये दोनों मिलकर, तीन लड़ों में, इस संसार की छाती पर जनेऊ की तरह लटकते हैं।

1.25.8

चन्द्रार्कमण्डले हेमकटकौ करमूलयोः । लीलासरसिजं हस्ते ब्रह्मन्ब्रह्माण्डकर्णिका ॥ ८ ॥

candrārkaṁḍale hemakaṭakau karamūlayoḥ | līlāsarasijaṁ hastē brahmaṁbrahmāṇḍakarṇikā || 8 ||

The discs of the moon and the sun are his two golden bracelets at the wrists; in his hand he holds a lotus for play, and, Brahmin, the whole universe is the seed pod at its centre.

चाँद और सूरज के गोले उसकी दोनों कलाईयों पर सोने के कंगन हैं; उसके हाथ में खेलने के लिए एक कमल है, और हे ब्राह्मण, यह पूरा ब्रह्मांड उस कमल के बीचोंबीच का बीज-कोश है।

1.25.9

ताराबिन्दुचितं लोलपुष्करावर्तपल्लवम् । एकार्णवपयोधौ तमेकमम्बरमम्बरम् ॥ ९ ॥

tārābinducitaṁ lolapuṣkarāvartapallavam | ekārṇavapayodhau tamekamambaramambaram || 9 ||

That single sky - sprinkled with stars, fringed with swirling clouds, stretched over the one ocean of water at the end of the world - that alone is his garment.

वह एक अकेला आकाश - जो तारों से जड़ा है, घूमते हुए बादलों से किनारों पर सजा है, और प्रलय के उस एक सागर के ऊपर फैला है - वही उसका इकलौता वस्त्र है।

1.25.10

एवंरूपस्य तस्याग्रे नियतिर्नित्यकामिनी । अनस्तमितसंरम्भमारम्भैः परिनृत्यति ॥ १० ॥

evaṁrūpasya tasyāgre niyatirnityakāminī | anastamitasamrambhārambhaiḥ parinṛtyati || 10 ||

In front of him, formed like this, Niyati - his eternal beloved - dances round and round, her energy never fading, through everything she sets going.

इस रूप वाले उसके सामने, उसकी सदा की प्रिया नियति, अपनी हर पहल के ज़रिए, बिना थके, लगातार घूम-घूम कर नाचती रहती है।

1.25.11

तस्या नर्तनलोलाया जगन्मण्डपकोटरे । अरुद्धस्पन्दरूपाया आगमापायचञ्चुरे ॥ ११ ॥

tasyā nartanalolāyā jagannaṇḍapakōṭare | aruddhaspandarūpāyā āgamāpāyacañcure || 11 ||

She dances restlessly inside the hollow hall that is this world; her form never stops quivering, and she keeps flitting back and forth between coming and going.

वह इस संसार रूपी सभा-मंडप की खोखली जगह में बेचैनी से नाचती रहती है; उसका रूप कभी काँपना नहीं छोड़ता, और वह आने और जाने के बीच लगातार इधर-उधर डोलती रहती है।

1.25.12

चारुभूषणमङ्गेषु देवलोकान्तरावली । आपातालं नभोलम्बं कबरीमण्डलं बृहत् ॥ १२ ॥

cārubhūṣaṇamaṅgeṣu devalokāntarāvalī | āpātālaṁ nabholambaṁ kabarīmaṇḍalaṁ bṛhat || 12 ||

The gaps between the worlds of the gods are the lovely ornaments on her limbs, and her great mass of hair hangs down from the sky all the way to the underworld.

देवताओं के लोकों के बीच की जो दूरियाँ हैं, वही उसके अंगों पर सुंदर गहनों की तरह हैं; और उसके बालों का विशाल जूड़ा आकाश से लेकर पाताल तक लटकता है।

1.25.13

नरकाली च मञ्जीरमाला कलकलोज्ज्वला । प्रोता दुष्कृतसूत्रेण पातालचरणे स्थिता ॥ १३ ॥

narakālī ca mañjīramālā kalakalojjvalā | protā duṣkṛtasūtreṇa pātālacaraṇe sthitā || 13 ||

The long row of hells is her anklet, jingling brightly, strung on a thread made of wicked deeds, resting at her foot down in the underworld.

नरकों की पूरी कतार उसकी पायल है, जो खनकती हुई चमकती है, बुरे कर्मों के धागे में पिरोई गई है, और पाताल में उसके पैर पर टिकी है।

1.25.14

कस्तूरिकातिलककं क्रियासंख्योपकल्पितम् । चित्रितं चित्रगुप्तेन यमे वदनपट्टके ॥ १४ ॥

kastūrikātilakakaṁ kriyāsaṁkhyopakalpitaṁ | citritaṁ citraguptena yame vadanapaṭṭake || 14 ||

The musk mark on her forehead is made from the tally of everyone's deeds - the very same record that Chitrugupta paints on Yama's brow.

उसके माथे का कस्तूरी का तिलक लोगों के कर्मों के हिसाब से बना है - वही हिसाब जिसे चित्रगुप्त यमराज के माथे पर लिखते हैं।

1.25.15

कालास्यं समुपादाय कल्पान्तेषु किलाकुला । नृत्यत्येषा पुनर्देवी स्फुटच्छैलघनारवम् ॥ १५ ॥

kālāsyaṁ samupādāya kalpānteṣu kilākulā | nṛtyaty eṣā punardeveī sphuṭacchailaghanāravam || 15 ||

Grasping the very face of Time, wild with frenzy, at the end of every age this goddess dances again, roaring like mountains splitting apart and thunderclouds crashing.

काल के मुख को ही थामे हुए, उन्मत्त होकर, हर युग के अंत में यह देवी फिर से नाचती है, ऐसी गर्जना के साथ जैसे पहाड़ फट रहे हों और घने बादल गरज रहे हों।

1.25.16

पश्चात्प्रालम्बविभ्रान्तकौमारभृतबर्हिभिः । नेत्रत्रयवृहद्रन्ध्रभूरिभाङ्गारभीषणैः ॥ १६ ॥

paścātprālabhavibhrāntakaumārabhṛtabarhibhiḥ | netratrayavṛhadrandhrabhūrībhāṅkārabhīṣaṇaiḥ || 16 ||

Behind her, the peacock feathers worn by Kartikeya sway and hang loose, and a huge roar booms out from the great eye sockets of Shiva, the three-eyed god.

उसके पीछे कार्तिकेय के धारण किए हुए मोरपंख लहराते और लटकते रहते हैं, और तीन आँखों वाले शिव की बड़ी आँखों के गड्ढों से एक भारी गर्जना गूंजती है।

1.25.17

लम्बलोलजटाचन्द्रविकीर्णहरमूर्धभिः । उच्चरच्चारुमन्दारगौरीकबरचामरैः ॥ १७ ॥

lambalolajatacandravikīrṇaharamūrdhabhiḥ | uccaraccārumandāragaurīkabaracāmaraiḥ || 17 ||

The moon lies scattered among the loose, hanging matted locks on Shiva's head, and beautiful mandara flowers rise up like fly whisks from Gauri's braided hair.

शिव के सिर की लटकती और बिखरी हुई जटाओं में चाँद बिखरा पड़ा है, और गौरी की गुँथी हुई चोटी से सुंदर मंदार के फूल चंवर की तरह ऊपर उठते हैं।

1.25.18

उत्ताण्डवाचलाकारभैरवोदरतुम्बकैः । रणत्सशतरन्ध्रेन्द्रदेहभिक्षाकपालकैः ॥ १८ ॥

uttāṇḍavācalākārabhairavodaratumbakaiḥ | raṇatsashatarandhrendradehabhikṣākāpālakaiḥ || 18 ||

Mountain-shaped drums boom from Bhairava's belly in his wild dance, and skull begging-bowls, made from Indra's body full of a hundred holes, ring out loudly.

भैरव के जंगली नृत्य में उनके पेट से पहाड़ जैसे बड़े ढोल गूंजते हैं, और सैकड़ों छिद्रों वाले इंद्र के शरीर से बने खोपड़ी के भिक्षा-पात्र ज़ोर से बजते हैं।

1.25.19

शुष्कशारीरखट्वाङ्गभरैरापूरिताम्बरम् । भीषयत्यात्मनात्मानं सर्वसंहारकारिणी ॥ १९ ॥

śuṣkaśārīrakhaṭvāṅgabharairāpūritāmbaram | bhīṣayatyātmanātmānaṁ sarvasaṁhārakāriṇī || 19 ||

Clubs topped with skulls, made from dried-up dead bodies, fill the whole sky - and she, the one who destroys everything, ends up frightening even herself.

सूखी हुई लाशों से बनी खोपड़ी वाली गदाएँ पूरे आकाश को भर देती हैं - और वह, जो सबका नाश करने वाली है, खुद अपने आप से ही डर जाती है।

1.25.20

विश्वरूपशिरश्चक्रचारुपुष्करमालया । ताण्डवेषु विवलगन्त्या महाकल्पेषु राजते ॥ २० ॥

viśvarūpaśiraścakracārupuṣkaramālayā | tāṇḍaveṣu vivalgantyā mahākālpeṣu rājate || 20 ||

Wearing a garland made from a whole circle of heads - the heads of every being in the universe - she leaps wildly in her dance through the great ages, and shines in her terrible glory.

पूरे ब्रह्मांड के सभी प्राणियों के सिरों की एक पूरी माला पहनकर, वह महाकल्पों में अपने भयंकर नृत्य में उछलती-कूदती है, और अपनी भयानक शोभा से चमकती है।

1.25.21

प्रमत्तपुष्करावर्तडमरोडुमारारवैः । तस्याः किल पलायन्ते कल्पान्ते तुम्बुरादयः ॥ २१ ॥

pramattapuṣkarāvartḍamaroḍḍāmarāravaiḥ | tasyāḥ kila palāyante kalpānte tumburādayaḥ || 21 ||

The wild, unrestrained roar of her frenzied, whirling clouds and her small drum is so terrible that, at the end of the age, even the heavenly musician Tumburu and his companions run away in fear.

उसके उन्मत्त और घूमते हुए बादलों और उसके डमरू की बेकाबू गर्जना इतनी भयानक है कि युग के अंत में स्वर्ग के गायक तुम्बुरु और उसके साथी भी डरकर भाग जाते हैं।

1.25.22

नृत्यतोऽन्तः कृतान्तस्य चन्द्रमण्डलभासिनः । तारकाचन्द्रिकाचारुव्योमपिच्छावचूलिनः ॥ २२ ॥

nṛtyato'ntaḥ kṛtāntasya candramanḍalabhāsināḥ | tārakācandrikācāruvyomapicchāvacūlinaḥ || 22 ||

In the middle of his dance, Kritanta shines like the orb of the moon, and on his head he wears the beautiful star-lit sky itself like a peacock-feather crest.

अपने नृत्य के बीच, कृतान्त चाँद के गोले जैसा चमकता है, और अपने सिर पर वह तारों और चाँदनी से सजे सुंदर आकाश को ही मोरपंख के मुकुट की तरह धारण करता है।

1.25.23

एकस्मिञ्छ्रवणे दीप्ता हिमवानस्थिमुद्रिका । अपरे च महामेरुः कान्ता काञ्चनकर्णिका ॥ २३ ॥

ekasmiñchravaṇe dīptā himavānasthimudrikā | apare ca mahāmeruḥ kāntā kāñcanakarṇikā || 23 ||

In one ear, gleaming, the Himalaya mountain hangs as his bone earring; in the other ear, the great mountain Meru is his beautiful golden earring.

एक कान में चमकता हुआ हिमालय पर्वत उसकी हड्डी की बाली बना है; और दूसरे कान में विशाल मेरु पर्वत उसकी सुंदर सोने की बाली बना है।

1.25.24

अत्रैव कुण्डले लोले चन्द्रार्कौ गण्डमण्डले । लोकालोकाचलश्रेणी सर्वतः कटिमेखला ॥ २४ ॥

atraiva kuṇḍale lole candrārkaḥ gaṇḍamaṇḍale | lokālokaśreṇī sarvataḥ kaṭimekhalā || 24 ||

Here too, the moon and the sun swing on his cheeks like two earrings, and the ring of mountains called Lokaloka, running all the way around, is his waistband.

यहाँ भी, चाँद और सूरज उसके गालों पर झूलती हुई दो बालियों की तरह हैं, और चारों ओर घेरा बनाने वाली लोकालोक पर्वत-श्रृंखला उसकी कमरबंद है।

1.25.25

इतश्चेतश्च गच्छन्ती विद्युद्वलयकर्णिका । अनिलान्दोलिता भाति नीरदांशुकपट्टिका ॥ २५ ॥

itaścetśca gacchantī vidyudvalayakarṇikā | anilāndolitā bhāti nīradāṃśukapaṭṭikā || 25 ||

Moving back and forth, a flashing ring of lightning is his ear pendant, and, swayed by the wind, a sash made of clouds shines around him.

इधर-उधर घूमती हुई बिजली की एक चमकती हुई रेखा उसकी कान की बाली है, और हवा से हिलता हुआ बादलों का बना एक दुपट्टा उस पर चमकता है।

1.25.26

मुसलैः पट्टिशैः प्रासैः शूलैस्तोमरमुद्गरैः । तीक्ष्णैः क्षीणजगद्धान्तकृतान्तरिव संभृतैः ॥ २६ ॥

musalaiḥ paṭṭīśaiḥ prāsaiḥ śūlais tomaramudgaraiḥ | tīkṣṇaiḥ kṣīṇajagadvāntakṛtāntairiva saṁbhr̥taiḥ || 26 ||

His weapons are clubs, halberds, javelins, spikes, lances, and hammers - all sharp, as if spat out by Death himself from this worn-out, exhausted world.

उसके हथियार हैं गदाएँ, फरसे, भाले, बछे, सांगें और हथौड़े - सब तेज़ और नुकीले, मानो थके-हारे इस संसार से खुद मौत ने इन्हें उगल दिया हो।

1.25.27

संसारबन्धनादीर्घे पाशे कालकरच्युते । शेषभोगमहासूत्रप्रोते मालास्य शोभते ॥ २७ ॥

saṁsārabandhanādīrḡhe pāśe kālakaracyute | śeṣabhogamahāsūtraprote mālāsya śobhate || 27 ||

His garland hangs shining on a noose longer than the very bondage of this world, a noose that dangles from Time's own hand, strung upon the great cord formed by the coiled body of the serpent Shesha.

उसकी माला एक ऐसे फंदे पर चमकती है जो इस संसार के बंधन से भी लंबा है, जो खुद काल के हाथ से लटका हुआ है, और जो शेषनाग की कुंडली रूपी विशाल डोरी में पिरोया गया है।

1.25.28

जीवोल्लासन्मकरिकारत्नतेजोभिरुज्ज्वला । सप्ताब्धिकङ्कणश्रेणी भुजयोरस्य भूषणम् ॥ २८ ॥

jīvollasanmakarikāratnatejobhirujjvalā | saptaābhikāṅkaṇaśreṇī bhujayorasya bhūṣaṇam || 28 ||

Glowing with the brightness of jewels shaped like living sea creatures, a row of bracelets made from the seven oceans decorates his two arms.

जीवित समुद्री जीवों के आकार वाले रत्नों की चमक से जगमगाती हुई, सातों समुद्रों से बनी कंगनों की एक कतार उसकी दोनों भुजाओं का आभूषण है।

1.25.29

व्यवहारमहावर्ता सुखदुःखपरम्परा । रजःपूर्णतमःश्यामा रोमाली तस्य राजते ॥ २९ ॥

vyavahāramahāvartā sukhaduḥkḥaparamparā | rajahpūrṇatamaśyāmā romālī tasya rājate || 29 ||

His body hair shines like a dark line - full of great whirlpools of everyday dealings, an endless chain of pleasure and pain, as dark as thick blackness full of dust.

उसके शरीर पर बालों की रेखा चमकती है - जो रोज़मर्रा के व्यवहार के बड़े-बड़े भँवरों से भरी है, सुख-दुख की एक लगातार कड़ी है, और धूल से भरे घने अंधेरे जैसी काली है।

1.25.30

एवंप्रायः स कल्पान्ते कृतान्तस्ताण्डवोद्भवाम् । उपसंहृत्य नृत्येहां सृष्ट्वा सह महेश्वरम् ॥ ३० ॥

evamprāyaḥ sa kalpānte kṛtāntastāṇḍavodbhavām | upasaṁhṛtya nṛtyehāṁ sṛṣṭvā saha maheśvaram || 30 ||

In this way, at the end of the age, Kritanta calms down the wild dancing he had stirred up, and, together with the great lord Shiva, brings about creation once more.

इस तरह, हर युग के अंत में, कृतान्त अपने उठाए हुए उग्र नृत्य को शांत कर देता है, और महान देव शिव के साथ मिलकर फिर से सृष्टि की रचना करता है।

1.25.31

पुनर्लास्यमयीं नृत्यलीलां सर्गस्वरूपिणीम् । तनोतीमां जराशोकदुःखाभिभवभूषिताम् ॥ ३१ ॥

punarlāsyamayīm nṛtyalīlām sargasvarūpiṇīm | tanotīmām jarāśokaduḥkhābhībhavabhūṣitām || 31 ||

Then he spreads out again this soft, flowing dance of creation - a dance decorated with old age, grief, pain, and ruin.

फिर वह फिर से सृजन के इस कोमल, बहते हुए नृत्य को फैलाता है - एक ऐसा नृत्य जो बुढ़ापे, शोक, दुख और विनाश से सजा हुआ है।

1.25.32

भूयः करोति भुवनानि वनान्तराणि लोकान्तराणि जनजालककल्पनां च । आचारचारुकलनामचलां चलां च
पङ्काद्यथार्भकजनो रचनामखिन्नः ॥ ३२ ॥

bhūyaḥ karoti bhuvanāni vanāntarāṇi lokāntarāṇi janajālakakalpanāṃ ca | ācārācārukalanāmacalāṃ calāṃ ca paṅkādyathārbhakajano racanāmakhinnaḥ || 32 ||

Again and again he makes new worlds - other forests, other regions, and whole webs of imagined people; he makes both the things that stand still and the things that move, each with its own patterns of behaviour - and he never tires of it, just as a child never tires of shaping little things out of mud.

वह बार-बार नई दुनियाएँ बनाता है - जंगल, लोक, और लोगों के पूरे झुंड की कल्पना; वह स्थिर चीज़ें भी बनाता है और चलने वाली चीज़ें भी, हर एक को अपने-अपने सुंदर आचार-व्यवहार के ढंग के साथ - और वह इससे कभी नहीं थकता, ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा मिट्टी से खिलौने बनाते हुए कभी नहीं थकता।

Chapter 26

1.26.1

श्रीराम उवाच । वृत्तेऽस्मिन्नेवमेतेषां कालादीनां महामुने । संसारनाम्नि कैवास्था मादृशानां वदत्विह ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | vṛtte'sminnevameteṣāṃ kālādīnāṃ mahāmune | saṃsārānāmnī kaivāsthā mādṛśānāṃ vadatvīh || 1 ||

Sri Rama said: Great sage, since time and the other such forces work like this, tell me — what standing can someone like me have in this thing called the world?

श्रीराम ने कहा - हे महामुनि, जब समय आदि की यही चाल है, तो मुझ जैसे व्यक्ति की इस संसार नाम की चीज़ में क्या हैसियत हो सकती है, यह मुझे बताइए।

1.26.2

विक्रीता इव तिष्ठाम एतैर्देवादिभिर्वयम् । मुने प्रपञ्चरचनैर्मुग्धा वनमृगा इव ॥ २ ॥

vikrītā iva tiṣṭhāma etairdaivādibhirvayam | mune prapañcaracanairmugdhā vanamṛgā iva || 2 ||

We stand here like people already sold off — sold to fate and its kind. Sage, we are fooled by the tricks of this world, like deer in the forest.

हे मुनि, हम तो मानो पहले से ही बिक चुके हैं - भाग्य और उस जैसी शक्तियों के हाथ। इस संसार की चालों से हम वैसे ही मोहित हो गए हैं जैसे जंगल के हिरण मोहित हो जाते हैं।

1.26.3

एषोऽनार्यसमाम्नायः कालः कवलनोन्मुखः । जगत्यविरतं लोकं पातयत्यापदर्णवे ॥ ३ ॥

eṣo'nāryasamāṃnāyaḥ kālaḥ kavalanōnmukhaḥ | jagatyavirataṃ lokaṃ pātayatyāpadarṇavē || 3 ||

This Time follows the ways of the cruel; its mouth is always open to swallow. Without pause, it throws the people of the world into an ocean of misfortune.

यह काल तो नीच स्वभाव वाला है, हमेशा निगलने के लिए तैयार रहता है। यह लगातार संसार के लोगों को विपत्ति के समुद्र में गिरा देता है।

1.26.4

दहत्यन्तर्दुराशाभिर्देवो दारुणचेष्टया । लोकमुष्णप्रकाशाभिज्वालाभिर्दहनो यथा ॥ ४ ॥

dahatyantardurāśābhirdevō dāruṇacēṣṭayā | lōkamuṣṇaprakāśābhijvālābhirdahanō yathā || 4 ||

Fate, acting cruelly, burns people inside with false hopes and desires — the way a fire burns the world with hot, bright flames.

भाग्य अपने क्रूर स्वभाव से लोगों को झूठी आशाओं और इच्छाओं से भीतर ही भीतर जलाता है, ठीक वैसे ही जैसे आग अपनी गर्म तेज लपटों से संसार को जलाती है।

1.26.5

धृतिं विधुरयत्येषा मर्यादारूपवल्लभा । स्त्रीत्वात्स्वभावचपला नियतिर्नियतोन्मुखी ॥ ५ ॥

dhṛtiṃ vidhurayatyēṣā maryādārūpavallabhā | strītvātsvabhāvacapalā niyatirniyatōnmukhī || 5 ||

This Necessity is a woman devoted to her own rule; she is fickle by her feminine nature and always intent on what is destined to happen. She robs a person of his steadiness.

यह नियति अपने ही नियम की पक्की स्वामिनी है; स्त्री-स्वभाव के कारण चंचल है, और हमेशा वही करने पर तुली रहती है जो नियत है। यह मनुष्य के धैर्य को नष्ट कर देती है।

1.26.6

ग्रसतेऽविरतं भूतजालं सर्प इवानिलम् । कृतान्तः कर्कशाचारो जरां नीत्वाऽजरं वपुः ॥ ६ ॥

grasate'virataṁ bhūtajālaṁ sarpa ivānilam | kṛtāntaḥ karkaśācāro jarāṁ nītvā'jaraṁ vapuḥ || 6 ||

Death, cruel in its ways, drags even an ageless body into old age, and it ceaselessly swallows the whole heap of creatures, like a snake swallowing air.

यह क्रूर स्वभाव वाली मृत्यु उस शरीर को भी बुढ़ापे में धकेल देती है जो अपने आप बूढ़ा नहीं होता, और वह लगातार सारे प्राणियों के समूह को निगलती रहती है, ठीक वैसे ही जैसे साँप हवा निगलता रहता है।

1.26.7

यमो निर्घृणराजेन्द्रो नार्तं नामानुकम्पते । सर्वभूतदयोदारो जनो दुर्लभतां गतः ॥ ७ ॥

yamo nirghṛṇarājendro nārtaṁ nāmānukampate | sarvabhūtagdayodāro jano durlabhatāṁ gataḥ || 7 ||

Yama, the merciless king of kings, has no pity at all for those in pain. And people who are truly kind to every living being have become very rare.

यम, जो निर्दयी राजाओं का राजा है, दुखी लोगों पर तनिक भी दया नहीं करता। और जो लोग सचमुच सभी प्राणियों पर दया करने वाले हों, वे अब बहुत दुर्लभ हो गए हैं।

1.26.8

सर्वा एव मुने फल्गुविभवा भूतजातयः । दुःखायैव दुरन्ताय दारुणा भोगभूमयः ॥ ८ ॥

sarvā eva mune phalguvibhavā bhūtajātayaḥ | duḥkhāyaiva durantāya dāruṇā bhogabhūmayāḥ || 8 ||

Sage, all creatures have only a trivial, worthless kind of prosperity. The lands of enjoyment are cruel places, leading only to endless suffering.

हे मुनि, सभी प्राणियों की समृद्धि तुच्छ और बेकार है। भोग के ये सारे क्षेत्र भयानक हैं और अंततः केवल अनंत दुख ही देते हैं।

1.26.9

आयुरत्यन्तचपलं मृत्युरेकान्तनिष्ठुरः । तारुण्यं चातितरलं बाल्यं जडतया हृतम् ॥ ९ ॥

āyuratyantacapalaṁ mṛtyurekāntaniṣṭhuraḥ | tāruṇyaṁ cātitaramaṁ bālyam jaḍatayā hṛtam || 9 ||

Life is completely unstable, death is entirely without mercy. Youth, too, is very fleeting, and childhood is wasted away in simple ignorance.

जीवन बिल्कुल अस्थिर है, मृत्यु पूरी तरह निर्दयी है। जवानी भी बहुत जल्दी बीत जाने वाली है, और बचपन तो नादानी में ही बीत जाता है।

1.26.10

कलाकलङ्कितो लोको बन्धवो भवबन्धनम् । भोगा भवमहारोगास्तृष्णाश्च मृगतृष्णिकाः ॥ १० ॥

kalākalaṅkito loko bandhavo bhavabandhanam | bhogā bhavamahārogāstr̥ṣṇāśca mṛgatṛṣṇikāḥ || 10 ||

This world is covered in flaws. Relatives are only one more rope tying us to this life. Pleasures are like the great diseases of worldly life, and our cravings are like a mirage.

यह संसार दोषों से भरा है। रिश्तेदार तो बस इस जीवन से बाँधने वाली एक और डोर हैं। सुख-भोग संसार के बड़े रोगों जैसे हैं, और हमारी तृष्णाएँ मरीचिका जैसी हैं।

1.26.11

शत्रवश्चेन्द्रियाण्येव सत्यं यातमसत्यताम् । प्रहरत्यात्मनैवात्मा मनसैव मनो रिपुः ॥ ११ ॥

śatravaścendriyāṇyeva satyaṃ yātamāsatyatām | praharatyātmanaivātmā manasaiva mano ripuḥ || 11 ||

Our own senses are truly our enemies; even truth has turned into falsehood. The self strikes itself by itself, and the mind becomes its own enemy, attacked by the mind.

हमारी अपनी इंद्रियाँ ही हमारी सच्ची शत्रु हैं; सच भी झूठ बन गया है। आत्मा खुद अपने आप पर वार करती है, और मन खुद अपना ही शत्रु बनकर मन पर ही वार करता है।

1.26.12

अहंकारः कलङ्काय बुद्धयः परिपेलवाः । क्रिया दुष्फलदायिन्यो लीलाः स्त्रीनिष्ठतां गताः ॥ १२ ॥

ahaṃkāraḥ kalaṅkāya buddhayaḥ paripelavāḥ | kriyā duṣphaladāyinyo līlāḥ strīniṣṭhataṃ gatāḥ || 12 ||

Pride leads only to disgrace, the mind has become very feeble, actions bring nothing but bad results, and even our amusements have narrowed down to nothing but women.

अहंकार से केवल बदनामी मिलती है, बुद्धि बहुत कमज़ोर हो गई है, कर्मों का फल बुरा ही निकलता है, और हमारे मनोरंजन भी सिमटकर सिर्फ स्त्रियों तक रह गए हैं।

1.26.13

वाञ्छाविषयशालिन्यः सच्चमत्कृतयः क्षताः । नार्यो दोषपताकिन्यो रसा नीरसतां गताः ॥ १३ ॥

vāñchāviṣayaśālīnyaḥ saccamatkṛtayaḥ kṣatāḥ | nāryo doṣapatākinyo rasā nīrasatāṃ gatāḥ || 13 ||

Women, who seem full of everything we desire and once seemed truly wonderful, are flawed; in truth they now carry the flag of every fault. And all the flavors of life have turned tasteless.

स्त्रियाँ, जो चाहे हुए सुखों से भरी और सचमुच अद्भुत जान पड़ती थीं, वास्तव में दोषपूर्ण हैं; वे तो अब हर दोष का झंडा उठाए हुए हैं। और जीवन के सारे रस अब फीके पड़ गए हैं।

1.26.14

वस्त्ववस्तुतया ज्ञातं दत्तं चित्तमहंकृतौ । अभाववेधिता भावा भावान्तो नाधिगम्यते ॥ १४ ॥

vastvavastutayā jñātaṃ dattaṃ cittamaḥaṅkṛtau | abhāvavedhitā bhāvā bhāvānto nādhigamyate || 14 ||

What is real is taken for unreal, and the mind is handed over to pride. Everything that exists is shot through with its own coming end, yet no one grasps where existence truly leads.

जो सच है उसे झूठ समझा जाता है, और मन अहंकार के हवाले कर दिया गया है। जो कुछ भी है, वह अपने ही अंत से भरा हुआ है, फिर भी कोई यह नहीं समझ पाता कि अस्तित्व आखिर कहाँ जाकर खत्म होता है।

1.26.15

तप्यते केवलं साधो मतिराकुलितान्तरा । रागरोगो विलसति विरागो नोपगच्छति ॥ १५ ॥

tapyate kevalaṃ sādho matirākulitāntarā | rāgarogo vilasati virāgo nopagacchati || 15 ||

Only pain remains, good sir — the mind stays troubled inside. The disease called passion keeps flourishing, and freedom from passion never comes.

हे साधो, बस पीड़ा ही बचती है - मन भीतर से हमेशा व्याकुल रहता है। राग नाम की बीमारी फलती-फूलती रहती है, और वैराग्य कभी नहीं आता।

1.26.16

रजोगुणहता दृष्टिस्तमः संपरिवर्धते न चाधिगम्यते सत्त्वं तत्त्वमत्यन्तदूरतः ॥ १६ ॥

rajoguṇahatā dṛṣṭistamaḥ samparivardhate na cādhigamyate sattvaṁ tattvamatyantadūrataḥ || 16 ||

Vision is ruined by restless passion, and dark ignorance keeps growing. Purity and goodness are never reached — the truth stays completely out of reach.

रज गुण की वजह से दृष्टि बिगड़ जाती है, और अंधकार यानी अज्ञान बढ़ता ही जाता है। सत्त्व यानी शुद्धता कभी हाथ नहीं आती, और सच्चाई पूरी तरह दूर बनी रहती है।

1.26.17

स्थितिरस्थिरतां याता मृतिरागमनोन्मुखी धृतिर्वैधुर्यमायाता रतिर्नित्यमवस्तुनि ॥ १७ ॥

sthitirasthiratāṁ yātā mṛtirāgamanonmukhī dhṛtirvaidhuryamāyātā ratirnityamavastuni || 17 ||

What seemed stable has become unstable, and death always stands ready to arrive. Steadiness has turned into helplessness, and our attachment always fastens on things that are not even real.

जो स्थिर लगता था वह अस्थिर हो गया है, और मृत्यु हमेशा आने के लिए तैयार खड़ी रहती है। धैर्य बेबसी में बदल गया है, और हमारा मोह हमेशा उन चीजों से बंधा रहता है जो असल में हैं ही नहीं।

1.26.18

मतिर्मान्द्येन मलिना पातैकपरमं वपुः ज्वलतीव जरा देहे प्रतिस्फुरति दुष्कृतम् ॥ १८ ॥

matirmāndyena malinā pātaikaparamaṁ vapuḥ jvalatīva jarā dehe pratisphurati duṣkṛtam || 18 ||

The mind grows dull and clouded through sluggishness. The body is bent only on decline. Old age burns in the body like fire, and the results of our bad deeds keep flashing up again and again.

सुस्ती के कारण मन धुंधला और मैला हो जाता है। शरीर केवल गिरावट की ओर ही बढ़ता है। बुढ़ापा शरीर में आग की तरह जलता है, और हमारे बुरे कर्मों का फल बार-बार सामने आता रहता है।

1.26.19

यत्नेन याति युवता दूरे सज्जनसंगतिः गतिर्न विद्यते काचित्क्वचिन्नोदेति सत्यता ॥ १९ ॥

yatnena yāti yuvatā dūre sajjanasaṅgatiḥ gatiṛna vidyate kācitkvacinnoḍeti satyatā || 19 ||

Youth slips away all on its own, and the company of good people stays far off. There is no way out anywhere, and truth never shows up anywhere.

जवानी अपने आप ही चली जाती है, और अच्छे लोगों का साथ हमेशा दूर ही रहता है। कहीं कोई रास्ता नहीं मिलता, और सच्चाई कहीं भी सामने नहीं आती।

1.26.20

मनो विमुह्यतीवान्तर्मुदिता दूरतां गता नोज्ज्वला करुणोदेति दूरादायाति नीचता ॥ २० ॥

mano vimuhyatīvāntarmuditā dūratāṁ gatā nojjvalā karuṇoḍeti dūrādāyāti nīcatā || 20 ||

The mind grows completely confused within, and joy has moved far away. Bright, warm compassion never rises, while meanness comes rushing in from every side.

मन भीतर से पूरी तरह उलझ जाता है, और खुशी बहुत दूर चली जाती है। उजली और गर्मजोशी वाली दया कभी नहीं उठती, जबकि नीचता हर तरफ से दौड़ी चली आती है।

1.26.21

धीरताऽधीरतामेति पातोत्पातपरो जनः । सुलभो दुर्जनाश्लेषो दुर्लभः सत्समागमः ॥ २१ ॥

dhīratā'dhīratāmeti pātotpātaparo janah | sulabho durjanāśleṣo durlabhaḥ satsamāgamaḥ || 21 ||

Steadiness turns into restlessness, and people fall prey to one calamity after another. It is easy to fall in with bad people, but rare to meet good ones.

धैर्य अधीरता में बदल जाता है, और लोग एक के बाद एक मुसीबत में फँसते जाते हैं। बुरे लोगों की संगत आसानी से मिल जाती है, पर अच्छे लोगों का साथ मिलना दुर्लभ है।

1.26.22

आगमापायिनो भावा भावना भवबन्धनी । नीयते केवलं क्वापि नित्यं भूतपरम्परा ॥ २२ ॥

āgamāpāyino bhāvā bhāvanā bhavabandhanī | nīyate kevalaṁ kvāpi nityaṁ bhūtaparamparā || 22 ||

Everything that comes must also go, yet our thinking about things is what ties us to this existence. And the whole endless chain of living beings is constantly being swept away somewhere, without end.

जो कुछ भी आता है वह चला भी जाता है, फिर भी हमारी सोच ही हमें इस संसार से बाँधे रखती है। और सारे प्राणियों की यह अंतहीन कड़ी हमेशा कहीं न कहीं बहती चली जा रही है।

1.26.23

दिशोऽपि हि न दृश्यन्ते देशोऽप्यन्यापदेशभाक् । शैला अपि विशीर्यन्ते कैवास्था मादृशे जने ॥ २३ ॥

diśo'pi hi na dṛśyante deśo'pyanyāpadeśabhāk | śailā api viśīryante kaivāsthā mādṛśe jane || 23 ||

Even the directions disappear from sight, even a place turns into something else and takes another name, even mountains crumble away — so what firm ground can there be for someone like me?

दिशाएँ तक दिखनी बंद हो जाती हैं, कोई जगह भी अपना नाम बदलकर कुछ और बन जाती है, यहाँ तक कि पहाड़ भी टूटकर बिखर जाते हैं - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या ठोस आधार बचता है?

1.26.24

अद्यते सत्तयापि द्यौर्भुऽवन चापि ऊयते । धरापि याति वैधुर्यं केवास्था मादृशे जने ॥ २४ ॥

adyate sattayāpi dyaurbhū'van cāpi ūyate | dharāpi yāti vaidhuryaṁ kevāsthā mādṛśe jane || 24 ||

Even the sky is being eaten away, existence and all; the world too is wasting away; even the earth is losing its steadiness — so what firm ground can there be for someone like me?

आकाश तक अपने पूरे अस्तित्व के साथ खाया जा रहा है; संसार भी घिसकर मिटता जा रहा है; धरती तक अपनी स्थिरता खोती जा रही है - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.25

शुष्यन्त्यपि समुद्राश्च शीर्यन्ते तारका अपि । सिद्धा अपि विनश्यन्ति कैवास्था मादृशे जने ॥ २५ ॥

śuṣyantyapi samudrāśca śīryante tārakā api | siddhā api vinaśyanti kaivāsthā mādṛśe jane || 25 ||

Even the oceans dry up, even the stars fall apart, even the perfected sages die — so what firm ground can there be for someone like me?

समुद्र तक सूख जाते हैं, तारे तक बिखर जाते हैं, सिद्ध पुरुष तक नाश हो जाते हैं - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.26

दानवा अपि दीर्यन्ते ध्रुवोऽप्यध्रुवजीवितः । अमरा अपि मार्यन्ते कैवास्था मादृशे जने ॥ २६ ॥

dānavā api dīryante dhruvo'pyadhruvajīvitah | amarā api māryante kaivāsthā mādr̥śe jane || 26 ||

Even demons are torn to pieces, even the pole star, which is called fixed, does not have a fixed life, even the immortals are killed — so what firm ground can there be for someone like me?

दानव तक चीर डाले जाते हैं, ध्रुव तारा तक - जिसे अटल कहा जाता है - उसका जीवन भी अटल नहीं है, अमर कहलाने वाले देवता तक मार डाले जाते हैं - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.27

शक्रोऽप्याक्रम्यते वक्रैर्यमोऽपि हि नियम्यते । वायुरप्येत्यवायुत्वं कैवास्था मादृशे जने ॥ २७ ॥

śakro'pyākramyate vakrairyamo'pi hi niyamyate | vāyurapyetyavāyutvaṁ kaivāsthā mādr̥śe jane || 27 ||

Even Indra, the king of the gods, is attacked by crooked enemies; even Yama, the god of death, is himself held in check; even the wind stops being wind — so what firm ground can there be for someone like me?

देवराज इंद्र तक कुटिल शत्रुओं के हमले का शिकार होते हैं, यम तक किसी और के वश में रहते हैं, हवा तक हवा नहीं रह जाती - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.28

सोमोऽपि व्योमतां याति मार्तण्डोऽप्येति खण्डताम् । मग्नतामग्निरप्येति कैवास्था मादृशे जने ॥ २८ ॥

somopi vyomatāṁ yāti mārtaṇḍo'pyeti khaṇḍatām | magnatāmagnirapyeti kaivāsthā mādr̥śe jane || 28 ||

Even the moon dissolves into empty sky, even the sun breaks into pieces, even fire itself gets drowned out — so what firm ground can there be for someone like me?

चाँद तक खाली आकाश में घुलकर खो जाता है, सूरज तक टुकड़ों में बिखर जाता है, आग तक बुझकर डूब जाती है - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.29

परमेष्ठ्यपि निष्ठावान्हियते हीररप्यजः । भवोऽप्यभावमायाति कैवास्था मादृशे जने ॥ २९ ॥

parameṣṭhyapi niṣṭhāvānhriyate hīrarapyajaḥ | bhavo'pyabhāvamāyāti kaivāsthā mādr̥śe jane || 29 ||

Even Brahma, the highest and most steadfast of all, is swept away; even Hara, though said to be unborn, is not spared; even Bhava turns into nothing — so what firm ground can there be for someone like me?

ब्रह्मा तक, जो सबसे स्थिर माने जाते हैं, बहा ले जाए जाते हैं; हर यानी शिव तक, जिन्हें अजन्मा कहा जाता है, नहीं बचते; भव तक अभाव को प्राप्त हो जाते हैं - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.30

कालः संकाल्यते येन नियतिश्चापि नीयते । खमप्यालीयतेऽनन्तं कैवास्था मादृशे जने ॥ ३० ॥

kālah saṁkālyate yena niyatiścāpi nīyate | khamapyāliyate'anantaṁ kaivāsthā mādr̥śe jane || 30 ||

There is something by which even Time itself is brought to an end, and Necessity too is swept away; even endless space dissolves away — so what firm ground can there be for someone like me? कोई ऐसी शक्ति है जिससे काल भी समाप्त हो जाता है, और नियति भी बह जाती है; अनंत आकाश तक विलीन हो जाता है - तो फिर मुझ जैसे व्यक्ति के लिए क्या आधार बचता है?

1.26.31

अश्राव्यावाच्यदुर्दर्शतत्त्वेनाज्ञातमूर्तिना । भुवनानि विडम्ब्यन्ते केनचिद्भ्रमदायिना ॥ ३१ ॥

aśrāvyāvācyadurdarśatattvenājñātamūrtinā | bhuvanāni viḍambyante kenacidbhramadāyinā || 31 ||

By something whose real nature cannot be heard, cannot be described in words, and cannot be seen — something whose very shape is unknown, and which spreads only confusion — the whole world is being made a fool of by this unknown power.

किसी ऐसी चीज़ से जिसका असली रूप न सुना जा सकता है, न कहा जा सकता है, न देखा जा सकता है - जिसका आकार तक अज्ञात है, और जो सिर्फ भ्रम फैलाती है - उसी अनजानी शक्ति के हाथों पूरा संसार मूर्ख बनाया जा रहा है।

1.26.32

अहंकारकलामेत्य सर्वत्रान्तरवासिना । न सोऽस्ति त्रिषु लोकेषु यस्तेनेह न बाध्यते ॥ ३२ ॥

ahaṁkāarakalāmetya sarvatrāntaravāsinā | na so'sti triṣu lokeṣu yasteneha na bādhyate || 32 ||

This same power takes the shape of ego and lives inside everyone, everywhere. There is no one in the three worlds who is not troubled by it.

यही शक्ति अहंकार का रूप लेकर हर जगह, हर किसी के भीतर बसी रहती है। तीनों लोकों में ऐसा कोई नहीं जो इससे परेशान न हो।

1.26.33

शिलाशैलकवप्रेषु साश्वभूतो दिवाकरः । वनपाषाणवन्नित्यमवशः परिचोद्यते ॥ ३३ ॥

śilāśailakavapreṣu sāśvabhūto divākaraḥ | vanapāṣāṇavannityamavaśaḥ paricodyate || 33 ||

The sun, together with its chariot and horses, travels among rocks, mountains, and cliffs — driven on forever, utterly without control of its own, as helpless as a stone lying in the forest.

सूरज अपने रथ और घोड़ों के साथ चट्टानों, पहाड़ों और खड्डों के बीच चलता है - हमेशा हँका जाता है, अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं रखता, बिल्कुल वैसे ही बेबस जैसे जंगल में पड़ा हुआ एक पत्थर।

1.26.34

धरागोलकमन्तस्थसुरासुरगणास्पदम् । वेष्ट्यते धिष्ण्यचक्रेण पक्वाक्षोऽमिव त्वचा ॥ ३४ ॥

dharāgolakamantasthasurāsuraḡaṇāspadam | veṣṭyate dhiṣṇyacakreṇa pakvākṣoṣamiva tvacā || 34 ||

The round earth, home to hosts of gods and demons living inside it, is wrapped all around by the circle of the stars, the way a ripe walnut is wrapped in its shell.

यह गोल पृथ्वी, जिसके भीतर देवताओं और असुरों के समूह रहते हैं, चारों ओर से तारों के घेरे में इस तरह लिपटी हुई है जैसे पका हुआ अखरोट अपने छिलके में लिपटा रहता है।

1.26.35

दिवि देवा भुवि नराः पातालेषु च भोगिनः । कल्पिताः कल्पमात्रेण नीयन्ते जर्जरां दशाम् ॥ ३५ ॥

divi devā bhuvi narāḥ pātāleṣu ca bhoginaḥ | kalpitāḥ kalpamātreṇa nīyante jarjarāṁ daśām || 35 ||

Gods in heaven, men on earth, serpents in the world below — all of them, though seemingly real, are formed by nothing more than imagination, and all of them are driven, in time, into a broken, worn-out state.

स्वर्ग में देवता, धरती पर मनुष्य, और पाताल में सर्प - ये सब, भले ही सच्चे लगते हों, केवल कल्पना से बने हैं, और आखिर में सब जर्जर और टूटी-फूटी अवस्था में पहुँच जाते हैं।

1.26.36

कामश्च जगदीशानरणलब्धपराक्रमः । अक्रमेणैव विक्रान्तो लोकमाक्रम्य वल्गति ॥ ३६ ॥

kāmaśca jagadīśānarṇalabdhaparākramaḥ | akrameneva vikrānto lokamākramya valgati || 36 ||

And Desire, who won his own strength by warring even against the Lord of the world, still moves without any restraint, overrunning the whole world and prancing about freely.

और काम, जिसने संसार के स्वामी से लड़कर भी अपना बल पाया था, आज भी बिना किसी रोक-टोक के पूरी दुनिया पर छा जाता है और मनमाने ढंग से उछलता-कूदता रहता है।

1.26.37

वसन्तो मत्तमातङ्गो मदैः कुसुमवर्षणैः । आमोदितककुप्चक्रश्चेतो नयति चापलम् ॥ ३७ ॥

vasanto mattamātaṅgo madaiḥ kusumavarṣaṇaiḥ | āmoditakakupcakraśceto nayati cāpalam || 37 ||

Spring is like an elephant in rut — its excitement pours down as showers of flowers, filling every direction with fragrance, and it drives the mind toward restlessness.

वसंत मानो मस्त हाथी है - उसका मद फूलों की बारिश बनकर बरसता है, हर दिशा को खुशबू से भर देता है, और मन को चंचल बना देता है।

1.26.38

अनुरक्ताङ्गनालोललोचनालोकिताकृति । स्वस्थीकर्तुं मनः शक्तो न विवेको महानपि ॥ ३८ ॥

anuraktāṅganālōlālocanālokitākṛti | svasthīkartuṃ manaḥ śakto na viveko mahānapi || 38 ||

When a woman in love looks someone over with restless, wandering eyes, even the greatest power of discernment cannot keep the mind steady.

जब कोई प्रेम में डूबी स्त्री अपनी बेचैन घूमती आँखों से किसी के रूप को निहारती है, तो सबसे बड़ा विवेक भी मन को स्थिर नहीं रख पाता।

1.26.39

परोपकारकारिण्या परार्तिपरितप्तया । बुद्ध एव सुखी मन्ये स्वात्मशीतलया धिया ॥ ३९ ॥

paropakāra-kāriṇyā parārtiparitatpyā | buddha eva sukhī manye svātmaśītalayā dhiyā || 39 ||

I think only a truly wise person is happy — one whose mind helps others, feels for others' pain as if it burned within, yet stays cool and steady in the self.

मुझे लगता है सुखी केवल वही ज्ञानी व्यक्ति होता है जिसका मन दूसरों की भलाई करता है, दूसरों के दुख से भीतर तक जलता भी है, फिर भी अपने भीतर से शांत और शीतल बना रहता है।

1.26.40

उत्पन्नध्वंसिनः कालवडवानलपातिनः । संख्यातुं केन शक्यन्ते कल्लोला जीविताम्बुधौ ॥ ४० ॥

utpannadhvamsinaḥ kālavavadānalapātinaḥ | saṁkhyātuṃ kena śakyante kalolā jīvitāmbudhau || 40 ||

Who could ever count the waves in the ocean of life — waves that rise only to be destroyed, and fall into the fire that burns beneath the sea, the fire of time?

जीवन रूपी समुद्र में उठने वाली लहरों को कौन गिन सकता है - जो लहरें उठती ही हैं मिटने के लिए, और समुद्र के भीतर जलने वाली काल की उस आग में गिर जाती हैं?

1.26.41

सर्व एव नरा मोहादुराशापाशपाशिनः । दोषगुल्मकसारङ्गा विशीर्णा जन्मजङ्गले । संक्षीयते जगति जन्मपरम्परासु लोकस्य तैरिह कुकर्मभिरायुरेतत् ॥ ४१ ॥

sarva eva narā mohāddurāśāpāśapāśinah | doṣagulmakasāraṅgā viśīrṇā janmajaṅgale | saṁkṣīyate jagati janmaparamparāsu lokasya tairiha kukarmabhirāyuretat || 41 ||

All men, out of delusion, are tied up by the rope of false hope; like deer caught in the thorny bushes of their own faults, they lie scattered through the jungle of repeated birth. And in this world, life after life, this span of life that people have is worn away by their own bad deeds.

सारे मनुष्य मोह के कारण झूठी आशा की रस्सी में बंधे हुए हैं; वे अपने ही दोषों की कँटीली झाड़ियों में फँसे हिरणों की तरह जन्म-जन्म के जंगल में इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। और इस संसार में, जन्म के बाद जन्म, लोगों की यह जिंदगी उनके अपने बुरे कर्मों से घुलती-घिसती जाती है।

1.26.42

आकाशपादपलताकृतपाशकल्पं येषां फलं नहि विचारविदोऽपि विद्मः ॥ ४२ ॥

ākāśapādapalatākṛtapāśakalpaṁ yeṣāṁ phalaṁ nahi vicāravido'pi vidmaḥ || 42 ||

Even we, who know how to think things through, do not understand actions whose result is no more real than a rope woven from the creeper of a tree that grows in the sky.

हम, जो सोच-विचार करना जानते हैं, फिर भी उन कर्मों को नहीं समझ पाते जिनका फल आकाश में उगे किसी पेड़ की बेल से बनी रस्सी जितना ही असत्य है।

1.26.43

अद्योत्सवोऽयमृतुरेष तथेह यात्रा ते बन्धवः सुखमिदं सविशेषभोगम् । इत्थं मुधैव कलयन्सुविकल्पजालमालोलपेलवमतिर्गलतीह लोकः ॥ ४३ ॥

adyotsavo'yamṛtureṣa tatheha yātrā te bandhavaḥ sukhamidaṁ saviśeṣabhogam | itthaṁ mudhaiva kalayansuvikalpajālamālolapelavamatirgalatīha lokah || 43 ||

'Today is a festival, this is the right season, here is a journey, these are my own relatives, this is real pleasure and joy' — thinking such empty thoughts, weaving one useless idea after another, with a mind that is restless and weak, a person in this world simply slips away and is gone.

'आज उत्सव है, यही सही मौसम है, यह रही यात्रा, ये रहे मेरे अपने रिश्तेदार, यही तो असली सुख और आनंद है' - ऐसी खोखली बातें सोचता हुआ, एक के बाद एक बेकार खयाल बुनता हुआ, चंचल और कमज़ोर मन के साथ, मनुष्य इस संसार में यूँ ही फिसलकर चला जाता है।

Chapter 27

1.27.1

श्रीराम उवाच । अन्यच्च ताताऽतितरामरम्ये मनोरमे चेह जगत्स्वरूपे । न किञ्चिदायाति तदर्थजातं येनातिविश्रान्तिमुपैति चेतः

॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | anyacca tātā'titatarāmaramye manorame ceha jagatsvarūpe | na kiñcidāyāti tadarthajātaṃ
yenātiviśrāntimupaiti cetaḥ || 1 ||

Sri Rama said: And another thing, father — in this nature of the world, which is truly full of pain though it looks charming and pleasant to the mind, nothing at all appears in it that could bring the mind to complete and lasting rest.

श्रीराम ने कहा - हे तात, एक और बात है - इस संसार का असली स्वरूप बहुत दुखदायी है, भले ही यह मन को सुंदर और मोहक लगे। इसमें ऐसी कोई भी चीज़ नहीं दिखती जिससे मन को पूरा और स्थायी विश्राम मिल सके।

1.27.2

बाल्ये गते कल्पितकेलिलोले मनोमृगे दारदरीषु जीर्णे । शरीरके जर्जरतां प्रयाते विदूयते केवलमेव लोकः ॥ २ ॥

bālye gate kalpitakelilole manomṛge dāradarīṣu jīrṇe | śarīrake jarjaratāṃ prayāte vidūyate kevalameva lokah || 2 ||

When childhood, full of make-believe games, is gone; when the restless mind, like a deer, has grown old lost in the byways of married life; when this small body has become worn and frail — people are left simply consumed with distress.

जब बचपन के काल्पनिक खेल-कूद बीत चुके होते हैं, जब हिरण जैसा चंचल मन गृहस्थी की गलियों में भटकते-भटकते बूढ़ा हो जाता है, जब यह छोटा सा शरीर जर्जर हो जाता है - तब लोग बस पीड़ा में डूब जाते हैं।

1.27.3

जरातुषाराभिहतां शरीरसरोजिनीं दूरतरे विमुच्य । क्षणाद्गते जीवितचञ्चरीके जनस्य संसारसरोऽवशुष्कम् ॥ ३ ॥

jarātuṣārābhihatāṃ śarīrasarojinīm dūratare vimucya | kṣaṇādgate jīvitacañcarīke janasya
saṃsārasaro'vaśuṣkam || 3 ||

The body is like a pond full of lotuses, damaged by the frost of old age. Once the bee of life leaves it behind in a single moment, the pond of that person's whole world dries up completely.

यह शरीर मानो कमलों से भरा एक तालाब है, जो बुढ़ापे की पाले से बरबाद हो चुका है। जैसे ही जीवन रूपी भँवरा एक पल में उसे छोड़कर उड़ जाता है, उस व्यक्ति के पूरे संसार रूपी तालाब का पानी सूख जाता है।

1.27.4

यदा यदा पाकमुपैति नूनं तदा तदेयं रतिमातनोति । जराभराऽनल्पनवप्रसूना विजर्जरा कायलता नराणाम् ॥ ४ ॥

yadā yadā pākamupaiti nūnaṃ tadā tadeyaṃ ratimātanoti | jarābharā'nalpanavaprasūnā vijarjarā kāyalatā
narāṇām || 4 ||

A man's body is like a vine. However heavy it grows with old age, and however many fresh flowers of desire keep blooming on it, the moment it truly ripens into old age, it still reaches out again for pleasure — even while it is completely worn out and falling apart.

मनुष्य का शरीर एक बेल की तरह है। भले ही वह बुढ़ापे के बोझ से लदी हो और उस पर इच्छा के कितने ही नए फूल खिलते रहें, जैसे ही यह सचमुच बुढ़ापे तक पहुँचती है, यह पूरी तरह जर्जर और टूटी-फूटी होते हुए भी फिर से सुख की ओर हाथ बढ़ाती है।

1.27.5

तृष्णानदी सारतरप्रवाहग्रस्ताखिलानन्तपदार्थजाता । तटस्थसंतोषसुवृक्षमूलनिकाषदक्षा वहतीह लोके ॥ ५ ॥

trṣṇānādī sāratarapravāhagrastākṣhilānantapadārthajātā | taṭasthasaṁtoṣasuvṛkṣamūlanikāṣadakṣā vahaṭīha loke || 5 ||

The river of craving flows through this world, its powerful current swallowing up every kind of thing without end. And it is very good at one thing: wearing away the roots of the one good tree, contentment, that stands on its banks.

तृष्णा की यह नदी इस संसार में बहती रहती है, इसका तेज़ बहाव हर तरह की अनगिनत चीज़ों को निगल जाता है। और यह एक काम बहुत अच्छी तरह करती है - अपने किनारे खड़े संतोष रूपी अच्छे पेड़ की जड़ों को काट देना।

1.27.6

शारीरनौश्वर्मनिबन्धबद्धा भवाम्बुधावालुलिता भ्रमन्ती । प्रलोड्यते पञ्चभिरिन्द्रियाख्यैरधोभवन्ती मकरैरधीरा ॥ ६ ॥

śārīranauscarmanibandhabaddhā bhavāmbudhāvālulitā bhramantī | praloḍyate pañcabhirindriyākhyairadhobhavantī makarairadhīrā || 6 ||

The body is like a boat held together by nothing but skin, tossed about and drifting on the ocean of worldly existence. It is churned and battered by five sea-monsters, the five senses, and, unsteady, it keeps sinking lower and lower.

यह शरीर मानो एक नाव है, जो सिर्फ त्वचा से जुड़ी हुई है, और संसार रूपी समुद्र में डगमगाती हुई बहती रहती है। इंद्रियाँ नाम के पाँच जल-जंतु इसे मथते और पटकते रहते हैं, और यह डगमगाती हुई नाव धीरे-धीरे डूबती जाती है।

1.27.7

तृष्णालताकाननचारिणोऽमी शाखाशतं काममहीरुहेषु । परिभ्रमन्तः क्षपयन्ति कालं मनोमृगा नो फलमाप्नुवन्ति ॥ ७ ॥

trṣṇālatākānanacāriṇo'mī śākhāśataṁ kāmamahīruheṣu | paribhramantaḥ kṣapayanti kālaṁ manomṛgā no phalamāpnuvanti || 7 ||

These deer that are our minds roam through the forest of the vine of craving, wandering among a hundred branches on the trees of desire. They simply waste their time going around and around, and in the end, they gain no fruit at all.

मन रूपी ये हिरण तृष्णा की बेलों वाले जंगल में भटकते हैं, कामनाओं के पेड़ों की सैकड़ों शाखाओं के बीच घूमते रहते हैं। वे बस इधर-उधर घूमते हुए अपना समय गँवाते हैं, और अंत में उन्हें कोई फल नहीं मिलता।

1.27.8

कृच्छ्रेषु दूरास्तविषादमोहाः स्वास्थ्येषु नोत्सिक्तमनोभिरामाः । सुदुर्लभाः संप्रति सुन्दरीभिः रनाहतान्तःकरणा महान्तः ॥ ८ ॥

kṛcchreṣu dūrāstaviṣādamohāḥ svāsthyeṣu notsiktamanobhirāmāḥ | suduurlabhāḥ saṁprati sundarībhiḥ ranāhatāntaḥkaraṇā mahāntaḥ || 8 ||

Truly great people are those who, in hardship, keep grief and confusion far away; who, in comfort, are not charmed by a swollen sense of pride; and whose hearts remain untouched even by beautiful women. Such great people are very hard to find these days.

सच्चे महान लोग वे हैं जो मुसीबत में भी दुख और भ्रम को खुद से दूर रखते हैं; जो सुख-चैन में भी घमंड से भरे मन के मोह में नहीं फँसते; और जिनका दिल सुंदर स्त्रियों को देखकर भी नहीं डिगता - ऐसे महान लोग आजकल मिलना बहुत मुश्किल है।

1.27.9

तरन्ति मातङ्गघटातरङ्गं रणाम्बुधिं ये मयि ते न शूराः । शूरास्त एवेह मनस्तरङ्गं देहेन्द्रियाम्भोधिमिमं तरन्ति ॥ ९ ॥

taranti mātaṅgaghaṭāṭaraṅgaṃ raṇāmbudhiṃ ye mayi te na śūrāḥ | śūrāsta eveha manastaraṅgaṃ
dehendriyāmbhodhimimaṃ taranti || 9 ||

Those who cross an ocean of war, whose waves are rows of charging elephants — to my mind, they are not the real heroes. The real heroes are those who cross this ocean made of the body and the senses, whose waves are made of the restless mind.

जो लोग युद्ध रूपी समुद्र को पार करते हैं, जिसकी लहरें हाथियों की कतारें हैं - मेरी नज़र में वे असली वीर नहीं हैं। असली वीर तो वे हैं जो शरीर और इंद्रियों के इस समुद्र को पार करते हैं, जिसकी लहरें चंचल मन से बनी हैं।

1.27.10

अक्लिष्टपर्यन्तफलाभिरामा न दृश्यते कस्यचिदेव काचित् । क्रियादुराशाहतचित्तवृत्तिर्यामेत्य विश्रान्तिमुपैति लोकः ॥ १० ॥

akliṣṭaparyantaphalābhirāmā na dṛśyate kasyacideva kācit | kriyādurāśāhatacittavṛttirīyamety viśrāntimupaiti
lokaḥ || 10 ||

No one can find any single action whose final result is truly delightful and free of trouble, an action not driven by the false hopes that strike down our thinking — an action that, once carried out, could bring a person real rest.

किसी को भी कोई ऐसा काम नहीं मिलता जिसका अंतिम फल सचमुच सुखद और परेशानी से मुक्त हो, जो झूठी आशाओं से बिगड़ी हुई सोच से प्रेरित न हो - ऐसा कोई काम जिसे करने के बाद इंसान को सचमुच चैन मिल सके।

1.27.11

कीर्त्या जगद्विक्कुहरं प्रतापैः श्रिया गृहं सत्त्वबलेन लक्ष्मीम् । ये पूरयन्त्यक्षतधैर्यबन्धा न ते जगत्यां सुलभा महान्तः ॥ ११ ॥

kīrtiyā jagaddikkuharaṃ pratāpaiḥ śriyā grhaṃ sattvabalena lakṣmīm | ye pūrayantyakṣatadhairya-bandhā na te
jagatyāṃ sulabhā mahāntaḥ || 11 ||

Those who fill every corner of the world with their fame, who fill their homes with glory through their own courage, who win prosperity through the strength of their own true character, and whose patience never breaks — such great people are not easy to find in this world.

जो लोग अपनी कीर्ति से संसार की सारी दिशाओं को भर देते हैं, अपने पराक्रम से अपने घर को गौरव से भर देते हैं, अपने सच्चे चरित्र के बल पर समृद्धि पाते हैं, और जिनका धैर्य कभी नहीं टूटता - ऐसे महान लोग इस दुनिया में आसानी से नहीं मिलते।

1.27.12

अप्यन्तरस्थं गिरिशैलभित्तेर्वज्रालयाभ्यन्तरसंस्थितं वा । सर्वं समायान्ति ससिद्धिवेगाः सर्वाः श्रियः सन्ततमापदश्च ॥ १२ ॥

apyantarasthaṃ girīśailabhittērvajrālayābhyantarasaṁsthitaṃ vā | sarvaṃ samāyānti sasiddhivēgāḥ sarvāḥ
śriyaḥ santatamāpadaśca || 12 ||

Whether someone hides deep inside a mountain wall of rock, or stays shut inside a fortress of solid diamond, it makes no difference — every kind of fortune, and every kind of disaster, always finds its way there, arriving as if by magic.

चाहे कोई पहाड़ की चट्टान की दीवार के भीतर छिप जाए, या हीरे के किले में बंद हो जाए, फिर भी कोई फर्क नहीं पड़ता - हर तरह का सौभाग्य और हर तरह की विपत्ति हमेशा वहाँ तक पहुँच ही जाती है, मानो जादू से।

1.27.13

पुत्राश्च दाराश्च धनं च बुद्ध्या प्रकल्प्यते तात रसायनाभम् । सर्वं तु तन्नोपकरोत्यथान्ते यत्रातिरम्या विषमूर्च्छनैव ॥ १३ ॥

putrāśca dārāśca dhanam ca buddhyā prakalpyate tāta rasāyanābham | sarvaṁ tu tannopakaroatyathānte
yatrātiramyā viṣamūrchchanaiava || 13 ||

Sons, a wife, and wealth — the mind imagines all of these, father, to be like a magic medicine that keeps one young forever. But none of it truly helps in the end, where, however lovely it looked, it turns out to be nothing but a poison that makes a person collapse.

बेटे, पत्नी, और धन - हे तात, मन इन सबको ऐसी अमृत औषधि समझ लेता है जो हमेशा जवान रखे। पर अंत में इनमें से कोई भी सचमुच काम नहीं आता, जहाँ ये चाहे जितने सुंदर दिखें, असल में एक ऐसे ज़हर के सिवा कुछ नहीं जो इंसान को बेहोश कर देता है।

1.27.14

विषादयुक्तो विषमामवस्था मुपागतः कायवयोवसाने । भावान्स्मरन्स्वानिह धर्मरिक्तान् जन्तुर्जरावानिह दह्यतेऽन्तः ॥ १४ ॥

viṣādayukto viṣamānavasthā mupāgataḥ kāyavayovasāne | bhāvānsmaransvāniha dharmariktān
janturjarāvāniha dahyatē'ntaḥ || 14 ||

Filled with sorrow, having reached a terrible state as his body's years come to an end, and remembering how his own past life was empty of any real goodness, the old man simply burns with pain inside.

दुख से भरा हुआ, अपने शरीर की उम्र के अंत में एक भयानक हालत में पहुँचकर, और यह याद करके कि उसका अपना जीवन कभी सच्ची भलाई से भरा नहीं रहा, वह बूढ़ा इंसान भीतर ही भीतर जलता रहता है।

1.27.15

कामार्थधर्माप्तिकृतान्तराभिः क्रियाभिरादौ दिवसानि नीत्वा । चेतश्चलद्बर्हिणपिच्छलोलं विश्रान्तिमागच्छतु केन पुंसः ॥ १५ ॥

kāmārthadharmāptikṛtāntarābhiḥ kriyābhiḥrādaḥ divasāni nītvā | cetaschaladbharhiṇapichchalolam
viśrāntimāgacchatu kena puṁsaḥ || 15 ||

A man spends his early days doing all kinds of things to chase pleasure, wealth, and duty. But his mind stays as restless as a peacock feather stirring in the wind — by what means could such a mind ever come to rest?

मनुष्य अपने शुरुआती दिन कामना, धन और धर्म को पाने की तरह-तरह की कोशिशों में बिता देता है। पर उसका मन तो हवा में हिलते मोर के पंख जैसा चंचल ही बना रहता है - ऐसा मन आखिर किस तरह शांत हो सकता है?

1.27.16

पुरोगतैरप्यनवाप्तरूपैस्तरङ्गिणीतुङ्गतरङ्गकल्पैः । क्रियाफलैर्दैववशादुपेतैर्विडम्ब्यते भिन्नरुचिर्हि लोकः ॥ १६ ॥

purogatairapyanavāptarūpāisstarāṅgiṇītuṅgatarāṅgakalpaiḥ | kriyāphalairdaivavaśādupaitairviḍambyate
bhinna-rucirhi lokaḥ || 16 ||

The results of our actions come to us driven only by fate, and they are like the tall waves of a river — never settling into any fixed shape, even while they stand right in front of us. And so people, with all their different wishes and tastes, are simply made fools of.

हमारे कर्मों के फल केवल भाग्य के अनुसार हमारे सामने आते हैं, और वे नदी की ऊँची लहरों की तरह हैं - सामने होते हुए भी कभी किसी स्थिर रूप में नहीं टिकते। और इस तरह अलग-अलग पसंद वाले लोग बस मूर्ख बनते रहते हैं।

1.27.17

इमान्यमूनीहि विभावितानि कार्याण्यपर्यन्तमनोरमाणि । जनस्य जायाजनरञ्जनेन जवाज्जरान्तं जरयन्ति चेतः ॥ १७ ॥

imānyamūnīhi vibhāvitāni kāryāṇyaparyantamanoramāṇi | janasya jāyājanarañjanena javājjarāntaṃ jarayanti cetaḥ || 17 ||

All these various tasks people plan out for themselves, tasks that seem endlessly delightful, together with the pleasure that comes from a wife and family — all of this quickly wears out a person's mind, right up to the end, to old age.

इंसान जो तरह-तरह के काम सोचकर बनाता है, जो देखने में हमेशा सुंदर लगते हैं, उनके साथ पत्नी और परिवार से मिलने वाला सुख भी - ये सब मिलकर तेज़ी से इंसान के मन को घिसते चले जाते हैं, यहाँ तक कि बुढ़ापे के अंत तक।

1.27.18

पर्णानि जीर्णानि यथा तरूणां समेत्य जन्माशु लयं प्रयान्ति । तथैव लोकाः स्वविवेकहीनाः समेत्य गच्छन्ति कुतोऽप्यहोभिः ॥ १८ ॥

parṇāni jīrṇāni yathā tarūṇāṃ sametya janmāśu layaṃ prayānti | tathaiḥv lokāḥ svavivekahīnāḥ sametya gacchanti kuto'pyahobhiḥ || 18 ||

Just as the old, dried leaves of a tree grow and then quickly fall away and are gone, in the same way people, without any real understanding of their own, come together for a while and then, as the days pass, disappear — nobody knows where.

जैसे पेड़ के सूखे पुराने पत्ते उगते हैं और फिर जल्दी ही गिरकर खत्म हो जाते हैं, वैसे ही लोग, बिना किसी सच्ची समझ के, कुछ समय के लिए इकट्ठे होते हैं और फिर दिन बीतते-बीतते कहीं गायब हो जाते हैं, किसी को पता नहीं कहाँ।

1.27.19

इतस्ततो दूरतरं विहृत्य प्रविश्य गेहं दिवसावसाने । विवेकिलोकाश्रयसाधुकर्म रिक्तेऽह्नि रात्रौ क उपैति निद्राम् ॥ १९ ॥

itastato dūratarāṃ vihr̥tya praviśya gehaṃ divasāvasāne | vivekilokāśrayasādhukarma rikte'ahni rātrau ka upaiti nidrām || 19 ||

After roaming far and wide from place to place, and then coming home at the end of the day, on a day empty of any good deed that could earn the respect of the wise — who, on that night, could really find sleep?

इधर-उधर दूर-दूर तक भटकने के बाद, और फिर दिन ढलते ही घर लौटकर, जिस दिन में समझदार और अच्छे लोगों का सम्मान पाने लायक एक भी अच्छा काम न किया गया हो - उस रात कोई सचमुच नींद कैसे पा सकता है?

1.27.20

विद्राविते शत्रुजने समस्ते समागतायामभितश्च लक्ष्म्याम् । सेव्यन्त एतानि सुखानि यावत्तावत्समायाति कुतोऽपि मृत्युः ॥ २० ॥

vidrāvite śatrujane samaste samāgatāyāmabhitaśca lakṣmyām | sevyaṇta etāni sukhāni yāvattāvatsamāyāti kuto'pi mṛtyuḥ || 20 ||

Just when every enemy has been driven off and good fortune has come from every direction, and a person is enjoying these pleasures — right at that very moment, death arrives, from who knows where.

जब सारे शत्रु भगा दिए जाते हैं, और चारों ओर से सौभाग्य आ जाता है, और इंसान इन सुखों को भोग ही रहा होता है - ठीक उसी वक्त मौत न जाने कहाँ से आ पहुँचती है।

1.27.21

कुतोऽपि संवर्धिततुच्छरूपैर्भावैरमीभिः क्षणनष्टदृष्टैः । विलोड्यमाना जनता जगत्यां नवेत्युपायातमहो न पातम् ॥ २१ ॥

kuto'pi samvardhitatuccharūpairbhāvairamībhiḥ kṣaṇanaṣṭadṛṣṭaiḥ | vilōḍyamānā janatā jagatyāṃ
navetyupāyātamaho na pātam || 21 ||

People in this world are constantly stirred up by trivial things that spring from who knows where and vanish the instant they are seen. And yet, strangely, when such a thing arrives, people welcome it as if it were something wonderful and new, never once seeing it, alas, as a step toward their own downfall.

इस दुनिया में लोग हमेशा ऐसी तुच्छ चीज़ों से हिलते-डुलते रहते हैं जो न जाने कहाँ से आती हैं और देखते ही देखते गायब हो जाती हैं। और फिर भी, अजीब बात है, जब ऐसी कोई चीज़ आती है तो लोग उसे कोई नई और अच्छी बात समझकर खुश हो जाते हैं - कभी यह नहीं समझते कि यह असल में उनके पतन की ओर एक कदम है।

1.27.22

प्रियासुभिः कालमुखं क्रियन्ते जनैर्दकास्ते हतकर्मबद्धाः । यैः पीनतामेव बलादुपेत्य शरीरबाधेन न ते भवन्ति ॥ २२ ॥

priyāsubhiḥ kālamukhaṃ kriyante janaiḍakāste hata-karmabaddhāḥ | yaiḥ pīnatāmeva balādupetya
śarīrabādhena na te bhavanti || 22 ||

People are like sheep, bound by their own destructive past deeds, and with their own precious lives they become nothing but food for the mouth of Time. By force they only grow fatter and fatter, and even bodily suffering does not stop them from continuing to do so.

लोग भेड़ों जैसे हैं, अपने ही बुरे कर्मों से बंधे हुए, और अपनी प्यारी जान के साथ वे बस काल के मुँह का चारा बन जाते हैं। ज़बरदस्ती वे बस मोटे होते चले जाते हैं, और शरीर की तकलीफ भी उन्हें ऐसा करने से नहीं रोक पाती।

1.27.23

अजस्रमागच्छति सत्त्वैवमनारतं गच्छति सत्त्वैव । कुतोऽपि लोला जनता जगत्यां तरङ्गमाला क्षणभङ्गुरेव ॥ २३ ॥

ajasramāgacchati satvarevamanārataṃ gacchati satvareva | kuto'pi lolā janatā jagatyāṃ taraṅgamālā
kṣaṇabhaṅgureva || 23 ||

Endlessly it comes, and quickly; ceaselessly it goes, just as quickly. In this world, restless people, arriving from who knows where, are just like a row of waves that break apart in an instant.

यह लगातार आता है, और तेज़ी से आता है; लगातार जाता भी है, उतनी ही तेज़ी से। इस दुनिया में बेचैन लोग, न जाने कहाँ से आकर, ठीक वैसे ही हैं जैसे लहरों की एक कतार, जो एक पल में टूट जाती है।

1.27.24

प्राणापहारैकपरा नराणां मनो मनोहारितया हरन्ति । रक्तच्छदाश्चञ्चलषट्पदाक्ष्यो विषट्कुमालोललताः स्त्रियश्च ॥ २४ ॥

prāṇāpahāraikaparā narāṇāṃ mano manohāritayā haranti | raktacchadāścañcalaṣaṭpadākṣyo
viṣadrumālōlalatāḥ striyaśca || 24 ||

Women, bent only on stealing away men's very life, steal their minds through their own charm — with lips as red as young leaves, eyes as restless as darting bees, they are like the swaying vines of a poison tree.

स्त्रियाँ, जो केवल पुरुषों का जीवन ही छीनने पर तुली रहती हैं, अपने आकर्षण से उनका मन चुरा लेती हैं - उनके होंठ नई पत्तियों जैसे लाल हैं, उनकी आँखें भँवरों जैसी चंचल हैं, वे मानो किसी ज़हरीले पेड़ की लहराती हुई बेलें हैं।

1.27.25

इतोऽन्यतश्चोपगता मुधैव समानसंकेतनिबद्धभावा । यात्रासमासंगसमा नराणां कलत्रमित्रव्यवहारमाया ॥ २५ ॥

ito'nyataścopagatā mudhaiva samānasaṅketanibaddhabhāvā | yātrāsamāsaṅgasamā narāṇām
kalatramitravyavahāramāyā || 25 ||

Coming together from different directions, for no real reason, bound only by some shared, arranged understanding, like travelers who happen to meet on the same journey — that is exactly what a man's dealings with his wife and friends really are: nothing but an illusion.

अलग-अलग जगहों से आकर, बिना किसी सच्ची वजह के, बस किसी साझा तय की हुई समझ से बंधकर - जैसे यात्रा में साथ मिल गए साथी - ठीक वैसा ही है इंसान का अपनी पत्नी और दोस्तों से रिश्ता। यह सब बस एक भ्रम है।

1.27.26

प्रदीपशान्तिष्विव भुक्तभूरिदशास्वतिस्नेहनिबन्धनीषुसंसारमालासु चलाचलासु न ज्ञायते तत्त्वमतात्त्विकीषु ॥ २६ ॥

pradīpaśāntiṣviva bhuktabhūridaśāsvatisnehanibandhanīṣusamsāramālāsu calācalāsu na jñāyate
tattvamatāttvikīṣu || 26 ||

Just as a lamp flickers through many stages before it finally burns out, kept going only by its oil, so this whole chain of worldly life is held together only by deep attachment. It keeps flickering and shifting, never staying still, and people never see its real truth, that it has no real substance at all. जैसे एक दीया बुझने से पहले तेल के सहारे कई अवस्थाओं से गुजरता हुआ टिमटिमाता रहता है, वैसे ही यह पूरा सांसारिक जीवन केवल गहरे मोह के सहारे टिका रहता है। यह लगातार डगमगाता और बदलता रहता है, कभी स्थिर नहीं रहता, और लोग इसकी असली सच्चाई कभी नहीं समझ पाते - कि इसमें कोई ठोस तत्व है ही नहीं।

1.27.27

संसारसंरम्भकुचक्रिकेयं प्रावृट्पयोबुद्बुदभङ्गुरपि असावधानस्य जनस्य बुद्धौ चिरस्थिरप्रत्ययमातनोति ॥ २७ ॥

saṁsārasaṁrambhakucakrikeyaṁ prāvṛṭṭpayobudbudabhaṅgurapi asāvadhānasya janasya buddhau
cirasthirapratyayamātanoti || 27 ||

This whole spinning wheel of worldly busyness is as fragile as a bubble in the rainy season's water. And yet, in the mind of a careless person, it creates the false idea that it will last a long, steady time.

संसार की यह पूरी हलचल भरी चक्की बरसात के पानी में बने बुलबुले जितनी नाजुक है। फिर भी, एक लापरवाह इंसान के मन में यह झूठा भरोसा पैदा कर देती है कि यह लंबे समय तक स्थिर बनी रहेगी।

1.27.28

शोभोज्ज्वला दैववशाद्विनष्टा गुणाः स्थिताः संप्रति जर्जरत्वे आश्वासनादूरतरं प्रयाता जनस्य हेमन्त इवाम्बुजस्य ॥ २८ ॥

śobhojjvalā daivavaśādvinaṣṭā guṇāḥ sthitāḥ saṁprati jarjaratveāśvāsanādūratarāṁ prayātā janasya hemanta
ivāmbujasya || 28 ||

A person's bright, shining beauty is destroyed by fate, and whatever good qualities remain now stand only in a state of decay. All comfort has moved far out of reach. A person's old age is just like winter is to a lotus flower.

इंसान की चमकती हुई सुंदरता भाग्य के हाथों नष्ट हो जाती है, और जो भी अच्छे गुण बचते हैं वे अब बस जर्जर हालत में रह जाते हैं। हर तरह का सुकून बहुत दूर चला जाता है। इंसान का बुढ़ापा कमल के लिए जाड़े के मौसम जैसा ही है।

1.27.29

पुनःपुनर्देववशादुपेत्य स्वदेहभारेण कृतोपकारः विलूयते यत्र तरुः कुठारैराश्वासने तत्र हि कः प्रसङ्गः ॥ २९ ॥

punaḥpunardevavaśādupetya svadehabhāreṇa kṛtopakāraḥvilūyate yatra taruḥ kuṭhāirāśvāsane tatra hi kaḥ prasaṅgaḥ || 29 ||

Again and again, driven by fate, a tree that has given service through the very substance of its own trunk still gets cut down by axes. So what room is there for any real comfort or security in this world?

बार-बार, भाग्य के अधीन होकर, एक पेड़ जो अपने ही तने के ज़रिए सेवा करता है, फिर भी कुल्हाड़ियों से काट दिया जाता है। तो फिर इस दुनिया में सच्चे सुकून की कोई गुंजाइश ही कहाँ बचती है?

1.27.30

मनोरमस्याप्यतिदोषवृत्तेरन्तर्विघाताय समुत्थितस्य विषद्रुमस्येव जनस्य सङ्गादासाद्यते संप्रति मूर्च्छनैव ॥ ३० ॥

manoramasyāpyatidoṣavṛtterantarvighātāya samutthitasya viṣadrumasyeva janasya saṅgādāsādyate samprati mūrcchanaiva || 30 ||

A person can be charming to look at, and yet be deeply flawed in nature, someone who has really come only to destroy others from within. Being close to such a person is exactly like being close to a poison tree: all it brings, right away, is a kind of collapse.

कोई इंसान देखने में भला-चंगा लग सकता है, पर असल में बहुत बुरे स्वभाव का हो सकता है - जो असल में दूसरों को भीतर से बरबाद करने के लिए ही आया हो। ऐसे इंसान के पास रहना ठीक वैसा ही है जैसे किसी ज़हरीले पेड़ के पास रहना - इससे तुरंत बस बेहोशी जैसी हालत ही मिलती है।

1.27.31

कास्ता दृशो यासु न सन्ति दोषाः कास्ता दिशो यासु न दुःखदाहः । कास्ताः प्रजा यासु न भङ्गुरत्वं कास्ताः क्रिया यासु न नाम माया ॥ ३१ ॥

kāstā dṛśo yāsu na santi doṣāḥ kāstā diśo yāsu na duḥkhadāhaḥ | kāstāḥ prajā yāsu na bhaṅguratvaṃ kāstāḥ kriyā yāsu na nāma māyā || 31 ||

Where can you find a single sight that has no flaw in it at all? Where can you find a single direction where the burning pain of suffering does not reach? Where can you find a single living being that is not fragile and impermanent? Where can you find a single action that is not, in truth, an illusion?

ऐसा कौन सा दृश्य है जिसमें कोई दोष न हो? ऐसी कौन सी दिशा है जहाँ दुख की जलन न पहुँचती हो? ऐसा कौन सा प्राणी है जो नाशवान न हो? और ऐसा कौन सा काम है जो असल में एक भ्रम न हो?

1.27.32

कल्पाभिधानक्षणजीविनो हि कल्पौघसंख्याकलने विरिञ्चयाः । अतः कलाशालिनि कालजाले लघुत्वदीर्घत्वधियोऽप्यसत्याः
॥ ३२ ॥

*kalpābhidhānakṣaṇajīvino hi kalpaughasaṁkhyākalane viriñcayāḥ | ataḥ kalāśālīni kālajāle
laghutvadīrghatvadhiyo'pyasatyāḥ || 32 ||*

Even the very long age called a 'kalpa' is only a single moment in the life of the many creator-gods, and one needs to count them by the flood-load to measure real cosmic time. So in this whole vast net of time, with all of its countless divisions, even our ideas of 'short' and 'long' are not really true.

'कल्प' कहलाने वाला विशाल युग भी, कई सृष्टिकर्ता ब्रह्माओं के जीवन में बस एक पल भर है, और सच्चा समय नापने के लिए तो ऐसे अनगिनत कल्पों को गिनना पड़ता है। तो फिर समय के इस विशाल जाल में, जिसके अनगिनत हिस्से हैं, हमारी 'छोटा' और 'बड़ा' जैसी सोच भी सच्ची नहीं है।

1.27.33

सर्वत्र पाषाणमया महीध्रा मृदा मही दारुभिरेव वृक्षाः । मांसैर्जनाः पौरुषबद्धभावा नापूर्वमस्तीह विकारहीनम् ॥ ३३ ॥

*sarvatra pāṣāṇamayā mahīdhrā mṛdā mahī dārubhireva vṛkṣāḥ | māṁsairjanāḥ pauruṣabaddhabhāvā
nāpūrvamastīha vikārahīnam || 33 ||*

Everywhere, mountains are made of stone, the earth is made of soil, trees are made of wood, and people, whose whole being is tied up with their own strength and effort, are made of flesh. There is nothing at all in this world that is new or free from change.

हर जगह पहाड़ पत्थर से बने हैं, धरती मिट्टी से बनी है, पेड़ लकड़ी से बने हैं, और लोग, जिनका पूरा वजूद अपनी मेहनत और ताकत से जुड़ा है, मांस से बने हैं। इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नया नहीं है जो बदलाव से मुक्त हो।

1.27.34

आलोक्यते चेतनयाऽनुविद्धा पयोनुबद्धोऽस्तनयो नभः स्थाः । पृथग्विभागेन पदार्थलक्ष्म्या एतज्जगन्नेतरदस्ति किञ्चित् ॥ ३४ ॥

*ālokyate cetanayā'nuviddhā payonubaddho'stanayo nabhaḥ sthāḥ | pṛthagvibhāgena padārthalakṣmyā
etajjagannetaradasti kiñcit || 34 ||*

This whole world, water and everything bound up with it, the sky and everything placed within it, each divided up separately according to its own particular nature, all of this is seen only because consciousness runs through it. This world is all there is; nothing else at all exists beyond it.

यह पूरा संसार - पानी और उससे जुड़ी हर चीज़, आकाश और उसमें रखी हर चीज़, जो अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार अलग-अलग बँटी हुई हैं - यह सब इसलिए दिखता है क्योंकि चेतना इसमें से होकर गुज़रती है। यही संसार सब कुछ है; इसके अलावा कुछ भी नहीं है।

1.27.35

चमत्कृतिश्चेह मनस्विलोकचेतश्चमत्कारकरी नराणाम् । स्वप्नेऽपि साधो विषयं कदाचित्केषांचिदभ्येति न चित्ररूपा ॥ ३५ ॥

*camatkṛtiścheha manasvilokacetaścamatkāraṇakārī narāṇām | svapne'pi sādho viṣayaṁ kadācitkeṣāṁcidabhyeti na
citrarūpā || 35 ||*

Good sir, there is a kind of wonder here that would truly astonish the minds of thoughtful people, but that wonder in its full and marvelous form never comes within anyone's reach, not even once, and not even in a dream.

हे साधो, यहाँ एक ऐसा चमत्कार है जो समझदार लोगों के मन को सचमुच चकित कर दे - पर वह चमत्कार अपने पूरे और अद्भुत रूप में किसी को भी कभी नहीं मिलता, सपने में भी नहीं।

1.27.36

अद्यापि यातेऽपि च कल्पनाया आकाशवल्लीफलवन्महत्त्वे । उदेति नो लोभलवाहतानामुदारवृत्तान्तमयी कथैव ॥ ३६ ॥

adyāpi yāte'pi ca kalpanāyā ākāśavallīphalavanmahattve | udeti no lobhalavāhatānāmudāravṛttāntamayī
kathaiva || 36 ||

Even today, and even in times long past, a truly noble story, one full of great and worthy deeds, never comes about for people who are struck by even a trace of greed. Such greatness is about as real as fruit growing on a vine in the empty sky.

आज भी और बीते ज़माने में भी, जो लोग थोड़े से भी लालच से भरे हैं, उनके यहाँ कभी कोई सच्ची महान कहानी नहीं बनती, जो बड़े और अच्छे कामों से भरी हो - ऐसी महानता उतनी ही असंभव है जितना आकाश में उगी किसी बेल पर फल लगना।

1.27.37

आदातुमिच्छन्पदमुत्तमानां स्वचेतसैवापहतोऽद्य लोकः । पतत्यशङ्कं पशुरद्रिकूटादानीलवल्लीफलवाञ्छयैव ॥ ३७ ॥

ādātumicchanpadamuttamānāṃ svacetasaivāpahato'dya lokah | patatyashankam
pashuradrikūṭādānīlavallīphalavāñchayaiva || 37 ||

Wanting to reach the rank of the greatest people, a person today is ruined by nothing but his own mind. He falls without any sense of danger, just like an animal that falls off a mountain peak, driven only by its desire for the fruit of a green vine hanging over the edge.

सबसे बड़े लोगों जैसा दर्जा पाना चाहते हुए, आज इंसान अपने ही मन के हाथों बरबाद हो जाता है। वह बिना किसी डर के गिर जाता है - ठीक वैसे ही जैसे कोई जानवर पहाड़ की चोटी से गिर जाता है, सिर्फ किनारे पर लटकी हरी बेल के फल की चाह में।

1.27.38

अवान्तरन्यस्तनिरर्थकांशच्छायालतापत्रफलप्रसूनाः । शरीर एव क्षतसंपदश्च श्वभ्रद्रुमा अद्यतना नराश्च ॥ ३८ ॥

avāntaranyastanirarthakāṃśacchāyālatāpatraphalaprasūnāḥ | śarīra eva kṣatasampadaśca śvabhradrumā
adyatanā narāśca || 38 ||

A tree growing on the very edge of a pit may still have its shade, its climbing vines, its leaves, fruit, and flowers, but all of that is placed there pointlessly, since its own trunk's strength is already damaged. People today are exactly the same: whatever they gain, in their very own body their real strength is already broken.

किसी खाई के किनारे उगा पेड़ भले ही उसकी छाया, बेलें, पत्ते, फल और फूल हों, पर ये सब बेकार हैं क्योंकि उसका अपना तना पहले से ही कमज़ोर हो चुका है। आज के लोग भी बिल्कुल वैसे ही हैं - वे जो कुछ भी पाते हैं, उनके अपने शरीर की असली ताकत तो पहले से ही टूट चुकी होती है।

1.27.39

क्वचिज्जना मार्दवसुन्दरेषु क्वचित्कठोरेषु च संचरन्ति । देशान्तरालेषु निरन्तरेषु वनान्तखण्डेष्विव कृष्णसाराः ॥ ३९ ॥

kvacijjanā mārḍavasundareṣu kvacitkaṭhoreṣu ca saṃcaranti | deśāntarāleṣu nirantareṣu vanāntakhaṇḍeṣviva
kṛṣṇasārāḥ || 39 ||

Sometimes people move through places that are soft and pleasant, and sometimes through places that are hard and rough, wandering constantly through one region after another, just like black antelope moving through patches of land at the edge of a forest.

कभी लोग नरम और सुहावनी जगहों से गुज़रते हैं, कभी सख्त और कठोर जगहों से, इस तरह लगातार एक इलाके से दूसरे इलाके में भटकते रहते हैं - बिल्कुल वैसे ही जैसे काले हिरण जंगल के किनारे के अलग-अलग टुकड़ों में घूमते रहते हैं।

1.27.40

धातुर्नवानि दिवसं प्रति भीषणानि रम्याणि वा विलुलितान्ततमाकुलानि । कार्याणि कष्टफलपाकहतोदयानि विस्मापयन्ति न शवस्य मनांसि केषाम् ॥ ४० ॥

dhāturnavāni divasaṃ prati bhīṣaṇāni ramyāṇi vā vilulitāntatamākulāni | kāryāṇi kaṣṭaphalapākahatodayāni vismāpayanti na śavasya manāṃsi keṣām || 40 ||

Whose mind, except perhaps a corpse's, is not left amazed by the ever-new workings of fate, day after day, sometimes terrifying, sometimes delightful, utterly confused in how they turn out, their rise cut short by bitter results in the end?

भाग्य के रोज़-रोज़ के नए-नए काम - कभी डरावने, कभी सुहावने, अपने अंत में पूरी तरह उलझे हुए, और जिनका उभार अंत में कड़वे नतीजों से टूट जाता है - इनसे किसका मन चकित नहीं होता, सिवाय किसी मुर्दे के मन के?

1.27.41

जनः कामासक्तो विविधकुललचेष्टनपरः स तु स्वप्नेऽप्यस्मिञ्जगति सुलभो नाद्य सुजनः । क्रिया दुःखासङ्गाऽविधुरविधुरा नूनमखिला न जाने नेतव्या कथमिव दशा जीवितमयी ॥ ४१ ॥

janaḥ kāmāsakto vividhakulalācēṣṭanaparaḥ sa tu svapne'pyasmiñjagati sulabho nādyā sujanaḥ | kriyā duḥkhāsaṅgā'vidhuravidhurā nūnamakhilā na jāne netavyā kathamiva daśā jīvitamayī || 41 ||

A person caught up in desire, busy with all kinds of low and worthless pursuits, is easy enough to find. But a truly good person is hard to find in this world today, even in a dream. Every action is tied to suffering, never really free of trouble, always troubled somehow. I do not even know how this thing we call a lifetime is to be gotten through.

इच्छाओं में डूबा हुआ, तरह-तरह के घटिया और बेकार कामों में लगा हुआ इंसान तो आसानी से मिल जाता है। पर आज इस दुनिया में सचमुच अच्छा इंसान मिलना तो सपने में भी मुश्किल है। हर काम दुख से जुड़ा हुआ है, कभी परेशानी से पूरी तरह मुक्त नहीं होता, हमेशा किसी न किसी तरह से व्याकुल ही रहता है। मुझे तो यह भी नहीं पता कि इस जीवन नाम की अवस्था को आखिर कैसे पार किया जाए।

Chapter 28

1.28.1

श्रीराम उवाच । यच्चेदं दृश्यते किञ्चिज्जगत्स्थावरजंगमम् । तत्सर्वमस्थिरं ब्रह्मन्स्वप्नसंगमसंनिभम् ॥ १ ॥

*śrīrāma uvāca | yaccedaṃ dṛśyate kiñcidjagatsthāvarajaṅgamam | tatsarvamastiram
brahmannsvapnasamgamasannibham || 1 ||*

Sri Rama said: Whatever is seen in this world, moving or unmoving, all of it is unsteady, O brahmin, like a meeting that happens in a dream.

श्री राम ने कहा - यह जो कुछ भी संसार दिखाई देता है, चाहे वह चलने वाला हो या न चलने वाला, हे ब्राह्मण, यह सब उतना ही अस्थिर है जितना सपने में हुई कोई मुलाकात।

1.28.2

शुष्कसागरसंकाशो निखातो योऽद्य दृश्यते । स प्रातरभ्रसंवीतो नगः संपद्यते मुने ॥ २ ॥

śuṣkasāgarasaṅkāśo nikhāto yo'dya dṛśyate | sa prātarabhraśaṃvīto nagaḥ saṃpadyate mune || 2 ||

What today looks like a dug-out hollow, like a dried-up sea, becomes, O sage, a mountain wrapped in clouds by the next morning.

आज जो जगह किसी सूखे समुद्र जैसे गड्ढे के समान दिखती है, हे मुनि, वही अगली सुबह तक बादलों से ढका हुआ पहाड़ बन जाती है।

1.28.3

यो वनव्यूहविस्तीर्णो विलिढगगनो महान् । दिनैरेव स यात्युर्वीसमतां कूपतां च वा ॥ ३ ॥

yo vanavyūhaviśtīrṇo vilīḍhagagano mahān | dinairēva sa yātyurvīsamatāṃ kūpatāṃ ca vā || 3 ||

That great mountain, spread wide with masses of forest, seeming to touch the sky, turns in just a few days into flat ground, or even into a pit.

वही विशाल पहाड़, जो घने जंगलों से भरा हुआ और आकाश को छूता हुआ लगता है, कुछ ही दिनों में समतल ज़मीन बन जाता है, या फिर एक गड्ढा बन जाता है।

1.28.4

यदङ्गमद्य संवीतं कौशेयस्रग्विलेपनैः । दिगम्बरं तदेव श्वो दूरे विशरिताऽवटे ॥ ४ ॥

yadaṅgamadya saṃvītaṃ kauśeyasragvilepanaiḥ | digambaraṃ tadeva śvo dūre viśarita'vate || 4 ||

The body that today is wrapped in silk, garlands, and scented paste, that same body lies naked tomorrow, decaying, far away, in a pit.

जो शरीर आज रेशमी कपड़ों, फूलों की मालाओं और सुगंधित लेप से ढका है, वही शरीर कल नंगा होकर, दूर किसी गड्ढे में सड़ता हुआ पड़ा मिलेगा।

1.28.5

यत्राद्य नगरं दृष्टं विचित्राचारचञ्चलम् । तत्रैवोदेति दिवसैः संशून्यारण्यधर्मता ॥ ५ ॥

yatrādya nagaraṃ dṛṣṭaṃ vicitraācāracañcalam | tatraivodeti divasaiḥ saṃśūnyāraṇyadharmatā || 5 ||

Where a city, full of life and all kinds of activity, is seen today, that very place turns, within a few days, into an empty wilderness.

जहाँ आज एक शहर दिखता है, चहल-पहल और तरह-तरह की गतिविधियों से भरा हुआ, वही जगह कुछ ही दिनों में सुनसान जंगल बन जाती है।

1.28.6

यः पुमानद्य तेजस्वी मण्डलान्यधितिष्ठति । स भस्मकूटतां राजन्दिवसैरधिगच्छति ॥ ६ ॥

yaḥ pumānadya tejasvī maṇḍalānyadhitiṣṭhati | sa bhasmakūṭatāṃ rājandivasairadhigacchati || 6 ||

The man who today, strong and glowing, rules over kingdoms, he, O king, within a few days, becomes nothing but a heap of ash.

जो आदमी आज ताकतवर और तेजस्वी होकर राज्यों पर शासन करता है, हे राजा, वही कुछ ही दिनों में राख के ढेर के सिवा कुछ नहीं रह जाता।

1.28.7

अरण्यानी महाभीमा या नभोमण्डलोपमा । पताकाच्छादिताकाशा सैव संपद्यते पुरी ॥ ७ ॥

araṇyānī mahābhīmā yā nabhomāṇḍalopamā | patākācchādītākāśā saiva saṃpadyate purī || 7 ||

That vast and terrifying forest, which seems as huge as the sky itself, that same forest becomes a city whose sky is covered with rows of flags.

वही विशाल और डरावना जंगल, जो आकाश जितना बड़ा लगता है, आगे चलकर एक ऐसा शहर बन जाता है जिसका आकाश झंडों से ढका होता है।

1.28.8

या लतावलिता भीमा भात्यद्य विपिनावली । दिवसैरेव सा याति पुनर्मरुमहीपदम् ॥ ८ ॥

yā latāvalitā bhīmā bhātyadya vipināvalī | divasaireva sā yāti punarmarumahīpadam || 8 ||

The frightening stretch of forest, tangled with creepers, that shines today, that very stretch turns, in a few days, once again into desert land.

जो डरावना जंगल आज बेलों से उलझा हुआ चमक रहा है, वही कुछ ही दिनों में फिर से रेगिस्तान बन जाता है।

1.28.9

सलिलं स्थलतां याति स्थलीभवति वारिभूः । विपर्यस्यति सर्वं हि सकाष्ठाम्बुतृणं जगत् ॥ ९ ॥

salilaṃ sthalatāṃ yāti sthālībhavati vāribhūḥ | viparyasyati sarvaṃ hi sakāṣṭhāmbutr̥ṇaṃ jagat || 9 ||

Water turns into dry land, and land that held water becomes dry ground. Truly, this whole world, with its wood, its water, its grass, keeps turning into its opposite.

पानी ज़मीन बन जाता है, और जो ज़मीन पानी से भरी थी वह सूखी हो जाती है। सच तो यह है कि यह पूरी दुनिया - इसकी लकड़ी, इसका पानी, इसकी घास - सब कुछ अपने उल्टे रूप में बदलता रहता है।

1.28.10

अनित्यं यौवनं बाल्यं शरीरं द्रव्यसंचयाः । भावाद्भावान्तरं यान्ति तरङ्गवदनारतम् ॥ १० ॥

anityaṃ yauvanaṃ bālyaṃ śarīraṃ dravyasaṃcayāḥ | bhāvādbhāvāntaraṃ yānti taraṅgavadanāratam || 10 ||

Youth does not last, nor childhood, nor the body, nor piles of wealth; they keep changing from one state to another, without stopping, like waves.

जवानी टिकती नहीं, न बचपन टिकता है, न शरीर, न धन-दौलत के ढेर; ये सब लहरों की तरह लगातार एक हालत से दूसरी हालत में बदलते रहते हैं।

1.28.11

वातान्तर्दीपकशिखालोलं जगति जीवितम् । तडित्सफुरणसंकाशा पदार्थश्रीर्जगत्त्रये ॥ ११ ॥

vātāntardīpakāśikhālolam jagati jīvitam | taḍitsphuraṇasaṃkāśā padārthaśrīrjagattraye || 11 ||

Life in this world flickers like a lamp's flame caught in the wind. The glory of things in all three worlds is like the flash of lightning.

इस दुनिया में जीवन हवा में काँपती दीये की लौ जैसा है। तीनों लोकों में चीजों की चमक-दमक बिजली की कौंध जैसी है।

1.28.12

विपर्यासमियं याति भूरिभूतपरम्परा । बीजराशिरिवाजस्रं पूर्यमाणः पुनःपुनः ॥ १२ ॥

viparyāsam iyaṃ yāti bhūribhūtaparamparā | bījarāśirivājasraṃ pūryamāṇaḥ punaḥpunaḥ || 12 ||

This long, unbroken chain of beings keeps turning into its opposite, again and again, like a heap of seeds that keeps getting refilled, over and over.

प्राणियों की यह लंबी, बिना रुकी हुई कड़ी बार-बार अपने उल्टे रूप में बदलती रहती है, जैसे बीजों का ढेर बार-बार फिर से भर जाता है।

1.28.13

मनःपवनपर्यस्तभूरिभूतरजःपटा । पातोत्पातपरावर्तपराभिनयभूषिता ॥ १३ ॥

manaḥpavana paryasta bhūribhūtarajahpaṭā | pātotpātaparāvartaparābhinayabhūṣitā || 13 ||

This state of the world wears a curtain of dust made from countless beings, tossed about by the wind of the mind, decorated with falling, rising, sudden turns, and pretence.

संसार की यह अवस्था अनगिनत जीवों की धूल का एक पर्दा ओढ़े हुए है, जो मन की हवा से उड़ता रहता है, और यह गिरने, उठने, अचानक पलटने और दिखावे से सजी हुई है।

1.28.14

आलक्ष्यते स्थितिरियं जागती जनितभ्रमा । नृत्तावेशविवृत्तेव संसारारभटीनटी ॥ १४ ॥

ālakṣyate sthitir iyaṃ jāgati janitabhramā | nṛttāveśavivṛtteva saṃsārārambhaṭīnaṭī || 14 ||

This state of existence appears born out of confusion, like a wild dancer whirling in the grip of the dance, performing the fierce drama of this world.

यह अवस्था भ्रम से पैदा हुई लगती है, जैसे कोई नाचने वाली स्त्री नाच के नशे में घूमती हुई इस संसार का उग्र नाटक कर रही हो।

1.28.15

गन्धर्वनगराकारविपर्यासविधायिनी । अपाङ्गभङ्गुरोदारव्यवहारमनोरमा ॥ १५ ॥

gandharvanagarākāraviparyāsavidhāyinī | apāṅgabhaṅgurodāravavyavahāramanoramā || 15 ||

This working of the world takes shape like a phantom city in the sky, only to break apart again; it charms like a woman whose side-long glances are as delicate as they are grand.

संसार की यह रचना आकाश में बने किसी काल्पनिक शहर जैसी उठती है और फिर टूट जाती है; यह उस स्त्री जैसी मोहक लगती है जिसकी तिरछी नज़रें जितनी नाजुक हैं उतनी ही शानदार भी।

1.28.16

तडित्तरलमालोकमातन्वाना पुनःपुनः । संसाररचना राजन्नृत्तसक्तेव राजते ॥ १६ ॥

taḍittaralamāloka mātanvānā punaḥpunaḥ | saṃsāraranā rājannṛttasakteva rājate || 16 ||

Spreading a light that flickers again and again like lightning, O king, this fabric of the world shines like a woman lost in the sway of dance.

बार-बार बिजली जैसी चमकती हुई रोशनी फैलाती हुई, हे राजा, संसार की यह बुनावट उस स्त्री जैसी चमकती है जो नाच में डूबी हो।

1.28.17

दिवसास्ते महान्तस्ते संपदस्ताः क्रियाश्च ताः । सर्वं स्मृतिपथं यातं यामो वयमपि क्षणात् ॥ १७ ॥

divasāste mahāntaste saṃpadastāḥ kriyāśca tāḥ | sarvaṃ smṛtipathaṃ yātaṃ yāmo vayamapi kṣaṇāt || 17 ||

Those great days, that wealth, those deeds - all of it has now become just a memory; and we too will go the same way, in a moment.

वे बड़े-बड़े दिन, वह धन-संपत्ति, वे काम - यह सब अब बस एक याद बनकर रह गए हैं; और हम भी एक पल में उसी राह पर चले जाएँगे।

1.28.18

प्रत्यहं क्षयमायाति प्रत्यहं जायते पुनः । अद्यापि हतरूपाया नान्तोऽस्या दग्धसंसृतेः ॥ १८ ॥

pratyahaṃ kṣayamāyāti pratyahaṃ jāyate punaḥ | adyāpi hatarūpāyā nānto'syā dagdhasaṃsṛteḥ || 18 ||

Every day it dies, every day it is born again; even today, this ruined, burnt-out cycle of the world still has no end.

हर दिन यह मिटता है, हर दिन यह फिर से जन्म लेता है; आज भी इस टूटे-फूटे, जले हुए संसार-चक्र का कोई अंत नहीं है।

1.28.19

तिर्यक्तं पुरुषा यान्ति तिर्यञ्चो नरतामपि । देवाश्चादेवतां यान्ति किमिवेह विभो स्थिरम् ॥ १९ ॥

tiryaktvaṃ puruṣā yānti tiryāñco naratāmapi | devāścādevatāṃ yānti kimiveha vibho sthiram || 19 ||

Men become animals, and animals become men; even gods lose their godhood - what indeed, O mighty lord, stays the same here?

आदमी पशु बन जाते हैं, और पशु आदमी बन जाते हैं; देवता भी अपना देवत्व खो देते हैं - तो हे प्रभु, यहाँ आखिर स्थिर क्या है?

1.28.20

रचयन्नश्मिजालेन रात्र्यहानि पुनःपुनः । अतिवाह्य रविः कालो विनाशावधिमीक्षते ॥ २० ॥

racayanraśmijālena rātryahāni punaḥpunaḥ | ativāhya raviḥ kālo vināśāvadhīmīkṣate || 20 ||

Weaving day and night, again and again, with his net of rays, the sun, who is Time itself, drives them on and on, watching for the moment of final destruction.

अपनी किरणों के जाल से बार-बार दिन और रात बुनते हुए, सूरज - जो खुद समय है - उन्हें आगे बढ़ाता रहता है, और विनाश की उस आखिरी घड़ी की राह देखता रहता है।

1.28.21

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वा वा भूतजातयः । नाशमेवानुधावन्ति सलिलानीव वाडवम् ॥ २१ ॥

brahmā viṣṇuśca rudraśca sarvā vā bhūtajātayaḥ | nāśamevānudhāvanti salilānīva vāḍavam || 21 ||

Brahma, Vishnu, and Rudra, and indeed all kinds of beings, run only toward destruction, like waters rushing toward the fire that burns under the sea.

ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र, और सारे ही तरह-तरह के जीव, केवल विनाश की ओर दौड़ते हैं, जैसे पानी समुद्र के भीतर जलने वाली आग की ओर दौड़ता है।

1.28.22

द्यौः क्षमा वायुराकाशं पर्वताः सरितो दिशः । विनाशवाडवस्यैतत्सर्वं संशुष्कमिन्धनम् ॥ २२ ॥

dyauḥ kṣamā vāyurākāśaṃ parvatāḥ sarito diśaḥ | vināśavāḍavasyaitatsarvaṃ saṃśuṣkamindhanam || 22 ||

Sky, earth, wind, space, mountains, rivers, and directions - all of this is nothing but dry fuel for the fire of total destruction.

आकाश, धरती, हवा, अंतरिक्ष, पहाड़, नदियाँ और दिशाएँ - यह सब कुल मिलाकर विनाश की उस आग के लिए सूखी लकड़ी ही हैं।

1.28.23

धनानि बान्धवा भृत्या मित्राणि विभवाश्च ये । विनाशभयभीतस्य सर्वं नीरसतां गतम् ॥ २३ ॥

dhanāni bāndhavā bhr̥tyā mitrāṇi vibhavāśca ye | vināśabhayabhītasya sarvaṃ nīrasatāṃ gatam || 23 ||

Wealth, relatives, servants, friends, and all one's possessions - for someone afraid of destruction, all of these have turned tasteless.

धन, रिश्तेदार, नौकर-चाकर, दोस्त और जितनी भी संपत्ति है - जो विनाश से डरा हुआ है, उसके लिए यह सब बेस्वाद हो चुका है।

1.28.24

स्वदन्ते तावदेवैते भावा जगति धीमते । यावत्स्मृतिपथं याति न विनाशकुराक्षसः ॥ २४ ॥

svadante tāvadevaita bhāvā jagati dhīmate | yāvatsmṛtipatham yāti na vināśakurākṣasaḥ || 24 ||

These things of the world taste sweet to a thoughtful man only as long as the demon of destruction has not yet come to his mind.

संसार की ये चीज़ें किसी समझदार आदमी को तभी तक मीठी लगती हैं, जब तक विनाश नाम का राक्षस उसके मन में नहीं आता।

1.28.25

क्षणमैश्वर्यमायाति क्षणमेति दरिद्रताम् । क्षणं विगतरोगत्वं क्षणमागतरोगताम् ॥ २५ ॥

kṣaṇamaiśvaryaṃ yāti kṣaṇameti daridratām | kṣaṇam vigatarogatvaṃ kṣaṇamāgatarogatām || 25 ||

In one moment, power and wealth arrive; in another moment, poverty arrives. In one moment sickness leaves; in another moment sickness comes back.

एक पल में ताकत और धन आ जाते हैं, दूसरे पल में गरीबी आ जाती है। एक पल में बीमारी चली जाती है, दूसरे पल में बीमारी फिर आ जाती है।

1.28.26

प्रतिक्षणविपर्यासदायिना निहतात्मना । जगद्भ्रमेण के नाम धीमन्तो हि न मोहिताः ॥ २६ ॥

pratikṣaṇaviparyāsadāyinā nihataātmanā | jagadbhrameṇa ke nāma dhīmanto hi na mohitāḥ || 26 ||

This whirl of the world keeps turning everything upside down moment by moment, and crushes the very self within it - which wise man, indeed, has it not fooled?

संसार का यह चक्कर हर पल सब कुछ उलट-पुलट कर देता है, और उसके भीतर की आत्मा को भी कुचल देता है - ऐसा कौन-सा समझदार आदमी है जिसे इसने मूर्ख न बनाया हो?

1.28.27

तमःपङ्कसमालब्धं क्षणमाकाशमण्डलम् । क्षणं कनकनिष्यन्दकोमलालोकसुन्दरम् ॥ २७ ॥

tamaḥpaṅkasamālabdham kṣaṇamākāśamaṇḍalam | kṣaṇa kanakaniṣyandakomalālokaśundaram || 27 ||

For one moment, the vault of the sky is smeared with the mud of darkness; the next moment it turns beautiful with a soft, golden light.

एक पल आकाश अंधेरे के कीचड़ से लिपटा रहता है; अगले ही पल वह हल्की सुनहरी रोशनी से सुंदर हो जाता है।

1.28.28

क्षणं जलदनीलाब्जमालावलितकोटरम् । क्षणमुद्गामररवं क्षणं मूकमिव स्थितम् ॥ २८ ॥

kṣaṇam jaladanīlābjamālāvalitakoṭaram | kṣaṇamuḍgāmararavaṃ kṣaṇam mūkamiva sthitam || 28 ||

For a moment it wraps its wide hollow in a garland of dark blue-black clouds; for a moment it roars loudly with thunder; for a moment it stands as if silent and mute.

एक पल वह अपने विशाल आकाश को गहरे नीले-काले बादलों की माला से ढक लेता है; एक पल वह गरज कर ज़ोर से आवाज़ करता है; एक पल वह चुप और गूँगा-सा खड़ा रहता है।

1.28.29

क्षणं ताराविरचितं क्षणमर्केण भूषितम् । क्षणमिन्दुकृताह्लादं क्षणं सर्वबहिष्कृतम् ॥ २९ ॥

kṣaṇam tāraviracitaṁ kṣaṇamarkena bhūṣitam | kṣaṇamindukṛtāhlādaṁ kṣaṇam sarvabahiṣkṛtam || 29 ||

For a moment it is studded with stars, for a moment decorated by the sun; for a moment it is delighted by the moon, for a moment stripped bare of everything.

एक पल वह तारों से जड़ा रहता है, एक पल सूरज से सजा रहता है, एक पल चाँद से खुश रहता है, एक पल हर चीज़ से खाली हो जाता है।

1.28.30

आगमापायपरया क्षणसंस्थितिनाशया । न बिभेति हि संसारे धीरोऽपि क इवानया ॥ ३० ॥

āgamāpāyaparayā kṣaṇasamsthitināśayā | na bibheti hi saṁsāre dhīro'pi ka ivānaya || 30 ||

This world is forever coming and going, standing only for a moment before it is destroyed - is there any wise man who, because of this, does not fear it?

यह संसार हमेशा आता-जाता रहता है, बस एक पल के लिए टिकता है और फिर मिट जाता है - क्या कोई ऐसा समझदार आदमी है जो इस वजह से इससे न डरता हो?

1.28.31

आपदः क्षणमायान्ति क्षणमायान्ति संपदः । क्षणं जन्म क्षणं मृत्युर्मुने किमिव न क्षणम् ॥ ३१ ॥

āpadaḥ kṣaṇamāyānti kṣaṇamāyānti saṁpadaḥ | kṣaṇam janma kṣaṇam mṛtyurmune kimiva na kṣaṇam || 31 ||

In a moment troubles come, in a moment good fortune comes; in a moment there is birth, in a moment there is death - O sage, what here is not just a moment?

एक पल में मुसीबतें आती हैं, एक पल में अच्छे दिन आते हैं; एक पल में जन्म होता है, एक पल में मौत होती है - हे मुनि, यहाँ ऐसा क्या है जो बस एक पल का न हो?

1.28.32

प्रागासीदन्य एवेह जातस्त्वन्यो नरो दिनैः । सदैकरूपं भगवन्किंचिदस्ति न सुस्थिरम् ॥ ३२ ॥

prāgāsīdanya eveha jātastvanyaro dinaiḥ | sadaikarūpaṁ bhagavankiṁcidasti na susthiram || 32 ||

Once there was a certain man here; but as the days passed, a different man was born in his place. Nothing, O holy one, ever keeps one unchanging form - nothing is truly stable.

पहले यहाँ कोई और आदमी था; पर दिनों के बीतने के साथ, उसकी जगह एक दूसरा आदमी पैदा हो गया। हे पूज्य, कुछ भी हमेशा एक ही रूप में नहीं रहता - कुछ भी सचमुच स्थिर नहीं है।

1.28.33

घटस्य पटता दृष्टा पटस्यापि घटस्थितिः । न तदस्ति न यदृष्टं विपर्यस्यति संसृतौ ॥ ३३ ॥

ghaṭasya paṭatā dṛṣṭā paṭasyāpi ghaṭasthitiḥ | na tadasti na yaddṛṣṭam viparyasyati saṁsṛtau || 33 ||

A pot has been seen turning into cloth, and cloth too has been seen turning into a pot. There is nothing that has not been seen turning into its opposite in this changing world.

घड़ा कपड़ा बनते देखा गया है, और कपड़ा भी घड़ा बनते देखा गया है। इस बदलती हुई दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो अपने उल्टे रूप में बदलते न देखी गई हो।

1.28.34

तनोत्युत्पादयत्यत्ति निहत्यासृजति क्रमात् । सततं रात्र्यहानीव निवर्तन्ते नरं प्रति ॥ ३४ ॥

tanotyutpādayatyatti nihatyāsṛjati kramāt | satataṃ rātryahanīva nivartante naraṃ prati || 34 ||

It stretches things out, brings them into being, consumes them, destroys them, and creates them again in turn - constantly turning back on a man, like night and day.

यह चीज़ों को फैलाता है, उन्हें पैदा करता है, उन्हें खा जाता है, उन्हें मिटाता है, और फिर से बनाता है - यह लगातार आदमी पर बार-बार लौटता रहता है, जैसे रात और दिन लौटते हैं।

1.28.35

अशूरेण हतः शूर एकेनापि हतं शतम् । प्राकृताः प्रभुतां याताः सर्वमावर्त्यते जगत् ॥ ३५ ॥

asūreṇa hataḥ śūra ekeneāpi hataṃ śatam | prākṛtāḥ prabhutāṃ yātāḥ sarvamāvartyate jagat || 35 ||

A hero has been killed by a coward; a hundred have been killed by just one; common people have risen to power - the whole world just keeps turning around and around.

किसी बहादुर को डरपोक ने मार डाला है; सौ लोगों को अकेले एक आदमी ने मार डाला है; मामूली लोग बड़े पदों पर पहुँच गए हैं - यह पूरी दुनिया बस घूमती ही रहती है।

1.28.36

जनतेयं विपर्यासमजस्रमनुगच्छति । जडस्पन्दपरामर्शात्तरङ्गाणामिवावली ॥ ३६ ॥

janateyaṃ viparyāsamajasramanugacchati | jaḍaspandaparāmarśāttaraṅgāṇānivāvalī || 36 ||

This mass of people follows endless reversal without stopping, like a row of waves that rises out of the plain, mindless movement of water.

लोगों की यह भीड़ बिना रुके हमेशा उलट-पुलट होती रहती है, जैसे पानी की सीधी-सादी, बेसमझ हलचल से लहरों की कतार उठती है।

1.28.37

बाल्यमल्पदिनैरेव यौवनश्रीस्ततो जरा । देहेऽपि नैकरूपत्वं कास्था बाह्येषु वस्तुषु ॥ ३७ ॥

bālyamalpadinairēva yauvanaśrīstatō jarā | dēhē'pi naikarūpatvaṃ kāsthā bāhyēṣu vastuṣu || 37 ||

Childhood, in just a few days, gives way to the glory of youth, and then to old age; even the body does not keep one form - so what trust can there be in things outside it?

बचपन कुछ ही दिनों में जवानी की शान में बदल जाता है, और फिर बुढ़ापे में; जब शरीर ही एक रूप में नहीं रहता, तो बाहर की चीज़ों पर क्या भरोसा किया जाए?

1.28.38

क्षणमानन्दितामेति क्षणमेति विषादिताम् । क्षणं सौम्यत्वमायाति सर्वस्मिन्नटवन्मनः ॥ ३८ ॥

kṣaṇamānanditāmeti kṣaṇameti viṣādītām | kṣaṇaṃ saumyatvamāyāti sarvasminnatavanmanaḥ || 38 ||

For a moment the mind becomes joyful, for a moment it becomes sad; for a moment it turns gentle - in everything, the mind acts like a dancer.

एक पल मन खुश हो जाता है, एक पल उदास हो जाता है; एक पल वह नरम पड़ जाता है - हर बात में मन एक नाचने वाले कलाकार की तरह बर्ताव करता है।

1.28.39

इतश्चान्यदितश्चान्यदितश्चान्यदयं विधिः । रचयन्वस्तुनायाति खेदं लीलास्विवार्भकः ॥ ३९ ॥

itaścānyaditaścānyaditaścānyadayam vidhiḥ | racayanvastunāyāti khedaṁ līlāsvivārbhakaḥ || 39 ||

This thing, then another, then yet another - this is how fate goes on shaping things, growing tired in its play, like a child at its games.

यह चीज़, फिर दूसरी, फिर तीसरी - इसी तरह नियति चीज़ों को गढ़ती रहती है, अपने इस खेल में थकती रहती है, जैसे कोई बच्चा अपने खेलों में थक जाता है।

1.28.40

चिनोत्पत्पादयत्यत्ति निहत्यासृजति क्रमात् । सततं रात्र्यहानीव निवर्तन्ते नरं प्रति ॥ ४० ॥

cinotyutpādayatyatti nihatyāsṛjati kramāt | satataṁ rātryahānīva nivartante naraṁ prati || 40 ||

It gathers things, brings them into being, consumes them, destroys them, and creates them again in turn - constantly turning back on a man, like night and day.

यह चीज़ों को इकट्ठा करता है, उन्हें पैदा करता है, उन्हें खा जाता है, उन्हें मिटाता है, और फिर से बनाता है - यह लगातार आदमी पर बार-बार लौटता रहता है, जैसे रात और दिन लौटते हैं।

1.28.41

आविर्भावतिरोभावभागिनो भवभागिनः । जनस्य स्थिरतां यान्ति नापदो न च संपदः ॥ ४१ ॥

āvirbhāvatorbhāvabhāginō bhavabhāgināḥ | janasya sthiritāṁ yānti nāpado na ca saṁpadaḥ || 41 ||

For a person caught in appearing and disappearing, caught in this round of existence, neither troubles nor good fortune ever stay fixed.

जो आदमी बार-बार पैदा होने और मिटने में, और इस जन्म-मरण के चक्र में फँसा है, उसके लिए न मुसीबतें टिकती हैं और न अच्छे दिन टिकते हैं।

1.28.42

कालः क्रीडत्ययं प्रायः सर्वमापदि पातयन् । हेलविचलिताशेषचतुराचारचञ्चुरः ॥ ४२ ॥

kālāḥ kṛīḍatyayaṁ prāyaḥ sarvamāpadi pātayan | helāvicalitāśeṣacaturācāracañcūraḥ || 42 ||

This Time keeps playing on, mostly throwing everything into disaster, restless as it topples every clever scheme with the smallest touch of its sport.

यह समय खेलता ही रहता है, ज़्यादातर हर चीज़ को मुसीबत में डाल देता है, और अपने हल्के-से खेल से ही हर चतुर योजना को बेचैनी से उलट देता है।

1.28.43

समविषमविपाकतो विभिन्नास्त्रिभुवनभूतपरम्पराफलौघाः । समयपवनपातिताः पतन्ति प्रतिदिनमाततसंसृतिद्रुमेभ्यः ॥ ४३ ॥

॥

samaviṣamavipākato vibhinnāstribhuvanabhūtaparamparāphalaughāḥ | samayapavanapātītāḥ patanti pratidinamātata saṁsṛtidrumbhyaḥ || 43 ||

The countless fruits of all the beings, one after another, in the three worlds - ripening well or badly, each different from the other - fall every day, shaken down by the wind of time, from the vast, spreading tree of this ever-turning world.

तीनों लोकों में एक के बाद एक आने वाले प्राणियों के अनगिनत फल - कोई अच्छी तरह पकता है, कोई बुरी तरह, और सब एक-दूसरे से अलग - हर दिन इस बार-बार चलने वाले संसार के विशाल, फैले हुए पेड़ से, समय की हवा के झोंकों से गिरते रहते हैं।

Chapter 29

1.29.1

श्रीराम उवाच । इति मे दोषदावाग्निदग्धे महति चेतसि । प्रस्फुरन्ति न भोगाशा मृगतृष्णाः सरःस्विव ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | iti me doṣadāvāgnidagdhe mahati cetasi | prasphuranti na bhogāśā mṛgatṛṣṇāḥ saraḥsviv || 1 ||

Sri Rama said: In my mind, now vast, but burned clean by the wildfire of these faults, no hope of pleasure rises any more, just as no mirage of water rises over a real lake.

श्री राम ने कहा - संसार के दोषों की आग में जलकर मेरा मन अब बहुत बड़ा हो गया है; उसमें सुख की कोई आशा अब नहीं जगती, ठीक वैसे ही जैसे किसी असली तालाब के ऊपर पानी की मृगतृष्णा नहीं दिखती।

1.29.2

प्रत्यहं याति कटुतामेषा संसारसंस्थितिः । कालपाकवशाल्लोला रसा निम्बलता यथा ॥ २ ॥

pratyaḥaṃ yāti kaṭutāmeṣā saṃsārasaṃsthitih | kālapākavaśāllolā rasā nimbalatā yathā || 2 ||

Day by day, this state of worldly life turns more bitter, growing unstable under the pull of time's ripening, like the sap of a neem vine.

दिन-ब-दिन यह सांसारिक जीवन और कड़वा होता जाता है, समय के पकने के दबाव से बेचैन होकर बदलता रहता है, जैसे नीम की बेल का रस कड़वा होता जाता है।

1.29.3

वृद्धिमायाति दौर्जन्यं सौजन्यं याति तानवम् । करञ्जकर्कशे राजन्प्रत्यहं जनचेतसि ॥ ३ ॥

vṛddhimāyāti dourjanyam saujanyam yāti tānavam | karañjakarkaśe rājan pratyaham janacetasi || 3 ||

Wickedness keeps growing, and goodness keeps thinning out, day by day, O king, in the minds of people, which have become as harsh as the karanja tree.

बुराई बढ़ती जाती है, और भलाई कम होती जाती है, दिन-ब-दिन, हे राजा, लोगों के मन में, जो अब करंज के पेड़ जैसे कड़वे और सख्त हो गए हैं।

1.29.4

भज्यते भुवि मर्यादा झटित्येव दिनं प्रति । शुष्केव माषशिम्बीका टङ्कारकरवं विना ॥ ४ ॥

bhajyate bhuvi maryādā jhaṭityeva dinaṃ prati | śuṣkeva māṣaśimbīkā ṭaṅkārakaravaṃ vinā || 4 ||

On this earth, moral limits break suddenly, day after day, like a dried bean pod bursting open without even a cracking sound.

इस धरती पर, मर्यादा की सीमाएँ अचानक टूट जाती हैं, दिन-ब-दिन, जैसे सूखी हुई उड़द की फली बिना किसी आवाज़ के ही फट जाती है।

1.29.5

राज्येभ्यो भोगपूगेभ्यश्चिन्तावद्भ्यो मुनीश्वर । निरस्तचिन्ताकलिता वरमेकान्तशीलता ॥ ५ ॥

rājyebhyo bhogapūgebhyaścintāvadbhyaḥ munīśvara | nirastacintākalitā varekāntaśīlatā || 5 ||

Better than kingdoms, and better than heaps of pleasures - both loaded with worry - O lord of sages, is a life lived alone, free of all anxiety.

राज-पाट से बेहतर, और सुखों के ढेर से भी बेहतर - जो दोनों चिन्ता से भरे होते हैं - हे मुनियों के स्वामी, अकेले, बिना किसी फ़िक्र के जीना है।

1.29.6

नानन्दाय ममोद्यानं न सुखाय मम स्त्रियः । न हर्षाय ममार्थाशा शाम्यामि मनसा सह ॥ ६ ॥

nānandāya mamodyānaṃ na sukhāya mama striyaḥ | na harṣāya mamārthāśā śāmyāmi manasā saha || 6 ||

My garden no longer gives me joy, my wives no longer give me pleasure, my hopes of wealth no longer give me delight; my mind itself is settling into quiet.

अब मेरा बाग मुझे खुशी नहीं देता, मेरी पत्नियाँ मुझे सुख नहीं देतीं, धन की मेरी इच्छाएँ मुझे आनंद नहीं देतीं; मेरा मन खुद ही शांत होता जा रहा है।

1.29.7

अनित्यश्चासुखो लोकस्तृष्णा तात दुरुद्वहा । चापलोपहतं चेतः कथं यास्यामि निर्वृतिम् ॥ ७ ॥

anityaścāsukho lokastrīṣṇā tāta durudvahā | cāpalopahataṃ cetaḥ katham yāsyāmi nirvṛtim || 7 ||

This world is impermanent and without real happiness; craving, O father, is a burden hard to carry. My mind, struck down by restlessness, how will I ever find peace?

यह संसार अस्थायी है और इसमें सच्चा सुख नहीं है; लालसा, हे पिता, एक ऐसा बोझ है जिसे उठाना मुश्किल है। मेरा मन बेचैनी से मारा हुआ है - मैं शांति तक कैसे पहुँचूँगा?

1.29.8

नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितम् । यथा तिष्ठामि तिष्ठामि तथैव विगतज्वरम् ॥ ८ ॥

nābhinandāmi maraṇaṃ nābhinandāmi jīvitam | yathā tiṣṭhāmi tiṣṭhāmi tathaiva vigatajvaram || 8 ||

I do not welcome death, nor do I welcome life. As I am, so I remain - free of the fever of desire.

मुझे न मौत का स्वागत करना है, न ज़िंदगी का। मैं जैसा हूँ वैसा ही रहता हूँ - इच्छा के बुखार से मुक्त।

1.29.9

किं मे राज्येन किं भोगैः किमर्थेन किमीहितैः । अहंकारवशादेतत्स एव गलितो मम ॥ ९ ॥

kiṃ me rājyena kiṃ bhogaiḥ kimarthena kimīhitaiḥ | ahaṃkāravśādetatsa eva galito mama || 9 ||

What use is a kingdom to me? What use are pleasures? What use is wealth? What use are any of my ambitions? All of this existed only because of my pride - and that very pride of mine has now melted away.

मुझे राज-पाट से क्या लेना-देना? सुखों से क्या फ़ायदा? धन से क्या फ़ायदा? मेरी किसी भी इच्छा से क्या फ़ायदा? यह सब सिर्फ़ मेरे अहंकार की वजह से था - और मेरा वही अहंकार अब पिघल चुका है।

1.29.10

जन्मावलिवरत्रायामिन्द्रियग्रन्थयो दृढाः । ये बद्धास्तद्विमोक्षार्थं यतन्ते ये त उत्तमाः ॥ १० ॥

janmāvalivaratrāyāmindriyagranthayo dṛḍhāḥ | ye baddhāstadvimokṣārthaṃ yatante ye ta uttamāḥ || 10 ||

The knots of the senses are tied tightly onto the rope made of one birth after another. Those who struggle to free themselves from that bondage are the best of people.

इंद्रियों की गाँठें एक जन्म के बाद दूसरे जन्म की रस्सी पर कसकर बंधी हुई हैं। जो लोग इस बंधन से छूटने के लिए कोशिश करते हैं, वही सबसे अच्छे लोग हैं।

1.29.11

मथितं मानिनीलोकैर्मनो मकरकेतुना । कोमलं खुरनिष्पेषैः कमलं करिणा यथा ॥ ११ ॥

mathitaṃ māninīlokairmano makaraketunā | komalaṃ khuraniṣpeṣaiḥ kamalaṃ kariṇā yathā || 11 ||

The mind has been churned by crowds of proud women, through Kama, the love-god whose banner carries a sea-monster - just as a soft lotus is crushed under an elephant's hooves.

घमंडी स्त्रियों की भीड़ ने, कामदेव के ज़रिए - जिसका झंडा एक जलजंतु का चिन्ह लिए है - इस मन को यूँ मथ डाला है, जैसे हाथी के पैरों तले कोई नरम कमल कुचल जाता है।

1.29.12

अद्य चेत्स्वच्छया बुद्ध्या मुनीन्द्र न चिकित्स्यते । भूयश्चित्तचिकित्सायास्तत्किलावसरः कुतः ॥ १२ ॥

adya cet svacchayā buddhyā munīndra na cikitsyate | bhūyaścittacikitsāyāstatkilāvasaraḥ kutaḥ || 12 ||

If today, O foremost of sages, this mind is not treated with a clear, calm intellect, then where indeed will there ever again be a chance to treat it?

हे मुनियों में श्रेष्ठ, अगर आज इस मन का इलाज साफ़ और शांत बुद्धि से नहीं हुआ, तो फिर इसे ठीक करने का मौक़ा कभी कहाँ मिलेगा?

1.29.13

विषं विषयवैषम्यं न विषं विषमुच्यते । जन्मान्तरघ्ना विषया एकदेहहरं विषम् ॥ १३ ॥

viṣaṃ viṣayavaiṣamyam na viṣaṃ viṣamucyate | janmāntaraghñā viṣayā ekadehaharam viṣam || 13 ||

The real poison is the imbalance caused by sense-objects - what is usually called poison is not true poison. Sense-objects harm us across other births too, while ordinary poison takes away only one body.

असली ज़हर तो इंद्रियों के विषयों से पैदा हुई गड़बड़ी है - जिसे आम तौर पर ज़हर कहा जाता है, वह असली ज़हर नहीं है। इंद्रियों के विषय अगले जन्मों में भी नुकसान पहुँचाते हैं, जबकि साधारण ज़हर सिर्फ़ एक शरीर को ही ख़त्म करता है।

1.29.14

न सुखानि न दुःखानि न मित्राणि न बान्धवाः । न जीवितं न मरणं बन्धाय ज्ञस्य चेतसः ॥ १४ ॥

na sukhāni na duḥkhāni na mitrāṇi na bāndhavāḥ | na jīvitaṃ na maraṇam bandhāya jñasya cetasaḥ || 14 ||

Neither pleasures nor pains, neither friends nor relatives, neither life nor death, bind the mind of one who truly knows.

न सुख, न दुःख, न दोस्त, न रिश्तेदार, न जीना, न मरना - इनमें से कुछ भी उस आदमी के मन को नहीं बाँधता जो सच को जानता है।

1.29.15

तद्भवामि यथा ब्रह्मन्पूर्वापरविदां वर । वीतशोकभयायासो ज्ञस्तथोपदिशाशु मे ॥ १५ ॥

tadbhavāmi yathā brahman pūrvāparavidāṃ vara | vītaśokabhayāyāso jñastathopadiśāśu me || 15 ||

So tell me quickly, O brahmin, best among those who know the past and the future, how I may become someone free of grief, fear, and struggle, who truly knows the truth.

तो हे ब्राह्मण, भूत और भविष्य को जानने वालों में श्रेष्ठ, जल्दी मुझे बताइए कि मैं कैसे दुःख, डर और थकान से मुक्त, सच को जानने वाला बन सकता हूँ।

1.29.16

वासनाजालवलिता दुःखकण्टकसंकुलानिपातोत्पातबहुला भीमरूपाज्ञताटवी ॥ १६ ॥

vāsanājālavalitā duḥkhakaṇṭakasamkulānipātotpātabahulā bhīmarūpājñatāṭavī || 16 ||

This forest of not-knowing is tangled with the net of old desires, crowded with the thorns of suffering, full of sudden falls and disasters, terrible to look at.

यह अज्ञान का जंगल पुरानी इच्छाओं के जाल में उलझा हुआ है, दुःख के काँटों से भरा है, अचानक होने वाले गिरने और आपदाओं से भरा है, देखने में डरावना है।

1.29.17

क्रकचाग्रविनिष्पेषं सोढुं शक्रोम्यहं मुने संसारव्यवहारोत्थं नाशाविषयवैशसम् ॥ १७ ॥

krakacāgravinīṣpeṣaṃ soḍhuṃ śaknomyaḥaṃ munesaṃsāravavyavahārotthaṃ nāśāviṣayavaiśasam || 17 ||

I cannot bear its grinding, sharp as a saw's edge, O sage - this violence of destruction and craving for things that comes from living in this world.

मुझसे इसकी वह पिसाई नहीं सही जाती, जो आरी की धार जितनी तेज़ है, हे मुनि - विनाश और चीज़ों की चाह की यह हिंसा, जो इस संसार में जीने से पैदा होती है।

1.29.18

इदं नास्तीदमस्तीति व्यवहाराञ्जनभ्रमःधुनोतीदं चलं चेतो रजोराशिमिवानिलः ॥ १८ ॥

idaṃ nāstīdamastīti vyavahārāñjanabhramaḥdhunotīdaṃ calaṃ ceto rajo-rāśimivānilaḥ || 18 ||

The illusion-causing spell of daily life - thinking "this exists," "this doesn't exist" - keeps shaking this restless mind, the way wind scatters a heap of dust.

रोज़मर्रा की ज़िंदगी का यह भ्रम पैदा करने वाला जादू - "यह है", "यह नहीं है" - इस बेचैन मन को यूँ हिलाता रहता है, जैसे हवा धूल के ढेर को उड़ा देती है।

1.29.19

तृष्णातन्तुलवप्रोतं जीवसंचयमौक्तिकम्विदच्छाङ्गतया नित्यं विकसच्चित्तनायकम् ॥ १९ ॥

tr̥ṣṇātantulavaprotam jīvasaṃcayamauktikamvidacchāṅgatayā nityaṃ vikaśaccittanāyakaṃ || 19 ||

This chain of worldly life is a string of pearls - the countless living beings threaded on the thin thread of craving - shining forever as ruler of the mind, because its body is nothing but pure, clear consciousness.

यह सांसारिक जीवन की माला मोतियों की लड़ी जैसी है - अनगिनत जीव इसमें लालसा के पतले धागे में पिरोए गए हैं - यह मन पर हमेशा राज करती हुई चमकती है, क्योंकि इसका रूप शुद्ध, निर्मल चेतना के सिवा कुछ नहीं है।

1.29.20

संसारहारमरतिः कालव्यालविभूषणम्लोत्थाम्यहमक्रूरं वागुरामिव केसरी ॥ २० ॥

saṃsārahāramaratiḥ kālavyalavibhūṣaṇamltroṭṭhāmyahamakrūraṃ vāgurāmiva kesarī || 20 ||

Hung with the gem of restlessness and decorated with the serpent of time, I now snap this chain, as easily as a lion snaps the net that trapped it.

बेचैनी के रत्न से लटकी हुई और समय के साँप से सजी हुई इस माला को, मैं अब उसी आसानी से तोड़ रहा हूँ, जैसे शेर अपने फँसाने वाले जाल को तोड़ देता है।

1.29.21

नीहारं हृदयाटव्यां मनस्तिमिरमाशु मे । केन विज्ञानदीपेन भिन्धि तत्त्वविदांवर ॥ २१ ॥

nīhāraṃ hṛdayāṭavyāṃ manastimiramāśu me | kena vijñānadīpena bhindhi tattvavidāṃvara || 21 ||

In the forest of my heart, quickly break apart, with the lamp of true knowledge, the fog and darkness of my mind, O best among those who know the truth.

मेरे हृदय के जंगल में, सच्चे ज्ञान के दीये से, जल्दी मेरे मन का कोहरा और अंधेरा मिटा दीजिए, हे सच्चाई को जानने वालों में श्रेष्ठ।

1.29.22

विद्यन्त एवेह न ते महात्मन् दुराधयो न क्षयमाप्नुवन्ति । ये सङ्गमेनोत्तममानसानां निशातमांसीव निशाकरेण ॥ २२ ॥

vidyante eveha na te mahātman durādhayo na kṣayamāpnuvanti | ye saṅgamenottamamānasānāṃ niśātāmāṃsīva niśākareṇa || 22 ||

Such grave troubles of the mind do indeed exist, O great soul - but it is not that they cannot be ended. They end through contact with noble-hearted people, just as the thickest darkness of night ends through the moon.

मन की ऐसी गहरी परेशानियाँ सचमुच होती हैं, हे महात्मा - पर ऐसा नहीं है कि वे कभी खत्म नहीं होतीं। वे बड़े और भले मन वाले लोगों के साथ रहने से खत्म हो जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे रात का घना अंधेरा चाँद के आने से खत्म हो जाता है।

1.29.23

आयुर्वायुविघट्टिताभ्रपटलीलम्बाम्बुवद्भ्रुरं भोगा मेघवितानमध्यविलसत्सौदामिनीचञ्चलाः ।

लोलायौवनललनाजलरयश्चेत्याकलय्य द्रुतं मुद्रैवाद्य दृढार्पिता ननु मया चित्ते चिरं शान्तये ॥ २३ ॥

āyurvāyuvighaṭṭitābhrapaṭalīlambāmbuvadbhauram bhogā meghavitānamadhyavilasatsaudāminīcañcalāḥ | lolāyauvanalālanañjalarayaścetyākalayya drutaṃ mudraivādya dṛḍhārpitā nanu mayā citte ciraṃ śāntaye || 23 ||

Life is as fragile as water hanging from a bank of clouds scattered by the wind. Pleasures are as unsteady as lightning flashing amid a canopy of clouds. And the pleasures of restless youth are like a swift, rushing current of water. Having quickly understood all this, I have today firmly fixed a seal on my heart, for lasting peace.

जिंदगी उतनी ही नाजुक है जितना पानी बादलों की उस परत से लटका हो जिसे हवा ने बिखेर दिया हो। सुख उतने ही बेचैन हैं जितनी बादलों के बीच चमकती हुई बिजली। और बेचैन जवानी के सुख पानी की तेज़ बहती धारा जैसे हैं। यह सब जल्दी समझकर, मैंने आज अपने हृदय पर हमेशा की शांति के लिए एक मज़बूत मुहर लगा दी है।

Chapter 30

1.30.1

श्रीराम उवाच । एवमभ्युत्थितानर्थशतसंकटकोटरे । जगदालोक्य निर्मग्नं मनो मननकर्ममे ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | evamabhyutthitānarthasatasamkatakōṭare | jagadālokya nirmagnaṁ mano mananakardame || 1 ||

Sri Rama said: Seeing the world like this, packed into a tight, dark hollow with hundreds of troubles crowding in, my mind has sunk into the mud of endless thinking.

श्रीराम ने कहा, इस तरह दुनिया को देखकर, जो सैकड़ों मुसीबतों से भरे एक तंग, अंधेरे गड्ढे जैसी है, मेरा मन सोच-विचार के दलदल में धँस गया है।

1.30.2

मनो मे भ्रमतीवेदं संभ्रमश्चोपजायते । गात्राणि परिकम्पन्ते पत्राणीव जरत्तरोः ॥ २ ॥

mano me bhramativedaṁ sambhramaṁścopajāyate | gātrāṇi parikampante patrāṇīva jarattaroḥ || 2 ||

This mind of mine seems to spin, and a kind of panic rises in it. My limbs shake like the leaves of an old tree.

मेरा यह मन घूमता हुआ सा लगता है, और उसमें एक तरह की घबराहट पैदा हो जाती है। मेरे अंग किसी बूढ़े पेड़ के पत्तों की तरह काँपते हैं।

1.30.3

अनाप्तोत्तमसंतोषधैर्योत्सङ्गाकुला मतिः । शून्यास्पदा बिभेतीह बालेवाल्पबलेश्वरा ॥ ३ ॥

anāptottamasantoṣadhairyoutsāṅgākulā matiḥ | śūnyāspadā bibhetīha bālevalpabaleśvarā || 3 ||

My mind has never found real contentment or steadiness to rest in; it is confused and has no ground to stand on, so it is afraid, like a weak, helpless child.

मेरे मन को कभी सच्चा संतोष या स्थिरता नहीं मिली जिसमें वह टिक सके; वह उलझा हुआ है और उसके पास खड़े होने की कोई ज़मीन नहीं है, इसलिए वह एक कमज़ोर, असहाय बच्चे की तरह डरता है।

1.30.4

विकल्पेभ्यो लुठन्त्येताश्चान्तःकरणवृत्तयः । श्वभ्रेभ्य इव सारङ्गास्तुच्छालम्बविडम्बिताः ॥ ४ ॥

vikalpebhyo luṭhantyetāścāntaḥkaraṇavṛttayaḥ | śvabhrebhya iva sārāṅgāstucchālabhaviḍambitāḥ || 4 ||

These movements of my inner mind roll about from one doubt to another, like deer that trust some flimsy little support and tumble into a hidden pit.

मेरे मन की ये हरकतें एक शक से दूसरे शक में लुढ़कती रहती हैं, जैसे हिरण किसी कमज़ोर सहारे पर भरोसा करके गड्ढे में गिर पड़ते हैं।

1.30.5

अविवेकास्पदा भ्रष्टाः कष्टे रूढा न सत्पदे । अन्धकूपमिवापन्ना वराकाश्चक्षुरादयः ॥ ५ ॥

avivekāspadā bhrāṣṭāḥ kaṣṭe rūḍhā na satpade | andhakūpamivāpannā varākāścakṣurādayaḥ || 5 ||

My poor senses, starting with the eyes, have fallen because they rest on the wrong understanding; they are stuck in trouble, not on solid ground, and have dropped as if into a hidden well.

मेरी बेचारी इंद्रियाँ, आँख से शुरू करके, गलत समझ पर टिकी होने के कारण गिर गई हैं; वे मुसीबत में फँसी हैं, ठोस ज़मीन पर नहीं, और मानो किसी छिपे हुए कुएँ में जा गिरी हैं।

1.30.6

नावस्थितिमुपायाति न च याति यथेप्सितम् । चिन्ता जीवेश्वरायत्ता कान्तेव प्रियसद्मनि ॥ ६ ॥

nāvasthitimupāyāti na ca yāti yathepsitam | cintā jīveśvarāyattā kānteva priyasadmani || 6 ||

This worry of mine neither settles down nor goes away as I wish; it is in the hands of fate, like a wife in her husband's house who is at her husband's mercy.

मेरी यह चिन्ता न तो शांत होती है, न ही मेरी इच्छा के मुताबिक जाती है; यह भाग्य के हाथ में है, जैसे कोई पत्नी अपने पति के घर में पति की मर्जी पर निर्भर रहती है।

1.30.7

जर्जरीकृत्य वस्तूनि त्यजन्ती विभ्रती तथा । मार्गशीर्षान्तवल्लीव धृतिर्विधुरतां गता ॥ ७ ॥

jarjarīkṛtya vastūni tyajantī vibhratī tathā | mārgaśīrṣāntavallīva dhṛtirvidhuratām gatā || 7 ||

My patience wears things out and lets them go, and yet still clings to them; it has fallen into ruin, like a creeper withering at the end of the winter month of Margashirsha.

मेरा धैर्य चीजों को घिसकर छोड़ भी देता है और फिर भी उन्हें पकड़े रहता है; वह मार्गशीर्ष महीने के अंत में सूखती हुई बेल की तरह बरबाद हो गया है।

1.30.8

अपहस्तितसर्वार्थमनवस्थितिरास्थिता । गृहीत्वोत्सृज्य चात्मानं भवस्थितिरवस्थिता ॥ ८ ॥

apahastitasarvārthamanavasthitirāsthitā | grhītvotsṛjya cātmānaṁ bhavasthitiravasthitā || 8 ||

Having thrown away every goal, this restlessness itself has become my fixed state; my hold on life stands only by grasping myself and then letting go of myself, again and again.

हर मकसद को छोड़ देने के बाद, यह बेचैनी ही मेरी स्थायी हालत बन गई है; मेरी जीवन पर पकड़ बस इतनी है कि मैं बार-बार खुद को पकड़ता हूँ और फिर छोड़ देता हूँ।

1.30.9

चलिताचलितेनान्तरवष्टम्भेन मे मतिः । दरिद्रा छिन्नवृक्षस्य मूलेनेव विडम्ब्यते ॥ ९ ॥

calitācalitenaāntaravaṣṭambhena me matiḥ | daridrā chinnavṛkṣasya mūleneva viḍambyate || 9 ||

My wretched mind, held up by an inner support that itself keeps wavering between steady and unsteady, is mocked, like a felled tree that tries to stand on its own cut root.

मेरा बेचारा मन, जो खुद डगमगाते हुए एक सहारे पर टिका है, ऐसा उपहास का पात्र बन गया है जैसे कोई कटा हुआ पेड़ अपनी ही कटी जड़ पर खड़ा होने की कोशिश करे।

1.30.10

चेतश्चञ्चलमाभोगि भुवनान्तर्विहारि च । न संभ्रमं जहातीदं स्वविमानमिवामराः ॥ १० ॥

cetaścañcalamābhogi bhuvanāntarvihāri ca | na saṁbhraṁ jaḥātīdaṁ svavimānamivāmarāḥ || 10 ||

My mind is restless, it spreads out everywhere and wanders among the worlds, yet it never gives up this confusion, just as the gods never leave their own heavenly chariot.

मेरा मन बेचैन है, वह हर तरफ फैलता है और अलग-अलग लोकों में घूमता रहता है, फिर भी वह इस उलझन को कभी नहीं छोड़ता, जैसे देवता अपने स्वर्गीय विमान को कभी नहीं छोड़ते।

1.30.11

अतोऽतुच्छमनायासमनुपाधि गतभ्रमम् । किं तत्स्थितिपदं साधो यत्र शोको न विद्यते ॥ ११ ॥

ato'tucchamanaayasamanupaadhi gatabhramam | kim tatsthitipadam saadho yatra shoko na vidyate || 11 ||

So tell me, good sir, what is that great, effortless state, free of all conditions and free of confusion, where there is no sorrow at all?

तो मुझे बताइए, हे साधो, वह कौन सी बड़ी, बिना मेहनत वाली अवस्था है, जो किसी भी शर्त से मुक्त और उलझन से मुक्त है, जहाँ कोई दुख ही नहीं है?

1.30.12

सर्वारम्भसमारूढाः सुजना जनकादयः । व्यवहारपरा एव कथमुत्तमतां गताः ॥ १२ ॥

sarvaarambhasamāruḍhāḥ sujanā janakādayaḥ | vyavahāraparā eva kathamuttamatām gatāḥ || 12 ||

Good people like King Janaka, who are engaged in every kind of work and are wholly caught up in worldly affairs, how have they reached the highest state?

जनक जैसे भले लोग, जो हर तरह के काम में लगे रहते हैं और पूरी तरह सांसारिक कामकाज में डूबे रहते हैं, वे सबसे ऊँची अवस्था तक कैसे पहुँच गए?

1.30.13

लग्नेनापि किलाङ्गेषु बहुधा बहुमानद । कथं संसारपट्केन पुमानिह न लिप्यते ॥ १३ ॥

lagnenāpi kilāṅgeṣu bahudhā bahumānada | katham saṁsārapaṅkena pumāniha na lipyate || 13 ||

O you who give such great honor, even though it clings to the body in so many ways, how is it that a man here is not smeared by the mud of the world?

हे बड़ा सम्मान देने वाले, यह दुनिया कई तरह से शरीर से चिपकी रहती है, फिर भी यहाँ कोई आदमी संसार के इस कीचड़ से क्यों नहीं सन जाता?

1.30.14

कां दृष्टिं समुपाश्रित्य भवन्तो वीतकल्मषाः । महान्तो विचरन्तीह जीवन्मुक्ता महाशयाः ॥ १४ ॥

kām dṛṣṭiṁ samupāśritya bhavanto vītakalmaṣāḥ | mahānto vicarantīha jīvanmuktā mahāśayāḥ || 14 ||

What way of seeing do the great, sinless, great-hearted ones, those who are free while still alive, rely on, as they move about in this world?

वे महान, निष्पाप, बड़े दिल वाले लोग, जो जीते-जी मुक्त हैं, इस दुनिया में घूमते हुए किस नज़रिये का सहारा लेते हैं?

1.30.15

लोभयन्तो भयायैव विषयाभोगभोगिनः । भङ्गुराकारविभवाः कथमायान्ति भव्यताम् ॥ १५ ॥

lobhayanto bhayāyaiva viṣayābhogabhoginaḥ | bhaṅguraākāravibhavāḥ kathamāyānti bhavayatām || 15 ||

Those who enjoy the pleasures of the senses, pleasures that tempt only to end in fear, and whose grandeur can break in an instant, how do they ever reach true goodness?

जो लोग इंद्रियों के सुख भोगते हैं, ऐसे सुख जो सिर्फ डर की ओर ले जाने के लिए लालच देते हैं, और जिनकी शान-शौकत पल भर में टूट सकती है, वे सच्ची भलाई तक कैसे पहुँच सकते हैं?

1.30.16

मोहमातङ्गमृदिता कलङ्ककलितान्तरा । परं प्रसादमायाति शेमुषीसरसी कथम् ॥ १६ ॥

mohamātaṅgamṛditā kalaṅkakalitāntarā | paraṁ prasādamāyāti śemuṣīśarasī katham || 16 ||

The lake of the mind, trampled by the elephant of delusion, its inside full of mud, how does it ever become perfectly clear?

मन का यह तालाब, जो मोह के हाथी से रौंदा गया है और जिसके अंदर कीचड़ भरा है, वह पूरी तरह साफ़ कैसे हो सकता है?

1.30.17

संसार एव निवहे जनो व्यवहरन्नपि । न बन्धं कथमाप्नोति पद्मपत्रे पयो यथा ॥ १७ ॥

saṁsāra eva nivahē jano vyavaharannapi | na bandhaṁ kathamāpnoti padmapatrē payo yathā || 17 ||

How is it that a person, even while dealing with the world, right in the middle of this flood of worldly life, does not get bound by it, like water on a lotus leaf?

यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी, दुनिया के कामकाज में लगा होते हुए भी, इस सांसारिक बाढ़ के बीचोबीच, उससे बंधता नहीं—जैसे कमल के पत्ते पर पानी नहीं ठहरता?

1.30.18

आत्मवत्तृणवच्चेदं सकलं कलयञ्जनः । कथमुत्तमतामेति मनोमन्मथमस्पृशन् ॥ १८ ॥

ātmavattrṇavaccedaṁ sakalaṁ kalayañjanaḥ | kathamuttamatāmeti manomanmathamasprśan || 18 ||

A person who looks at everything as being like himself and yet as worthless as a blade of grass, and who is never touched by the mind's desire, how does he reach the highest state?

जो आदमी हर चीज़ को अपने जैसा भी मानता है और घास के तिनके जितना तुच्छ भी, और जिसे मन की कामना कभी छूती नहीं, वह सबसे ऊँची अवस्था तक कैसे पहुँचता है?

1.30.19

कं महापुरुषं पारमुपायातं महोदधेः । आचारेणानुसंस्मृत्य जनो याति न दुःखिताम् ॥ १९ ॥

kaṁ mahāpuruṣaṁ pāramupāyātaṁ mahodadheḥ | ācāreṇānusamṣmṛtya jano yāti na duḥkhitām || 19 ||

By remembering the conduct of which great man, one who has crossed to the far shore of the great ocean, does a person avoid falling into suffering?

किस महापुरुष के आचरण को याद करके, जो महासागर के उस पार पहुँच चुका है, कोई आदमी दुख में गिरने से बच जाता है?

1.30.20

किं तस्यादुचितं श्रेयः किं तत्स्यादुचितं फलम् । वर्तितव्यं च संसारे कथं नामासमञ्जसे ॥ २० ॥

kiṁ tasyāducitaṁ śreyāḥ kiṁ tatsyāducitaṁ phalam | vartitavyaṁ ca saṁsāre katham nāmāsamañjase || 20 ||

What is the right good for such a person, and what is the right result for him? And how indeed should one live in this confusing, contradictory world?

ऐसे आदमी के लिए सही भलाई क्या है, और उसके लिए सही फल क्या है? और आखिर इस उलझी हुई, विरोधाभासों से भरी दुनिया में कैसे जिया जाए?

1.30.21

तत्त्वं कथय मे किञ्चिद्येनास्य जगतः प्रभो । वेद्मि पूर्वापरं धातुश्चेष्टितस्यानवस्थिते ॥ २१ ॥

tattvaṃ kathaya me kiñcidyenāsyā jagataḥ prabho | vedmi pūrvāparam dhātuścheṣṭitasya anavasthiteḥ || 21 ||

My lord, tell me some truth about this world, so that I may understand, from beginning to end, this restless working of the Creator.

हे प्रभु, इस दुनिया के बारे में मुझे कोई सच बताइए, जिससे मैं इस सृष्टिकर्ता की बेचैन कारीगरी को शुरू से अंत तक समझ सकूँ।

1.30.22

हृदयाकाशशशिनश्चेतसो मलमार्जनम् । यथा मे जायते ब्रह्मस्तथा निर्विघ्नमाचर ॥ २२ ॥

hṛdayākāśaśaśinaścetaso malamārjanam | yathā me jāyate brahmaṃstathā nirviḡhnamācara || 22 ||

O Brahmin, act in such a way, without any hindrance, that the dirt gets wiped away from my mind, which is like the moon in the sky of my heart.

हे ब्राह्मण, ऐसा उपाय कीजिए, बिना किसी रुकावट के, कि मेरे मन की मैल धुल जाए, जो मेरे हृदय के आकाश में चाँद जैसा है।

1.30.23

किमिह स्यादुपादेयं किंवा हेयमथेतरत् । कथं विश्रान्तिमायातु चेतश्चपलमद्रिवत् ॥ २३ ॥

kimih syādupādeyaṃ kiṃvā heya mathetarat | kathaṃ viśrāntimāyātu cetascapalamadrivat || 23 ||

What here should be taken up, what should be given up, and what is neither one nor the other? How can this restless mind become still, like a mountain?

यहाँ क्या अपनाया जाए, क्या छोड़ा जाए, और क्या न इधर का है न उधर का? यह चंचल मन एक पहाड़ की तरह स्थिर कैसे हो सकता है?

1.30.24

केन पावनमन्त्रेण दुःसंसृतिविषूचिका । शाम्यतीयमनायासमायासशतकारिणी ॥ २४ ॥

kena pāvanamanatreṇa duḥsaṃsṛtiviṣūcikā | śāmyatīyamanāyāsamāyāsatakarīṇī || 24 ||

By what purifying chant does this cholera of wretched worldly existence, which causes a hundred kinds of suffering, go away without any effort?

किस पवित्र मंत्र से यह दुखी सांसारिक जीवन की हैजा जैसी बीमारी, जो सौ तरह के कष्ट देती है, बिना किसी मेहनत के मिट जाती है?

1.30.25

कथं शीतलतामन्तरानन्दतरुमञ्जरीम् । पूर्णचन्द्र इवाक्षीणां भृशमासादयाम्यहम् ॥ २५ ॥

kathaṃ śītalatāmantarānandatarumañjarīm | pūrṇacandra ivākṣīṇāṃ bhr̥śamāsādayāmyaham || 25 ||

How can I, the way eyes find coolness in the full moon, deeply reach that coolness which is the blossoming of the inner tree of joy?

जिस तरह आँखों को पूरे चाँद से ठंडक मिलती है, उसी तरह मैं भीतर के आनंद-वृक्ष के फूलों जैसी उस ठंडक को गहराई से कैसे पा सकता हूँ?

1.30.26

प्राप्यान्तः पूर्णतां पूर्णो न शोचामि यथा पुनः । सन्तो भवन्तस्तत्त्वज्ञास्तथेहोपदिशन्तु माम् ॥ २६ ॥

prāpyāntaḥ pūrṇatām pūrṇo na śocāmi yathā punaḥ | santo bhavantastattvajñāstathaihopadiśantu mām || 26 ||

May you, good and truth-knowing as you are, teach me here in such a way that, having become whole and complete inside, I never grieve again.

आप जो भले और सच को जानने वाले हैं, मुझे यहाँ ऐसी शिक्षा दीजिए कि मैं भीतर से पूरा और पूर्ण होकर फिर कभी दुखी न होऊँ।

अनुत्तमानन्दपदप्रधानविश्रान्तिरिक्तं सततं महात्मन् । कदर्थयन्तीह भृशं विकल्पाः श्वानो वने देहमिवाल्पजीवम् ॥ २७ ॥

anuttamānandapadapradhānaviśrāntiriktam satatam mahātman | kadhārayantiha bhr̥ṣam vikalpāḥ śvāno vane dehamivālpajīvam || 27 ||

O great soul, I am always without the rest that belongs only to the state of supreme joy; doubts torment me here fiercely, like dogs tormenting a weak, dying creature in the forest.

हे महात्मा, मुझे कभी वह चैन नहीं मिलता जो सिर्फ सबसे बड़े आनंद की अवस्था में होता है; यहाँ शक-शुबहे मुझे बुरी तरह सताते हैं, जैसे जंगल में कुत्ते किसी कमज़ोर, मरणासन्न जानवर को सताते हैं।

Chapter 31

1.31.1

श्रीराम उवाच । प्रोच्चवृक्षचलत्पत्रलम्बाम्बुलवभङ्गुरे । आयुषीशानशीतांशुकलामृदुनि देहके ॥ १ ॥

śrīrāma uvāca | procchavṛkṣacalatpātralambāmbulavabhaṅgure | āyusīśānaśītāṃśukalāmṛduni dehake || 1 ||

Sri Rama said: In this life, as fragile as a drop of water hanging on the shaking leaf of a tall tree, and in this body, delicate as a sliver of the cool moon on Shiva's head,

श्रीराम ने कहा: इस जीवन में, जो किसी ऊँचे पेड़ के हिलते पत्ते पर लटकी पानी की बूँद जैसा कमज़ोर है, और इस शरीर में, जो शिव के सिर के ठंडे चाँद के एक टुकड़े जैसा नाज़ुक है,

1.31.2

केदारविरटद्भेककण्ठत्वक्कोणभङ्गुरे । वागुरावलये जन्तोः सुहृत्सुजनसंगमे ॥ २ ॥

kedāraviraṭadbhekakāṇṭhatvakkōṇabhaṅgure | vāgurāvalaye jantoḥ suhṛtsujanasaṅgame || 2 ||

as fragile as the skin on the throat of a frog croaking loudly in a rice field, this world is a row of traps for every living creature, even where friends and good people meet,

जो धान के खेत में ज़ोर से दरति मेंढक के गले की खाल जैसा कमज़ोर है, यह दुनिया हर जीव के लिए बिछाए गए फंदों की एक कतार है, यहाँ तक कि दोस्तों और भले लोगों के मिलने में भी,

1.31.3

वासनावातवलिते कदाशातडिति स्फुटे । मोहोग्रमिहिकामेघे घनं स्फूर्जति गर्जति ॥ ३ ॥

vāsanāvātavalite kadāśātaḍīti sphuṭe | mohogramihikāmegha ghaṇaṃ sphūrjati garjati || 3 ||

stirred by the wind of old habits, sometimes cut open by a sharp flash of lightning, where the thick, frightening fog-cloud of delusion crashes and thunders,

जो पुरानी आदतों और वासनाओं की हवा से हिलती है, कभी-कभी बिजली की तेज़ चमक से चिर जाती है, जहाँ मोह का घना, डरावना कुहासा-बादल गरजता और कड़कता है,

1.31.4

नृत्यत्युत्ताण्डवं चण्डे लोले लोभकलापिनि । सुविकासिनि सास्फोटे ह्यनर्थकुटजद्रुमे ॥ ४ ॥

nṛtyatyuttāṇḍavaṃ caṇḍe lole lobhakalāpini | suvikāsini sāspṛoṭe hyanarthakuṭajadruma || 4 ||

where the peacock of greed dances a wild, fierce dance in this restless place, and where the tree of misfortune, in full bloom, bursts open with a crackling sound,

जहाँ इस बेचैन जगह में लालच का मोर उग्र होकर जंगली नाच नाचता है, और जहाँ दुर्भाग्य का पेड़ पूरी तरह खिलकर चटकने की आवाज़ के साथ फूट पड़ता है,

1.31.5

क्रूरे कृतान्तमाजरि सर्वभूताखुहारिणि । अश्रान्तस्यन्दसंचारे कुतोऽप्युपरिपातिनि ॥ ५ ॥

krūre kṛtāntamājarī sarvabhūtākhuhārīṇi | āśrāntasyandasamcāre kuto'pyuparipātini || 5 ||

cruel, where death, like a cat, carries off every creature as if they were mice, and where an endless stream keeps falling from some unknown height above,

जो क्रूर है, जहाँ मौत एक बिल्ली की तरह हर जीव को चूहे जैसा पकड़कर ले जाती है, और जहाँ न जाने किस ऊँचाई से एक बिना रुके बहने वाली धारा लगातार गिरती रहती है,

1.31.6

क उपायो गतिः का वा का चिन्ता कः समाश्रयः । केनेयमशुभोदर्का न भवेज्जीविताटवी ॥ ६ ॥

ka upāyo gatiḥ kā vā kā cintā kaḥ samāśrayaḥ | keneyamaśubhodarkā na bhavejjīvitāṭavī || 6 ||

What is the way out? What is the remedy? What should I even think about this? What can I rely on? By what means can this forest of life, which is bound to end badly, be avoided?

इससे निकलने का रास्ता क्या है? इलाज क्या है? मुझे इस बारे में क्या सोचना चाहिए? मैं किस पर भरोसा करूँ? किस तरीके से जीवन के इस जंगल को, जिसका नतीजा हमेशा बुरा ही निकलता है, टाला जा सकता है?

1.31.7

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा क्वचित् । सुधियस्तुच्छमप्येतद्यन्नयन्ति न रम्यताम् ॥ ७ ॥

na tadasti pṛthivyāṃ vā divi deveṣu vā kvacit | sudhiyastucchamapyetadyannayanti na ramyatām || 7 ||

There is nothing anywhere, on this earth, or in heaven among the gods, that wise people cannot turn into something delightful, even if it is a small, worthless thing.

धरती पर हो या स्वर्ग में देवताओं के बीच, कहीं भी ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे समझदार लोग सुंदर न बना सकें, चाहे वह चीज़ कितनी ही तुच्छ क्यों न हो।

1.31.8

अयं हि दग्धसंसारो नीरन्ध्रकलनाकुलः । कथं सुस्वादुतामेति नीरसो मूढतां विना ॥ ८ ॥

ayaṃ hi dagdhasaṃsāro nīrandhrakalanākulaḥ | kathaṃ susvādutāmeti nīraso mūḍhatāṃ vinā || 8 ||

This burnt-out world, thick and crowded with confusion, has no real taste at all, how could it ever taste sweet, except through sheer foolishness?

यह जला हुआ संसार, जो उलझन से भरा-पूरा है, असल में बेस्वाद है, यह मीठा कैसे लग सकता है, सिवाय मूर्खता के?

1.31.9

आशाप्रतिविपाकेन क्षीरस्नानेन रम्यताम् । उपैति पुष्पशुभ्रेण मधुनेव वसुंधरा ॥ ९ ॥

āśāprativipākena kṣīrasnānena ramyatām | upaiti puṣpaśubhreṇa madhuneva vasuṃdharā || 9 ||

Through the fruit that hope finally yields, it seems to become lovely, as if bathed in milk, just as the earth becomes lovely coated in honey bright with flowers.

उम्मीद का फल आखिरकार जब मिलता है, तो यह ऐसा सुंदर लगने लगता है मानो दूध से नहलाया गया हो, ठीक वैसे ही जैसे धरती फूलों के चमकीले शहद से लिपटकर सुंदर दिखने लगती है।

1.31.10

अपमृष्टमलोदेति क्षालनेनामृतद्युतिः । मनश्चन्द्रमसः केन तेन कामकलङ्कितात् ॥ १० ॥

apamṛṣṭamalodeti kṣālanenāmṛtadyutiḥ | manaścandramasaḥ kena tena kāmakalaṅkitāt || 10 ||

The moon rises bright as nectar once its dirt is washed away, by what means can the mind, that moon stained by desire, be washed clean the same way?

चाँद तभी अमृत जैसा चमकीला निकलता है जब उसका मैल धुल जाता है, उसी तरह वासना से दागी हुई मन के इस चाँद को किस उपाय से साफ़ किया जाए?

1.31.11

दृष्टसंसारगतिना दृष्टादृष्टविनाशिना । केनेव व्यवहर्तव्यं संसारवनवीथिषु ॥ ११ ॥

dr̥ṣṭas̥m̐sārāgatinā dr̥ṣṭādr̥ṣṭavināśinā | keneva vyavahartavyaṁ saṁsāravanavīthiṣu || 11 ||

Since I have seen how the world runs, and that everything, seen and unseen alike, comes to ruin, how then should I act as I walk the paths of this forest of the world?

चूँकि मैंने देख लिया है कि दुनिया कैसे चलती है, और यह भी कि दिखने वाली और न दिखने वाली हर चीज़ आखिर में नष्ट हो जाती है, तो इस संसार-रूपी जंगल के रास्तों पर चलते हुए मुझे कैसा बर्ताव करना चाहिए?

1.31.12

रागद्वेषमहारोगा भोगपूगा विभूतयः । कथं जन्तुं न बाधन्ते संसारार्णवचारिणम् ॥ १२ ॥

rāgadveṣamahārogā bhogapūgā vibhūtayaḥ | kathaṁ jantuṁ na bādhante saṁsārārṇavacāriṇam || 12 ||

The great sicknesses of attachment and hatred, the heaps of pleasures, and worldly riches, how do they not torment a creature who is wandering in the ocean of this world?

राग और द्वेष की बड़ी बीमारियाँ, ढेर सारे सुख-भोग, और सांसारिक ऐश्वर्य, ये इस संसार-सागर में भटकते हुए किसी जीव को क्यों नहीं सताते?

1.31.13

कथं च धीरवर्याग्नौ पततापि न दह्यतेपावके पारदेनेव रसेन रसशालिना ॥ १३ ॥

kathaṁ ca dhīravaryāgnau patatāpi na dahyatepāvake pāradeneva rasena rasaśālīnā || 13 ||

And how does the best of the wise, even while falling into fire, not get burned by it, like mercury, which, filled with its own special power, does not burn in fire?

और बुद्धिमानों में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति आग में गिरते हुए भी उससे क्यों नहीं जलता, जैसे पारा अपनी खास शक्ति के कारण आग में नहीं जलता?

1.31.14

यस्मात्किल जगत्यस्मिन्व्यवहारक्रिया विना । न स्थितिः संभवत्यब्धौ पतितस्याजला यथा ॥ १४ ॥

yasmātkila jagatyasminvyavahārakriyā vinā | na sthitiḥ sambhavatyabdhau patitasyājālā yathā || 14 ||

Since, indeed, in this world there is no staying alive without doing worldly work, just as someone who has fallen into the ocean cannot stay out of the water.

क्योंकि इस दुनिया में सांसारिक काम-काज किए बिना जीना मुमकिन ही नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र में गिरा हुआ आदमी पानी से बचकर नहीं रह सकता।

1.31.15

रागद्वेषविनिर्मुक्ता सुखदुःखविवर्जिता । कृशानोर्दाहहीनेव शिखा नास्तीह सत्क्रिया ॥ १५ ॥

rāgadveṣavinirmuktā sukhaduḥkhavivarjitā | kṛśānordāhahīneva śikhā nāstīha sakriyā || 15 ||

Action that is completely free of attachment and hatred, entirely without pleasure or pain, there is no such thing here, any more than there is a flame of fire that does not burn.

ऐसा काम जो पूरी तरह राग-द्वेष से मुक्त हो, सुख-दुःख से भी पूरी तरह मुक्त हो, ऐसा यहाँ कुछ है ही नहीं, जैसे आग की ऐसी लौ नहीं होती जो जलाए ही नहीं।

1.31.16

मनोमननशालिन्याः सत्ताया भुवनत्रये क्षयो युक्तिं विना नास्ति ब्रूत तामलमुत्तमाम् ॥ १६ ॥

manomanaśālīnyāḥ sattāyā bhuvanatrāye kṣayo yuktiṃ vinā nāsti brūta tāmalamuttamām || 16 ||

In all three worlds, this endless thinking of the mind cannot be stopped without the right method, tell me that one best, most effective method.

तीनों लोकों में मन का यह लगातार सोचते रहना सही तरीके के बिना रुक ही नहीं सकता, मुझे वह सबसे अच्छा, असरदार तरीका बताइए।

1.31.17

व्यवहारवतो युक्त्या दुःखं नायाति मे यया अथवा व्यवहारस्य ब्रूत तां युक्तिमुत्तमाम् ॥ १७ ॥

vyavahāravato yuktyā duḥkhaṃ nāyāti me yayā athavā vyavahārasya brūta tāṃ yuktimuttamām || 17 ||

Tell me the best method by which suffering will not come to me even while I am engaged in worldly life, or the best way to handle worldly life so that it brings no suffering.

मुझे वह सबसे अच्छा तरीका बताइए जिससे सांसारिक जीवन में लगे रहते हुए भी मुझे दुख न हो, या फिर सांसारिक कामकाज करने का वह सबसे अच्छा तरीका बताइए जिससे दुख न हो।

1.31.18

तत्कथं केन वा किं वा कृतमुत्तमचेतसा पूर्वं येनैति विश्रामं परमं पावनं मनः ॥ १८ ॥

tatkathaṃ kena vā kiṃ vā kṛtamuttamacetasā pūrvam yenaeti viśrāmaṃ paramaṃ pāvanaṃ manaḥ || 18 ||

So tell me, how, by whom, or by doing what did the greatest minds long ago reach that supreme, sacred rest of the mind?

तो मुझे बताइए, कैसे, किसके द्वारा, या क्या करके पुराने समय के सबसे महान लोगों ने मन की उस सबसे ऊँची, पवित्र शांति को पाया था?

1.31.19

यथा जानासि भगवंस्तथा मोहनिवृत्तये ब्रूहि मे साधवो येन नूनं निर्दुःखतां गताः ॥ १९ ॥

yathā jānāsi bhagavaṃstathā mohanivṛttaye brūhi me sādhave yena nūnaṃ nirdhuḥkhatāṃ gatāḥ || 19 ||

As you know it, my lord, tell me, so that my confusion may go away, the thing by which good and wise people have surely reached a state completely free of sorrow.

हे भगवन, जैसा आप जानते हैं, मुझे बताइए, ताकि मेरा मोह दूर हो जाए, कि आखिर किस बात से भले और समझदार लोग पूरी तरह दुखरहित हो गए हैं।

1.31.20

न भोक्ष्ये न पिबाम्यम्बु नाहं परिदधेऽम्बरम् करोमि नाहं व्यापारं स्नानदानाशनादिकम् ॥ २० ॥

na bhokṣye na pibāmyambu nāhaṃ paridadhe'mbaram karomi nāhaṃ vyāpāraṃ snānadānāśanādikam || 20 ||

I will not eat, I will not drink water, I will not put on clothes; I will not do anything at all, no bathing, no giving, no eating, nothing.

मैं न कुछ खाऊँगा, न पानी पिऊँगा, न कपड़े पहनूँगा; मैं कुछ भी नहीं करूँगा, न नहाना, न दान देना, न खाना, कुछ भी नहीं।

1.31.21

स्वयं चैव न चाप्नोमि तां विश्रान्तिमनुत्तमास्तदहं त्यक्तसर्वेहो निरहंकारतां गतः ॥ २१ ॥

svayaṃ caiva na cāpnomi tāṃ viśrāntimanuttamāstadahaṃ tyaktasarveho nirahaṃkāratāṃ gataḥ || 21 ||

And by myself I cannot reach that highest peace, so I have given up all effort and let go of my sense of "I."

और मैं अपने आप उस सबसे बड़ी शांति को पा नहीं सकता, इसलिए मैंने हर कोशिश छोड़ दी है और अपने "मैं" के भाव को भी छोड़ दिया है।

1.31.23

न च तिष्ठामि कार्येषु संपत्स्वापद्शासु चन किंचिदपि वाञ्छामि देहत्यागादृते मुने ॥ २३ ॥

na ca tiṣṭhāmi kāryeṣu sampatsvāpaddaśāsu cana kiñcidapi vāñchāmi dehatyāgādṛte mune || 23 ||

I no longer stay caught up in duties, whether things are going well or badly, and I want nothing at all, O sage, except to give up this body.

मैं अब न तो अच्छे समय में और न ही बुरे समय में किसी काम में उलझा रहता हूँ, और हे मुनि, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, सिवाय इस शरीर को छोड़ देने के।

1.31.24

केवलं विगताशङ्को निर्ममो गतमत्सरःमौन एवेह तिष्ठामि लिपिकर्मस्विवार्पितः ॥ २४ ॥

kevalaṃ vigatāśaṅko nirmamo gatamatsaraḥmauna eveha tiṣṭhāmi lipikarmasvivārpitaḥ || 24 ||

Simply free of fear, with no sense of "mine," free from envy, I stay here in silence alone, like someone lost in the mechanical work of a scribe.

बस डर से मुक्त, "मेरा" के भाव से मुक्त, ईर्ष्या से मुक्त, मैं यहाँ चुपचाप अकेला रहता हूँ, जैसे कोई लिपिक अपने यंत्रवत लेखन-कार्य में खोया रहता है।

1.31.25

अथ क्रमेण संत्यज्य प्रश्वासोच्छ्वाससंविदःसंनिवेशं त्यजामीममनर्थं देहनामकम् ॥ २५ ॥

atha krameṇa saṁtyajya praśvāsocchvāsasaṁvidaḥsaṁniveśaṁ tyajāmi mamanarthaṁ dehanāmakam || 25 ||

Then, step by step, giving up even the awareness of breathing in and out, I will give up this whole structure called "the body," this source of trouble.

फिर, धीरे-धीरे, साँस अंदर-बाहर जाने के एहसास को भी छोड़कर, मैं इस पूरे ढाँचे को छोड़ दूँगा जिसे "शरीर" कहते हैं, जो सिर्फ मुसीबत की जड़ है।

1.31.26

नाहमस्य न मे नान्यः शाम्याम्यस्नेहदीपवत् सर्वमेव परित्यज्य त्यजामीदं कलेवरम् ॥ २६ ॥

nāhamasya na me nānyaḥ śāmyāmyasnehadīpavat sarvameva parityajya tyajāmi idaṁ kalevaram || 26 ||

I do not belong to this body, it is not mine, nor does it belong to anyone else; I will go out like a lamp that has run out of oil. Giving up everything completely, I will give up this body.

मैं इस शरीर का नहीं हूँ, यह मेरा नहीं है, और न ही यह किसी और का है; मैं उस दीये की तरह बुझ जाऊँगा जिसका तेल खत्म हो चुका है। सब कुछ पूरी तरह छोड़कर, मैं इस शरीर को भी छोड़ दूँगा।

1.31.27

श्रीवाल्मीकिरुवाच इत्युक्तवानमलशीतकराभिरामो रामो महत्तरविचारविकासिचेताः तूष्णीं बभूव पुरतो महतां घनानां केकारवं श्रमवशादिव नीलकण्ठः ॥ २७ ॥

śrīvālmikiruvāca ityuktavānamalaśītakarābhirāmo rāmo mahattaravicāravikāsīcetāḥ tūṣṇīm babhūva purato mahatāṁ ghanānāṁ kekāravaṁ śramavaśādiva nīlakaṇṭhaḥ || 27 ||

Sri Valmiki said: Having said this, Rama, as lovely as the spotless, cool moon, his mind now blossoming with the deepest reflection, fell silent, like a peacock that stops calling out from tiredness before the great rain clouds.

श्री वाल्मीकि ने कहा, यह कहकर राम, जो निर्मल, ठंडे चाँद जैसे सुंदर थे और जिनका मन गहरे चिंतन में डूबा हुआ था, चुप हो गए, जैसे कोई मोर बड़े-बड़े बादलों के सामने थककर अपनी बोली बंद कर देता है।

Chapter 32

1.32.1

श्रीवाल्मीकिरुवाचवदत्येवं मनोमोहविनिवृत्तिकरं वचःरामे राजीवपत्राक्षे तस्मिन्नाजकुमारके ॥ १ ॥

śrīvālmīkiruvācavadatyevaṃ manomohavinivṛttikaraṃ vacaḥrāme rājīvapatrākṣe tasminrājakumārake || 1 ||

Valmiki said: While Rama, the prince with eyes like lotus petals, was speaking these words that free the mind from confusion,

वाल्मीकि जी ने कहा जब कमल की पंखड़ियों जैसी आँखों वाले राजकुमार राम मन का मोह मिटाने वाले ये वचन बोल रहे थे,

1.32.2

सर्वे बभूवुस्तत्रस्था विस्मयोत्फुल्ललोचनाःभिन्नाम्बरा देहरुहैर्गिरिः श्रोतुमिवोद्धुरैः ॥ २ ॥

sarve babhūvustatrasthā vismayotphullalocanāḥbhinnāambarā deharuhairgīraḥ śrotumivoddhuraiḥ || 2 ||

everyone sitting there had their eyes wide open with wonder; the hair on their bodies stood up and seemed to tear through their clothes, as if the hair itself wanted to hear the words.

वहाँ बैठे सभी लोगों की आँखें आश्चर्य से फैल गई; उनके शरीर के रोंगटे खड़े होकर मानो कपड़ों को चीरते हुए बाहर निकल आए, जैसे रोंगटे भी ये वचन सुनना चाहते हों।

1.32.3

विरागवासनापास्तसमस्तभववासनाःमुहूर्तममृताम्भोधिवीचीविलुलिता इव ॥ ३ ॥

virāgavāsanāpāstasamastabhavavāsanāḥmuhūrtamamṛtāmbhodhivīcīvilulitā iva || 3 ||

The taste of dispassion drove out all their worldly desires, and for that moment they were like people tossed about by the waves of an ocean of nectar.

वैराग्य के स्वाद ने उनकी सारी सांसारिक इच्छाएँ दूर कर दीं, और उस पल वे मानो अमृत के समुद्र की लहरों में हिलोरें ले रहे हों, ऐसे लग रहे थे।

1.32.4

ता गिरो रामभद्रस्य तस्य चित्रार्पितैरिवसंश्रुताः शृणुकैरन्तरानन्दपदपीवरैः ॥ ४ ॥

tā giro rāmaḥbhadrasya tasya citrārpitairivasanśrutāḥ śṛṇukairantarānandapadapīvaraiḥ || 4 ||

Those words of gracious Rama were heard by everyone; they sat still, like figures painted in a picture, their hearts within brimming with joy.

उस दयालु राम के ये वचन सभी ने सुने; वे चित्र में बने पुतलों जैसे स्थिर बैठे थे, और उनके भीतर आनंद भरा हुआ था।

1.32.5

वसिष्ठविश्वामित्राद्यैर्मुनिभिः संसदि स्थितैःजयन्तधृष्टिप्रमुखैर्मन्त्रिभिर्मन्त्रकोविदैः ॥ ५ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrādyairmunibhiḥ saṁsadi sthitaiḥjayantadhrṣṭipramukhairmantribhirmantrakovidaiḥ || 5 ||

Sages headed by Vasishtha and Vishvamitra, seated in that assembly, heard them, and so did the ministers headed by Jayanta and Dhrishti, men skilled at giving counsel.

उस सभा में बैठे वसिष्ठ और विश्वामित्र आदि मुनियों ने भी उन्हें सुना, और सलाह देने में कुशल जयंत तथा धृष्टि जैसे मंत्रियों ने भी सुना।

1.32.6

नृपैर्दशरथप्रख्यैः पौरैः पारशवादिभिः । सामन्तै राजपुत्रैश्च ब्राह्मणैर्ब्रह्मवादिभिः ॥ ६ ॥

nṛpairdaśarathapṛakhyaiḥ pauraiḥ pāraśavādibhiḥ | sāmantai rājaputraiśca brāhmaṇairbrahmavādibhiḥ || 6 ||

Kings as renowned as Dasharatha heard them, and so did the townspeople, including the Parashavas, the feudal lords, the princes, and the brahmins who spoke of Brahman, the highest truth.

दशरथ जैसे प्रसिद्ध राजाओं ने भी उन्हें सुना, और साथ ही पारशव आदि नगरवासियों ने, सामंतों और राजकुमारों ने, तथा परम सत्य ब्रह्म की बात करने वाले ब्राह्मणों ने भी सुना।

1.32.7

तथा भृत्यैऽरमात्यैश्च पञ्चरस्यैश्च पक्षिभिः । क्रीडामृगैर्गतस्पन्दैस्तुरंगैस्त्यक्तचर्वणैः ॥ ७ ॥

tathā bhr̥tyairamātyaiśca pañjarasthaiśca pakṣibhiḥ | krīḍāmṛgairgataspaṇḍaitsthyaktacarvaṇaiḥ || 7 ||

Likewise the servants and the ministers heard them, and so did the birds sitting in their cages, the pet deer who had stopped moving, and the horses who had stopped chewing their feed.

वैसे ही सेवकों और मंत्रियों ने भी सुना, और पिंजरों में बैठे पक्षियों ने, हिलना-डुलना भूल गए पालतू हिरणों ने, और चारा चबाना छोड़ चुके घोड़ों ने भी सुना।

1.32.8

कौसल्याप्रमुखैश्चैव निजवातायनस्थितैः । संशान्तभूषणारावैरस्पन्दैर्वनितागणैः ॥ ८ ॥

kausalyāpramukhaiścaiva nijavātāyanasthitaiḥ | saṁśāntabhūṣaṇārāvairaspaṇḍairvanitāgaṇaiḥ || 8 ||

The women headed by Kausalya, standing at their own windows, heard them too - they stood motionless, and even the sound of their ornaments had gone quiet.

कौसल्या आदि स्त्रियों ने भी, जो अपनी-अपनी खिड़कियों में खड़ी थीं, उन्हें सुना - वे निश्चल खड़ी थीं, और उनके गहनों की आवाज़ भी शांत हो गई थी।

1.32.9

उद्यानवल्लीनिलयैर्विटङ्गनिलयैरपि । अक्षुब्धपक्षततिभिर्विहङ्गैर्विरतारवैः ॥ ९ ॥

udyānavallīnilayairviṭaṅkanilayairapi | akṣubdhpakṣatatibhirvihangairvirataravaiḥ || 9 ||

The birds living among the creepers in the garden, and those living in cages, heard them too - their wings had stopped stirring, and their calls had gone silent.

बगीचे की लताओं में रहने वाले पक्षियों ने, और पिंजरों में रहने वाले पक्षियों ने भी सुना - उनके पंख हिलना बंद हो गए थे और उनकी बोली थम गई थी।

1.32.10

सिद्धैर्नभश्चरैश्चैव तथा गन्धर्वकिन्नरैः । नारदव्यासपुलहप्रमुखैर्मुनिपुङ्गवैः ॥ १० ॥

siddhairnabhaścaraiścaiva tathā gandharvakinnaraiḥ | nāradvyaśapulahapramukhairmunipuṅgavaiḥ || 10 ||

The Siddhas and the other wanderers of the sky heard them, and so did the Gandharvas and Kinnaras, and the great sages headed by Narada, Vyasa, and Pulaha.

सिद्धों और आकाश में विचरने वालों ने भी सुना, और गंधर्वों तथा किन्नरों ने, और नारद, व्यास तथा पुलह जैसे श्रेष्ठ मुनियों ने भी सुना।

1.32.11

अन्यैश्च देवदेवेशविद्याधरमहोरगैः । रामस्य ता विचित्रार्था महोदारा गिरः श्रुताः ॥ ११ ॥

anyaiśca devadeveśavidyādharmahoragaiḥ | rāmasya tā vicitrārthā mahodārā girāḥ śrutāḥ || 11 ||

And others too heard them - the gods, the lord of the gods, the vidyadharas, and the great serpents. So it was that everyone heard those wondrous and most noble words of Rama.

और इनके अलावा देवताओं ने, देवताओं के स्वामी ने, विद्याधरों ने तथा महानागों ने भी सुना। इस प्रकार राम के वे अद्भुत और अत्यंत उदार वचन सबने सुने।

1.32.12

अथ तूष्णीं स्थितवति रामे राजीवलोचने । तस्मिन्नुकुलाकाशशङ्के शशिसुन्दरे ॥ १२ ॥

atha tūṣṇīm sthitavati rāme rājīvalocane | tasminraghukulākāśaśāṅke śaśisundare || 12 ||

Then Rama, the lotus-eyed one, fell silent - he who was like the moon in the sky of the Raghu family, and as beautiful as the moon itself.

फिर कमल जैसी आँखों वाले राम चुप हो गए - वे रघुकुल के आकाश के चंद्रमा जैसे थे, और चाँद जितने ही सुंदर थे।

1.32.13

साधुवादगिरा सार्धं सिद्धसार्थसमीरिता । वितानकसमा व्योम्नः पौष्पी वृष्टिः पपात ह ॥ १३ ॥

sādhuvādagirā sārḍhaṁ siddhasārthasamīritā | vitānakasamā vyomnaḥ pauṣpī vṛṣṭiḥ papāta ha || 13 ||

At that moment, a rain of flowers fell from the sky like a spreading canopy, stirred up by crowds of Siddhas, together with their cries of well said, well said!

उसी क्षण आकाश से मानो एक चंदोवा फैलाते हुए फूलों की वर्षा होने लगी, जिसे सिद्धों की भीड़ ने हिलाया था, और साथ ही "साधु, साधु" की आवाज़ें भी गूँज रही थीं।

1.32.14

मन्दारकोशविश्रान्तभ्रमरद्वन्द्वनादिनी । मधुरामोदसौन्दर्यमुदितोन्मदमानवा ॥ १४ ॥

mandārakośaviśrāntabhramaradvandvanādinī | madhurāmodasaundaryamuditounmadamānavā || 14 ||

That rain hummed with pairs of bees resting inside the petals of coral-tree flowers, and its sweet fragrance and beauty filled people with such joy that they seemed intoxicated.

उस वर्षा में मंदार फूलों की पंखड़ियों में बैठे भँवरों की जोड़ियाँ गुनगुना रही थीं, और उसकी मीठी खुशबू और सुंदरता से लोग इतने आनंदित हुए कि वे मतवाले जैसे लगने लगे।

1.32.15

व्योमवातविनुन्नेव तारकाणां परम्परा । पतितेव धरापीठे स्वर्गस्त्रीहसितच्छटा ॥ १५ ॥

vyomavātavinunneva tārakāṇāṁ paramparā | patiteva dharāpīṭhe svargastrīhasitacchṭā || 15 ||

It looked as if a line of stars, blown by the wind of the sky, had fallen down onto the earth, or as if the sparkle of the laughter of heavenly women had dropped down to the ground.

वह ऐसी लग रही थी मानो आकाश की हवा से उड़कर तारों की एक कतार धरती पर गिर पड़ी हो, या मानो स्वर्ग की स्त्रियों की हँसी की चमक ज़मीन पर बिखर गई हो।

1.32.16

वृष्यमूककचन्मेघलवावलिरिव च्युता । हैयंगवीनपिण्डानामीरितेव परम्परा ॥ १६ ॥

vr̥ṣyamūkakacanmeghalavāvaliriva cyutā | haiyaṃgavīnapīṇḍānāmīriteva paramparā || 16 ||

The falling flowers looked like a row of quietly gleaming pieces of rain cloud, or like an unbroken stream of soft lumps of fresh butter dropping down.

गिरते हुए फूल मानो चुपचाप चमकते बादल के टुकड़ों की कतार जैसे लग रहे थे, या मानो ताज़े मक्खन की गोलियों की लगातार धारा नीचे गिर रही हो।

1.32.17

हिमवृष्टिरिवोदारा मुक्ताहारचयोपमा । ऐन्दवी रश्मिमालेव क्षीरोर्मिणामिवाततिः ॥ १७ ॥

himavṛṣṭirivodārā muktāhāracyopamā | aindavī raśmimāleva kṣīrormiṇāmivātatiḥ || 17 ||

That rain was as abundant as a snowfall, like a heap of pearl necklaces, like a garland of moonbeams, like a spreading expanse of milky waves.

वह वर्षा बर्फ गिरने जितनी भरपूर थी, मोतियों के हारों के ढेर जैसी लग रही थी, मानो चाँद की किरणों की माला हो, या दूध की लहरों का फैला हुआ विस्तार हो।

1.32.18

किञ्जल्काम्भोजवलिता भ्रमद्भङ्गकदम्बका । सीत्कारगायदामोदिमधुरानिललोलिता ॥ १८ ॥

kiñjalkāmbhojavalitā bhramadbhṅgakadambakā | sītākāragāyadāmodimadhurānilalolitā || 18 ||

It was mixed with the pollen of lotus flowers, swarms of bees flew about humming over it, and a sweet, fragrant breeze stirred it, sounding as if it were singing.

उसमें कमल के फूलों का पराग मिला हुआ था, भँवरों के झुंड गुनगुनाते हुए उस पर मंडरा रहे थे, और मीठी सुगंधित हवा उसे हिला रही थी जो मानो गुनगुनाकर गा रही हो।

1.32.19

प्रभ्रमत्केतकीव्यूहा प्रस्फुरत्कैरवोत्करा । प्रपतत्कुन्दवलयया चलत्कुवलयालया ॥ १९ ॥

prabhramatketakiv्यूhā prasphuratkairavotkarā | prapatatkundavalayā calatkuvalayālayā || 19 ||

Clusters of ketaki flowers whirled about in it, heaps of white water lilies glistened, rings of jasmine flowers fell, and beds of blue lotuses stirred.

उसमें केतकी के फूलों के गुच्छे घूम रहे थे, सफेद कुमुद फूलों के ढेर चमक रहे थे, कुंद के फूलों के घेरे गिर रहे थे, और नीले कमलों की क्यारियाँ हिल रही थीं।

1.32.20

आपूरिताङ्गणरसा गृहाच्छादनचत्वर । उद्ग्रीवपुरवास्तव्यनरनारीविलोकिता ॥ २० ॥

āpūritāṅgaṇarasā gr̥hācchādanacatvarā | udgrīvapurvāstavyanaranārīvilokitā || 20 ||

It filled the courtyards with delight, covered the roofs and terraces of houses, and the men and women living in the city craned their necks up to watch it.

उसने आँगनों को खुशी से भर दिया, घरों की छतों और आँगनों को ढक दिया, और नगर में रहने वाले स्त्री-पुरुष गर्दन उठाकर उसे देखते रहे।

1.32.21

निरभ्रोत्पलसंकाशव्योमवृष्टिरनाकुला । अदृष्टपूर्वा सर्वस्य जनस्य जनितस्मया ॥ २१ ॥

nirabhrotpalasamkāśavyomavṛṣṭiranākulā | adṛṣṭapūrvā sarvasya janasya janitasmayā || 21 ||

This rain fell from a sky as clear and blue as a lotus, without any cloud, and without any confusion; no one had ever seen anything like it before, and it filled every person with wonder.

यह वर्षा बादल रहित, कमल जैसे नीले साफ आकाश से बिना किसी उलझन के हो रही थी; ऐसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा था, इसलिए हर व्यक्ति चकित रह गया।

1.32.22

अदृश्याम्बरसिद्धौघकरोत्करसमीरिता । सा मुहूर्तचतुर्भागं पुष्पवृष्टिः पपात ह ॥ २२ ॥

adrśyāmbarasiddhaughakarotkarasamīritā | sā muhūrtacaturbhāgaṃ puṣpavṛṣṭiḥ papāta ha || 22 ||

Stirred by the hands of crowds of invisible Siddhas moving in the sky, that rain of flowers fell for a quarter of a muhurta, about twelve minutes.

आकाश में घूमते हुए अदृश्य सिद्धों की भीड़ के हाथों से हिलाई गई वह फूलों की वर्षा एक मुहूर्त के चौथाई भाग तक, यानी करीब बारह मिनट तक, गिरती रही।

1.32.23

आपूरितसभालोके शान्ते कुसुमवर्षणे । इमं सिद्धगणालापं शुश्रुवुस्ते सभागताः ॥ २३ ॥

āpūritasabhāloke śānte kusumavarṣaṇe | imaṃ siddhagaṇālāpaṃ śuśruvuste sabhāgatāḥ || 23 ||

When that flower-rain, which had filled the whole assembly hall, had quieted down, those gathered in the assembly heard this talk among the group of Siddhas.

जब सभा को भर देने वाली वह फूलों की वर्षा शांत हो गई, तब सभा में बैठे लोगों ने सिद्धों के समूह के बीच होने वाली यह बातचीत सुनी।

1.32.24

आकल्पं सिद्धसेनासु भ्रमद्भिरभितोदिवम् । अपूर्वमिदमस्माभिः श्रुतं श्रुतिरसायनम् ॥ २४ ॥

ākalpaṃ siddhasenāsu bhramadbhirabhitodivam | apūrvamidamas mābhiḥ śrutaṃ śrutirasāyanam || 24 ||

Even we, who forever wander through the sky among the hosts of Siddhas, have never heard anything like this before - today we have heard something that is like a tonic for the ear.

हम जो सदा सिद्धों की सेना के साथ आकाश में घूमते रहते हैं, हमने भी आज तक ऐसा कभी नहीं सुना था; आज हमने ऐसी बात सुनी है जो कानों के लिए अमृत के समान है।

1.32.25

यदनेन किलोदारमुक्तं रघुकुलेन्दुना । वीतरागतया तद्धि वाक्पतेरप्यगोचरम् ॥ २५ ॥

yadanena kilodāramuktaṃ raghukulendunā | vītarāgatayā taddhi vākpatērapyagocaram || 25 ||

What this moon of the Raghu family has spoken so nobly, out of his freedom from passion, even the lord of speech himself could not have spoken.

रघुकुल के इस चंद्रमा राम ने वैराग्य के कारण जो यह उदार बात कही है, वह तो वाणी के स्वामी के लिए भी असंभव थी।

1.32.26

अहो बत महत्पुण्यमद्यास्माभिरिदं श्रुतम् । वचो राममुखोद्भूतं महाह्लादकरं धियः ॥ २६ ॥

aho bata mahatpunyamadyāsmābhiridaṃ śrutam | vaco rāmamukhodbhūtaṃ mahāhlādakaraṃ dhiyaḥ || 26 ||

Oh, what great merit is ours, that today we have heard these words, born from Rama's mouth, which bring such great delight to the mind!

अहा! आज हमने कितना बड़ा पुण्य पाया है कि हमने राम के मुख से निकले ये वचन सुने, जो मन को इतना बड़ा आनंद देते हैं!

1.32.27

उपशमामृतसुन्दरमादरा दधिगतोत्तमतापदमेष यत् । कथितवानुचितं रघुनन्दनः सपदि तेन वयं प्रतिबोधिताः ॥ २७ ॥

upaśamāmṛtasundaramādarā dadhigatottamatāpadameṣa yat | kathitavānucitaṃ raghunandanaḥ sapadi tena vayaṃ pratibodhitāḥ || 27 ||

What Rama, the joy of the Raghu family, has so fittingly said - words made beautiful by the nectar of peace, reached through deep reverence, and rising to the highest state - has, by that very speech, awakened us at once.

रघुकुल के आनंद राम ने जो यह उचित बात कही है - जो शांति के अमृत से सुंदर है, गहरे आदर से प्राप्त हुई है, और परम अवस्था तक पहुँचाती है - उसी वाणी से हम तुरंत जाग उठे हैं।

Chapter 33

1.33.1

सिद्धा ऊचुःपावनस्यास्य वचसः प्रोक्तस्य रघुकेतुनानिर्णयं श्रोतुमुचितं वक्ष्यमाणं महर्षिभिः ॥ १ ॥

siddhā ūcuḥpāvanasyāsya vacasaḥ proktasya raghuketunānirṇayaṁ śrotumucitaṁ vakṣyamāṇaṁ maharṣibhiḥ || 1 ||

The Siddhas said: It is right that we should now hear the verdict on this purifying speech spoken by Rama, the glory of the Raghus - the verdict the great sages are about to give.

सिद्धों ने कहा रघुकुल के गौरव राम ने जो यह पवित्र वचन कहा है, उसका निर्णय अब महर्षि बताने वाले हैं; हमें उसे सुनना चाहिए।

1.33.2

नारदव्यासपुलहप्रमुखा मुनिपुङ्गवाःआगच्छताश्चविघ्नेन सर्व एव महर्षयः ॥ २ ॥

nāradvāsyāsapulahapramukhā munipuṅgavāḥāgacchatāśuvighnena sarva eva maharṣayaḥ || 2 ||

O foremost sages headed by Narada, Vyasa, and Pulaha - all you great seers - come quickly, without delay!

हे नारद, व्यास और पुलह जैसे श्रेष्ठ मुनियो, हे सभी महर्षियो, बिना देर किए जल्दी आइए!

1.33.3

पतामः परितः पुण्यामेतां दाशरथीं सभांभीरन्ध्रां कनकोद्योतां पद्मिनीमिव षट्पदाः ॥ ३ ॥

patāmaḥ paritaḥ puṇyāmetāṁ dāśarathīṁ sabhāṁnīrandhrāṁ kanakodyotāṁ padmīnīmiva ṣaṭpadāḥ || 3 ||

Let us fly down together, like bees, all around this sacred, crowded, golden-gleaming assembly of Dasharatha's son, just as bees fly down onto a bed of lotuses.

आइए, हम सब भँवरों की तरह दशरथ के पुत्र राम की इस पवित्र, घनी और सोने-सी चमकती सभा पर चारों ओर से उतर पड़ें, जैसे भँवरे कमलों के तालाब पर उतरते हैं।

1.33.4

श्रीवाल्मीकिरुवाचैत्युक्ता सा समस्तैव व्योमवासनिवासिनीतां पपात सभां तत्र दिव्या मुनिपरम्परा ॥ ४ ॥

śrīvālmīkiruvācaityuktā sā samastaiva vyomavāsanivāsinītāṁ papāta sabhāṁ tatra divyā muniparamparā || 4 ||

Valmiki said: When this was said, that whole divine line of sages dwelling in the sky came down and fell upon that assembly.

वाल्मीकि जी ने कहा यह कहे जाने पर आकाश में रहने वाला वह समूचा दिव्य मुनियों का समुदाय उस सभा में उतर आया।

1.33.5

अग्रस्थितमनुत्सृष्टरणद्वीणं मुनीश्वरम्पयः पीनघनश्यामं व्यासमेव किलान्तरा ॥ ५ ॥

agrasthitamanutsṛṣṭaraṇadvīṇaṁ munīśvarampayaḥ pīnaghanaśyāmaṁ vyāsameva kilāntarā || 5 ||

Standing at the front among them was Vyasa, lord of sages, dark as a rain cloud thick and heavy with water, his lute sounding on without pause.

उनमें सबसे आगे खड़े थे मुनियों के स्वामी व्यास, जो पानी से भरे घने बादल की तरह श्याम वर्ण के थे, और जिनकी वीणा लगातार बज रही थी।

1.33.6

भृग्वांगिराःपुलस्त्यादिमुनिनायकमण्डिताच्यवनोद्दालकोशीरशरलोमादिमालिता ॥ ६ ॥

bhṛgvaṃgiraḥpulastyādimunināyakamaṇḍitācyavanoddālakośīraśaralomādimālītā || 6 ||

That line of sages was adorned by leaders such as Bhrigu, Angiras, and Pulastya, and was further garlanded by sages such as Chyavana, Uddalaka, Ushira, and Sharaloma.

वह मुनियों की पंक्ति भृगु, अंगिरा और पुलस्त्य जैसे प्रमुख मुनियों से सुशोभित थी, और च्यवन, उद्दालक, उशीर तथा शरलोमा जैसे मुनियों से और भी सजी हुई थी।

1.33.7

परस्परपरामर्शदुःसंस्थानमृगाजिनालोलाक्षमालावलयया सुकमण्डलुधारिणी ॥ ७ ॥

parasparaparāmarśaduḥsaṃsthānamṛgājinaḥlālākṣamālāvalayā sukamaṇḍaludhārīṇī || 7 ||

Their deerskin garments had come loose from jostling against each other, their rosary beads swung about in circles, and they carried their fine water pots in their hands.

आपस में सटने से उनके मृगछाला के वस्त्र अस्त-व्यस्त हो गए थे, उनकी माला के दाने गोल-गोल घूम रहे थे, और वे अपने सुंदर कमंडल हाथों में लिए हुए थे।

1.33.8

तारावलिरिव व्योम्नि तेजःप्रसरपाटलासूर्यावलिरिवान्योन्यं भासिताननमण्डना ॥ ८ ॥

tārāvaliriva vyomni tejaḥprasarpaṭalāsūryāvalirivānyonyaṃ bhāsitānanamaṇḍanā || 8 ||

Like a row of stars in the sky, reddened by the spread of their own brightness, they lit up each other's faces and ornaments like a row of suns.

वे आकाश में तारों की कतार जैसे लग रहे थे, अपने ही तेज की चमक से लाल हुए, और सूर्यों की पंक्ति की तरह एक-दूसरे के चेहरे और गहनों को रोशन कर रहे थे।

1.33.9

रत्नावलिरिवान्योन्यं नानावर्णकृतांगिकामुक्तावलिरिवान्योन्यं कृतशोभातिशायिनी ॥ ९ ॥

ratnāvalirivānyonyaṃ nānāvarṇakṛtāṅgikāmuktāvalirivānyonyaṃ kṛtāśobhātīśāyīnī || 9 ||

Like a string of gems of many colours, they adorned each other's bodies; like a string of pearls, they made each other's beauty shine still more.

वे मानो कई रंगों के रत्नों की माला की तरह एक-दूसरे के शरीर को सजा रहे थे, और मोतियों की माला की तरह एक-दूसरे की शोभा को और बढ़ा रहे थे।

1.33.10

कौमुदीवृष्टिरन्येव द्वितीयेवार्कमण्डलीसम्भृतेवातिकालेन पूर्णचन्द्रपरम्परा ॥ १० ॥

kaumudīvr̥ṣṭiranyeva dvitīyevārkaṃmaṇḍalīsaṃbhṛtevātikālena pūrṇacandraparamparā || 10 ||

That gathering seemed like another shower of moonlight, like a second circle of suns, like a whole line of full moons brought together at one extraordinary time.

वह समूह मानो चाँदनी की एक और वर्षा हो, मानो सूर्यों का दूसरा मंडल हो, या मानो एक असाधारण समय में इकट्ठा हुई पूर्णिमा के चाँद की पूरी शृंखला हो।

1.33.11

ताराजाल इवाम्भोदो व्यासो यत्र विराजते । तारौघ इव शीतांशुर्नारदोऽत्र विराजते ॥ ११ ॥

tārājāla ivāmbhodo vyāso yatra virājate | tāraugha iva śītāṁśurnārado'tra virājate || 11 ||

There, Vyasa shone like a cloud amid a web of stars; and there, Narada shone like the cool moon amid a flood of stars.

वहाँ व्यास तारों के जाल के बीच बादल की तरह चमक रहे थे, और नारद तारों की भीड़ के बीच शीतल चाँद की तरह चमक रहे थे।

1.33.12

देवेष्विव सुराधीशः पुलस्त्योऽत्र विराजते । आदित्य इव देवानामंगिरास्तु विराजते ॥ १२ ॥

deveṣviva surādhiśaḥ pulastyo'tra virājate | āditya iva devānāmaṅgirāstu virājate || 12 ||

There, Pulastya shone among them like the lord of the gods among the gods; and Angiras shone like the sun among the gods.

वहाँ पुलस्त्य देवताओं के बीच देवताओं के स्वामी की तरह चमक रहे थे, और अंगिरा देवताओं के बीच सूर्य की तरह चमक रहे थे।

1.33.13

अथास्यां सिद्धसेनायां पतन्त्यां नभसो रसाम् । उत्तस्थौ मुनिसंपूर्णा तदा दाशरथी सभा ॥ १३ ॥

athāsyāṁ siddhasenāyāṁ patantyaṁ nabhaso rasām | uttasthau munisaṁpūrṇā tadā dāśarathī sabhā || 13 ||

Then, as this host of Siddhas came down from the sky to the earth, Rama's assembly rose to its feet, now full of sages.

फिर जब सिद्धों की यह सेना आकाश से धरती पर उतरी, तब राम की वह सभा मुनियों से भरकर खड़ी हो गई।

1.33.14

मिश्रीभूता विरेजुस्ते नभश्चरमहीचराः । परस्परवृतांगाभा भासयन्तो दिशो दश ॥ १४ ॥

miśrībhūtā virejuste nabhaścaramahīcarāḥ | parasparavṛtāṅgābhā bhāsayanto diśo daśa || 14 ||

Mixed together, those who moved through the sky and those who moved on the earth shone brightly; the light of their bodies wrapped around each other, lighting up all ten directions.

आकाश में चलने वाले और धरती पर चलने वाले, दोनों मिलकर एक साथ चमक रहे थे; उनके शरीर की चमक एक-दूसरे को घेरे हुए थी, और वे दसों दिशाओं को रोशन कर रहे थे।

1.33.15

वेणुदण्डावृतकरा लीलाकमलधारिणः । दूर्वाकुराक्रान्तशिखाः सचूडामणिमूर्धजाः ॥ १५ ॥

veṇudaṇḍāvṛtakarā līlākamaladhāriṇaḥ | dūrvāṁkurākṛāntaśikhāḥ sacūḍāmaṇimūrdhajāḥ || 15 ||

Their hands held bamboo staffs, and for pleasure they carried lotus flowers; their topknots were covered with fresh shoots of durva grass, and their hair bore crest jewels.

उनके हाथों में बाँस की छड़ियाँ थीं, और वे खेल-खेल में कमल के फूल लिए हुए थे; उनकी चोटी दूर्वा घास के नए अंकुरों से ढकी थी, और उनके बालों में चूडामणि जड़े हुए थे।

1.33.16

जटाजूटैश्च कपिला मौलिमालितमस्तकाःप्रकोष्ठगाक्षवलया मल्लिकावलयान्विताः ॥ १६ ॥

jaṭājūṭaiśca kapilā maulimālitamastakāḥprakoṣṭhagākṣavalayā mallikāvalayānvitāḥ || 16 ||

Their matted hair was tawny brown, and garlands crowned their heads; bead bracelets circled their wrists, and strings of jasmine flowers hung about them.

उनकी जटाएँ भूरे रंग की थीं, और उनके सिर पर माला बंधी थी; उनकी कलाईयों में मनकों की चूड़ियाँ थीं, और वे चमेली के फूलों की मालाएँ पहने हुए थे।

1.33.17

चीरवल्कलसंवीताः स्रक्कौशेयावगुण्ठिताःविलोलमेखलापाशाश्चलन्मुक्ताकलापिनः ॥ १७ ॥

cīravalkalasaṃvitāḥ srakkauśeyāvaguṇṭhitāḥvilolamekhalāpāśāścalanmuktākālāpinaḥ || 17 ||

They were wrapped in garments of bark, covered with silk cloths and garlands; their girdle cords swayed as they moved, and they wore strings of pearls that trembled.

वे छाल के वस्त्र पहने हुए थे, और रेशमी कपड़ों तथा मालाओं से ढके हुए थे; उनकी करधनी की डोरियाँ हिल रही थीं, और वे काँपती हुई मोतियों की लड़ियाँ पहने हुए थे।

1.33.18

वसिष्ठविश्वामित्रौ तान्पूजयामासतुः क्रमातर्घ्यैः पाद्यौर्वचोभिश्च सर्वानेव नभश्चरान् ॥ १८ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrau tānpūjayāmāsatuḥ kramātarghyaiḥ pādyaurvacobhiśca sarvāneva nabhaścarān || 18 ||

Vasishtha and Vishvamitra, one after another, honoured all those travellers of the sky with offerings of water, with water for washing their feet, and with kind words.

वसिष्ठ और विश्वामित्र ने बारी-बारी से उन सभी आकाश-चारियों का सम्मान अर्घ्य जल, पैर धोने के जल और मीठे वचनों से किया।

1.33.19

वसिष्ठविश्वामित्रौ ते पूजयामासुरादरातर्घ्यैः पाद्यौर्वचोभिश्च नभश्चरमहागणाः ॥ १९ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrau te pūjayāmāsuraadarātarghyaiḥ pādyaairvacobhiśca nabhaścaramahāgaṇāḥ || 19 ||

And those great hosts of sky-travellers, in turn, honoured Vasishtha and Vishvamitra with respect, offering them water, water for their feet, and kind words.

और आकाश-चारियों के उन बड़े समूहों ने भी आदरपूर्वक अर्घ्य जल, पैर धोने के जल और वचनों से वसिष्ठ और विश्वामित्र का सम्मान किया।

1.33.20

सर्वादरेण सिद्धौघं पूजयामास भूपतिःसिद्धौघो भूपतिं चैव कुशलप्रश्नावर्तया ॥ २० ॥

sarvādareṇa siddhaughaṃ pūjayāmāsa bhūpatiḥsiddhaugho bhūpatiṃ caiva kuśalapraśnavārtayā || 20 ||

The king honoured the whole host of Siddhas with full respect, and the host of Siddhas, in turn, honoured the king, asking after his welfare.

राजा ने सिद्धों के पूरे समूह का पूरे आदर से सम्मान किया, और सिद्धों के समूह ने भी कुशल-क्षेम पूछते हुए राजा का सम्मान किया।

1.33.21

तैस्तैः प्रणयसंरम्भैरन्योन्यं प्राप्तसत्क्रियाः उपाविशन्विष्टरेषु नभश्चरमहीचराः ॥ २१ ॥

taistaiḥ praṇayasamrambhairanyonyaṁ prāptasatkriyāḥ upāviśanviṣṭareṣu nabhaścaramahīcarāḥ || 21 ||

Having received such warm and courteous welcome from one another, those who moved through the sky and those who moved on the earth sat down, each on their own seat.

इस तरह एक-दूसरे से इतना स्नेहपूर्ण और आदरपूर्ण स्वागत पाकर, आकाश में चलने वाले और धरती पर चलने वाले सब लोग अपने-अपने आसनों पर बैठ गए।

1.33.22

वचोभिः पुष्पवर्षेण साधुवादेन चाभितः रामं ते पूजयामासुः पुरः प्रणतमास्थितम् ॥ २२ ॥

vacobhiḥ puṣpavarṣeṇa sādhuvādena cābhitaḥrāmaṁ te pūjayāmāsuḥ puraḥ praṇatamāsthitam || 22 ||

Then, with words, with a rain of flowers, and with cries of well said! on every side, they honoured Rama, who stood before them with his head bowed.

फिर वचनों से, फूलों की वर्षा से, और चारों ओर से "साधु, साधु" कहते हुए, उन्होंने राम का सम्मान किया, जो सिर झुकाए उनके सामने खड़े थे।

1.33.23

आसांचक्रे च तत्रासौ राज्यलक्ष्मीविराजितः विश्वामित्रो वसिष्ठश्च वामदेवोऽथ मन्त्रिणः ॥ २३ ॥

āsāṁcakre ca tatrāsau rājyalakṣmīvirājitaḥviśvāmitro vasiṣṭhaśca vāmadevo'tha mantriṇaḥ || 23 ||

There the king, shining with the glory of his kingdom, took his seat, and with him sat Vishvamitra, Vasishtha, Vamadeva, and the ministers.

वहाँ राजा, जो अपने राज्य की शोभा से चमक रहे थे, अपने आसन पर बैठे, और उनके साथ विश्वामित्र, वसिष्ठ, वामदेव तथा मंत्री भी बैठे।

1.33.24

नारदो देवपुत्रश्च व्यासश्च मुनिपुंगवः मरीचिरथ दुर्वासा मुनिरांगिरसस्तथा ॥ २४ ॥

nārado devaputraśca vyāsaśca munipuṅgavaḥmarīciratha durvāsā munirāṅgirasastathā || 24 ||

Narada, son of a god, Vyasa the foremost of sages, Marichi, and then Durvasa, and the sage of the line of Angiras were there too.

देवपुत्र नारद, श्रेष्ठ मुनि व्यास, मरीचि, दुर्वासा और अंगिरा वंश के मुनि भी वहाँ उपस्थित थे।

1.33.25

क्रतुः पुलस्त्यः पुलहः शरलोमा मुनिश्चरः वात्स्यायनो भरद्वाजो वाल्मीकिर्मुनिपुंगवः ॥ २५ ॥

kratuḥ pulastyaḥ pulahaḥ śaralomā munīśvaraḥvātsyāyano bharadvājo vālmīkirmunipuṅgavaḥ || 25 ||

Kratu, Pulastya, Pulaha, Sharaloma the lord of sages, Vatsyayana, Bharadvaja, and Valmiki, foremost of sages, were also there.

क्रतु, पुलस्त्य, पुलह, मुनिश्रेष्ठ शरलोमा, वात्स्यायन, भरद्वाज और श्रेष्ठ मुनि वाल्मीकि भी वहाँ थे।

1.33.26

उद्दालक ऋचीकश्च शर्यातिश्च्यवनस्तथा ॥ २६ ॥

uddālaka ṛcikaśca śaryātiścyavanastathā || 26 ||

And so were Uddalaka, Richika, Sharyati, and Chyavana.

और उद्दालक, ऋचीक, शर्याति तथा च्यवन भी वहाँ थे।

1.33.27

एते चान्ये च बहवो वेदवेदांगपारगाः । ज्ञातज्ञेया महात्मान आस्थितास्तत्र नायकाः ॥ २७ ॥

ete cānye ca bahavo vedavedāṅgapāragāḥ | jñātajñeyā mahātmāna āsthitāstatra nāyakāḥ || 27 ||

These and many others, masters of the Vedas and the scriptures that support them, great souls who had come to know all that was worth knowing, sat there as leaders of that gathering.

ये सब और इनके अलावा कई और लोग, जो वेद और उनकी सहायक विद्याओं में पारंगत थे, जो जानने योग्य सब कुछ जान चुके थे, वे महात्मा वहाँ अगुआ बनकर बैठे थे।

1.33.28

वसिष्ठविश्वामित्राभ्यां सह ते नारदादयः । इदमूचुरनूचाना राममानमिताननम् ॥ २८ ॥

vasiṣṭhaviśvāmitrābhyāṃ saha te nāradaḍayaḥ | idamūcuranūcānā rāmamānamitānanam || 28 ||

Along with Vasiṣṭha and Vishvamitra, those sages headed by Narada, being learned men, spoke these words to Rama, who stood there with his face bowed.

वसिष्ठ और विश्वामित्र के साथ, नारद आदि विद्वान मुनियों ने, सिर झुकाए खड़े राम से यह कहा।

1.33.29

अहो बत कुमारेण कल्याणगुणशालिनी । वागुक्ता परमोदारा वैराग्यरसगर्भिणी ॥ २९ ॥

aho bata kumāreṇa kalyāṇaguṇaśālinī | vāguktā paramodārā vairāgyarasagarbhinī || 29 ||

Oh, how wonderful - this prince has spoken words full of good qualities, deeply generous, and filled with the taste of dispassion.

अहा! कितना आश्चर्य है कि इस राजकुमार ने ऐसे वचन बोले हैं जो शुभ गुणों से भरे हैं, बहुत उदार हैं, और वैराग्य के भाव से भरपूर हैं।

1.33.30

परिनिष्ठितवक्तव्यं सबोधमुचितं स्फुटम् । उदारं प्रियमार्याहमविह्वलमपि स्फुटम् ॥ ३० ॥

pariniṣṭhitavaktavyaṃ sabodhamucitaṃ sphuṭam | udāraṃ priyamāryārahmavihvalamapi sphuṭam || 30 ||

Everything worth saying has been said in it, completely; it is full of understanding, fitting, and clear; it is noble, pleasing, worthy of the wise, steady, and clear.

इस वाणी में कहने योग्य सब कुछ पूरी तरह कहा गया है; यह समझ से भरी, उचित और स्पष्ट है; यह उदार, प्रिय, बुद्धिमानों के योग्य, अडिग और स्पष्ट है।

1.33.31

अभिव्यक्तपदं स्पष्टमिष्टं स्पष्टं च तुष्टिमत्करोति राघवप्रोक्तं वचः कस्य न विस्मयम् ॥ ३१ ॥

abhivyaktapadaṃ spaṣṭamiṣṭaṃ spaṣṭaṃ ca tuṣṭimatkaroti rāghavaproktaṃ vacaḥ kasya na vismayam || 31 ||

With words that come out clearly, plain, pleasing, plain again, and satisfying - whose wonder does this speech spoken by Raghava not stir?

जिसके शब्द साफ-साफ निकलते हैं, जो सीधी, मनभावन और संतोष देने वाली है - राघव राम की कही यह वाणी किसे आश्चर्यचकित नहीं करेगी?

1.33.32

शतादेकतमस्यैव सर्वोदारचमत्कृतिःईप्सितार्थार्पणैकान्तदक्षा भवति भारती ॥ ३२ ॥

śatādekatamasyaiva sarvodaracamatkṛtiḥīpsitārthārpaṇaikāntadakṣā bhavati bhārātī || 32 ||

Only the speech of one person in a hundred has this kind of complete and wondrous excellence, so wholly able to convey exactly the meaning that is wanted.

सौ में से किसी एक ही व्यक्ति की वाणी ऐसी पूरी तरह अद्भुत और उत्तम होती है, जो चाहे गए अर्थ को इस तरह ठीक-ठीक पहुँचाने में सक्षम हो।

1.33.33

कुमार त्वां विना कस्य विवेकफलशालिनीपरं विकासमायाति प्रज्ञाशरलतातता ॥ ३३ ॥

kumāra tvāṃ vinā kasya vivekaphalaśālīnīparaṃ vikāsamāyāti prajāśaralatātātā || 33 ||

O prince, apart from you, whose wide, spreading power of wisdom, bearing the fruit of true discernment, comes to such full flower?

हे कुमार, आपके अलावा और किसकी विवेक रूपी फल देने वाली बुद्धि इतनी दूर तक फैलकर इस तरह पूरी तरह खिल पाती है?

1.33.34

प्रज्ञादीपशिखा यस्य रामस्येव हृदि स्थिताप्रज्वलत्यसमालोककारिणी स पुमान्स्मृतः ॥ ३४ ॥

prajādīpaśikhā yasya rāmasyeva hṛdi sthitāprajvalatyasamāloka-kārīṇī sa pumānsmṛtaḥ || 34 ||

He alone deserves to be called a true man in whose heart the flame of the lamp of wisdom burns like it does in Rama's heart, casting a light like no other.

वही सच्चा पुरुष कहलाने योग्य है जिसके हृदय में बुद्धि रूपी दीपक की लौ राम के हृदय की तरह जलती हो, और अद्वितीय प्रकाश फैलाती हो।

1.33.35

रक्तमांसास्थियन्त्राणि बहून्यतितराणि चपदार्थानभिकर्षन्ति नास्ति तेषु सचेतनः ॥ ३५ ॥

raktamāṃsāsthiyantrāṇi bahūnyatitarāṇi capadārthānabhikarṣanti nāsti teṣu sacetanaḥ || 35 ||

There are countless, and more than countless, bodies made only of blood, flesh, and bone that are pulled toward worldly things; not one of them is truly awake.

खून, माँस और हड्डी से बने ऐसे बहुत से, बल्कि उससे भी ज़्यादा शरीर हैं जो सांसारिक चीज़ों की ओर खिंचे चले जाते हैं; उनमें से कोई भी सचमुच जागा हुआ नहीं है।

1.33.36

जन्ममृत्युजरादुःखमनुयान्ति पुनःपुनःविमृशन्ति न संसारं पशवः परिमोहिताः ॥ ३६ ॥

janmamṛtyujarāduḥkhamanuyānti punaḥpunaḥvimṛśanti na saṃsāraṃ paśavaḥ parimohitāḥ || 36 ||

Again and again they go through the suffering of birth, death, and old age; deluded like animals, they never stop to think about this world.

वे बार-बार जन्म, मृत्यु और बुढ़ापे का दुख भोगते हैं; पशुओं की तरह मोहग्रस्त होकर वे कभी इस संसार के बारे में सोचते ही नहीं।

1.33.37

कथंचित्क्वचिदेवैको दृश्यते विमलाशयःपूर्वापरविचारार्हो यथायमरिमर्दनः ॥ ३७ ॥

kathamcitkvacidevaiko dṛśyate vimalāśayaḥpūrvāparavicārārho yathāyamamarimardanaḥ || 37 ||

Only rarely, somewhere, is a single person seen whose mind is pure, one fit to weigh what came before and what comes after - like this crusher of enemies here.

किसी तरह, कहीं-कहीं ही, कोई एक व्यक्ति ऐसा दिखता है जिसका मन निर्मल हो और जो आगे-पीछे की बात सोचने योग्य हो - जैसे शत्रुओं का नाश करने वाला यह राम है।

1.33.38

अनुत्तमचमत्कारफलाः सुभगमूर्तयः भव्या हि विरला लोके सहकारद्रुमा इव ॥ ३८ ॥

anuttamacamatkārāphalāḥ subhagamūrtayaḥ bhavyā hi viralā loke sahakāradrumā iva || 38 ||

People of such surpassing, wondrous excellence and such fortunate form are truly rare in this world, like mango trees among ordinary trees.

ऐसे अद्भुत और श्रेष्ठतम गुणों वाले, सुंदर रूप वाले भाग्यशाली लोग संसार में सचमुच बहुत कम होते हैं, जैसे आम के पेड़ आम पेड़ों के बीच कम मिलते हैं।

1.33.39

सम्यग्दृष्टजगद्यात्रा स्वविवेकचमत्कृतिः अस्मिन्मान्यमतावन्तरियमद्येव दृश्यते ॥ ३९ ॥

samyagdr̥ṣṭajagadyātrā svavivekacamatkṛtiḥ asminmānyamatāvantariyamadyeva dṛśyate || 39 ||

This wondrous power of true discernment, one that has rightly seen how the world runs its course, is what we see today in this greatly honoured one.

जिसने संसार की चाल को सही ढंग से समझ लिया है, ऐसी अपनी समझ का यह अद्भुत गुण आज हम इस अत्यंत सम्मानित व्यक्ति में देख रहे हैं।

1.33.40

सुभगाः सुलभारोहाः फलपल्लवशालिनः जायन्ते तरवो देशे न तु चन्दनपादपाः ॥ ४० ॥

subhagāḥ sulabhārohāḥ phalapallavaśālināḥ jāyante taravo deśe na tu candanapādapāḥ || 40 ||

Trees that are pleasant, easy to climb, and rich with fruit and leaves grow everywhere in this land - but not sandalwood trees.

सुंदर, आसानी से चढ़े जा सकने वाले, फल-पत्तों से भरपूर पेड़ तो इस देश में हर जगह उग आते हैं, लेकिन चंदन के पेड़ ऐसे नहीं होते।

1.33.41

वृक्षाः प्रतिवनं सन्ति नित्यं सफलपल्लवाः नत्वपूर्वचमत्कारो लवङ्गः सुलभः सदा ॥ ४१ ॥

vṛkṣāḥ prativanam santi nityaṁ saphalapallavāḥ natvapūrvacamatkāro lavaṅgaḥ sulabhaḥ sadā || 41 ||

In every forest there are trees that are always full of fruit and leaves, but a clove tree, with its rare and wonderful quality, is not always easy to find.

हर जंगल में हमेशा फल-पत्तों से भरे पेड़ मिल जाते हैं, लेकिन अनोखे और अद्भुत गुण वाला लौंग का पेड़ हमेशा आसानी से नहीं मिलता।

1.33.42

ज्योत्स्नेव शीता शशिनः सुतरोरिव मञ्जरीपुष्पादामोदलेखेव दृष्टा रामाञ्चमत्कृतिः ॥ ४२ ॥

jyotsneva śītā śaśinaḥ sutaroriva mañjarīpuṣpādāmodalekheva dṛṣṭā rāmāñcamatkṛtiḥ || 42 ||

Like the cool moonlight of the moon, like the cluster of blossoms on a fine tree, like the streak of fragrance rising from a flower - such is the wonder we have seen coming from Rama.

जैसे चाँद की ठंडी चाँदनी होती है, जैसे किसी सुंदर पेड़ पर फूलों का गुच्छा खिलता है, जैसे फूल से खुशबू की लहर उठती है, वैसे ही राम से यह अद्भुत गुण हमने देखा है।

1.33.43

अस्मिन्नुद्दामदौरात्म्यदैवनिर्माणनिर्मितेद्विजेन्द्रा दग्धसंसारे सारो ह्यत्यन्तदुर्लभः ॥ ४३ ॥

asminnuddāmadaurātmyadaivaivanirmāṇanirmitedvijendrā dagdhasaṃsāre sāro hyatyantadurlabhaḥ || 43 ||

O foremost brahmins, in this world burnt up by the unchecked wickedness of fate, true worth is indeed extremely hard to find.

हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो, नियति की उन्मुक्त दुष्टता से जले हुए इस संसार में सच्चा सार पाना सचमुच बहुत कठिन है।

1.33.44

यतन्ते सारसंप्राप्तौ ये यशोनिधयो धियःधन्या धुरि सतां गण्यास्त एव पुरुषोत्तमाः ॥ ४४ ॥

yatante sārasaṃprāptau ye yaśonidhayo dhiyaḥdhanṃyā dhuri satāṃ gaṇyāsta eva puruṣottamāḥ || 44 ||

Those whose minds are treasuries of good fame, and who strive to attain this true worth, are blessed; counted at the very front of the good, they alone are the best of men.

जिनकी बुद्धि यश की निधि है और जो इस सच्चे सार को पाने के लिए प्रयत्न करते हैं, वे धन्य हैं; सज्जनों में सबसे आगे गिने जाने योग्य वे ही श्रेष्ठ पुरुष हैं।

1.33.45

न रामेण समोऽस्तीह दृष्टो लोकेषु कश्चनविवेकवानुदारात्मा न भावी चेति नो मतिः ॥ ४५ ॥

na rāmeṇa samo'stīha dṛṣṭo lokeṣu kaścanavivekavānudarātmā na bhāvī ceti no matiḥ || 45 ||

No one equal to Rama has ever been seen in these worlds, and we believe that no one as discerning and as noble-hearted as he will ever be born.

इन लोकों में राम के समान न तो कोई कभी देखा गया है, और हमारा मानना है कि भविष्य में भी उनके जैसा विवेकवान और उदार हृदय वाला कोई नहीं होगा।

1.33.46

सकललोकचमत्कृतिकारिणोऽप्यभिमतं यदि राघवचेतसःफलति नो तदिमे वयमेव हि स्फुटतरं मुनयो हतबुद्धयः ॥ ४६ ॥

sakalalokacamatkṛtikāriṇo'pyabhimataṃ yadi rāghavacetasaḥphalati no tadime vayameva hi sphuṭataramṃ munayo hatabuddhayaḥ || 46 ||

If even we, who can astonish every world, cannot satisfy what Rama's own heart desires, then it is very clear that we sages are truly dull-witted.

यदि हम, जो समस्त लोकों को चकित कर सकते हैं, फिर भी राम के मन की इच्छा को पूरा नहीं कर पाते, तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हम मुनि सचमुच बुद्धिहीन हैं।